मालकौंस पत्नीपुतः

न ५८६४

I

१ मालकोस राग ध्यानम्

२ विशू देवता

३ प्रौढा नायिका

४ मा॰ धीरा नायिका

५ वीर रसः

6130

F — Not 522

and # 97 are missing

मा॰ल॰
रा॰१

ॐ अथ मालकौष राग प्रारंभः ॥ मध्य मोष्रा ग्रहेन्या
सः पंचम स्वर वर्जितः षाडवस्स सविज्ञेयो मालकौं
षाक संज्ञकः ॥ मालवा कान्हडश्चैव वागी पुर्वी
समेयुतः कौषिका जायते तत्र मध्यमो मा(स्त्री)रितः
इस रागका ग्रेष्रा न्यास ग्रह मध्यम स्वर है अरु पंचम
इसमैं वरजित है षाडव संज्ञा छे स्वरका राग येह है

१

३

अरु कहीं रिषभ और पंचम बरजित है तहां औडव।
पांच स्वरका कहा है अरु कईक उसताद लोक सेए
ही भी गाते हैं अरु मालव कान्हडा वागीश्वरी के मि
लाप सें येह बनता है अरु रात्री के तीसरे पहर गा
या जाताहै अरु इसका विस्तदेवताहै अरु विस्त ही
ऋषीहै अरु दुहती छंदहै सोबीज है समस्तरसको

मा॰ रो॰ विदा प्रौढा नायका है अरु दत्तनाय है अरु वीर रस
२ है अरु इसका शिंगार करत है ॥ अथ मालकौश रा
ग ध्याने । आरक्त वर्णो धृत रक्त यष्टी । वीरः सुवीरे
षु कृत प्रवीर्यः । वीरावृतो वीर कपाल माली धीरै
र्मतो मालव कौंशकोऽसौ ॥ अथ मालकौश भाषा॰
ध्यानम् । सवैया । कंचन तें कमनीय कलेवर काम २

कलान मै कोविद मानो ॥ माते महा रस वीर हिमे

नित राते रुचे बसनो जग जानो ॥ वैरन मारि क

पाल की माल धरी बडु वीर निहै मन मानो ॥

जो हरि वल्लभ रूप अनूप सु मालव कौशक रा

ग बषानो ॥ अथ समस्त रस कोविदा श्रोढ़ा नाय

का लक्षणम् ॥ सो समस्त रस कोविदा को विदक

मा॰रा॰
३

हत वषानि ॥ जा रस भावै प्रीतमहि नारी रसकी दा
नि ॥ यथा कवित्त ॥ देषी है गोपाल एक गोपिका
अनूप रूप सोने ते सलोनी वाम सोंथेते सवाई है
सोभाई सुभाई अवतार लीनो चन स्याम कियों ये
ह दामिनी यों कामनी है आई है ॥ देवी कोई दान
वीन भान वीन होइ ऐसी मान वीन होइ भाइ मार

३

३

ती पछाई है ॥ केशोदास सब सुष साधन की सिद्धि

यह मेरे जाने मै नहीं सौं मैन काकी जाई है ॥ अथद

त नायक लक्षणम । कवित्त । हरि सौंहित सौं भ्रम भू

लि हूंन की जे मन हो तो करि हिये हूं तें होत हित हानी

ये ॥ लोक मै अलोक आनि नीके हूं को लागति है

सीता जू को हत गीत के मो उर आनि ये ॥ आषिन

मा॰ रा॰ ४

जो देषियत सोई साची केशोदास कानन की सुनी

सोची कबहू न मानिये ॥ गो कल की कुलटा पयो

ही उलटा वति है आजु लोनो वैसई है काल्हि की॰

न जानिये ॥ अथ वीर रस लक्षणम् ॥ कवित्त ॥

अग्र जैसो उदारिहौ किवक जैसो विदारिहौ जू के

स के कि केशोराइ केशी जैसो पछारिहौ ॥ हरिहौ

४

4

कि ग्रान नाथ पूतना के ग्रानानि ज्यौं वन नैं कि व
नमाली काली ज्यौं निकारिहैं ॥ कारि हैो कि विम
द घन वाहन ज्यौं घन स्याम काहू सौं न हारे हरि
याही सो केयो हारिहैो ॥ वेही काम काम वर ब्रज
की कुमारि कानि मारत है नंदके कुमार कव मा
रिहैो ॥ ग्रथ मालकोश राग विनि योगः ॥ ग्रथश्री

मा॰ रा॰ मालकौश राग मंत्रस्य विश्व ऋषिः वृहती छंदः विश्व
५ देवता मो बीजं मो वांछित कामना सिद्ध्यर्थे मालकौ
श राग जपे विनि योगः॥ अथ कर न्यासः। ॐ मो अं
गुष्टाभ्यां नमः॥ एवं हृदयादि न्यासं सर्वं कुर्यात
अथ मालकौश राग मंत्रः॥ ॐ कौं कौशिकाय नमः
इति मंत्रः॥ अथ पूजां विधाय॥ आवाहने आसने।
५

पाद्ये अर्घ्ये आचमनीये वस्त्रे यज्ञोपवीते गंधे अक्षते

पुष्पे धूपे दीपे नैवेद्ये दत्वा पुनराचमनीयम् ॥ सर्वे

पूजनं कुर्यात् ॥ अथ जपमेवाा १००००० ॥ दशाक्षरस्य

अष्टमाल कौशिकस्य देवता मंत्रः ॥ ॐ नमो नारायणाय

ॐ ॥ देवता ध्यानम् ॥ शांताकारं भुजगशयनं पद्म

नाभं सुरेशं विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभां

मा॰ रा॰ ६ गे लक्ष्मी कांते कमल नयने योगिभिर्ध्यान गम्ये वंदे वि
ष्णु भव भय हरं सर्व लोकैकनाथम् ॥ इति देवता
ध्यानम् ॥ अब मालकौंश राग का येह ठाठ है ॥
खड्ज समरहता है ऋषभ इसमें वर्जित है गंधार
उतरा मध्यम उतरा पंचम इसमें वर्जित है धैवत
उतरा निषाद उतरा ॥ अथ मालकौंश राग सरग ६

म:॥ सनिधममसममग २ मधमगगमधनिधमगगमधनि

मससनिनिधधममगगगमधनिधमगम ॥ इति त्रस्था

यी ॥ मगगगममगगगमधनिधममममगगममनिधमग

म[illegible]ध[illegible]मगगमधनिधमगगमधनिसासासानि

निधधममगगगमधनिधमग[illegible] ॥ इति सवगम: ॥

अथ मालकौश राग की गत मसीत खानी करते हैं

मा० रा०
७

ढिंड ढा ढिंड ढाडा ढाढाडा ढिंड ढिंढाड ढाडा ढा०

ढाडा ढाडा ढिंड ढा ढिंड ढांढाडा ढाढांड ढिंड ढा०

ढिंड ढाडा ढाढाडा ॥ ननरी इना आनन उनन उआ

नन अद ननरी नंने नंना उननंना आनरा ननन रंउ

नाउम ॥ इति अग्न्याग्नी ॥ ननन अदनंने आनन नुम

नाउनै नना नन नरी नना आन नांन ननुम नउ नरीन

7

२सं २नि २सं २नि २प २म २ग २म ग २सं

तानरी रना तना ञान तान ञान तान रान तनूम ॥

इति श्वेतरा ॥ (अथ मालकौंश राग ताल)।

मा॰रा॰
८

राग मालकौंश ब्रह्मपरिच्छेद ताल चार।

सं नि ध नि सं म ग म ध नि

नेहि आत्म रूप मांहि इच्छावत देखरहैंओ

सं नि ध म ग म ग सं

तावत श्रवण करैं नभ जिम्म सविकारी॥

ग म ध नि सं नि

इतिअस्थायी॥ वास्तव में निर्विकार मैंघ

ध नि सं नि ध म ग

धूलि भूलि करै माया यर छुद्र बालकता

म ग सं नि सं

कृत यारी॥ इतिअन्तरा॥ चलन चरण

रा॰मा॰ रहित तेर भो मत मनुपाद युक्त सकल कार्य
तेहि करै नाहि करैं सारी ॥ बाल निधी वेद
शास्त्र अद्भुतवत कथन करै हैं अलत पुन
अनन्त नाम रूप धारी ॥ अथ अन्यत ऋवे।
राग मालकोश ताल चार ५ ॥ आदि अंत
मध्य तेहि माया कर भिन्न भिन्न नाम रूप

मे मे ग मे ग सं
भूमि जन्य मृद विकार भारी ।। इति अस्थायी ।

गा मे प नि सं नि प मे प नि प मे
कारी घटपान पात्र करव आदि नानाविध

गा मे प मे गा सं
आकृति को देष जगत भिन्न नाम कारी ।।

सं नि प नि सं मे मे गा मे प
इति अन्तरा ।। धारी जब आदिरूप पाछेही

नि सं नि प मे गा गा मे
८ महद्दरूप निजहि योनि धराणि धारि तह

गा सं मे मे प नि सं प
त तेहि चारी ।। बालनिधी मत्यतेहि और

१०

२ध २नि २सं २नि २ध २म २म २ग

रा॰मा॰ हरषप विविध भांत छूट फूट नामसजात द्व

२म २ग २सं

हो रहे सारी॥ इति आभोगः॥ इति बलप

रिच्छेदः॥ ० ॥

२.२

अथ मालकौश रागस्य शक्ति परिच्छेदमाह

ताल चार ४ ॥ श्री जाह्नवि जह्नुराय तनु (तनयाः)

तारनि नरन रहि जोप स्नान करै धरै धी

र भारी ॥ इति अस्थायी ॥ महा पाप ताप ।

करै नाशन निज मनहि धरै सकल कुल

कलंक ह्रपा निर्दय भ्राति वारी ॥ इति अन्तरा

२२

रा॰ मा॰ ब्राह्मण हति मद्यपान हेम चौर्य्य गुरु सु तल्प

महापाप येहि जगत तिन हि भीति यारी ॥

बालनिधी भाग्य हूप जलहि गंगा भूमिवेहे

पाप ताप नाशन हित मोहन नर सारी ॥

इतिआभोगः॥ राग मालकौंश झपताल ता

ल गीत ॥ गंगा त्रिपथ गामिनी भई तीन

मा पा नि सं नि प मा गा सं

लोक के तारन भाग जगत ॥ इति अस्थायी

गा मा पा नि सं नि प मा प नि प

एक समे ऋषि नारद देव पुर अटन कर

मा गा मा गा मा गा सं सं नि प

जग भये राग देषत ॥ इति अन्तरा ॥ छंद

नि सं मा गा मा प नि प मा गा सं

र षट् नार विषात अष्ट सुत संग है हीन

नि प नि सं मा गा म प नि नि सं

देष लज्जा सों तपत ॥ सरस्वती वर पायो

नि प नि सं नि प मा गा मा प नि

राधा केतको सुनायो काकाराम आनन्द

२सं २नि २ध मे २ग २सं

ग· मा· सैं भेयो देह मरित। इति आभोगः॥ इति मा

२२ लकौंश रागस्य शाकिपरिच्छेदः॥ ८ ॥

२८

राग मालकौंश विसमपरिछेद ध्रुवपद ता
ल चार ४ ॥ कमलापति कमल नयन भुज
ग शायन पद्मनाभ योगिपति जगत लीन
करहि नींद थारी ॥ इति अस्थायी ॥ शेवपू
र्वक शायन स्वप्न देखी नंद नारसैंहि भ्रम
र पीत कि शोभा जिम दूबरही सारी ॥ २

२३

सा नि ध नि सा म ग म ध नि
रा० मा० त्रेतरा ।। हेम किशिपु वत्सस्थल रूप नृप श्रेय

सा नि ध म ग सा सा नि ध नि सा
कार युक्त हस्त श्रेकणा जिम हेर करनि का

म ग म ध नि सा नि ध नि ध
री ।। धारी मनु जीणे रज श्रेव लयी धार गरैं

म ग सा नि ध नि सा
प्रहलाद रक्षकरी बाल शरण भारी ।। इति

आभोगः ।। राग मालकौश ध्रुवपद ताल०

सा नि ध नि सा म ग म ध
वार थ ।। श्रीशाईश विसुप्रभ विम भवन

पालन हित शांति रूप धारि हारि पाप जंत
सारी ॥ इति अस्थायी ॥ यारी मन भक्त लाज
काज करै दौरि दौरि दयानिधी साधन कों
साबल धन धारी ॥ इति अंतरा ॥ यंत्र मन
मंत्र हारि पत्थर निव धारिलिये भोजन का
र रोज रोज काज किये काहरी ॥ बालनि

ध नि सं नि ध नि सं नि ध मं

रा॰मा॰ थी दीन विप्र त्रिप्र दया दान देऊ दीनबंधु

ग ग सं सं नि ध नि सं

दयासिंधु पाप ताप हारी ॥ इति आभोगाः

२४

इति मालकौंश रागस्य विस्तपरिच्छेदः ॥

अथ रागेशा परिक्षेदमाह राग मालकौंश॥

सं नि ध नि सं म

ध्रुवपद ताल चार॥ कपिल बदन एकर

म ग म ध नि सं नि ध

दन बरद मरद वेद ड्डति श्रुति विचित्र वि

म ग म ग सं

श्च हर करन पतुक भारी॥ इति अस्थायी

ग म ध नि सं नि ध म ध नि

धारी जिह विरय हरि सिद्धि सुभग पूर

सं नि ध म म ग म

ण हित भक्त भक्त कारज मैं सदा धीर।

२५

ग सा नि सा म म ग

रा॰ मा॰ कारी ॥ इतिश्वेतरा ॥ भारी सभदेवन में श्रेष्ठ

म ध नि ध म ग म ग सा नि

पूजा ब्याग्र खेड लेड लिये मोदकर सभदित

ध नि सा ग म ध नि सा नि

मन विहारी ॥ भारी जिह उदर महाविघ्न।

ध म ध नि सा नि ध म ग म

भक्त पर रहो हरकैं श्वेतराय बालनिधैं।

ग सा

भारी ॥ राग मालकौंश झपताल ॥४॥

सा नि ध नि सा म ग म ध नि सा

हैमवती मान तात शेकर मन रंजक श्लोक

२ नित कोमल शिशु गोदलिये केलि करत
नीके ॥ इति अस्थायी ॥ भालचंद्र बिंदु सुधा
गिरि हरि कांति जवी नवी सिंह जागि डंबा
चंमा उलवीकी ॥ इति अंतरा ॥ देष बिहु
समरदित भये एकदंत सिद्धिकंत देदेकर
नारी न्टतकरी लचित जीकी ॥ वैसेंही मोरि

गा॰ मा॰ तु करो बालनिधे विधि रमण दीजो निज च

२६ रण शरण शान्ति मन वशीकी। इत्याभोगः

इति मालकौंश रागस्य गणेश परिच्छेदः॥

७.२

अथ शिवपरिछेदमाह राग मालकौश ता-
ल चार ध्रुवपद ॥ श्री शूली चरण धूलि भू-
लि छाडि छार बसै नसै सकल पाप ताप
परम पुरुष सोई ॥ इति ध्रुवस्थायी ॥ जोई
जग भक्त सक्ति छोडि राय जायाकी माया
मय विष्व हरष मान ज्ञान कोई । इत्यन्तरा

गा॰ मा॰ सोही है अति पवित्र आत्म मित्र देषभेष मर
ण विविध वरन उदर हित सिधोई ॥ होई॰
जिन प्रीति रीति मृत्युंजय साधु सोई बाल॰
निधी चरण शरण वांछित कर जोई ॥ः

राग मालकौंश ध्रुवपद शिव ताल चार॰
जटा जूट सीस गंग अर्द्ध अंग अगाहि सुता

सीसमणी श्रवण कुसुम कुंडलि कल धारी ॥

इति स्थायी ॥ कारी विष धारी गर रतन उ

रग मालधरी विविध वसन भस्म लिपी ।

रुंडमाल भारी ॥ इति अन्तरा ॥ करहि क

मल विमल लिये उत त्रिशूल डमरु डम

क डमाक डमाक बजाए भजाए प्रति अंगे ।

२८

रा॰ मा॰ दकारी ॥ धारी पुन मनहि मुदित प्रकट ।
प्रीति धार रहे बालनिधी सुधीनिधी विवि
ध विधि विसारी ॥ इत्याभोगः । इति शिव॰
परिच्छेदः ॥ ८ ॥

अथ सूर्यपरिच्छेदः राग मालकौंश ताल· ५

२सं २नि २प २नि २सं २म २ग २म २प २नि

पूषण जित दूषण जति भूषण मति बृद्ध

२सं २नि २प २म २म २ग २म २ग

करै हरैं सकल पाप व्याधि तिरस श्रेष्ठचा

२सं २ग २म २प २नि

री।। इति अस्थायी।। धारी जिहि चरणश

२सं २नि २प २नि २सं २नि २प

रण हरण तिमिर मानस नित श्रमित दे

२प २म २म २ग २म २ग २सं

न दान तिमहि जात नास भारी। इत्यंतरा।

स नि ध नि सं म ग म ध नि ध म

रा॰ मा॰ भारी येह इष्ट ज्ञान निष्ठ सदा धार रहें सिर

म ग सं सं नि ध नि सं म ग

र अरुण वर्ण पीत बसन कंजधारी ॥ चारि

२५

म ध नि सं नि ध नि सं

भुजा मृदु विशाल बालनिधी पाद पद्म।

नि ध म म ग म ग सं

मन पराग वांछित नित दीजे भावकारी

इति आभोगः॥ राग मालकौंश ध्रुवपद।

सं नि ध नि सं म

ताल चार ४ ॥ सविता जग सविता नित

अमित तेज धार रहो सकल तम विनाशी मन
कमल को विकासी ।। इति अस्थायी ।। वासी
जग आत्मरूप आभाकर कर्म कारि वारिदत
वारद मथ जीव को उलासी ।। इति अन्तरा ।।
ग्रासी अति अरिनदरन दुर्जन को हर करण
रोग सोग लोभ क्रोध लोभ को विनासी ।।

२ग म ध २नि २सं २नि २ध २नि २सं २नि

गा॰ मा॰ दासीवत बहुरहे बोलनिथी बुद्धि सदा चरण

२ध २म २म २ग २म २म २ग २सं

शरण रेवचित होइ पाप से उदासी ॥ इत्या॰

भोगाः॥ इति सर्व परिच्छेदः॥ ॥ ॥

अथ मालकौंश रागस्य दशावतार परिछे
दमाह झपताल वार ४॥ जगदीश्व
र परब्रह्म पालक जगएर रहो धर्मना
श देव भेष दश विध को मारी॥ इति अ
स्थायी॥ हारी भय प्रलय अब्धि अंडज अ
वतार धार रक्ष करी मनूगाय धाय नाव।

२२

रा॰मा॰ धारी ॥ इति धनतरा ॥ कमठ मथन सुधा
करी सुकर दंत भूमि धरी श्रीनृसिंह प्र
हलाद रक्ष विभफारी ॥ वामन द्विज भू
मि गाही परशुराम रामचंद्र रामबुद्ध क
लि कलुष नाशक वपु धारी ॥ इत्याभो
गः ॥ इति मालकौंश रागस्य दशावतारः

सीवराटिकायनों श्री मिले आंय टोडी तबही होतहै गा
वत गुनी बनाय ॥ इति राग मिलापः ॥ अथ राग टोडी



रागिनी मधुमाधवी टपा ताल । ३ । नोडे वेवबनदि
नेगमेन । चढवेषो वारिवे राजनन् हरीवे मोह
एणीर् वसनले माडी वोरा । रागिनी मधुमाधवी
टपा ताल । २ । आयानिम भालवो रोजनयार ।
किऊयांतेनयार । हीरनि मानिनकि पकरापी
ह दिल दिऊई ओसार । रागिनी मधुमाधवी ट

गु-म पा नाल ।३। सयाने वेलियावे हरनया वसदे लो
क विगाने । मिडन करदि वारिवे पैयां नापउदी
वे मियां रवकरेन सिमडे आवे नैयनादे ॥ रा
गिनी मधमाधवी टपा नाल ।३। केहा जाउडा
कीना वेदिलउ कदरना जाने दरकदर मियां ॥
वेषनन मसाक जि मेरा इस्क लगामन लीना

दिलन्न । रागिनी मधुमाधवी टपा ताल ।३। व
ल उटकर दीदनयारा मियां । दीदन यारेदा श्याम
दा जांदा मियां । बाग बहारां निवेवेघन वलिए
होमियां मैंडा दिल पारदा वजाव मियां । रागि
नी मधुमाधवी टपा ता-।३। देखणा दिदार जारां
दा परखले परखोयले ख मियां । खोटा खारा प

रा॰म॰ य चोन शोरि मियें सोई गनि मन ईमान प्यारेदा
रागिनी मधुमाधवी टपा नाल ।२। किजालमा
डिवे मियां योकिसदी यारीदाले विसडड़े नाल
न जानें नामन जानें की करवे । मख वेखो नेड़
सोवरी योमैंडियाने जिंदडी दिवानी मैंडा जि
डे ।। रागिनी मधुमाधवी टपा नाल ।। ३ ।।

जाउडाक मालकीनाये । इस्कल गामैडा जीतर
सोराके हाहाल जिगर परवीनावे । रागिनी म
धुमाधवी टपा ताल ।२। कौन गत भई मोरी ग्रा
नना मिलै पिया मोकों । उन विन कल न परत प
ल छिन कैसे रुण विहाय ग्रान मिलै पिया मो
कों । रागिनी मधुमाधवी टपा ताल ।२। मार

ग-म बला कौं छोडि बलावे मजनू इस्क गरीबां कों

मियां ॥ ईयाखुदा यदमनमेरी दाहे फिरयाद

मो मेरी मियां । रागिनी मधुमाधवी टपा ता

ल । १ । खिडनदापरवे लावे भला मियां बेसा

नू चाक चाक जवाबां भांदा कोईवे ॥ ओदानि

योदा माडे चरवे घोगी लगी महबत पाक

३

रागिनी मधुमाधवी टपानाल ।२। झोवेफोला
मन पर चोदियो । ओम लडे दिम माकमोदि वि
न चढ़यो दियो झोवे फोलामें । रागिनी मधुमा
धवी टपानाल ।२। जिंद मोडियारांदेनाल ल
गिवे । ओदा रंग नेजदमें पावांगरे लगावो विन
डिठे ग्रो मेटगी । रागिनी मधुमाधवी टपाना ।२

रा॰म॰ सचि आखी मेरे प्यारे नूं राम किथे वे गारिओ ॥
आप छड जादे वारी नाल मेही दे मठूंड थकेंदी
मैं हारिओ ॥ रागिनी मधुमाधवी टपा नाल ३२
कीना वे करेजा मारदा पारदा राम खोवा । की
धुछदे वारीआ जय दिल वे कारदा होंनो यारि
यों दे नाल गुजारदा । रागिनी मधुमाधवी टपा

४ ४३

ताल ।३। तोरि नगरि आमैं नारहौं गिनेतो अनत
करस भोग । सदारंग रसरंग कराई हमको दी
नी वहुत विरोग । रागिनी मधुमाधवी टपा ता
ल ।२। आज तोरन गाउँ आये पियारवा छरमेरे-
अंग संगरंग लागो प्रवट उगावत गात छिनल
खेपल जपकत आप ठेरे ॥ रागिनी मधुमाध

रा॰म॰ वी टपा ताल ।२। पलक दरे आज मेरा साई। जो
चाहे जगराज कर दोई कर सभ ऊदरन उसि ता
ई।। रागिनी मधुमाधवी टपा ताल ।३।। भई
लीझे वांमरी विन देखेनेकना सहाय ।। जव
ने गमन कीनो विदेश वा भवन भावे कछु
नहिंचा ।। रागिनी मधुमाधवी टपा ताल ।२।

5

मगा मथ मेरे मगोरे यानि सामरे सानी । पगा
मे यैं यैं पगायम यामरे सामरे सानी ॥ सा
रे गामभे मगारे मगामैं याम याम पेप यानी ।
साय साय पगा यरे सदारंग मोरी पकन मानी
रागिनी मधुमाधवी टपा ताल ॥ ३ ॥ पगा
मथरि सानि परे मपगा यरेरे । री समाय हो

रा॰म॰ वैरागिसाथसाथसानीयापमवारे ॥ इतिवा 26

गिनीमधुमाधवीटपासमापनम् ॥ ॥

नाहैं केसीहै सरस्वती अपनी बीणा विषें विग्रहै हस्या
जिसका अर्थात् बीणा बजानमैं इंगी उंगलीयां हो
तीहैं सो एक हाथ प्रेमाहै जिसका ऊर इस विषा के

अग्रहस्तोस्थवीणायो पुस्तकाभयवराविता सरस्व
तीमहैनोमि नारदलेबर्द्धविताम् ॥ २ ॥

आवणीका एक हाथमें वरदे रहीहै और एक हाथमें
पुस्तक लीयाहोयाहै और चौथे हस्थमें निजभक्तोंको
अभयदेरहीहै उनको जो सम प्रकारका भयहै उस

रा॰ को दूरकर रहीहै फिर कैसीहै नारदजी जो भक्तजनों॰
स॰ के शिरोमणिहै और तंबरुजी जो गंधर्वाधिपहै तिन
दोनो करके युक्तहै ॥ २॥ अब जानना चाहीये जो येह
विद्या परंपरा सें चली आतीहै और ऋषिलोक जो॰
महात्मा योगाभ्यासीथे उनोंकीहै जेसें वाल्मीकि जी
ने गाना अर बीणाका बजाना सिखाहै तब अर कु
श जीको उन्होंने श्रवण कराया श्रीरामचंद्र जी को
और भरत ऋषि जी इसी विद्याका अभ्यास करते रहे

३। रागधनाश्री रागिनी मधुमाधवी । ता
ल । हमरी कृपा बिनु कौन उबारै अर्जु
न भीम युधिष्ठिर सहदेव सुमति नकुल ब
ल भारे । केस पकर ल्यायो दुस्सासन राखो
लाज मुरारे । नाना बसन बढ़ाइ दियो प्रभु व

रा॰ ल नंदसुवारे । नगनंन होत चकित भयो राजा
सू॰ सीस फनै करमारे । जापर कृपा करै करुणा
मय को ता की दिसमकै निहारै । जोजोजन
निश्चे करिसेवै हरिप्रभु अपनौ विरदसंभारै ।
सूरदास प्रभु अपने जननिकौं कबहू उरनै

6

ते नतरै ३२ रागबिलावलताल हरि हरि हरि हरिसु
मरनकरो हरिचरणारबिंद उरधरौ हरिपंडुन कौं।
ज्यौं दियोराज अरु पुन गये राजकौंत्याज बहुरोभय
परी छिनराजा तिनको स्राप विप्र सुत साजा सुनि
हरिकथा शुकसौंभयौं सुतसौनकनसौ सोकसौं
कहेसौ कथासुनो चितधारि सुर कहौ भागौत प्र

रा॰
सू॰

तुम्हार ३३ राग विलावल ताल हरि हरि हरि हरि सु
मरन करौ हरि चरणार विंद उरधरौ भारथ जुद्धहोर
नवदीना भयो जुधिष्टिर अतिभय भीना कुल कुल
हत्या मोतैं भई अबधौं कैसै करिहैं दई करौं तपस्या
पाप निवारौं राजछत्र नाहीं सिरधारौं लोगनितिहि
बहुविधि समुझायौ पै तिनहि मन संतोषन आयौ तब

७

हरिकसैं टेक परहरी भीषम पितामह कहसौं क
रैं हरि पांडव रण शुभ सिषाये भीषमदेषि वहुत सु
षपाये हरिकसैं राजन करन परमसुन कहत हवेमै
भ्रातगुन गुरुहत्या मोनैहै आई कहै सकुटै कौनउ
पाई राजा परमभीषम नव गायौ दान अपद पुनि
मोक्ष सुनायौ पैन्दपको संदेहन गायौ नव भीषम

ए· नृपसोयोकसौ परमधरम नदेषि विचार कारन क
सू· रन हार करतार नरके किये कछु नही होइ करता ह
रता आपदईसोई ताको हमर राजा तमकरो अहै।
कार चिततै परिहरौ अहै कार किये लागतपाप हर
स्याम भजमिटै संताप ३१ राग धनासिरी ताल करी
गोपालकी सब होइ जो अपनो पुरुषारथ मानत

8

प्रनि कहोहै सोइ साधन मेत जेत उदम बल पसम
हरोपोइ जो कछु खिलवाषी वेद वेदन सिट सकत
नहीकोइ दुष सुष लाभ अलाभ समुक तमकत
हि मरतहो रोय सूरदास सामी करुणामय स्या
म चरन मनपोय ३५ राग कान्हड़ा ताल होत सजो
रघुनाथ टटी पच पच रहे सिद्ध साध सवत कवकी

रा॰ नवटी जोगी जोग धरत मन अपनै औसिर राषज
सू॰ टी ध्यानधरत महादेवकु अलाविन हूं हैनवटी जपी
तपी तपसा आरधत चारो वेदरटी सूरदास भगवे
न भजनविन कर्मरेषनकटी ३९ राग सारंग ताल
भावीकाहूं मोरटै कहाबडराड़ कहा वहर विससि
आनि संजोगपरै मुनिवसिष्ट पंडत अतज्ञानी रचप

चलगनथरै नाग मरन सिय हरन रामवनवञ्च
रिविपतभरै रावपनजोन कोटने नीसो त्रिभुवन
राजकरै म्हहिं बांथ कूपमै राषै भावीव सुह
मरै अरजुनके हरिहुतो सारथीते ऊ चवनति।
करै द्रुपद सुताके राज सभा दुःसासन चीर चीरै
हरिचंदसोको जगदाता सो घरनीच भरै जोगद्द

र॰ क्वाटिदेस वहुधावैतनज वहसेंगापिफरै भावीकेवस नी
स॰ नलोकहै सवनर देहधरै सूरदास प्रभुरचै सहूहैको
कर सोचमरै ३॰ रागकान्हरा ताल तानैसेर पैजउरा
य सेपनि विपतिने सेपनिदेह धरोको यहै सभार
तरवर फलै परहुवै अपने कालहिपाइ सरवर नी
रभरै फिरडमरै सुषेषेहइ॰ ३१ इति पंच दवाफ

10

नही वाकै चरन चरन चरन्जाइ सूरदास संपदा आ
पदा जिन कोउ पनि पाइ ३८ राग मलार ताल ३
हिं विपकह्यौ चहै गोतेतेरो नंद नंदन कर चरकोटा
कर आपनहूं रहेचेरो कहूभयौ जौ संपत वाको
कियो बहुत चरचेरो कहूं हरिकथा कहूं हरिस
जा कहूं संतनकोडेरो जो वनिता सुत जूथ सेकेले

रा॰ हयगायरयथि ढनेरो सवनन सुमरो सुरसाम गु
सू॰ नयह साचो मनिमेरो ३९ रागसारंग नाल भक्तव
छल श्रीजादवराइ भीषमकी परनज्ञाराषी अप
नेबचन फिराइ भारतमांहि कथायह विस्तन करि
नहोइ विस्तार सुरभक्त वछलनावरनो सर्वकथा
कौसार ४० रागसारंग नाल भक्तवछलता अग

टकरी सनसंकल्प वेदकी अस्नाजनके कारन अ

हरकरी भारतादि दुरजोधन अर्जुन भेटनगये ह

रकाछरी कमलनैनपौडे सुषसिजावैट्या रथपार

नरी प्रभुजागे अर्जुन ननविनयो कवआये नम

उसमलखरी नापाछै दुरजोधनभेटो सिरदिसतेम

नगवेयरी उहूं मनो रथ अपनो भाष्यो नवश्रीपन

रा. सू.

वानी उचरी जबहनकरो सबनहि पकरों पकऔरसे
नासिगरी हरि प्रभाव राजानहौ जान्यौ कसौं देह
मोहसैनहरी अर्जुन कसौं जानसर नागनि कृपा
करौ ज्यौ एरवकरी निजअग्राइ राइभीषम सौकही
जबते हरिउचरी सूरदास भीषम परनिरा सख
लिवाऊं पैजकरी ५। राग धनासिरी ताल मैब

12

छिरकौ भूतलगाइ सुनोपितामह भीषम मम
गुरुकौहै कौन उपाय उन अर्जुन गुरुभीषम पे
दुखुजनगहे कर बानगंभीर इनहिकरन द्रोन भूरि
श्रवाजम सैनापतिधीर जेजेज्ञानपरनते भूतल
ज्यौ ज्वालागतिवीर कौनसहाइ जानिइतना
ही होतनवीरनरवीर जवनोसौ समफारकरही ।

रा॰ त्पनवनैनकरी नकान पावक किरवरून सव
स॰ ही दलवल सुमेरसमान अवगाति अवनासी ध
धरमोनम होकताथ किंकान अवजेकरू पार
थजो वेदैपेतीन लोक श्कवान अनङ्गसमक क
दैं करि मेरो कतनपसारैवाह कहैनाहि कोसरव
र शजै अभुपारथ होऊ मोहि अवनो सुरसरनक

13

ग्रायौ ईश्वजायसदीजै नेहिहिनैंरहै त्रिवियनिमै गोव
है मनोकिछुकीजै ५२ राग मलार ताल थ्राजहै
हरिहीन सबगहाऊं तौलाजौ गंगाजलनीनीकौ
सोतनसतन कहाऊं संदनषेरि मयारपियेषेउँ क
पियज सहिहितेतुलाऊं रतनी समसोहि हरिकौब
त्री गतहिनपाऊं पंडवदल सन सुषदैपाऊं सलिला

रा· रुधिरबहाऊं खपरदास नरखप्पर विजय वितुजयत
रं· नपीरदरिखाऊं धत्र रागमारू नाल खरसरी सवन
रनभूमआप वान वरषालगे करन अनिक्रोपहैं
पारथ श्रीसाननव सवभूलाये कहीं करकोप
प्रभु अवअनितान जोनही नोसारजप हमहरा
प हारप्रभु भक्तवत्सल विरदआनि उरनाहि या

14

विधिवचन कहिसुनाए ४४ राग विलावल ना
ल हमभक्तनिके भक्तहमारे सुनि अर्जुन परति
मेरी यहव्रत टरतनटारे भक्तनकाज लाजहि
य धरिकै पाइपयादेधाऊं जहंजहं भीरपरे भ
क्तनकौं तहंतहं उठिधाऊं जोभक्तनसो वैर
करतहै सोनिजवैरीमेरो देषिविचार भक्तहित

रा कारनरुप हाकरनहोंनेरो जीनेजीन भक्त अपने
स के हारेहारि विचारैं सूरदास सनभक्त विरोधीचक्र
सुदरसनमारैं ४५ राग सारंगनाल गोविंद को
प चक्र करलीनो छांडि आपनो प्रनजादव प
तिजनकोभायोकीनो रथते उतर अवन आतुर
है चलेचरन अतिधाये मनुमेंकिन भव भार ३

उनारन चपलमप ग्रजलाप कलुक श्रंगाले उउन
पीनपट उञ्जन वाङ्विलास सेदस्रवनन सोभा
कनक्कविच्छनवरषति मनुलाल सरस भुजास
मेन सदरसन देषिविविविधभ्रम्यौं मानौ ग्रान स्रु
हिकरिवेको श्रेवुन नामनम्यौ ४८ राग मला
रमाल वरमेरी परनिसाजाउ रनपा रषाकोष्यौ

ग
स्र

है हमपर उनभीषम भटवाउ रथाने उनरथचक्र क
रथनि प्रभु समटहि सनमुषआये जोंकेदवने निक
सौ सिगकुकराज जोधानपरिपाप आइ निकट
श्रीनाथविचारी परीनिलक परदीदि सौनल
भई चक्रीज्वाला हरिहसिदीनि पीटि जय जय
जयविंना मनसामी स्वोनन हनपोभाषे नम।

बिनयैसो कौन हमारो जो मेरो अपराधै साधुसा
धु सरहरी सबननमसै अनला गऽराके सुजनदा
स भक्तदोष हिसकापर चक्रचलाके ४९ राग धना
सिरी नाल कहो पिअमोसो सोई सनभाव जोते
उरनोधन दलजीतो किहि विधि कौन उपार
नवलग जिय श्रेनर चरितमेरेको सरवरकारिपा

ग॰ पावै चिरंजीवबजोलौ दुरजोधनजियतनन पक
स॰ रहिआवै कौरवबनाइ भूमिपरकैसे भुवरपर भूप
कहावै नौहमकछु नवसार पारथजो श्रीपतिनो
हनिवायै श्रवमै सरननो हनक आयौ मोहिमे
त्रकछुदीजै नातनरकटेव सैनसंघरकर कौंनका
जकौंदीजै द्रुपद कुमार सोरन्नमआगैं पठ्ठषगाहै

17

नमषान धजावैठि हनुमंनकलगाजै प्रभुहरिके

किक्यान केनकजीव हूपनममवप्नरोननजै का

लहूयान स्वरूपकरी वानविरजै श्री गोपालकी

श्रान ४८ रागसारंग ताल पारथ भीमसों मन

पार किपौसारथी सिषंडीश्रार भीषमनाहि दे

खिमुषफेसौ पारथ नाप हेनरथपरसौ कियोजह

ग॰ अवहौंविकरार लागीचलन हथरकीधार भीष
सू॰ मसरसज्या परपरौ पेदक्षिनायनलषि नहिमरौ
हरिपंडव समेत तहांआप स्रवतअश्रु भीषम मन
भाए ५९ राग सारंग ताल हरिसौं भीषम विन
यदुनाथ कृपाकरी तम जादवराइ भारतमै मेरे
प्रनराषौं अपनोकहौं हठकरनाषौ तमविन य

18

भु ऐसौ कौं करै जो भक्तन के बस अउ सरै नवद स
सन सुर नर मुनि दुरलभ मोकौं भयौ सुग्रन हीस
लभ हरन हीं गोविंद बलहरकाल सुरकृपा की
नै बलगोपाल ५५ रागसारंग नाल गोविंद ग्र
वन हरखहरकाल दीनानाथ देवकीनंदन भक्त
वछल गोपाल मेभीषम नमहल सारथी कि

स॰ थे पीतपटलाल बंद्रनसनाहू सुमरसारथेथे कन
सू केवेलिज्यौंनाल तुमरेचरन कमलमेरौं मस्तकनला
कौसरजाल सूरदास जनजान आपनौ देहु अभय
कौमाल ५। रागमलार नाल बाधन पीनकी फ
हगन करयरवज्र चरनकी याववनही विसरत वर
वान रथ्यौ उतर श्रवन आनरहै कचरजकीलप

दान मानोसिंघसैलतैं निकस्यौंमहामत्तगजराजना
न जिनगोपालमेरो प्रनराख्यौ मेटिवेदकीकान
मेरीहरसहारहू मारै निकसभयैहैप्रानि ।५२ राग
सारंगताल भीषमपरि हरि कोउरध्यान हरिकेद
षत तजेपिरान नासक्रियाकरि सब द्वरआप राजा
सिंघासनवैठाय हरिपुनि द्वारावतीसिधाय हरदा

रा. स हरिके गुनगाये ५७ रागकान्हरा ताल धर्मपुत्र
सू. को दै हरिराज निजपुरचलवेको कियौसाज न
बकैं नाविनती उचारी हमतो कृपाकरि कुलगुरा
री जब जब हमको विपदापरी तब तब तुम सहा
प्रभुकरी तुमतैं विमुष राजकेहिं काम सूर विना
ये हमैं नस्याम ५८ राग कान्हरा ताल प्रभुजीविष

20

दा भलीविचारी पिमयह् राज विभव वरनलिनै ।
कहूनपंडुकीनारी लाषामंदर कौरव रचियो न
होराषी वनवारी दुरजोधनकी सभाद्रौपदी ग्रेवर
दपउवारी अनिष सहित विषआपन आयो सोक
भयो जिपभारी खलसागानै त्पनकिये सवक
हिन अपदादारी परनिसा प्रहलादकीराषी श्रीन

रा· रहतिबहुधारी सोर सोरसहारहृमारो संतनको हि
सू· तकारी ५५ रागबिलावल ताल ऊरपतिजौं वनग
वनकियौ धरम सवन विरकयौभयौ वरनि सना
ऊना अनुसार सूनकहो जैसैंपरकार भारतादि ऊ
रपतिकीआज्ञा चलीपंडुवन राजबैठार ऊरपति
कसौं धानसमघार पंडुसुतनकी करनसहार या

कोसोनेदेइ निकार बहुरनआवै भेरेद्वार विडरसब
सवनहीउनार चलैा नीरषन शंउउचार भारनकौं
वीतें छुनिआयैा लोगन सुन सुनोन सुनायो नव
रबैा उरपनि हैकहो कसौंपेउ सुन मेदरजहो गा
जासेव भलीविपि करन दिनप्रति सुषसंपति न
हेरहन विडरकहै देषौहमिमाया जिनयह सक।

ग॰ ल लोकभरमाया तिहिं हरिकृपा करिसोब्र

स॰ ह्मैं इहिमाया सब लोगन लोह्यौ जाके१३

पकसौंतुप तिनैविसार सघीघवड़वै श्रवमेउ

नकौं ज्ञानघनाचौ तिहिं तिहिं विधिवैराग३

णचौ वड्हरोपम १३पैश्रायौ राजादेषि बड़नघ

षायौ करासनमान करौंयाभारे करी ह्मा

री बहुत सुहाई लाखागृहनैं जरनउवारे अनवा
लापनते अति प्यारे कौन कौन गौरव्य फिरआप
विदुर सकल सुनोंन सुनाय बहुरकसौं हरि स
रिपाई कहौंन कबहुरसौं सिरनाई बहुरें कौ
रव पतिफिरिआई समाचार सबकौं सुषदारक।
यौं जुधिष्ठिर सेवाकरन लागेबहुत आनंदनर

रा॰ हन कहैगुरु सुपिआवन कबही कहौंभाति रे
सं॰ कैवसमवही विडरकर्यों सनगुरु नमारे पोउसून
न सबही संघारे तिनके बरनम भोजनकरन श्र
मपुनि कहहनसबी हमरहन पिगनम पिगया
कहिवेउपर जीवन रहिहौ कौलगि भूपर स्वा
ननलपैहै वधनमारी न्हरनकाज सहिन ७॰ख

23

भारी द्रुपदीके नमबसन कुशप यहिनम रा
न बढ़न उषपाये इनकेग्रह नमबढ़ सषमान
न अतिनिलजकौं लाजन आनन । जीवन
आस अवल नमलेषी साक्षानसो नमभैदेषी
काल अगनिसबहीं जगनारन नमकेसै ।
जीवन नविचारन आइनमारी राईसितार व

ग॰ नवलिभजौ हारकाचार उरपतिकसौं श्रेपहम
सं॰ दोर वनमै भजन कौनविधिहोर विडरकसौं।
सेवामै करिहौं सेवाकरन नैकनहीटरहौं श्रर्प
निसातिनकौ लैगयौ ध्यानभयैन्रूप विसेभ।
यौ हरिसुयैकैकहे उरिगाय तिनकोनाप न्रूप
नवद्धनये उहेजार उरपति वलजोग दियौका

उननकै संजोग गांधारी सहसगामिनिकियौ
विदुरभक्त तीरथ मगलियौ इहिं श्रेनर नारद
रहेंप्रायौ रूपकेमन उपजौवैराग भजौ सुर
प्रभु प्रवसब त्याग ५९ । इति सूरसागरी प्र
थमाध्यायी परिच्छेदः ॥

रा
स्तः

25

रा॰ ॐ श्रीरामचंद्राय नमः अथ तुलसीदास कृत रामायण

नि स ग रे ग म ग रे स रे ग रे

रा॰स लिखते सोरठा ता॰३ जिह सुमिरत सिद्धि होय गण नायक

स नि प ग रे स ग म प नि स रे स नि प प म

कवि वर वदन करो अनुग्रह सोइ बुद्धि राशि शुभ गुण

ग रे स नि स ग रे ग म ग रे स नि प ग रे स

सदन । मूक होइ वाचाल पंगु चढै गिरिवर गहन ।

ग म प नि स रे स नि प प म ग रे स नि

जासु कृपासु दयाल द्रवै सकल कलिमल दहन । ॐद

रेउ मम देह उमा रमन करुना अयन। जाहि दीन पर ने
ह करो कृपा मर्दन मयन। बंदो पवन कुमार खल बन
पावक ज्ञान घन। जासु हृदय आगार बसहि राम सर
चाप धर। नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारिज नयन
करो सो मम उर धाम सदा क्षीर सागर शयन। बंदो गुरु

रा
सं॰न

पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि। महा मोह तम पुंज जासु बच
न रबि कर निकर। चौपई बंदौ गुरु पद पद्म परागा। सुरुचि
सुबास सरस अनुरागा। अमिय मूर मय चूरण चारू। शमन
सकल भव रुज परिवारू। सुकृत शंभु तन विमल विभूती।
मंजुल मंगल मोद प्रसूती। जन मन मंजु मुकुर मलहरणी।

किये तिलक गुण गण वश करणी । श्रीगुरु पद नख मणि ग
णज्योती । सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती । दलन मोह तम सो
सुप्रकासू । बडे भाग्य उर आवहि जासू । उघरहि विमल विलो
चन हियके । मिटहि दोष दुख भव रजनीके । सूझहि राम
चरित मणिमाणिक । गुप्त प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ।

रा दोहा यथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान। कौतुक
स·ह देखहि सैल बन भूतल भूरि निधान। चौपई गुरु पद रज मृदु
मंजुल अंजन। नयन अमीय दृग दोष विभंजन। तेहि करि
विमल विवेक विलोचन। बरनउ राम कथा भव मोचन। बंदौं प्र
थम महीसुर चरना। मोह जनित संसय सब हरना। सुजन

२नि २सं नि २ध २प २म ग म ध नि २सं नि ध प म म ध नि

समाज सकल गुन खानी। करौ प्रनाम सप्रेम सुबानी। साधु स

२सं नि ध प म प म ग म ध नि २सं नि ध प म ग

रस सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुन मय फल जासू।

म ध नि २सं नि ध प म ग म ध नि २सं नि ध प म

जौ सहि दुख पर छिद्र दुरावा। वंदनीय जेहि जग जस पावा।

म ध नि २सं नि ध प म ग म ध नि २सं नि ध प म म

मुद मंगल मय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथ राजू। राम

ध नि २सं नि ध प म ग म ध नि २सं नि ध प ध प म म ध

भगत जहं सुर सरि धारा। सरस्वती ब्रह्म विचार प्रचारा। विधि

रा०   निषेध मय कलिमल हरनी। करम कथा रवि नंदनि बरनी। हरि
रा०म   हर कथा विराजति बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी। बट
विस्वास अचल निज धर्मा। तीरथ राज समाज सुकर्मा। सबहि
सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा। अक
थ अलौकिक तीरथ राऊ। देय सद्य फल प्रगट प्रभाऊ।

दोहा सुनि समुझहि जन मुदित मन मज्जहि अति अनुराग। लहहि
चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग। चौपाई मज्जन फल पेखि
य ततकाला। काक होइ पिक बक उमराला। सुनि आचरज करै
जनि कोई। सत संगति महिमा नहि गोई। बालमीक नारद घटजो
नी। निज निज मुखनि कही निज होनी। जलचर थलचर नभचर

रा॰ नाना। जेजड़ चेतन जीव जहाना। मति कीरति गति भूति भलाई।

रा॰स जब जिहि जतन जहां जिहि पाई। सोजानब सत संग प्रभाऊ।

लोकहु वेदन आन उपाऊ। बिनु सत संग बिवेक नहोई। राम

कृपा बिन सुलभन सोई। सत संगति मुद मंगल मूला। सोइ फ

ल सिधि साधन सब फूला। सठस धरहि सत संगति पाई। पार

२ध २नि २सं २नि २सं २रे २रे २सं २ग २रे २सं २नि २ध २नि २सं २रे २सं २ग

स परसि कुधातु सुहाई। बिधि बस सुजन कुसंगति परही। फ

२म २ध २नि २सं २नि २सं २रे २रे २सं २ग २रे २सं २नि २ध २नि २सं

नि मनि सम निज गुन अनुसरही। बिधि हरि हर कबि कोबिद

२रे २सं २ग २म २ध २नि २सं २रे २रे २सं २ग २रे २सं २नि २ध २नि

बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी। सो मो सन कहि जात न

२सं २म २ध २नि २सं २नि २सं २रे २रे २सं

कैसें। साकब निकम निगन गुन जैसें। दोहा बंदौ संत समान

चित हित अनहित नहि कोइ। अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम

रा

रा॰स

सुगंध कर देइ। संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेह।

बाल विनय सुनि करि कृपा राम चरन रतिदेहु। चौपई बहुरि बं

दि खल गनि सति भाये। जे विनु काज दाहिमेहुवाये। पर हित हा

नि लाभ जिन्हकेरे। उजरे हरष विषाद वसेरे। सुनत कहत पर

श्रवन श्रवाही। ज्यौं इत्यु शेष सहस जग माही। हरि हर जसराके

6 ६

सराहुसे। पर अकाज भट सहस बाहुसे। जे पर दोष लखहि सह

साखी। पर हित घृत जिन्हके मनमांखी। तेज कृसानु रोष महिषे

सा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा। उदय केत समहित सबहीके

कुंभकरन सम सोवत नीके। पर अकाज लगितनु परिहरही। जि

मि हिमि उपल कृषी दल गरही। बंदौ खल जस सेष सरोषा। स

रा० हंस बदन बरने परदोषा॥ पुन प्रनवौं पृथुराज समाना।प
रा०स र अघ सुने सहस दश काना। बहुर सक्र सम विनवौं तेही।
संतत सुरानीक हित जेही॥ वंदौं जग नर सक्र समाना।क
रहि उपाय कार्य जेहि हाना॥ वचन वज्र जेहि सदा पियारा।
सहस नयन पर दोष निहारा॥ दोहा॥ उदासीन अरि मीत

७

हित सुनत जरहि षल रीति। जांनि पांनि जुग जोरि जन
विनती करइ सप्रीति। चौपई। मैं अपनी दिस कीन नि
होरा। तिन निज ओर न लाउब भोरा। वायस पालहि
अति अनुरागा। होहि निरामिष कबहु कि कागा। बद
नौ संत असजन चरना। दुष प्रद उभय बीच कछु बर

रा॰ ना॥ बिछुरत एक प्रान हरि लेही। मिलत एक दुख दारुन

रा॰स न देही। उपजहिं एक संग जग माही। जलज जोंक जि

मि गुन बिलगाही। सुधा सुरा समसाधु असाधू। जन

क एक जग जलधि अगाधू। भल अन भल निज निज

करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती। सुधा सु

8 ८

धा कर सुर सरि साधू। गरल अनल कलमल सर ब्या
धू। गुन अव गुन जानत सबकोई। जो जेहि भावनी क
ते हि सोई॥ दोहा॥ भलौ भलाई पै लहै लहै निचाईनी
च। सुधा सराही अमरता गरल सराही मीच॥ चौपई
खल अघ अगुन साधु गुनगाहा। उभय अपार उदधि

रा॰ अव गाहा। तेहिते कछु गुन दोष बषानैं। संग्रह त्याग
रा॰म नविन पहिचानैं। भलेउ पोच सब बिधि उपजाए गनि
गुन दोष वेद बिलगाए। कहहि वेद इति हास पुराना।
बिधि प्रपंच गुन अव गुन साना। दुख सुख पाप पुएप
दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती॥ दानव दे

व ऊँच अरु नीचू। अमि अमर जीवन माहुर मीचू॥ मा
या ब्रह्म जीव जग दीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा।
कासी मग सर सरि क्रम नासा। मरु मालव महि दे
व गवासा। स्वरग नरक अरु राग विरागा। निगम
अगम गुन दोष विभागा॥ दोहा॥ जड़ चेतन गुन दो

रा॰ ष मय विश्व कीन्ह करतार। संत हंस गुन गहहिं पय प
रा॰स रि वारि विकार। चौपई॥ अस विवेक जब देइ विधाता।
तब तजि दोष गुनहि मन राता। काल सुभाव कर्म बरि
आई। सोउ धरि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष वि
मल यश देहीं। खलउ करइ भल पाइ सुसंग। मिटहि न

१०

मलिन सुभाव अभंगू। लखि सु वेष जग वंचक जेऊ। बे
ष प्रताप पूजियत तेऊ। उघरहि अंतन होय निवाहू। का
ल नेमि जिमि रावण राहू। कियेकु वेष साधु सनमानू।
जिमिजग जामवंत हनुमानू। हानि कुसंग सुसंगति
लाहू। लोकहु वेद विदित सब काहू। गगनचढै रज

रा॰ पवन प्रसंगा। कीचइ मिलइ नीच जलसंगा। साधु असा
रा॰स॰ धु सदन सुकशारी। सुमिरहि राम देहि गणगारी ॥
धूम कुसंगति कारिख होइ। लिखिये पुराण मंजुमसि
सोई। सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जगजीव
नदाता। दोहा। ग्रहभेखज जल पवन पटपाइ कुयोगसुयोग

होइक्क बस सबस जग लखहिं सुलछलएलोग। सम प्र
काश तम पाखन्ड नाम भेद विधि कीन्ह। शशिपोषक
शोषक समझि जगयश अपयश दीन्ह। जड़ चेतन जग
जीव जन सकल राममय जानि। बंदौं सबके पद कम
ल सदा जोरि जुग पानि। देवदनुज नरनाग खग प्रेत।

रा॰ पितर गंधर्व। बंदौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व

रा॰स चौपई॥ आकर चार लाख चौरासी। जाति जीव जल थल

लवासी। सिया राम मय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि

जुग पानी। जानि कृपा करि किंकर मोहू। सब मिलि

करहु छाडि छल छोहू। निज बल बुद्धि भरोस मोहि ना

हीं। तातें बिनय करउं सब पाहीं। करण चहौं रघुपति

गुणगाहा। लघु मति मोरि चरित अव गाहा। सूझ न ए

कौ अंक उपाऊ। मन मति रंक मनो रथ राऊ। मति अ

ति नीच ऊंच रुचि आछी। चहिये अमिय जग जुरै न

छाछी। छमिहहिं सजन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बा

रा· लबचन मनलाई। जौंबालक कहतोतरि बाता। सुनहिं
रा· स· मुदित मन पितु अरु माता। हंसिहहिं कूर कुटिल बि
चारी। जेपर दूषण भूषणधारी। निजकबित्तकेहि ला
गन नीका। सरस होउ अथवा अति फीका। जेपर भ
णित सुनत हरषाहीं। तेबर पुरुष बहुत जग नाहीं।

जग बहु नर सरि सर सम भाई । जे निज बाढ़ि बढ़हिं ज
लपाई । सज्जन सकृत सिंधु सम कोई । देखि पूर विधु बा
ढ़हिं जोई ॥ दोहा ॥ भाग छोट अभिलाष बड़ करउं प
क विस्वास ॥ पैहहिं सुख सुनि सज्जन जन खल करिहैं
उपहास ॥ चौपई ॥ खल परि हास होइ हित मोरा । काक

रा॰ कहहिं कल कंठ कठोरा। हंसहिं बक दादुर चातकही।
रा॰ स॰ हंसहिं मलिन खल विमल बतकही। कवित रसिक न
राम पदनेहू। तिन्ह कहं सुखद हास रस येहू। भाषाभ
णित मोरि मति भोरी। हंसिवे योग हंसे नहि खोरी॥
प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहिं कथा सुनिला

१४

लहि फीकी। हरिहर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहं मधुर कथा रघुवरकी। रामभक्ति भूषित जियजा नी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुवानी॥ कवि न होउं न हि चतुर प्रवीना। सकल कला सब विद्याहीना। आखर अर्थ अलं कृत नाना। छंद प्रबंध अनेक विधाना॥

रा॰ भाव भेद रस भेद अपारा। कवित दोष गुण विविध प्र
रा॰स कारा। कवित विवेक एक नहि मोरे। सत्य कहौं लिखि
कागद कोरे॥ दोहा॥ भणित मोरि सब गुण रहित वि
श्व विदित गुण एक। सो विचारि सुनिहहिं सुमति जि
न्हके विमल विवेक॥ चौपई॥ इहिंमह रघुपति नाम

15 १४

उदारा। अति पावन पुराण श्रुतिसारा। मंगल भवन
अमंगल हारी। उमासहित जेहिजपु त्रिपुरारी। भणि
त विचित्र सुकवि कृतजोऊ। राम नाम बिन सोहन
सोऊ। विधुवदनी सब भांति सवारी। सोहन बसन वि
ना वरनारी। सबगुण रहित कुकवि कृत वानी। राम

रा॰ नाम यश अंकित जानी। सादर कहहिं सुनहि बुधताही

रा॰स॰ मधुकर सरस संत गुण ग्राही। यदपि कविन गुण एको

नाही। राम प्रताप प्रगट इहि माही। सोइ भरो समोरे मन

आवा। कोन सुसंग वड पन पावा। धूमोनजे सहज करु

आई। अगर प्रसंग सुगंध वसाई। भणितभ देस वस्तु भ

16 १६१

लि बरणी। राम कथा जग मंगल करणी ॥ छंदः॥ मं
गल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ
की। गति कूर कविता सरित कीजैं परम पावन पाथ
की। प्रभुसु यश संगति भणित भलिहो इहि सुजन मन
भावनी। भव अंग भूति मसानकी सुमिरत सुहावन पा

रा॰ वनी । दोहा । प्रिय लागहि अति सबहि मम भणित राम

रा॰स॰ यश संग ॥ दारु विचार कि करइ कोउ वंदिय मलय प्र

संग । श्याम सुरभि पय विशद अति गुण दक रहि नेहि

पान । गिरा ग्राम्य सिय राम यश गावहि सुनहि सुजान ।

चौपई ॥ मणि माणिक मुकुता छवि जैसी । अहि गिरि ग

17

ज शिर सोहन तैसी। नृप किरीट तरुणी तनु पाई। लहहिं
सकल शोभा अधिकाई॥ तैसहिं सकवि कवित बुध क
हहीं। उपजहिं अनत २ छबि लहहीं। भक्ति हेतु विधि भ
वन विहाई। सुमिरत शारद। आवति धाई। राम चरित
सर बिनु अन्हवायें। सोश्रम जाइन कोटि उपायें॥क

रा॰ विकोविद अस हृदय विचारी। गावहि हरि गुण कल
रा॰म मल हारी। कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना। शिरधुनि गि
राल गति पछिताना। हृदय सिंधु मति सीप समाना।
स्वाती शारद कहहिं सुजाना। जोबरषै वरवारि विचा
रू। होहिं कवित मुकुता मणिचारू। दोहा॥ युक्ति वेधि

श्रुति पोहिये राम चरित वरनाग। पहिरहिं सज्जन विम
ल उर शोभा अति अनुराग। चौपई॥ जोजनमे कलिका
ल कराला। करनव वाय सवेष मराला। चछ्छत कुपंथ
वेद मग छाडे। कपट कले वर कलि मल भांडे। वंच
क भक्त कहाइ रामके। किंकर कंचन कोह कामके।

रा. तिन महं प्रथम रेख जग मोरी। धिक धरम ध्वज धंधक धो
रा.स. री। जो अपने अवगुण सब कहऊं। बाढ़ै कथा पार नहि
लहऊं। ताते मैं अति अलप बखाने। थोरे महं जानिहहिं
सयाने। समुझि विविधि विधि विनती मोरी। कोउन क
था सुनदे इहि खोरी। एतेहु पर करिहहिं जे शंका। मोहि

ते अधिकते जडमति रंका। कविन होऊं नहिचतुर कहा
ऊ। मति अनु रूप राम गुण गाऊं। कहांरघुपतिके चरित
अपारा। कहांमति मोरि निरत संसारा। जेहि मारुत गि
रि मेरु उडांहीं। कहहु तूल केहि लेखे मांहीं। समुझत
अमित राम प्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई ॥

रा. दोहा ॥ सारद शेष महेश विधि आगम निगम पुरान । ने
रा.स. ति नेति कहि जासु गुण करहि निरंतर गान ॥ चौपई ॥
सब जानत प्रभु प्रभुता साई । तदपि कहे बिनु रहा न
कोई । तहां वेद अस कारण राषा । भजन प्रभाव भांति
बहु भाषा । एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानं

२० २.

द पर धामा। व्यापक विश्व रूप भगवाना। तेइ धरि दे
ह चरित कृत नाना॥ सो केवल भक्त नहित लागी। पर
म कृपालु प्रणत अनु रागी। जेहि जन परम मता अछ
छोहू। जेहि करुणाकर कीन्ह न कोहू॥ गई बहोरि ग
री वने वाजू। सरल सबल साहिब रघु राजू॥ बुध ६

रा॰ वरनहि हरियश असजानी। करहिं पुनीत सफल निज
रा॰स॰ वानी। तेहि बलमैं रघुपति गुण गाथा। कहिहौं नाइ राम
पद माथा। मुनिन्ह प्रथम हरिकीरति गाई। तेहिमग च
लत सुगम मोहि भाई॥ दोहा॥ अति अपारजे सरित व
रजो न्रुप सेतु कराहिं। चढ़ि पपीलिका परम लघु विनु

21 २१

श्रम पार हि जाहिं ॥ चौपाई ॥ एहि प्रकार वल मनहि द
ढाई । करिहौं रघुपति कथा सुहाई । व्यास आदि कवि पुं
गव नाना । जिन्ह सादर हरि चरित वषाना । चरण कम
ल वंदौं सबकेरे । पुरबहु सकल मनोरथ मेरे । कलि
के कविन करौं परणामा । जिन वरने रघुपति गुण ग्रामा ।

रा॰ जे प्राकृत कवि परम सयाने। भाषाजिन्ह हरि चरित बषाने
रा॰स॰ भये जे अहहिं जे होइहैं आगे। प्रणउं सबहिं कपट छल त्या
गे। होउ प्रसन्न देहु वरदानू। साधु समाज भणित सनमा
नू। जो प्रबंध नहि बुध आदरहीं। सो श्रम वादि बालक वि
करहीं। कीरति भणित भूति भलि सोई। सुरसरि सम स

२२ २२

व करहं हित होई। रामसुकीरति भणित भदेसा। असमंज
स अस मोहि अंदेसा॥ तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे। सि
अनि सुहा वनि टाटपटोरे। करहु अनुग्रह अस जियजा
नी। विमल यशहिं अनु हरहु सुवानी। दोहा। सरल क
वित कीरति विमल सोइ आदरहि सुजान। सहज बयर

रा॰ विसराइ रिपु जो सुनि करहि वखान ॥ सो न होइ विनु विम
रा॰स॰ ल मति मोहि मति बल अति थोरि । करहु कृपा हरि यश
कहौं पुनि पुनि करहु निहोरि । कवि कोविद रघुवर चरित
मानस मंजु मराल । वालविनय सुनि सुरुचि लखि मो पर
होहु कृपाल ॥ सो. बंदौं मुनि पद कंज रामायण जिन निर्मयो

सखरस कोमल मंजु दोष रहित दूषण सहित। बंदौं चारौ
वेद भव वारिधि वोहित सरस। जिन हिन सपनेहूं खेद व
रणत रघुपति विशद यश। बंदौं विधि पद रेणु भवसा
गर जिनकीन यह। संत सुधा शशि धेनु प्रगटे खल विष
वारुणी। दो०॥ विबुध विप्र बुध गुरु चरण वंदि कहौं क

रा० रजोर। होइ प्रसन्नपुर बहु सकल मंजु मनो रथमोर॥
रा०स० चौपई॥ पुनि बंदौं शारद सुर सरिता। जुगल पुनीत मनो
हर चरिता। मज्जन पान पाप हर एका। कहत सुनत इक
हर अविवेका। गुरुपितु मातु महेश भवानी। प्रणऊं दी
दीन बंधु दिन दानी। सेवक स्वामि सखा सियपी के। हित

24 २४

निरुपध सब विधि तुलसीके। कलिविलोकि जग हित
हरि गिरिजा। शावर मंत्र जाल जिन सिरजा। अन मि
ल आखर अरथन जाषू। प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू।
सोमहेश मोपर अनुकूला। करौं कथा मुद मंगल मू
ला। सुमिरि शिवा शिव पाइप साऊ। बरणौ राम चरित

रा॰ बरणौं रामचरित चितचाऊ। भणित मोरि शिव कृपा वि
रा॰स॰ भाती। शशि समाज मिलि मनहु सुराती। जोयह कथा
सने हसमेता। कहिंहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता। हो
हिहहिं राम चरण अनुरागी। कलिमलि रहित सुमंग
ल भागी॥ दोहा॥ सपनेहुं सांचहु मोहि परजो हर गौ
रिप साउ। तौफुर होउ जो कहउं सब भाषा भणित प्रभाउ॥ इति भैरव रागस्य रा
मायण परिच्छेदः॥ ❀ ॥

अथ कलिहांतरिता रागिनीटोडी नायकाप्रकरण

म ॥ दोहा ॥ कहा न माने कंत को फिर पाछे पछि

य । कलिहांतरिता नायिका ताहीं कहत कविरा

य ॥ सवैया राग भैरव ताल चार ॥ आदि निरादर

के पति कों अब काहिकों कीनेहैं लोचन राते । इ

तिध्यायी । रोकि रही कर पल्लव सों रघुनाथ म

रा-टो-

साडुखु पावति ताते। इत्यंतरा। रोस हिंकोवस जा

न्यैं भलैा कारि कूटि लराई लैैं नित काते। दैव

हते जिन की नही मानत आपस कों उपजे सव

जाते। अथ परकीया कलिहांतरिता सवैया रागि

नी टोडी माल॥१॥ जांके लिये पति कों लघुता भई

जांके लिये सिर कालिमा लीनी। इतिस्याडे। थीरा॥

मोहरी खरी पल छिन सखव दैंन॥इति श्रंतरा॥

छाद रह्यो बङ्गदेस उमैं कैह्यो सखव संदेस भिरम

रह्यो तिर्या के संग चतभंज चतुर गुए निधान ज

गजीवन जगत प्राए प्यारा मिले सखव दैंन॥इत्या

भोगः। कवित्त राग भैरव ताल। चारा। ज्यौं ज्यौं घन

घूमे त्यौं त्यौं लोटै बाल भूमैं लागी विरहों की भ

टा॰टी॰ मैं औ अनन नन जाह्यो है। टेर की किला की यिं
उं चला की चंचला की कछू राघतना वाकी नैक
नैंन ना उघाह्यो है। और अवला की रहि एक दो
उपला की सों नंद के लला की ड्राव जात ना उचा
ह्यो है। यायो भुरवा को तैसो पौन घुर वाको वैसो
बोल मुरवा को उरवाको ज्वर जाह्यो है॥ अथ म

प्री॰ २

ग्या प्रोषित पतिका लक्षणम्। सवैया रागिनी टोडी

ताल तीन। व्यापत है अनहीं दुख दीरघ नैक सखी

जन कौंन जनावै। इतिस्थायी। साजति सेज सवारनु

की रघुनाथ ना लाज पै सोवन पावै। इत्यंतरा। आ

वत हैं लगरो भरिके नउ मास भरे आसं नहि आ

वै। चंद्र सखी ज संताप सहे सभ जानत सो ज म

रा॰टी॰ नीज मनावे ॥ इति प्रोषितपतिका वर्णन समाप्तः ॥

3 प्रो॰ ३

अथ प्रवासिक प्रेयसी नायिका वर्णनं दोहा रागि
नी टोडी ताल ।३। होन हार पिया को विरह विक
ल होइ जो बाल। ताही प्रवासिक प्रेयसी वर्णन
बुद्धि विशाल। अथ मुग्धा प्रवासिक प्रेयसी सवै
या रागिनी टोडी ताल ।४। बातकछू चलि वेके लि
यौं पियाने हरिनी हरा सों अनुसारी। इतिस्याई ॥

रा॰टो॰

चंद्र मुखी सुख नाहिरह्यौ सुनि के रघुनाथ भयो
दुख भारी। इतिश्रंतरा। आइके आली बने बन मैं जै
ह फूलि फली ज सभी बनवारी चौंपेसौं जाइ रसा
ल वृक्षी यौं कहूं कहूं कोइल ज्यौं जह कारी।। सवैया
रागिनी टोडी नाल।४। कंत कह्यो चलिहौं परदेस
कौं चंद्र मुखी अतिहीं दुख पायो। इतिस्थाई। दीरघ

स्याम भये ज तहां जग लोचन नीद बढ़ो सउरा

यो। जीवन ऊँच लिखी जहिं भालमें बाचन कों व

निता कहलायो। जीहें किते दिन पापनि हैं रघु

नाथ ज यिउं कहि बोल सुनायो। ध्रुवपद रागिनी

टोडी ताल।४। प्रीतम की प्रपर देस सुन याज्ञा उचि

त जिया किया वदन पीत वरी हृदय पीर भारी।

रा॰टी॰ इतिस्याई। उदति वलय पांति परी श्रोम वाति मति
न सरी कर कपोल नील अरुण वर्ण भये यारी॥
इतिअंतरा। प्रिय अंचल कर मपकर वलझ चल्ने
जौंन देस रुपित कह्यो मनझं निदय कौंन रहित
न्यारी। वैसाविनि वाति विना तरफ तरफ बालजिम
हिं प्राणि चलैं प्राणनाथ वारिविना हारी। रा॰टी॰।

2

प्र २

डी रागिनी नाल।३। संगचली ललना पिया कैं श्रकश्रो
हूं निरंतर हैं मगलीनैा।।इति स्थाई। धीरज तो नर
यो छिन को बिन श्रागे हिं जैबे को उद्दिमकीनो।इति
श्रंतरा। पीतम के चलबे रघुनाथ चले सम साथ भयो
नब छीनो। प्राणन ऊं चलिहैं परकों पति कुं तजि
हैं जडतो हरब दीनो।।इति श्राभोगः।।इति प्रवासि

ग·टी· क प्रेयसी नायिका वर्णनम् समाप्तम् ॥

3

प ३

मान १०॥अथ रागिनी टोडी प्रोषितपतिका लक्ष

एम्॥दोहा॥जांको पिया विदेश है विरह विक

ल तिया होइ। प्रोषित पतिका नायिका तांहि क

हित सभ कोइ। अब इसका उदाहरण सवैया रा

ग भैरव ताल चार॥ यादिन तें तुम आये इते छब

भान लली सें लला हग जो रत। तादिन तें आ

रा॰टो॰ स्याम कि यार न तोरत यद्यपि लोक निहोरत।
पीछे पुरंदर के रहियो मन जाये उपाये रचो सुभा
व दोरत। दोउ कर में गिरि दोउ गहो नहि तो प
ल आयक में ब्रज बोरत। अथ ध्रुवपद राग भैर
व ताल चार॥ हरि बिन कैसे कटत दिन रैन॥
इति अष्टपदी॥ वर्षा सों जल जात नैनन ननद

भे॰

ज कों सुधह्यौ रघुनाथ मैं नीति सखी की विदा कर

दीनी। इति अंतरा। जांके लिये त्याग ज्यं तज लाज

हिं विड समान तरंगिनि कीन्ही मैं इनथी सतज्यो

रिमनैं विधिके बलकी गति काहुन चीन्ही॥

अथ ध्रुवपद रागिनी टोडी ताल चार। वृषभानु

की दुलारि धारि मौन विकल भारि पेषि ग्वारि

दा·दो· एक भगत वारि मनऊं पीया प्यारी । इनि प्याई ।
जबै स्याम दृष्टि धरैं तबहिं विमुख भाव करैं मे
डर उर स्याम तबहिं परम घाव धारी । इनि श्रंत
ता । विनैं करत नब्य रही प्रीत होत वैर कह्यो
उलट धारि सफल तिनहिं चंदन विषसारी । शी
त किरण तपन सारि कारि जरन पवन हिमज

क २

2

हाथ सो गंवाइ लाल मीन गाउं भारी। राग टोडी ता
ल ।१२। लाज लगे पति कों न मनावति पावति हैं व
निता दुख भारी। इति थ्याई। लाजहि तें न सखी
सों कहे रघुनाथ जू सौं चहियें तब हारी। इति ग्रं
तरा। ज्ञान जग्यो जबहीं मलयानल तांतें भई है
नवोढ़ दुखारी। आलि रही चकिकै चिरकाल ज्युं

रा·टो· लागि गई मानो अंतर नारी ॥इति कलहांतरिता
नायिका वर्णनम् समाप्तः

अथासाम पतिका नायिका लक्षणम्। दोहा रागिनी

टोडी तालाइाजा नियाका पर देश तें आयो पिया म

ति राम। ताही कहत कवि लोग हैं आगम पतिका

नाम। अथ आगमपतिका कवित्त रागटोडी ताल।

धा छूटि छूटि जात आली वेंदी आज बार बार उर

पर मोतन की लरी लर कत हैं। इतिस्याई। चड़ाहै

रा॰टी॰ की गांठ बार बार सरकतहै। इतिश्रंतरा। कालीदा
स जान पति आलके आगम ऐसो अंगिया उरोजन
नें जात दरकतहै। तनि तरकत कर छुरी करकत
कटसारी सरकत आंख बाईं फरकतहै। इत्या।
भोगः। सवैया रागिनी टोडी ताल।४। आज्ज आनं
द बाढ्यो उरमें कियौं आगम भासत नाहिरकों।

५८

इतिस्याई।बाहिर द्वारपै काग पुकारत बाम भुजा ऊ

ऊवसी फिरको।इतिअंतरा।इह दीपक फ़ल करैं स

गरैं तम हर करैं वुरई फिरको।सरको वरको पग

पाछिहि को विथ पूरण काम करे फिरको।रागिनी

टोडी ध्रुवपद ताल।४।प्रिय दरसन मुदित वदनि ऊं

दरदति इंदु मुखी अतिनीके कर सिंगार हार ऊर

रा॰टी॰ म यौवे ॥ इतिस्थाई ॥ औरे गव पकर भजो प्रीतम को वि
रह विथा हरी करी परम सुरति भयो सुख अपारे ।
इतिअंतरा ॥ आलिंगन निवड पुलिक विन्न कीयो
अधर पान कथा तथा निमघ दरस करन विन्न
वोरे ॥ आनंद के आगम तें सुरत पुउ ऊन जान पु
नहि करन उदिम भे बाल केलि मोरें ॥ रागिनी

१२
२

टोडी तालाइ। आप शाम मंदिर मन भावन कों वैं
यां डार डार गर हार करों पियां कामकि जरन बु
झा वनकों ॥३ तिरुयाई। ग्रीषम ऋत जिमं जरैं थ
रा धुन पावस आवन पेषि मुदित पुलिकित तन
हरी भरी सगरी निम मोह अनंद बडावन कों॥ इ
ति अंतरा॥वरषे मेघ बूंद झर लांई वेशाक कर

रा॰टो॰ कर धाई चमकै चपल उपल करकन संगकेकी
शोर मचावन कों॥ कोहरि कूक कूक बोलै क्या
मुजकों प्रीतम गरे झं लिगांहं बालनिधी मोहरे
मन भाप सगरे दूष मिटावन कों॥ इत्याभोगः॥
इति श्रागमपतिका नायिका वर्णनम्॥ समाप्ता

3

प॰ ३

अथ उत्कंठिता नायिका वर्णनम् रागिनी टोडी

ताल । दोहा । आउ जाये संकेतमें पिया हूना

आयो होइ । ताको मन चिंता करै उत्का जान हु सो

इ । कवित्त रागटोडी ताल । ४ । कियौं गेह काज कि

यौं छूटो न सखा समाज कियौं कहूं आज ब्रत वा

सर बिभाननैं । इतिस्याई । दीनों नैंन सोयि कियौं

रा॰टो॰ काहू सों भयो विरोध उपज्यो प्रबोध किधौं उरश्र

वदाततें। इतिश्रंतरा। स्वप्न में नदेह किधौं मोहू

सों कपट नेह्र किधौं देष मेह्र श्रति इरे श्रपरा

तनें। किधौं मेरी प्रीतीकी प्रतीति लेत केशोराय

श्राज्हूं न श्राये मन हायें कौंने बाततें। सवैया

रागटोडी ताल।४। सखि भूलि गये भलय कि

उ
१
५
३

धौं काहूकि भूलेई डोलत बाटन पाई। इतिसखाई।
भीतभये किधौं केशव काहूसों भेट भई कोऊ
भामिनि भाई। इत्यंतरा। आवत हैं मग आइ गए
किधौं आवहिंगे सजनी सुखदाई। आप ननंद अ
मार सवार ह कौंन विचार अवार लगाई। रागनी
टोडी ध्रुवपद ताल।४। आजु हरि नाहि गेह आ

रा॰टी॰ प किंपुं काहिं कहुं निदय परम शठहिं कुसमान
स सविकारी। इतिश्याई। करैं काज निजहिं भान
नैहल जान श्रतिहिं कपट रमन श्रपर बहुत वि
या झूठ कथन सारी। इतिश्रंनरा। काहि इरवित
हानि दोष तवहिं नाहि भिरम रह्यो निडर निडर
हितैं श्रहित परम चपल भारी। समहिं पेष फुट 3
२

त चेत अबहिं निकस जाइ मिले वालनियी श्रीनरी

त काम वाम चारी। सवैया रागटोडी ताल।३। कैन

गई आलिकंत के लैनको क्रूपथ पन्नग को भयमा

न्यौं। इति स्याई। कै मैं ऊ वोल कहे रघुनाथ जू रो

स वहे चित नायिक आन्यौं। इति अन्तरा। श्रीन

के कंचन केतकि की रज लागि हगंत विषे छल

टा·टी· ठान्यौ।पीगई आखनि कौं सूनरीति मैं जाविधि
काहूं सखी नहि जान्यौं। इति आभोगः इति उत्कं
ठिता नायिका वर्णनम् समाप्तम्॥॥

3

अथ अभिसारिका नायिका वर्णनम् दोहा रागिनी टोडी ताल।३। पिया हि बुलावे आपको आउहि पिया पै जाय। ताही कहत अभिसारिका जे प्रवीन कविराय। अथ प्रकृत प्रेमाभिसारिका कवित्त रागिनी टोडी ताल।४। लीने हम मोल अन बोली आई जान्यो मोऊ मोहि घन स्याम घन माला

रा॰टी॰ बोलि लाई है॥ इति स्याई। देखो कैहै उव जहां देह
जन देखी परै देखी कैसें बाट केशो दामिनी दिषा
ई है॥ इति श्रंजनदा। ऊंचे नीचे बीच कीच कंट कन
पीरे पग साहस गयँद गति अति हवे दाई है। भारी
यह कारी निसनि पट अकेली तम नाही प्राण नाथ
साथ प्रेम जो सहाई है। अथ प्रकाश प्रेमाभि सारिका

कवित्त रागिनी टोडी ताल ।७। नैंनन की आनराई बै
नन की बनराई गातकी गोराई तउ दति इती बाल
की। इतिस्थाई ॥ अपने चरित्रनि के चित्रनि विचित्र
चित्र चित्रिनी ज्यो होहै साथ उजिका गुआलकी
इतिअंतरा। चंदके समान चाह चाई हो बदी फिर
ति करके निहारे रुपनैंनन की पालकी। कीजे पा

रा॰टो॰ य पान अरु लैंजे पान आए प्यारे आई है जु आई अ
लबेली ग्वालि काहू की ॥ ध्रुवपद रागिनी टोडी
ताल ।धा चलऊं प्यारि प्यारे छिग निसा तिमर पर
म स्वद निकष प्रेम हेम परष अभिसारिन सारी
इतिस्याई। केसर वत् गौरवर्ण नारिन को मणिन
गनत चमक रेख रेखिन जिमु उपल पेहि प्यारी अ२

इति अंतरा। स्तनत सार कर सिंगार हग अंजन स्याम

गुच्छ वर तमाल कुसम स्रवण नील चोल धारी॥

पग पिंजनि त्याग जटति बालनिधी विपन पंथ

जात भई विषमऽ नेंग तापित तनु नारी। अथ प्रका

शा गर्वाभिसारिका कवित रागटोडी ताल। । छंद

न चढाइ चारु अंबर के उर दारु सुमन सिंगारु सो

रा॰टी॰ हैं आनंद के कंद ज्यौं ॥इतिस्वाई। वारौं कोरी रति नाथ बीणामैं बजावै गाथ मराज मराल साथ वानी जग बंद ज्यौं। इति प्रंनरा। चौंकि चौंकि चकई सी सोनि। नीकिं हती चली सोनैं भई दीन अर बिंदइति मंद ज्यौं। तिमर वियोग भूलै लोचन चकोर फलै आई ब्रज चंद चंद्रावलि ब्रज चंद ज्यौं। इतिअभिसारिका॥

3

अथ वासकशय्या नायिका प्रकरणम् रागिनीटो

डी दोहा। ताल।३। पैहै प्रीतम आज यिउं निश्चय

जाने वाम। साजै सेज सिंगार सखी वासक शय्या

नाम। अथ वासकशय्या उदाहरणम् कवित्त राग

टोडी ताल।४। चंदन विटप वपु कोमल विमल द

ल ललित वलित लता लपटी लवंगकी।इतिस्या

रा०टी० ई। केशोदास तामें डुरी दीपकी शिषासी दौरी डुराव

नि नील वास डुति अंग अंगकी। इति अंतरा। पौन

पानि पंछी पशु वासमें सवद हानि नित नित चौं

कि चाहे चौंप संगकी नंद लाल आराम विलोके

कुंज नाल वाल लीनी गती तिह काल पिंजर पतं

गकी। सवैया रागटोडी ताल। झंपा। भावति है सु

रा०
८

ख वैन सखीन सौं लाव हिऐं अभिलाष निपोहै
इतिस्थाई। कोमल हासिनि नैंन विलासिनी अं
ग सुवासिनि कै मनमोहै मूरति वंत कियौं नल
सी नलसी वन मैं रति मूरति कोहै कुंज विराज।
ति गोपवधू कमला जनु कंज जटी मह सोहै। रा
गटोडी ध्रुवपद तात।४। वासंती लता ललित

रा॰टी॰ स्टुल देह विकल भयी कीर्त्ति सुता आशा पाश ला-
गी पिय संगकी ॥ इतिस्थाई । सुनन सार आवास सि-
य गेह सकल शोच विकच सजल लता चित्र मित्र
सोहैं बहु रंगकी । इतिअंतरा । सदह अन्तर बहिर क
भी निकस जात आवत पुन सेजकों बिछाइ लाइ
मकरंद सुगंधकी । कर सिंगार पुन उतार कभी या

वा॰
२

र बालनिधी जोहत मग्न थाय थाय मची धूम॥ नंग

की॥ रागिनी टोडी ताल।३। पिया दरस लषा भै भारी

।२। जिम नील मदिर के आगम उमगत चात्रिक प

रम पुकारी। इति स्थाई। उपवन विटपि पात चारण

तें जानति आये मरारी। इति अंतरा। उठति सिंगार

सवार सुभग सुन कंगना बाणि उचारी। बींन्यो दि

रा॰टी॰ बस भयो रजिनी मुख पेषि विकल भइ भारी श्याम
तिमर उर लाग भात हरि आइ गये सुख सारी। ज
ब हिं विलंब भयो नहि देषे ध्यान मगन हुयि हा
री बाल कुस वर रूप मान निज लागि योगि मनें
तारी॥ इति आभोगः॥ इति वासकशय्या नायिका
वर्णनम्॥ समाप्ता॥

3

वा
२

अथ स्वाधीनपतिका प्रकरणम्। दोहा। रागिनी टो
डी ताल।३। सदा रूप गुण रीझ पिया जाके रहे अ
धीन। स्वाधीने पतिकातीये वर्णित कवि प्रवीण।
अथ स्वाधीन पतिका उदाहरणम् सवैया रागटो
डी ताल।४। केशव जीवन जो ब्रज को निज जीव डु
तें अति वापहि भावै। इतिम्याई। जा पर देव अदेव।

रा॰टो॰ ऊमारनि वारन माइन वार लगावै।इतिश्रंतरा।ता

हरिपैतं गवार कि वेटी महावर पाइ जवाइ दिषा

वै हौं तो वची अव हासनि हूं ऐसे औरं ज्ज देषे तो उ

तर पावै।कवित्त रागटोडी ताल।४।चौली को सो

पान तोहि करन संवारि वाई दर्पन ज्यं तोही मांझ

मूरति समानी है।इतिस्थाई।तेरेहीं मनो रथ न म

खा
८

गौरष पीछे पीछे डोलत गुपाल मेरी गंगाको सो
पानीहै। इतिश्रंतरा। तैंही तिया देवतापै पाओ पति
केशोराय पतनी वड्डन पति देवता वषानी हैं।।३
सी बानैं कौंन जो नमानी हुन मेरी रानी उनके
तो तेरी बानी बेदकी सबानीहै। धुवपद रागनी
टोडी ताल।धा। वड्डन काल हमिर हमिर श्रांत वि

रा॰टी॰ त्र मीत भयो काम जरन जरत स्नथा ग्रथरन की प्या।
सी। इति स्याई। भारवाह भार शिखर धारचल्यो जि
मुहिं दिवस मध्य ग्रर्क तापित तन निमं ग्रधीन भा
सी। इति ग्रंतरा। तेरो सखि भाग ग्रधिक लागत मऊ
जगत मांहऊ सांऊ श्रान रान पिया कीयो भाव दासी
यन कटाछ चछन कर छीन भयो वालनिधी त्तत।

न जिमं दास श्रास करङ्गे नास बासी। रागिनी टोड़ी

ताल।३। प्यारी जू तिहारे बिन नैंनन कों चैंन नहीं

जिमं चकोर हर्षि चंद पेषि मोद पावैं।इनिस्थाई।

चंपक बन म्रदुल श्रंग परस हरत जरन नंग रद

न चमक तिमर हरै विद्र विशद कावैं।इनिश्रंतरा

पाद पद्म श्रत हि सुभग माहावर राग रक्त मम

रा॰दो॰ हिं उरस वास यार स्यांन शोक होवैं सकल दुःख ह
र करण आलिंगन तुवहि देऊ परम कृपा दृष्टि
यार मदन भयनिवारै॥ इत्याभोगः॥ इति स्वाधीन
पतिका वर्णनम्॥ समाप्ता॥:

3

अथ विप्रलब्धा नायिका वर्णनम् रागिनी टोडी

ताल । दोहा। लषेन पिया सकेट में होइ विक

ल जोवाल। विप्रलब्ध तासों कहैं जे कवि हमति

रसाल। सवैया राग टोडी ताल तीन। फूलसे फूल

सवास ऊवाससी भाषसिसें भए भौन सभागे। इ

तिस्याई। केशव बाग महा वन मों ज्वर सी चढि।

रा॰टी॰ ओढ़ सबै अंग दागे । इत्यंतरा । नेह लगै उर नाहर
सौं निसि नाह धरी जु कहूं अन रागे । गारि सौं गी
तु विरी विसरी सगरे हि सिंगार अंगार से लागे ।
कवित्त रागटोडी जालाध । देषत उदधि जात देषि
निज गात चंपक के पान कछु लिख्यो है वनाइ के ।
इनिस्याई । सकल सुगंधि डार हूनिका कौं मारि ।

पुन फूल माल तोरि डारि बीरा बगराइ कै ।इति श्रो

तरा। लैलै दीह सास तजिवि विथ विलास हास

केसोराय ह्वै उदास बली अकुलाइ कै। सेइ कै सं

केत स्तनो काह्नू ज्रू सौं वोले उनौं मोसौं जोरे कर

हूनैं हनैं उरव पाइ कै। सवैया रागटोडी ताल।५।

मोहति एक समैं वन में हषभानु सुता ज्र सहेट

रा॰टो॰

में ढोंडी। इतिस्याई। वीत गयो सगरो दिन श्रास
में श्राये गयो इक पाथिक बोंडी। इतिश्रंतरा। देख
कह्यो वृषभानु सुता इह योग निवास निहो म
भोंडी। स्यामल भोगि को वास विषा कर वास करो
नंदराय कि भोंडी। सवैया। तव जाए अचानक पां
यि कह्यो इक भावन ग्राम संभार लई। इतिस्याई।

वि २
वि १

नंद राय सें गोपन कालि भली मनलान येही भ्र

मि आगताईं। इनिश्रंतरा। निस आस्य समें उब

हूर् करैं जउ मनत पाउं निमावताईं। चर आव

त भाग बडो निवडे निज पापन पुंज मशीतम।

ईं। सवैया रागटोडी ताल।।१।। सौं ह सावीन करी

छल सों रघुनाथ प्रिया कौं निऊंज लै आई।।२

रा॰टी॰

तिस्याई। ह्लौं विलोकत रोस भयो न चली न रही
विथकी तिंहिं ठाई। इत्यंतरा। अंबुज लोचन नारि
न वाछ को आकुलता जु भई अधिकाई। अंग कदं
व त्रिषा किन वारें के जुं वम कैं पुतरी सुं फिराई।
इत्याभोगः॥ इति विप्रलब्धा नायिका वर्णनम्
समाप्तम॥

वि
३

3

अथ रागिनी टोडी खंडिता नायिका प्रकरणम्

दोहा॥ पियानन औरहि नारिके रतिके चिह्न निहार॥३॥ खिन होन सों खंडिता वर्णित सु कवि विचार॥ उदाहरणम् अथ छंद खंडिता कवित राग भैरव ताल चार। ओंखनि ज्यों सुफल नकाननि लौ सुनि यश जैसे केशोराय तुम लोकनि मैं गाये

रा०दो० हौ। इति स्याई। वंसकी विसारे सुथ काक ज्युं बुन
न फिरै जूठे मीठे सीथ सठ ईठ छीर टाये हौ॥
इत्यंतरा। हरि हरि करत हिं दौरि दौरि गहौ पांइ
जानेन ऊठौर ठौर जानि जिया पायेहौ। कांको
घर घालिवे कौं बसे कहां घन श्याम खुंह ज्यौं बु
सत प्रात मेरे घर आयेहौ॥ अथ प्रकाश एंडि

ता सवैया राग टोडी ताल चार। आज कछू अखियां
हरि ऊैरसी मानो महावर मांह्रि रंगीहैं। इतिस्या
ई। मोह्रन मोहिसि लागत मोह्री इते पर मोह्रन मो
ह्र लगी हैं। इत्यंतरा। मेरी सौं मो ह्र सौं मानह्रुं वेगि
ह्रिए रस रोस की रीति पगीहैं। मेरे वियोग के तेज
तची किधौं केशव काह्रुके प्रेम पगीहैं। इत्याभो

रा॰टो॰ ग॰ ।अथ खंडिता नायिका रागिनी टोडी ताल ।४

निस गंवाइ आये हो लालन मोहरे धाम अलस

गात जाउ तहां जौन प्यारी तिरिया रही उर समाय

इ निस्याई। पाउं डग मगात पाग लट पटाई बिथु

रि अलिक अरुण नैंन प्रकट रति जनायो। इत्यंतरा

काम हुल फूल बिकस जहंहिं नखर चिन्हित उर खं२

नैंन पीक अधर अंजन बोल मोतरे सहान मोऊदेष

अति लजात सकंच सकच इधर उधर नींद करत

हैत थाप। खोटनहीं नाहि मिली बालनिथी प्यारे

लाल मनहिं झूठ शपथ करी हरी मदन शेष जर

न वाहीं समझवीं तियां उर लिगाप। अथ हस पद।

राग रामकली रागिनी टोडी ताल तीन। हस पी

रा॰दो॰ या न छोहि मोहरी बैंयांरे बैंयां वार वार गर डारडा 3·0
र अर जैयां करतहों तोरी। इतिस्वायी। सगरि रैंन
पर घर फिर आये आदर बैंन कछू नहि पाये भोर
भई मोहरे ग्रह आये अपनि गरज को परत हो पै
यां। इति खंडिता नायिका वर्णन समाप्तः॥
3

राग विद्याकी तो किसे शुभ कर्ममें प्राप्तीहो गईहो औ
र पूर्व जन्मके माठे कर्ममें जो बिगाडीहोई मनकी प्रवृ
त्ति विषयों में होगयीहो भक्ति विरक्ति योगकी प्राप्ति

सल्लभेन्निमिषार्धेन कोटियज्ञाकृतेफलम् ८ एवंरागप्राप्ति
ज्ञोतानस्यापि फलानन्तरम् जन्मजन्मेदकर्मानुसारेण यः म

न होईहो उसकी भक्ति नही होती उसको फलांत ।
र प्राप्तहोगा जयसें याज्ञवल्क्य जीने लिखाहै गीत।
के जानने वालेको जेकर योगाभ्यास अथवा भक्ति

की कृपासें मैं इस ग्रंथकों यथामति रचताहूं और श्रीरा॰
जाधिराजश्रीजंबूकाश्मीराद्यनेकदेशाधिपतिश्रीमहा
राजारणवीरसिंहजीकी कृपारूपी आज्ञाके अनुसार॰
प्रेरया होया इस ग्रंथका आरम्भ करताहूं कैसाहै रा
गसमुच्चय ग्रंथ बहुत ललित क्या अतिशय करके
सुंदरहै विद्वजन जो इस विद्या संगीतकों अच्छीतरां॰
में जानतेहैं जिनकों तत वितत घन सिनर क्या तत
वीणादितंतमयसाज वितत मृदंगादि घन केसीछल्या

गा॰ दि सितर तूती वेणीइत्यादि इत्यादिकोंमें जो प्रवीण॰
स॰ हो और कंठसैंभी गाना जानताहो स्वर मूर्छन सुर॰
तादि भेदकोंभी जानताहों और नृत्यके जो हाव भा
व इनकोभी परीत्ताहों अर्थांशकोंभी जानताहों व्याक
रणादिग्रंथ छंदो ग्रंथभी पढाहो इस शास्त्रमें उसको
विद्वज्जन जानना अयसे विद्वानोंकी प्रसन्नताके वा
स्ते १ अब येह विद्या सरस्वतीकी कृपा बिगर न
ही प्राप्तहोती इस वास्ते सरस्वतीजीकों नमस्कारकर

१ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ अथ रागसमुद्र प्रारंभः

राग॰ अब सब विद्या में उत्तम जो राग विद्या तिसके बनावने

का उत्साह हूवा श्री १०८ महाराजाधिराज श्री महाराजा र

णवीरसिंहजी को तिन्हों की आज्ञा करके प्रेरित जो ग्रं

थ करताहूं सो इस समुद्र रूपी ग्रंथ बनावने की इच्छा

करताहूं परंतु जयसें भागवत में लिखा है ॥ किं तत्र पर

क्वाहं मंद मती क्वेदं मथने क्षीरवारिधेः

माणवै यत्र मज्जंति मंदिरः ॥ सो इस समुद्र के आगे पर॰

माणु सदृश हूं सो क्या आश्चर्य है श्रीसूरदासजी ने लि॰

3

खोहै बंदौंश्रीहरिपदसुखदाई जाकीकृपातेंपंगुगिरिला
घै अंधरेकोंसबकछुदरसाई बहरसुनेगूंगपुनबोलैरंकच
लेसिरछत्रधराई सूरदासप्रभुकी शरणागतवारंवारनमों
तेंपाई सो ईश्वरकी कृपाहो तो कछु आश्चर्य नहीं॰
इसी वास्ते आदमें मंगलाचारमें प्रार्थना रूपी श्रीकृ॰
ष्णजीकों नमस्कार करताहूं श्रीस्वरूपी जो राधिकाजी
हैं तिनोंके पुत्र जो कृष्णजीहैं तिनोंकों नमन करके इ
स राग समुच्चयकों करताहुं कैसेहैं श्रीराधाकृष्णजी इस

२
गग.

जगत्की उत्पत्ति और स्थिति का पालना करणी और अन्तमें
लय का प्रलय करके आपने में लीन करणा इन तीनों
कर्मों के हेतुहै का कारणहै और उन पञ्चकीया जो जगत्
तिसकी मूल प्रकृति जो अविद्या तिसते उत्पन्न हूवे जो
सत्व रज तम गुण इन गुणो के अधीन जो मन अत्यंत
चंचलहै और राजस तामस हो कर महा क्लेश पाताहै औ
र सात्विक गुणकी सेवा में लाव और भजन होताहै सात्वि
क पदार्थों की सेवासे प्राप्तहोताहै सो सात्विक पदार्थ केह

सात्विक गुण

ऊे ने परमेश्वर के जो भक्त जो जो वस्तु खानेकी पैंहननेकी स
ननेकी प्रबीनताम प्रमाण करे सो सात्विक वस्तुहै सो सतोग
ण के हस्त करणे वाली वस्तु होतीहै जो निंद देवें सो तमो॰
गुणी होतीहै जिसकी उपेक्षा करछडे सो रजो गुणी होतीहै
सो श्रीकृष्णजीने भक्त जनों के ऊपर बडाही उपकार करणे
के वास्ते चित्तकी एका कार हृत्तिका उपाय विचारा तो राग
और रागिणी उनके पुत्र पौत्रादि उत्पन्न कीये जिनमें स्वरा
नन्द ब्रह्म अपना स्वरूप स्थापन किया श्रवण करणे वाले॰

२
रा.स. की अथवा विसपद गानें वालेकी सात्विकी वृत्तिहोतीहै ऐसे
जो श्रीकृष्णजीहैं तिनकों नमस्कार करकें और जगत के देज

श्रीकृष्णंजगदुद्भवस्थितिलये हेतुंजगद्वन्दनार्थायोत्पादित
रागरागररमणी तत्पुत्रपौत्रादिकम् नत्वाश्रीरणवीरसिंह
न्टपते राज्ञावशात्प्रेरितः कुर्वेरागसमुद्रयंसुललितेवि
द्वज्जनानंदने १॥

नेका क्या आनंद देनेका जो अर्थ का अभिप्राय तिसवास्ते
रागकी उत्पत्ति करीहै जिसने तिसकों नमस्कार करके उन

5

और भरत मत स्थापन किया और श्रीनारद ऋषि :
जो ब्रह्मपुत्रथे उन्होंने इसी विद्याको ग्रहण किया।
पंच सहस्र वर्ष तप कर श्रीसरस्वती जीको प्रसन्न।

वीणावादनतत्त्ववेदीश्रूयते॥याज्ञवल्क्यो मिताक्षरायां ॥
वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः तालज्ञश्चाप्र
यासेन मोक्षमार्गंनियच्छति। ॥ ४ ॥

कीया और येही विद्या सेंगी इसी विद्या में परमेश्वरकी
भक्तिका आनंद यावज्जीवन तक लेकर येही निश्चय
कीया जो जगत में जिसने भक्तिका आनंद लयकर

रा॰ भक्त होना होवे सो इसी विद्याका अभ्यास करे स्वरही
म॰ ब्रह्महै उसीका ध्यानकरे तो भक्तीभी होजातीहै इस
में वेदकी श्रुती प्रमानन येह कहतीहै वीणावादन
कर्म युक्त भक्त तत्ववेत्ता अर्थात ज्ञानवान होताहै ॰
येह बातभी प्रवाण करीदीहै ॥ ३॥ अबयाज्ञवल्कजीकी॰
स्मृति येह कैहतीहै ॥ वीणाके बजानेका जो तत्वहै क्या
बहुत मनकी वृतीकों स्थित करके स्वर रूपी ईस
रमें युक्तहोना जो जानताहै और स्वरता स्वरकीयो ॰
6

जानीयो जो बारे १२ विकृति इनको प्रेमीनरें में लगाना
हो जयसें यथार्थरहैं इन में अन्तर होवे तात्वतः स्वर्णा
न् गीतके प्रमाण के समय कोंभी जानताहो उसको
और अभ्यासमेंथी विगेरही मुक्ती प्राप्त होतीहै इस में वेदां
ती प्रश्न करताहै ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः ज्ञानयों विना मु
क्ति नही होती कैसे बीणाके बजाने करके हो जावेगी
इसका उत्तर प्रथम ज्ञान समाधीमें यथार्थ हो कर॰
ताहै सो समाधि इंद्रियों की बाह्य वृत्तिकों रोक कर॰

गी॰
स॰

अभ्यंतर वृत्तिः कछूयेके अंगोके संकोचकी न्याई होने में होतीहै तैसेंही सरता मूर्छना स्वर ताल लय इनके बिगर ने के भयसें चित्त बाहरके संकल्पोंकी वृत्तिकों छोडकर। अभ्यन्तर आनंद स्वरूप ब्रह्ममें लचित होजाताहै ॥ म ॥ आ

एष ऽ एवानन्दयतीतिश्रुतिः ५॥

तैसेंही ब्रह्मका स्वरूपहै जो भक्तहोतेहैं सो आनंद स्वरूप में लीन हो जातेहैं एसेंही वृत्ति वीणावादन करके युक्त जो परमेश्वरका भक्त तिसकी होतीहै और जो करम हैं

उनमें चित्तहकता नही आनंदके अभाव करके ॥ ५ ॥ इस क
लियुगमें सव्यता कीर्तनकीहै भागवत में लिखाहै क
लौमेकीर्त्यकेशवम अर श्रीपरमेश्वर विष्णजीनेभी येही
कहाहै ऐसा आनंद पूर्वक मैं वैकुंठमेंभी नही निवास।

कलौमेकीर्त्यकेशवम नाहंवसामिवैकुंठेयोगिनोहृदयेनच।
मद्भक्तायत्रगायंतितत्रतिष्ठामिनारद ॥ ६ ॥

करता योगीजनोंके हृदयमें भी नही आनंद होता जि
सस्थान विषें मेरे भक्तजन गायन करतेहैं उसस्थानत्र
सन्नता पूर्वक श्रवण कर निवास करताहूं ॥ ६ ॥ स्के

गा॰ पद्मपुराणमें ब्रह्माजीको विष्णुजीका वाक्य येहहै स्वन पुत्र
म॰ रागकी महिमा जिसके जानने मात्र करके स्वावेएर्वक ।
मेरी प्राप्ति होगी भक्तकों कलियुगमें ७ अर जो पुरु

स्कंधपुराणे श्रीभगवद्वाक्यं ब्रह्माणंप्रति ॥ शृणुपुत्र प्रवक्ष्यामि रा
गमहात्म्यमुत्तमम् यस्यविज्ञानमात्रेणमुक्तिभोक्ष्येमदाकलौ ७
स्वयंकुरुतेगीतेविलज्जोगायतेयदि ॥

ष लज्जा जगतकी कों छोड कर आप गायन करे उसकों
एक निमेष का आधा का फरकना मात्र कालमें को
टिएजनका फल होगा ८ अर जिस पुरुषकों इस

लभ वचना जान नहि वरनइ केसवदास ॥ वचनन माहिं

उरी हनो देइ दिषावै जास ॥ यथा ॥ सवैया ॥ कान्ह भले जुभ

ले फंग लागे भले कैहो नैननके रंगपागे ॥ जो नागनि हौं सब

ही बसजानन आपुसे केशव लालच लागे ॥ जाउ नहीं

अहो जाउ चले हरिजान जिते दिनही वनिवागे ॥ देषिक

हा रहे पोषि परे उभटे कैसे देषिवे देषउ आगे ॥ अथ पाउ भीत

रा॰म॰
२२१

मनोभवा वरननम ॥ सवैया ॥ आजुमै देषी है गोपसुताइ

क होयन ऐसी अहीर की जाई ॥ देषनही रहिये इनि देहकी

देषेते औरन देषी सुहाई ॥ एकहीं वंक विलोकनि ऊपर वा

रौं विलोकि त्रिलोकनिकाई ॥ केशव दास कलानिध वरु

झ्झिय कामकि मेरी कन्हाई ॥ अथ सुरत व विश्रम थ्या

वरननम ॥ दोहा ॥ सुनि वविद्र सुरनासुनैजाको सुरति 9

ववित्र ॥ बरनत कविकुलकौ कहि सुनत सदा ते मित्र
सोरहई सिंगार सुभ सोरह सुरन समान ॥ तियविवेक बल
समझियो केशवराय सुजान २ यथा कवित ॥ प्रथम
सकल सुचि मजन अमल बास जावक सुदेस केस पास को
सुधारिबौ ॥ अंगराग भूषण विविध मुष बास राग कज्ज
ल कलित लोल लोचन निहारिबौ ॥ बोलनि हसनि मृदु

रा·स·
२२२

चातुरी चलनि चारु पल पल प्रति पति अनुपति पारिबौ ॥
केशव दास सविलास करहु कुअरि राधे इहि विधि सोरह सिं
गारनि सिंगारिबौ २ ॥ केशव दास सविलास मंद हास जुत
अवलोकनि अलापनि कौं आनंद अपार है ॥ वहिरनि सा
न अरु अंतरनि मान अति रति विपरीतनि कौं विविधि वि
चारु है ॥ छूटि जाति लाज जहां भूषण सुदेस केस टूटि

जात हारसब भिटन्न सिंगारकहै ॥ कूजि कूजि उदैं रति कूजि

तनि सबन खेरा सोई तौ सरति सखि ग्रौरु बिवहारकहै ॥ अथब

हिरत नाम बरननम् ॥ दोहा ॥ १आलिंगन २चुंबन ३परस ४मर्द

न ५नख ६रद दान ॥ ७अधर पानसौ जानियौं बहिरति सात सुजान

अथ अंतरति नाम बरननम् दोहा ॥ १थिति २तिर्यक ३सन्मुख

४बिमुख ५अध ६ऊरध ७उतान ॥ सात अंतरति समझियौ केशव

रा-स-
२२३

सकल सुजान ॥ अथसुरतांतवर्ननम ॥ सवैया ॥ सुंदरना
पय पावक जावक पीकेहिप नष चंददियेहैं ॥ चंदन चित्र
सुथाविष अंजन दूरिसबै मनि हारगयेहैं ॥ केशव नैननि
नींदमई मदिरा मद घूमन मोह मयेहैं ॥ केलिकै नागरिना
गरुपात उजागर सागर वेष भयेहैं ॥ अथधीरा अधीरा धीरा
धीरा लक्षणवरननम ॥ दोहा ॥ मिगरी मध्या तीन विधि

धीरा औरनु अधीर धीरा धीरा तीसरी वरननहै कविधीर ॥ दो
हा ॥ धीरा बोलै वक्रविधि वानी विषम अधीर ॥ पियसौं दे
इ उराहनो सोधीरान अधीर ॥ अथमध्याधीरा वरननम् ॥
सवैया ॥ ज्यौं ज्यौं उल्लाससौ केशव दास विलास निवास हि
ये अवरेष्यौ ॥ त्यौं त्यौं वढ्यो उरकंप कछू भ्रम भीत भयौ
कियौं मीन विसेष्यौ ॥ मद्दिन होत सषी वरही मेरे नैनसरे

रा.स. २२४

जनि सोचकै लेषो ॥ तैं जकह्यो मष मोहनको अरविंद
सोहै सोनो चंदसो देषो ॥ अथ मथ्याप्रथीराजवरननम् ॥
कवित ॥ ज्ञानकोसो गान सब बल वीरकोसो मानकोसो
मरवमहोमोहि मनभायोहै ॥ थलसो अचल सील अनल
से बल चित जलमे अमल तेज तेजको सो गायोहै ॥ केशव
दास वसत प्रकासके प्रकास चोषबर बरजट बट केरुप 12

नो ल्लायोहै ॥ रतिकोसी रतिनाथ रूप रति नाथ कौसी क
हौ केसीयाइ कृव कौन पहिपायोहै ॥ अथमध्याधीराधीरा
वचनन म्॥ सवैया ॥ कान्हभलेजूभली समझाई हौं मो
हि समझ्कौ जौउमह्योहो ॥ केशव आपनो मानिकसोम
न हाथ पराय दै कौनै लह्योहो ॥ नैनन ही मिलवौ करियै
अव वैननकौ मिलिवौ नौरह्योहो ॥जाइकह्यौ तुमजैसो स

रा॰म॰ षीसउ मैहैं गपालमै मैसोकेह्योहो ॥ इतिमध्यासमासम्
२२५
अथप्रौढाभेदवरननम् ॥ दोहा ॥ मनिमतलरसकोवि
दा चितविभ्रमा जानि ॥ मनिआकामिननाइकालभयाय
निद्रमभांनि ॥ अथसमतलरसकोविदाप्रौढालछनवर
ननम दोहा ॥ सोसमतलरसकोविदाकोविद कहतबषा
नि ॥ जोरस भावै प्रीतमहि ताहीरसकोदानि ॥ कवित ॥ १२
13

देषीहै गुपाल एक गोपिका अनूप रूप सोनेते सलोनी वा
स सांचेने सवाइहै ॥ सोभाई सभाई अवनारलीनो तनस्या
म किधो यह दामिनीयों कामनीके आईहै ॥ देवी कोई
दानवीन मानवीन होय ऐसी मानवीन हाइ भाइ भारनी
भराईहै ॥ केशवदास सव रूष साधन की सिद्द यह मेरे
जाने मैनहीसो मैन काकी जाईहै ॥ अथ ववित्र विभ्रमासो

रा॰सं॰
२२८

फालक्षनवरननम दोहा ॥ अनिवचिरविभ्रमसदाशै
फाग्रगरवषान ॥ जोकीदीपति हूनिकापियहिमिलावै
आन सवैया ॥ हैगति मंदमनोहर केशव आनंद केदहि
येउलहेहैं ॥ भौंहविलानि कोमल हासनि अंग सुवास
नि गाढ़ेगहेहैं ॥ वेकविलोकनिको अविलोकि सुमाक
कै नंद उमाह रहेहैं ॥ पईनो कामके वान कहावन स्

14 १२

लनकेविधिमलियाहेहैं ॥ अथ आकामिननाइकाभेदवरननम् ॥ दोहा ॥ सोआकामिननाइकाभैकहिंदैवितमनसावाचाकर्मनाजहिवसकीनोमित ॥ सवैया ॥ तोहिनगाय वजावननाचनवार अनेकसिंगार वनायो ॥ जीहमै आनकी आनिवौ कयौपै तेरी तऊनभयो मनभायो ॥ भावै सुने करिवो करि भामिनि भागवडे वस नैकरिपायो ॥

रा॰म॰
२२०

कान्ह सौं मंत्र्येज्ञ वाहति नाही सवारति हैं अव पाइ लगायो।

अथ उपलवधारनसौंफालन्ननवरननम दोहा॥ मोलवधारन

जानिये केशव प्रकट प्रमान॥ कानकरे परानित्रलसवै प्रमान

प्रभहिं समान॥ यथा सवैया॥ आज विराजत हैं कहि के

शव श्रीवृषभान कुमारि कन्हाई॥ वानिविरंचि वहि काम

कामरची सविचारि सवहि वनाई॥ अंगविलोकि विलो

१५

किधैं प्रेमीको नारिनहि जहि नारि निवाई ।। सूरनिवेन सिंगा
र समीप सिंगार किये कियौं सुंदर नाई ।। अथ प्रौढाधीराभे
दवरननम् दोहा ।। आदर मांऊ अनादरै प्रकटकरै हितहो
य ।। आकति आउ उदावई प्रौढाधीरा होय ।। अथ सादरा
अनादराधीरा ।। यथा सवैया ।। आवत देषिलिये उठि आ
गेकै केशव आउहि आसन दीनौ ।। आउहि पाइ पषारि भले

जलपानकौभाजन लाइनदीनौ ॥ वीरा बनाइकैं आगेधरे
जब वैहरिकौ कर बीजन लीनौ ॥ बाहेंगहीहरि ऐसोकह्यौ
हसिमैंनोइनो अपनायनकीनौ ॥ अथप्रौढाधीरा आक्र
निगमावरननम् ॥ सवैया ॥ चितवौ चितवौ पै हसौ पै हसौ
हसौ बुलापैंनैं बोलौ रहौ निनमौनै ॥ सौंह अनेकनि आवङ्ग
ऐककरौ रतिकौ प्रति रैनकी गौनै ॥ षवापनैं षाङ्गवस्याइ

बिरी जन आईहौ केशव आजुहीगौनै ॥ मोहन के मनको

मोहनी सकहौ यह सिषई सिष कौनै ॥ सवैया हिनके र

न देषउ जन देष्यौ सवै हित वान सुनौ जु सुनी सबही है ॥

यह तौ कछु औरु वहै सबही अब मौंह करी वकरी जनही

हैं ॥ समझाइ कहौ समझी सब केशव झूठी सवै हम

सौंज कहीहैं ॥ मानकियौ अपमानकरौ तो हमसौ अब के

रा.म.
२२५

हसिकै कोरहीहै ॥ अथ प्रौढा अधीर लछन वरननम ।

दोहा ॥ पतिकौं अति अपराधगनि हनन करै हितमानि-

करन अधीरा प्रौढ नहि केशवदास वषानि ॥ सवैया ॥

सौसष पाइ सिषाइ रही सिष सीषेन पसिषनैहू सिषाई ॥

मैवउनै डरपाइ रही देषौ पै केशव केहू उदेवनजाई ॥

देउदियेविन साथनिहू संगळूटन कौ षलकी षलनाई ॥

देषहु देमथ की श्रट कोटि मिटै नचढै विषकी विषनाई।

अथ प्रौढा धीरा धीरा लक्षन वरननम् ॥ दोहा ॥ मुष

रुषी वातैं कहै जियमै पियकी भूष ॥ धीरा अधीरा जानि

यौ जैसी मिटी ऊष ॥ यथा सवैया ॥ केशव और न सो

रस रासि रस्यो रस वाउ सवै हम सौं हैं ॥ हौं मन मेले

न जो लौ कछू अब छाडहु बोलिवो वोल हसौ हैं ॥

रा.म.
२३.

देषहु पीइक बारस कोचन आरस लोचन आरसी सोहै ॥ आ

पज बैसही साजसों आज स भूलि गई पिय कान्हि की सोहै

इति स्वकीया भेद समाप्तम् ॥ ॥ अथ परकीया लछन

बरननम् दोहा ॥ सबनै परम प्रसिद्ध जगतां की प्रिया ज

होय ॥ परकीया तासों कहैं परम सयानें लोय ॥ अथ पर

कीया बरननम् दोहा ॥ परकीया द्वै भांति उनि ऊफ्रा 18 १८

एकअनूढ ॥ जनहिंदेषिवसहोनहैंसंनननमूढअनूढ ॥

अथऊढाअनूढलक्षनम दोहा ॥ ऊढाहोयविवाहि

ता अविवाहितिअनूढ ॥ तिनकेकहौंविलाससव केशव

मूढअनूढ ॥ अथऊढाविलासप्रछिन्नवरननम ॥

सवैया ॥ वैठीसषीनकीसोभैसभा सभहींकेसवैनेनन

माऊषसै ॥ हूकैनैंवानवस्यायकहै मनहींमनकेशव

रा॰प्र॰ हासहसै ॥ षेलनिहैइनषेलउतै पियचितषिलावनियौंबि
२३१

लसैं ॥ कोईजानैनहीं हगहैरिकिनकै हरिआंषिन कै

निकसै ॥ अथप्रछन्नकाविलासप्रछिन्न सवैया ॥ वैठि

ऊंती ह्रजनारिनमै वनिश्री वृषभानकुमारिसुभागी ॥ षे

लनिहीं सषि वौडरचारि भई नहि षेलघरी अनुरागी ॥ पी

केतेकेशव वोलउठे हुनिकैचितवावरि आनरिजागी ॥ १९

१९

जानिनकाहूकवै हरिके सर मारयाही सरसी दृगलागी॥
दोहा ॥ काहूसौं न कहै कहूं वात प्रछन्नूढा गूढ ॥ सखीस
हेलीसौं कहै ऊढा गूढ प्रछन्नूढ ॥ अथ ऊढा प्रकाश वर
ननम् सवैया ॥ केशव रायकी सौंहकै कै कछू एकन
प्राय मे हेउपरी ॥ एक विनै सखकापटनै उन वात कहै व
हुभाय परी ॥ चारच कोर विलोचन भासि चहूं दिसनै अँगरी

रा॰प्र॰ पसरी ॥ सषिआजगाई होती गोकलहैं सबहीमिलि है
२३२

जकोचोदकरी ॥ अथ अष्टनायका लछन वरननम् ॥

दोहा ॥ एइसब जिनती नायका वरनी मति अनुसार ॥

केशव दास बषानिये ते पुनिवल आठप्रकार अथ अष्टना

यका भेदववरननम् दोहा ॥ स्वाधीन पतिका उत्कया

वासिक सिजानाम ॥ अभिसंधिता वषानिये और षंडिता वा

70 २॰

म ॥ केशव प्रोषित प्रेयसी लब्धाविप्र लब्धानि ॥ अष्टना
यका प्रछन सकल अभिसारिका सजानि ॥ अथ स्वाधीनप
तिका लछन वरननम् दोहा ॥ केशव जाके गुन वंध्यौ
सदा रहै पति संग ॥ स्वाधीन पतिका होय सो वरनन प्रेम
प्रसंग ॥ अथ प्रछन्न स्वाधीन पतिका वरनने ॥ सवैया.
केशव जीवन जो ब्रजको निज जीवहूते अति वा पहिभावै.

रा॰स॰
२३३

जापरदेवकुमारनिवारनमाईनवारलगावै ॥ नाहरिपैने
गवारिकीवैरीमहावरपायकुंवायदिषावै ॥ हौंनेवबी
प्रवहासमनिहूंप्रेमसोंप्रारजदेषिनेकुतरछावै ॥ अथप्रका
शस्वाधीनवछननम कवित ॥ बोलीकोमोपानने
हिकरनमेंवारिवेोई र्पणाजेौनेहीमोऊरूरनी स्यमनीहै-
नेरमननोवयभगीरयरयपीछेपीछेडोलननयालमेरोगे

गाकोसोपानीहै ॥ तेहीनिपदेवनोपायोपनिकेशवरा

यपनिनीवडनपनिदेवनावषानीहै ॥ ऐसीवानेंकौनज

न मानी स्तुनि मेरी रानी उनके तोतेरीवानीवेदकीसोषानीहै।

अथउनकालक्कनवरननम् दोहा ॥ कौनेहंहेतनआउ

योमीनमजाकेधाम ॥ ताकौंसोचनिसोवहियकेशवउन

वाम ॥ अथप्रक्कनउकावरननम् कवित्त ॥ कैधोंर

रा॰सं॰ हकाजकेधौंकृष्योनसषासमाजकैधौंकछूभ्राजत्रनवा
२३४

स्वरविमाननतें ॥ दीनोनैंनसोयकिधौंकाऊसोंभयोविरोध

उपज्योप्रवोधकिधौंउरस्थवदाननैं ॥ स्वबमैनदेहकिधौंमो

हसौंकपटनेहकिधौंदेषिमेरुश्रनिदेहश्रापिराननैं ॥ किधौं

मेरीषीनकीप्रनीनलेनकेशवराघवप्रजहूनग्रायमनस्यौं

कौंनेवाननैं ॥ अथप्रकाशउन्तावरननम सवैया ॥ २२

22

सषीभूलिगईमलपकिधौंकाहूकिभूलेईडोलनवाटनपा
ई॥ भौनभयेकिधौंकेशवकाहूसोंभेटभईकोऊभामनि
भाई॥ आवनहैमगआयगयेकिधौंआवेहिंगेसजनीख
घदाई॥ अथनवेदऊमारसवारहकौनविचारअवेरल
गाई॥ अथवासिकसिजालछनवरननम दोहा ॥
वासिकसिजाहाथसोकहिकेशवसविलास॥ विनवैव

रा॰स॰ निरटहंकारमैं पियआवनकीआस ॥ अथप्रछन्नवासिक
२३५
सिजावरननम् कवित्त ॥ चंदनविटपकोमलविमलदल
ललितवलित लतालपटी लवंगकी ॥ केशवदास नामे डरी
दीपकीसिषासीदौरीडगावति नीलवासहुटनिअंगअंगकी ॥
पौनपानि पैबीपमुवासमै सबद हनिजित तित चौंकि चौरे
मोपसंगकी ॥ नंदलाल आराम विलोकै कंजजाल बालली 23 २३

नी गति नहिं काल पिंजर पलेगकी ॥ अथ प्रकाशवासिक

सिजावरननम् सवैया ॥ भाषति है सुषवैन सषीन सौं ला

षहिये अभिलाषनियो है ॥ कोमल हासनि नैन विलासनि

अंग सुवासनि को मन मोहै ॥ मूरति वेनकियौं तुलसी न

लसी वनमें रति मूरति को है ॥ कुंज विराजति गोपवधू क

मलाजन कुंज कुटी महमोहै ॥ अथ अभिसंधितालक्षणम्

रा॰सं॰ २३६

दोहा मानमनावनहूंकैमोनदकाअपमान ॥ हूनोउव
निनविनलरौअभिसंधिनावषान ॥ अथपछकनअभिसं
धिनावरननम् कवित ॥ वारवारवोल्योजबवोल्योनविह
सिनववालकजैयोंवोलिवेकोकनविललानहै ॥ जैयोंजैयोंपरे
पायनमैंपाहूनतैंपीनभयोहोनकहाकियेअवमाषनसोंगा
नेहै ॥ केशवदाससवक्राडिकीनोहठहूंमोंधेरहेनजनोहूका

२५ 24

डिजियजियेबिनकहाजानैहै ॥ ऐसेप्यारेपियइंकौमायो
नमनायोमनऐसोनोहिहूंकिपज्जपीछेपछिनानैहै ॥ प्र
थमकासप्रभिसेरचिनावरननमसवैया ॥ पायपरेउंनेसी
नमन्योकहिकेशवकेहूंनमैहगदीनी ॥ नेरीसषीसिषसीषी
नएकहूंहोषडंकीसिषसीषिजलीनी ॥ वेदनवेदसरोजसमी
रजैवेडघदेहमभईहवहीनी ॥ मेउलटीजकरीविमोकहूमाय

रा॰म॰
२३१

नहीउलटीविधिकीनी ॥ अथषंडितालछन दोहा ॥ अ
वनकहिआवैनही आवैप्रीतमप्रात ॥ जाकेचरसोषंडिता
कहैसवबहुविधिवात ॥ अथप्रथिन्नषंडितावरननम
कवित ॥ आघनजोसहृजननकाननतेसुनियतजैसेके
भावसाइनमलोगनमेगायेहो ॥ वेसकीविसाधेसयोका
कजैबुननफिरेजहतेसीठेसोनषानतेठडोटठायहो ॥ हरि

२५

हरिकरतेसौंदौरिदौरिगहेपायजोनैननकदौरदौरजानिजि
यपायेहैं ॥ वाकोचरचालवेकोवसेकहांवनस्यामहूंह्वै
सौंवुमनआनमेरेवरआयेहैं ॥ अथप्रकासमंषेरिनावरननं
सवैया ॥ आजकहूंअषियांहरिओरसीमानोमहावरमांहि
रंगीहैं ॥ मोऊनमोहिसीलावानमोहिइनेपरमोहनमोहि
लगीहैं ॥ मेरीसौंमोहूसौंमानकूवेतिहियेरसरासकीरीति

रा॰मं जगीहै ॥ मैरेवियोगकेनेजनवीकिधौंकेशवकाहूकेप्रेमप

२२८ गीहै ॥ अथप्रोषितप्रीयसीलछनवरननम दोहरा ॥ जाको

प्रीतमदेश्नवपियगयोकौनहूंकाज ॥ ताकोप्रोषितप्रेयसीक

हिवर्ननकविराज ॥ अथप्रछन्नप्रोषितप्रेयसीवर्ननम ॥

सवैया ॥ केशवकैसेहूंसूरवप्रतमिल्यौमनभावनोभागभ

यौरी ॥ जानैकोमाईकहाभयोकौहूंजोप्रीथीकोप्रापक्र 76 २६

घोमत्कचौरी ॥ ताकडूनहनप्रजौहमिवोलैजऊमेरोमोहन-
पाय पकौरी ॥ काठहूनैहदनेरोकटोरइनेविरहांनलहूंन
जकौरी ॥ अथप्रकाशयोषिनयीयसौवरननम् सवैया ॥
श्रीपिदैप्रायउहाउनसौंयहभोजनकैप्रवंहोहमप्रेंहै ॥ ता
कडुनैप्रवलोवहराइकैराषीवह्याइमहकरीमैंहैं ॥ वैटक
हाइनकीपिगाकेशवजाउनहीकोऊजायपजकैहै ॥ जान

रा॰स॰ नहींउनआषिनिनैंप्रमहग्रोउमगैवरूसौंउनिवैहै ॥ अथवि
२३५
प्रलब्धालछनवरननम् दोहा ॥ हृतीसौंसंकेतनवदिलै
नपठाईआइ ॥ लब्धाविप्रलब्धजानियेप्रनआयेसंनाइ ॥ अथ
प्रछन्नविप्रलब्धावरननं सवैया ॥ फूलसेफूलसबैवासकुं
वाससीभाकसीसेभयेभौनसभागे ॥ केशववागमहांवन
सौंजरसीवपरीजौन्हसबैअंगदागे ॥ नेहलगयोउरनाहरसौं

निसनाहवरीककहूंअनुरागे ॥ गाहिसोगीनविरीविससीसि
गरेईसिंगारअंग्रंगारसोलागे ॥ अथप्रकासविप्रलभ्यावरनने
कबित ॥ देषतिउदधिजानदेषिदेषिनिजगानचंपककेपान
कछूलिष्योहैवनाइकै ॥ सकलसोंधंपठाइहतिकाकोमा
लिउनिफूलमालनोछिरीवीरावगराइकै ॥ लैलैदीहसासन
जिविविधविलासहासकेसोदासकैंउदासबलीप्रकलाइकै॰

रा.स.
२८

सेरकैसेकेतसूनोकान्हजूसोंबोलीऊनोमोसोजावेकरहूनो

हूनोऊघपारकै ॥ अथअभिसारकालक्रनवरनने दोहा ॥

दिननैकैमदमदननैतेपियकोंमिलैजजाय ॥ सोकहियेअ

भिसारकावरनीविविधवनाय ॥ अथसकीयाकोअभि

सारवरननम दोहा ॥ अतिसलज्जउरगउरभरीचरिति

वधनकेसंग ॥ सकियाकोअभिसारयहभूषिन भूषितअंग

२८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दोहा ॥ जनीमहेलीसोमिंयेंवधूवधूनसंगचार ॥ मगमैंदे
इवहाइपगाझलवेंनीअभिसार ॥ अथपरकीयाअभिसा
रिकावरननम् दोहा ॥ चकितविसाहिंसमहितनीलवस
नजनगात ॥ ऊलटासैंध्याअभिसरैउन्मवनमग्रथगात ॥
दोहा ॥ चहुंओरचितवैंहसैंचितवौरैसविलास ॥ श्रंगारा
गवंजिनरचितनभूषनभूषितवास ॥ दोहा ऊसमकेदकर

रा॰सं॰
२४१

मंदगतिसषिसंगमगबाजार ॥ सषीसहेलीसाथहैवरनिनारि
अभिसार ॥ अथप्रछन्नप्रेमाभिसारिकावरननम् कवित ॥
लीनेहममोलघनवोलीआईजायोमोहूमोहिघनस्यामघनमा
लावोलिलाईहै ॥ देषोहैहेडषजहांदेहऊनदेषीपरैदेषीकैसे
वाटकेशवदासवीदिषाईहै ॥ ऊंचेनीचेवीचवकीवकंटकनिपी
रैपगसोहमगायदागतिअतिसुघराईहै ॥ भावीयहकारीनिसि

29 २५

निपट अकेलीनमनाहीप्राणनाथसाथप्रेमजसहाईहै ॥ अथ

प्रकासप्रेमाभिसारिकाकरननम् कवित ॥ नैननकीअनुरा

ईगानकीगराई नडरनिडुनिचालकी ॥ अपनेचरित्रनकेचित्र

नवचित्रचित्रचित्रनीज्योंमोहैसाथभूतिकाअलकी ॥ वेद

केसमानचारुचायसोचपलीफिरनिकरकैनिसारेम्हयानैननकी

पालकी ॥ कीजैपैपानअनुरूषैजैपानआनप्यारेप्राईहैजुप्राई

रा॰मं॰
२५२

प्रलवेलिकालकी ॥ अथप्रकन्नगावीभिसारिकावरननं

सवैया ॥ लाडिली लीलिक लोचिलरीकहूंलाललकेकहो

प्रेगिलगायके ॥ आजनो केशव कैसेहू लैकपं लागन दनि

नदेषहुआयकै ॥ वेगचलौउटिआईलिवावनदोरिअकेली

पहोंअजलायकै ॥ भलेहू गोकुल गाउमे गोविंद कीजे

गुरुरनगाउवरायकै ॥ अथप्रकासगावीभिसारिकावर्ननं

३०

कवित्त ॥ चंदन चढाइ चारु सुंदर के उर हार सुमन सिंगार
सोहैं आनंद के कंद ज्यौं ॥ बारे को गिरनि नाथ बानी मे बजाय
गाथ सुरराज मराल साथ बानी जग बंद ज्यौं ॥ चौंकि चौंकि च
कई सी सौतिनि की हूनी चली सौंते भई दीन अरविंद उडगनि मं
द ज्यौं ॥ तिमिर वियोग भूले लोचन चकोर फूले आई ब्रज चं
द चंद्रावलि चलि चंद ज्यौं ॥ अथ प्रछन्न कामाभिसारिका ॥

रा॰स॰
२४३

कवित ॥ उरझत उरग चपत फनि चरनन देषत विविध नि
सिचर दिसचारके ॥ गनत न लगत मसलधार सुनत न
झिल्लीगन घोष निरघोष जलधारके ॥ जानत न भूषन
गिरत पट फाटत न कंटक अटक उरउरज उजारके ॥ प्रेत
नकी पूछै नारि कौन पैं सीष्यो यह जोगको सो सार अभि
सार अभिसारके ॥ अथ प्रकासकामाभिसारिका सवैया

31 ३१

गोप वडे वडे वैठे अथाइनि केशव कोर सभा अवगाहीं ॥
षेलन वालक जाल गलीनमै वाल विलोकि विलोकि वि
काहीं ॥ आवन जानि लगाई चहूं दिस हेरत मै पहिचानन
छांहीं ॥ चंदसों आनन काढि कहो वली सूझत है कछू
तोहीं कि नाहीं ॥ अथ विविधनाइका उत्तम मध्यम अधम
तामै प्रथम उत्तम वरननम् दोहा ॥ मानकरै अपमानतै

रा॰म॰ नैनैमाननैमान ॥ ज्यौंदेषसषपावईनाहिउनमजान ॥ सवैया॰
२५४
होनकहाअवकेसमझेननवैजवहैसमझाए ॥ एकहिंबेक
विलोकनिमाहिं अनेकअमोलविवेकविकाए ॥ जानपज्योन
जनावहजूजनभावपिलौंउहिजानिहौपाए ॥ वानवनायव
नायकहाकरौलेउमनायमनायजैयौंआए ॥ अथमध्यमावर
ननम ॥ दोहा ॥ मानकरैलघुदोषतैछाडैवहुतप्रणाम ॥ ३२ ३२

केशवदासवषानिहैंनाहिमध्यमाजान सवैया ॥ भूलेहूभूये
नहीविनयोइहकान्हकियोलविलालचकेनो ॥ हाराकेहारि
रहेपुनिकेशवपायपरेनोपरेईरहेनो ॥ हैंनोयहैनवहीकीवि
वारनिहोतेगुमानकौंयाहीनोपनो ॥ लामीलरैअनपानुरिदे
हजनैकवडीविधीअंषैनदेनो ॥ अथप्रथमा दोहा ॥ हुदै
वारहिंवाओरहैंफैवेहीकाज ॥ ताहीसौंप्रथमासवैकहिवरन

रा॰ सं॰ नकविराज सवैया ॥ कातीकपटज्जकान्हसोकीजैरीवारी
२४५
वेवोलऊवोलकमाई ॥ फारौंसत्रुत्रवटऊोटग्रदैसोईरीठक्र

टौग्रधिकौज्ञयसाई ॥ केशवत्रैसीसषीनकोमारौंसिषैकैक

रैहितकौजहसाई ॥ वारहिवारकोहसनोवारौवहांजैस

त्रुहिवियोगावसाई ॥ अथनायकलक्षनवरननम् दोहा ॥

अभिमानीत्यागीतरुनकेलिकलानिप्रवीन ॥ भव्यक्षमी 33 ३३

पुराण.नी गति — नायक नायिका. वर्णन सवैया छन्दे.

अथनाइकावर्णनम् ॥ दोहा ॥ कही नाइका तीनवि
ध प्रथम स्वकीयानाम ॥ परकीया पुनि दूसरी गनि
का तीजी नाम ॥ अथस्वकीया ॥ दोहा ॥ संपति विप
ति जु मरन हूं सदा एक अनुहारि ॥ ताहि स्वकीया जा
निहौ मन क्रम बचन विचारि ॥ अथस्वकीयाभेदवर्ण
ने ॥ दोहा ॥ मुग्धा मध्या प्रौढ़ गनि तिनके तीन विचार

र॰
मं॰
२२३

एकएककी जानिये बार बार अनुहार ॥ अथ अव
रननै ॥ दोहा ॥ नवल वधू नव जोवना नवल अनंगा
नाम ॥ लज्जा लिये सुरति करै लज्जा प्रीये सुवाम ॥ अ
थ मुग्धाभेद ॥ मुग्धा एक अज्ञात है एक ज्ञात निय
वेस ॥ तिनके केसव कहत है लतन अतन भेस ॥
अथ मुग्धा नवल वधू ॥ दोहा ॥ तामैं मुग्धा नववधू

कहत सयाने लोय ॥ दिन दिन हूनी डनि वढै वरनि कैहै

कवि कोय ॥ यथा सवैया ॥ मोहिवो मोहनकी गति

को गतिही पढ्यो वैन कह्यो यो पढैगो ॥ ऊप ड्यो जन

की उपजे दिन काहि मढै अंगिया न मढैगो ॥ नैनन

की गति गूढ वलावल केशवदास प्रकास वढैगो ॥ मा

ई कहो यह माय गी दीपति जौ दिन है इहि भानि वढैगो ॥

नववधूकोरसमंजरीमें अज्ञातजोवना कह्यो है ॥ अथ नवल
जोवना मुग्धा लक्षन वरननं ॥ दोहा ॥ सो नव जोवन मुग्धि
ना मुग्धा को यह वेस ॥ बालदसा निकसै जहां जोवन को प
रवेस ॥ यथा ॥ सवैया ॥ यन्न भूषरि लोचन लोलसो मेलि
ख कोउ कटाक्ष की कोर कपी ॥ मख माधुरि बानी वसी
वनराई यो केश मोहन नाम्ह पपी ॥ ऊच नेह नैनै मन लाज

विराजति बारगहै वडें डोरसफी ॥ नवफी डति वालहिं
वालकता हति श्रेग अनेग की फौज वफी ॥ नवजोवना
को रसमंजरी मै अगयानजोवना कहा है ॥ केसव फूल ना
वी भरुझी कटि लूटि निनै वलई वङकाली ॥ वैनन सोच
संकोच खै नैननि छूटि गई गति की चल चाली ॥ यौं सकु
चीर यही अवलै नमकौं मिलऊं वनमाली ॥ बाके अयोन 3

निकासनकौं उव आपहै जोवनके अविनाली २ अथव
वनसषीका ह्मलसौं ॥ कवित ॥ मकता मनिन कीहै
मकपरीसी नाक दोन दाडौं दामनी हसनी वनीसीहै ॥
मोहनके मंजनके अषरोन कीसी रेष भ्रकुटी सवेष भाव
भेद छवि छीसीहै ॥ चिन चनवाई उफकीसी उफकेसे
अरुकव सजचौनो नैनजैसे उफकीसीहै ॥ केसो दास

रूपकीसी माला प्रेम कीसी माला आज लौन देखी सुनि जै
सी आज दीसी है ॥३॥ अथ नवल अनंगा मुग्धा लक्षनव
र्ननम् । दोहा ॥ नवल अनंगा होयसो मुग्धा केशवदास ।
खेलै बोलै बाल विधि हँसै रिसै सविलास ॥ यथा कवित
चंचल न हूजै नाथ अंचर न खैंचो हाथ सोवै नेक सारिकाऊ
सुकतो सवा योजू ॥ मंद करौ दीपदुति चंदमुष देषियत दौ २

रा-स
२२६

बिकै उराई आकै हारनि दिखायोजू ॥ खगराजमराल बाल बारि

रै बिजारि देकै आधी नमैहू केशव सुमोहु मन भायोजू ॥ खु

लके निवास ऐसे बचन बिलास सुनि मैगनो सुरनि हूने

स्याम रूष पायोजू ॥ रसमंजरीमे इसकोज्ञान जोवनाक

हाहै ॥ अथ लज्जाप्रया इति मुग्धा लक्षन बरननं ॥ दोहा

मुग्धा लज्जाप्रयाइनी बरनन कवि इहरीति ॥ करैजुरति

4 83

अति लाजसौं पतिहि वढावै प्रीति ॥ यथा ॥ सवैया ॥ बोलीन
बोलै बुलायेरहे हरि पायपरे अरुझे लिये ओरी ॥ केसव भेटि
वेको भरि अंक कुंडाइरहे जकसे नहिं छोरी ॥ रूपेचितै न वे
कौं केनो कियो सिर चांपि उबाय अंगहू टानि ढोरी ॥ सैभरि
खिनन ऊन विन्यौ न रह्यौ गहि नैननि लाजनि गोरी ॥ ॥
अथ अग्यातजोवनावरननम् ॥ कवित् ॥ इत उत चाहि दे

रा॰सं॰ घ्यो जब कोऊ फिरा नाहि बारबार जिय कह्यो हियै कह्यो भयो
२२०
है ॥ अबलौनो देषनिहौ इहां कछू इन्यो नही अबहूने देषि
यत उर उर नयोहै ॥ रहसि षिलन गई तांने जेब भारी भई
किधौ याने बाज भयो महावर दयोहै ॥ श्रोषनकी मेरी फा
टनसी आवत है जान नहो रीठलागि केशो झांकि गयो है ॥
अथ जानजोवना ॥ सवैया ॥ उरू उरोजनके परसे रिसभो
5 ५०

हि वधी नवधी छिनछोहै ॥ देषद नखद छुवनहि रसरी

ति गही उमही मनमोहै ॥ नीवीको नीवि छुवै छवि ग्रेर

सी पेलन पानि पिया पर सोहै ॥ नाहिकरो जिन नागरि

नराज राज दियो नव अंकुस कोहै ॥ अथ मुग्धाकोसयन ॥

दोहा ॥ मुग्धा सोय रहै नहीं पियसंग बनइ सुजान ॥ज्यौं

क्यौं हू सोवै सषी सुष नहीं नाहि समान ॥यथा॥ सवैया॥ ॥

र.प्र
२२८

पाइ परें मनुहारि करें पलका पर पाय दियो भय भीने ॥ सोय
गई कहि केशव कैसेहूं कोरही कोरक सौंहन कीने ॥ साह
स कै सुषसौं सुष ह्वै छिन मै हरि मानि सबै सुषलीने ॥ एक
उसास सहीके उसासे सिगरेई सुगंध विदा करि दीने ॥ अथ
सुषको सुरत लछनम ॥ दोहा ॥ सुरषा सुरत करै नहीं सुष
नेहूं सुखमानि ॥ छलबल कीने होति है सुषसोभा की हानि ६ 6

यथा कवित्त ॥ सषदै सषीन बीच दैकै सौंहैं षाय कै षवाय
कहू ख्याइवर कीनी वस वस है ॥ कोमल म्रनाल कासी
मल्लका की मालकासी वालिका जडारी मींजी मानस किए
रहै है ॥ जानै को विभात भयो केशव रहै को बात देषो प्रा।
नि गान जात भयो किधौं अस है ॥ चित्रसी जराषी यह चित्र
नी विचित्र गति कहो धौं रसिक नए यामै कौन रस है ॥

रा॰ सं॰
२२५

अथ मुग्धाकोमान लक्षणवर्णनम् दोहा ॥ मुग्धामा
न करै नही करैतो मनन्द निदान ॥ पौंडर पाय छुडाइये
ज्यौंडर पै परधान ॥ यथा सवैया ॥ बोलन वाल बुलावत
है नषरेष लिषैसब प्रेम परेषी ॥ आपन हाथ विलोकि वि
लोकि कही नवके सब आदि वसेषी ॥ छोटी वडीविधिरे
ष लिषी जग आए कीरेष सकोनजलेषी ॥ प्रेमनेवालस

८

द्योनपरयो शुकलाय कहयो पिय कैसींहूं देषो ॥ इतिमुग्धा
समाप्तम् ॥ अथमध्याभेदवर्ननम् ॥ दोहा ॥ मध्या
रूपंजोवना प्रगौलभ वचना जान ॥ प्राडुर्भूत मनोभवा
सुरतनवचित्रंज्ञान ॥ अथमध्या आरूढजोवना लछणव
र्ननम् ॥ मध्यारूढजोवना पूरण जोवनवंत ॥ भाग
सुहागभरी सदा भावत है मनकंत ॥ यथा ॥ कवित्त ॥

ग॰सं चंदकैसो भागभाल भ्रकुटी कमान कीसी मैनकैसे पैने सरनैन
२२
नविलासहै ॥ नासिका सरोज गंध वाहसे सुगंधवाह दारयो
सेदसन कैसो बीजरी सो हासहै ॥ भाईकीसी ग्रीव भुजपान
सो उदर औरं पंकजसेपाइ गति हंसकीसी जासहै ॥ देषीहै
गुपाल एकगोपिकामै देवतासी सोनेसे सरीर सबसौंधेकीसी
वासहै ॥ अथअगालभवचनामध्यावरननम् ॥ दोहा ॥ श्रव ८

कहता है। क ख ग घ ङ. इन पांच अक्षरों की एक
मात्रा मानते हैं सो समलय में पांच अक्षर की होती
है इसी वासते जो एक अक्षर स्वरसे युक्त उसकी॰

अत्र निमेषस्य द्वादशभागात्मिकमात्रा एकमात्रो ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घस्त्रिमात्रः प्लुतो व्यं
जनं चार्द्धमात्रिकमिति वैयाकरणानां मते संगीतमते तु पंचाक्षराणामुच्चारणकालेन एक
मात्रः कालः कथितः विलम्बितः समलयविशेषाद्गृहीतः।

संज्ञा है सो चतुर्गुण लयमें जाननी द्विगुण में दो मा
त्रे का एक मात्रा सम में पांच वा छे अक्षर का मात्रा
दो मात्रा का दीर्घ त्रय मात्रा प्लुत अर्द्धमात्रा व्यंजन।

रा.म.
७

येह शास्त्रोक्त नियम है। अब एक ताल सें आरंभ
कर तालों का वर्णन करते हैं। आदि में यक्का १ ता
ल है दूसरा धम्माल २ यति ३ चंपक ४ द्विताला ५
रूपक ६ त्रिताल ७ धीमा ८ त्रिताल। त्रेवट ९ झंप १०
अष्टताली ११ सूर्य्यफाक १२ चर्च्चरी १३ ब्रहद्ब्रातथताल:
१४ चत्र:ताल: १५ पंचसवारी १६ पंचताल: १७ बहू.
लिका १८ षट्ताल: १९ समताल: २० अष्टसवारी २१
गणेशताल: २२ ब्रह्मताल २३ रुद्रताल २४ विष्णुताल २५

सविनानाल: २६ राधानाल २७ कृस्ननाल २८ मोहि
नी २९ चक्र ३० ॥ अब श्री कृस्नजी के पास वृंदाब
न में गोपीयों ने जो जो ताल गाये सो उनही गो०

आद्यैकतालोथम्मालो यतिर्वै चंपकस्तथा द्वितालोरूपकश्चैव त्रितालश्चद्विधाभवेत्
चैवदोऽर्जपतालश्च अष्टतालीततः परम् सूर्य्यफाकश्चर्चरी चत्रह्हत्वानर्थतालिकः ॥

पि यों के नाम कर प्रसिद्ध हो गये। अब मार्गी मत
के ताल जो तान सेन ने गिने है सो कहता है।
शिवजी के मुख तें पांच ताल प्रकट हुवे प्रथम च

ग.स.
८

चपुट १ चाचपुट २ षट्पिता पुत्रक ३ उद्घट्ट ४ सं-
पक्क ५ आदिताल द्विताल २ त्रिताल ३ चतुर्थताल
४ पंचताल ५ सिंहनाल ६ सिंहलीला ७ कंदर्प ८

चतुस्तालः पंचतालो मत्रवी पंचवल्लिका षट्तालः सप्ततालश्च ग्रहणम्वीततः परम्
गणेशोतिचविख्यातो ब्रह्मतालास्तथैव च रुद्रतालो विरुद्रतालः सविनातालसंज्ञिकः

वीरविक्रम ९ श्रीरंग १० चर्चरी ११ प्रत्यंगि १२ यतिल-
ग्न १३ हंसलील १४ गजलील १५ वर्णभिन्न १६ त्रिभि-
न्न १७ राजताल १८ वर्णताल १९ सिंहविक्रम २०

८

8

गजानन २१ दर्पण २२ मिश्रितवर्ण २३ जयवनमा॰
ली २४ हंसनाद २५ सिंहनाद २६ कुऊटलीला २७
तरंग २८ रामभलीला २९ स्वान ३० सिंहनंदन ३१
त्रिभंगी ३२ रंग ३३ मार्गाव ३३ मंठ ३४ मध्यितमंठ ।
३५ वियानमंठ ३६ करमंठ ३७ कोकिप्रिया ३८ नि॰
शाकरी ३९ राजविद्याधर ४० जयमंगल ४१ विनया
नंद ४२ मलिकामोद ४३ क्रीडाजय ४४ मकरकीर्त
४५ श्रीकीर्ति ४६ प्रतिताल ४७ विड्डम ४८ विड्डमा

ग० स०
ना० ९

ली ४९ (मल्लिकामोद) समनेदन ५० मंठकामेठ ५१ दी
पकदेकी ५२ विषम ५३ प्रमिनेग ५४ प्रनेग ५५ ना
दीमली ५६ पूर्णा ५७ विट ५८ कंकाल ५९ विषम ६०

राधिकातालकृत्स्नसम्मोहिनीचक्रतालिका गायंति गोपिका यं यं कृत्स्नध्यायपरायणाः प्र
कैकं कृत्स्नसमाविष्टे वृंदावनविहारके गोपिकाः स्तुतिरूपा या प्रत्येकं तालमिष्यते ॥ ३३ ॥

लघुशेखर ६१ वनः ६२ मार्गकंकाल ६३ केदुक ६३ यक्का
६४ कुम्द ६५ वालकंद ६६ उरझावली ६७ गायक ६८
वेग ६९ प्रभेग ७० वसंत ७१ शेषविविभंग ७२ प्रतापशे

४

घर ७३ कुप ७४ गजझंपा ७५ चतुर्मुखी ७६ रती ७७
मदनताल ७८ प्रतिमंठ ७९ प्रतिप्रतिमंठ ८० पार्वतिलो
चना ८१ लीलाकर्ण ८२ प्रतिललित ८३ राजनाराय
ण ८४ गारुडी ८५ लक्ष्मी ८६ ईश ८७ ललितप्रिया
८८ वर्द्धन ८९ जनक रागवर्द्धन ९१ षट् ९२ घट् ९३
हंसकला ९४ अंतरक्रीड ९५ उत्सव ९६ विलोकि
तवर्ण ९७ यति ९८ करुणा ९९ सारस १०० हंस १ चंद्र २
चंद्रकला ३ स्कंध ४ उत्ताली ५ चंद्रयुत ५ मकरंद ६

रा॰स॰ ऊविंद ८ कलधानि ९ गौरीताल १० राजमृगांक ११ भ
ता॰१० ग्नताल १२ सरस्वति १३ कंठाभरण १४ राजमार्तंड १५
निशंक १६ रत्नाकर १७ मेंड १८ ॥ प्रथमतालस्य म।
चित्रकेतुक १ इडवान २ संनिपात ३ खलताल ४ व
तः ५ लक्ष्मी ६ अर्जुन ७ अडनसत्र ८ महासत्र ९ वि
षमशेष १० कल्याण ११ वासत्र १२ पंचघात १३ पंचया
त १४ चंद्र १५ गणमंठ १६ एकताल १७ करमंठ १८
रामचंद्र १९ विपुला २० यति २१ संचय २२ पटताल २३

१०

10

पृथ्वीकुंडली २४ इंद्रकुंडली २५ पातालकुंडली २६
विस्तुविलेव २७ निलकोंबडा २८ कोंबडा २९ ऊडेव ३०
कनकमेरु ३१ कनककक्र ३२ चक्रमंठ ३३ हल ३४
शंखसंयोग ३५ चत्नरत्न ३६ कुरनाल ३७ विद्याधरमे
ठ ३८ वामहा ३९ चत्नमोठ ४० श्रीविस्त ४१ गाघना
गायगा ४२ नर्तकी ४३ परविस्त ४४ मन्मथ ४५ हे
म ४६ लहुविस्त ४७ द्रुतपार्णिका ४८ रत्नहल ४९
महोविव ५० त्रिवर्त्त ५१ परिवर्त्त ५२ विवर्त्त ५३ भ्रमे

रा॰स॰
ता॰११

गशिविर ५४ हेमनाद ५५ पुरमंत ५६ स्टगोक ५७
महाञमदी ५८ कोकिलकंठ ५९ विजयमंठ ६॰मा
लेग ६१ मरममंठ ६२ हरकंठ ६३ पटमंठी ६४ कल
मंठ ६५ रवि ६६ हविमंठ ६७ जनकमंठ ६८ जय॰
मंठ ६९ प्रियमंठ ७॰श्रीमंठ ७१ विराजयठान ७२
रंगवान ७३ गीर्वाण ७४ कल्याण ७५ कमल ७६
वल्लभ ७७ कलाप ७८ विचित्र ७९ खद्दित ८॰ गंभी
र ८१ श्रीरंग ८२ मूमित्र ८३ कविवर्ण ८४ संकीर्ण

८५
११

कलिंग ८६ पराजय ८७ रुद्रताल ८८ झहनार ८९
विकल्प ९० सरस्वती ९१ कंठाभरण ९२ नारद ९३
शारद ९४ तेंबरु ९५ किन्नर ताल ९६ विचार ताल
मैंन येह तालको कोऊ न पावत पार। इति मार्गमत
तालनामानि॥ अब प्रसिद्धमतताल: कथ्यते। सम
ताल में सम अरु असम अनुघात अरु अतीत येह
चार विश्राम है आदिताल एकाहै तिसका वर्णन
करता हूं एके के १२ मात्रे हैं गीतावलीवालेने के ६

ग०स०
ता०१२

मात्रेलिखे हैं कैसे के मात्रा सम लयोंका भिन्न भिन्नहै
सम लय के मात्रेकी विलंबित लय होने में दो मात्रे
कों एक मात्रा मानते है अकारादि ह्रस्व युक्त अक्षर
की एक मात्रा होती जैसे क कि कु एक मात्रा इन
की संज्ञाहै दो मात्रावाले की दीर्घ संज्ञाहै जैसें का
कू के इत्यादि त्रयमात्रा वाले की प्लुत संज्ञा जैसें
का: कैं को इत्यादि यक्ष के तीन भागहैं बरोबर
मध्य में सम अर पिछला अतीत अर तीसरा अन

यात सम के संभव अ्रसम सम गुरु कों कहते हैं अ्रा:

भी कहते है जिस पर ताल समाप्त होता है अ्रथवा च

लता है उसकों सम कहिते है अ्रर येह अ्राउ अ्रादि।

क मात्रे यों के चिह्न कहते है येह अ्रनुकादि चिह्न है ८

इसका विराम ८ द्रुत ० विराम ० लघु । लघुविराम ।

गुरुः ऽ विराम ऽ प्लुत ऽ विराम ऽ। येह चिह्न सम ताल

मैं समझ लेना जिस में तीन लघु सम भाग में लगें सो

यक्का ताल होताहै इसके स्वरूप का चक्र अ्रागेअ्रावे

ता॰स॰ गा सो नकशे में समझ लैना। अर जिस में दो अनु।
ना॰ख होन अर दो द्रुत होन सो यम्माल नाल होता है ८८००
इतियम्माललनालः। अब जिस में दो लघू अर विराम
हो सो यति नाल होताहै ॥८ इतियतिनालः॥ जिस

अणुद्वौ द्रुतेचैव यम्मालोनालउच्यते ८८०० इतियम्मालः। लघूद्वौचवि
रामोस्यायतिनालः सउच्यते। इतियति। द्रुतोलघुर्लघुश्चैवविरामश्चंपकस्तथा।

में द्रुत अर दो लघु होन अर विराम हो सो चंपक नाल
है ०॥ अर जिस में दो लघू एक विराम इसको रूपक
नाल कहिते हैं जिसका ठेय्या नाम प्रसिद्ध है॥इति

रूपकताल: । जिस में एक लघु एक द्रुत अर दो विराम
दो विराम सो चाचरी ताल है ।०॥ इति चाचरीताल: । द्रु
त त्रय जिस में हुवें अर विराम भी कुछ होवे सो त्रेवडा

इति चंपकताल: । लघुर्द्वंद्वे विरामश्च रूपकाख्यो विधीयते ॥ इति रूपकताल:
लघुश्चैकं द्रुतश्चैकं द्वौ लघू चाचरी स्मृता ।०॥ इति चाचरीताल: । द्रुतो द्रुतो वि
रामो लघु त्रेवडाख्योति दुर्लभ: इति त्रेवडाताल: द्रुतत्रयं च विश्रामास्तितालेति

ताल होता है ००० अब जिस ताल में त्रय द्रुत होन अर
एक द्रुत जितना चिर विश्राम हो सो जलद त्रिताला
होता है ००० जिस ताल में दो लघू एक गुरु होवे उस

गा. स.
ता. १४

को बृहत्त्रय ताल कहिते हैं जैसे— ।।ऽ जिसमें एक द्रु
त अर एक लघु एक गुरुः होवें सो झंप ताल होता है
जिस तरो ०।ऽ जिस ताल में एक लघुः और दो द्रुत हो

चकच्यते ००० इतिचितालः। द्वौलघुगुरुरेकंचद्बृहत्त्रतालउच्यते ।। इति
बृहत्त्रयतालः ।। लघुश्चैकंद्रुतद्वंद्वंस्सलफाषतासउच्यते। इतिस्सलफाता
लः।०० द्रुतत्रयंलघुश्चैकंचतस्तालः सउच्यते ०००। ।।१४।।

न सो स्सलफाकताल होता है ।०० द्रुतत्रयंलघुश्चैकं
चतस्तालः सउच्यते ।। जिसमें त्रय द्रुत अर एक ल
घु होवे सको चतस्ताल कहते हैं ०००। इतिचतस्तालः

१४

आव काहीं देखि कान्ह लाज सो लजानि नैन लाज
सों लजान है ॥ अथ बारहमास लिख्यते चैत्र वर्णि
सुफल फूल सो है हरि बेल मो है लपटै नै द्रुमन सों
फ फलित जसें है । भंवर मत बोले करै खेग क
लोलै सखि साथ झोलै रसिक रस महा है । नंदी गार
म सीतल पवन सों त्रिविध बल प्रबल साज साके

वि·श·
१५८

सखि समन सोहै । अहो नाथ मानों सखद बैन जानो
धनुष ले मदन कूंठ विरही कहो है । वैशाख वरी·
विमल रूप सखै है अचल प्रेम धरै है वहगा नाल कर
नैन परमान लीजै । कहू केटलाजै रुचै पत्रराजै
खितै नीन लावत्रो नीरजीजै । मदनि देखि माधो
नरन प्रीन बांधो सखिन नाथ साधो सुमकरंदपीजै·

नैमैनो पङ्कपके इहै नैनपकै मधुपके कंज मेरे दृगन
वास कीजै ॥ जेष्टवर्ण । नरनके दवगमें भवन
के नवनमें निकसिकैं भवनतैं दिनैं रैनजानौं । ज
हो मदन सीतल नजै निपन पीय लकुटै जेव जल
रसवरसमेव मानौं । मथन कंज वनवन नरंजा
ग वन गन सखि साथ वनकै वनौंके लहानौं ॥

वि·वा·
१५५

तजो होह उरनै ग्रसो साथ करनाथ सुवेजेठ केहो
कहौ लो वखानौ ॥ अथाषाढवर्ण ॥ घटा श्याम सा
गर लहरि हैर बादर गरज फेन धुरवा अनल विज
मोरहै । सुमन भ्रम मनिहै लहै देव घनहै सो वोरि
न भेरो छवि सुधा हुष मोरहै । करि मद गवन पेन
छिमकंद वन झाड कहिये वलन उरग माकन

सुमोहै । सलिल जंत खगनैन गंभीर पग नायप्रा
साद मानो उदधि कैलसोहै । सावणवर्णि । सभीने
सुवल कंदरा वारि झेझै सदन फूल फल वारु हरि
येव संपर । वरसमेह हुंदैं कुटै जेव जलयो अूरप
भुरप हरनी रम्य रंग पुरंदर । गरज खग भंवर नाद
वाजै वषरु रुंड वामोल मे ज्यों सुमनको पनुयर ॥

वि॰ग॰
९६

प्रियालै नहिन माधयौ श्याम घन नाथ सावन बनो
है मदन बाग सुंदर । भावै बाग । लसै दंत बाग पे
न मारुन महावंतन मैंहै मोतिन रचा चोंप राजै ॥
हरि रसो वलित प्रेऊ मै दामिनी न्यौं तजै सुउज
ल मथ जैरै मेमक्काजै । गरज बोर धरवाधजा
विन कौ पै देखि गडदाग मैन संग्रामकाजै । बनो

51

नाथ रावरे मैन सज देखियै मोसों भादो सघन का
म हस्ति विराज । असौजवति । हमन सेतजे ते
यरा मध्यनैने विकाप किधौं भं मही रालसैसो
रथा हृष्टकर हरकै रामरी फैल पारा परोपञ्रह
पा विभैसो । किधौं नाथ लैकर रवरी सारदा जौ
नि असतञत लिखोपेन क्षिरोधजैसो । विमल वो

द आसिन विमल चांदनी है विमल रूप ऐसो विमल
साज जैसो । कातिकवर्णं । गरम भौन जोवनसो अं
ग अंग सोवन सनेहे सगरा जोति सबे दायका । चा
रु सिर पर बसै श्याम तम नासक अभिराम सायकम
दनके अनल पायका । बादकटनैं तुजै रान रसमैं
जैसे कीट मोहे भमसके कारन लायका । नायनेरु

5

नचटै छवि प्रकासन मिटै दीपका निकाकि थीजग्य

नै नायका । मवासरवर्णा । पावन सरसजे अपाव

न सलिल ह्मान पावन परै संगाचहै वारसोहे । वैसे

कोक विरहीलखे नायकायक उदवित विथासोल

सोहे । बैठेरैन ज्यौंदिठै मीन न्यौंसों हस्रंजोग हे

खेमें बिना रान कोहे । वरी बार करकै वडी बार

लै नाथ हिल मिल रहो नेम अगाहन गयो है । एस
वर्णी । पोषमास तन व्यापत सीत । मिल है कव सो
वे मीत । विन पीय कैं जाडु न जाय । सम क सम
क मारी रैन विहाय । हरि विन मोहे नै कन सहावे·
विरहा भ्रम अनसी मैचावै । माघवर्णी । कृष्णो सी
न कर मीन कर भौर देखो वलि भौन करको ऊहि

63

रयो छायो है । छपो सूरयों सूरकों तेज कर मंद उर
कै करनसीत नव छपि गयो है । वसें वरनि मेदन
सबै मारके संकनलो जनलोक वचनन दयो है । न
हीं कें पंछे प्रति सिसर माघ मास ग्रहो साथही नाथय
ह प्रगा लयो है । फागुण वर्णि । वने वन सुमन फलि
सचन वहें जंथ वन वन तिया दामिनी सी हसै । छ

वि॰रा॰ विन दिसि उमडें सगवर समेथ पिव कागरज गान खग
२६३ ग्रान उरमै वसै । निय गुलाल नभरी इंडु वामा छुईवे
नैनैसो पवन पथ पथि चलनसै । नाथपेमी समै कौन
मग पग धरै मोस फागुनकीऐ साजपावसलसै ॥
इतिवारहमासासमाप्तं ॥ अथवसंतलिख्यते ॥
रागविभास ताल । आनन नजाकर पराजन गभी

6

54

रागपंचम ताल । चौपदी ॥ जागेहोरैन
सब तुमनैंना अरुन हमारे । इतिस्थाई । तुम
कीयो मधु पांन घुमत हमारो मनकारे नैज नंद
दुलारे । इतिअंतरा । तवे रुत पीय श्रेगपीर हु
मारे उरकारन कौंन पीयारे । नंद दास प्रभु न्याय
श्याम घन बरसे अनत जाय हम पर झूम झुमारे॰

पं-रा
२१
21

राग पंचम ताल । आलस उनींदे नैन लाल
निशा के कहां तुम रैं निशि जाए । पीक कपोल दे
खियत नहैं पियत नहैं पिय अधरनि अंजन लगाए ।
जावक भाल उर बिन गुण माल हृदे नख चिन्ह
दिखाए । नंददास प्रभु बोल निबाहे भले भोर
होत उठि आए ॥ राग पंचम ताल । प्यारी तेरे

आनन हग आलस जुत राजत रसमसे । नव किसो
र अंग संगारे नरंगरसे । सिथल वसन रसन दसन
अधरन छतलसे । पीक छाप जग कपोल पियमु
ख लगिहसे । मैं जानैं पहिचानैं वचन प्रीतम प्र
ण ग्रसे । पीय विहारी लाल ललित उरजन विच
वसे । राग पंचम ताल । कहो तुम सांची कहो

पे·गा· २२ ते जू आप भोर भए नंदलाल । पीक कपोलनि ला

गि रही है सुमत नैन विसाल । लटपटी पाग छुट

पटी वेंद सिउ रति मरगजी माल । सूरदास प्रभ

रस वस करि लीनें धन्य है ब्रज बाल ॥ राग पंच

म ताल । आज की बानि कपार हो लाल हैं व

लि गई । विगलित कच सु मन पाग छवि किरही

वाम भाग अंग अंग धरमई । अरुण नैंन जपकि
जात अरु जे भात बार बार कपोल निरखि विरखई ॥
धनि सुहाग भाग ताको गोविंद मुरलि प्रभु संग म
बनिस विनई ॥ राग पंचम ताल । तुम सों बो
लि वे की नांही । घर घर गमन करत गिरिधर
पिय बिन नांही एक ठांही । कहा करें सुंदर बन

पं·रा·
२३

नमसों जो होत मन माहीं । कुमदास प्यारीके
वचन सुनि हृदै मांझ मुसकाहीं ॥ राग पंचम
ताल ॥ जिनि बोलो पीय मोसों आज जहो व
मे निसिन ही सिधारो मोनें कहाहै काज । सगरी
रैन मोहि मगजोवत गई देखी मदनकी दाज ॥
छीत स्वामि गिरि धर हम जोरत आवन नाहि ला

ज ॥ रागपंचमता ॥ अरुन नैन देखियत

है आज । बसे जहां निसि नहीं सिधारो रसिकन

के सिरताज । मगजोवत मोहि रैन बिहानी नह्मे

नहीं कछु लाज । छीन स्वामिसों कहति भामिनी

इहां नहीं कछु काज ॥ इतिआभोगः ॥

पं·गी
२४

24

चा· ४

रागपंचम ताल । षट्पदी । पलेगा याय्येरेक्र
स्रम माला वडे कोपि सवेह्री कर लाज लोपी । जोडं
माह्रे मंदिरथि कौंण मूका वसे श्रेरे करसे पेली
सोक कोपी । नम्यो वनमालीनें भ्रम्यो वन वेल
डी नीर नहीसी चीते शपाते रोपी । भ्रमर जाया
नगण फूल मकरंदमां हृदय कमल माहरो रह्यो रे

पं॰रा॰
२५

गोपी। प्रीत करी तनयो प्रेमना पाउं हो तनमन प्रा

ण मरह्रद्रे देखे पी। कहे नर मैयोंना हरी रीस जैमऊ

नरे रेनम रहठे मैन पमले रे गोपी॥ राग पंचम ता॰।

मैया तेरोरी मोहन अति ही सयानों देत अटपटी

गारी। कंज महलमें अंचरा फारयो हंसि हंसि दे

दे तारी। गोरस ढोरे मनकी जोरे माटदही के फोरे॰

उदोउकी ओरी केसें वांधों नउदे भवन वेद नोरे । श्रुथ
र पोन परि रेभन ठेवन कहौं कहाल जोनी । शुक
नारदसों लीला अगोचर सुरकिनि कवर वोनी ॥
राग पंचम ताल । नंदजीव आंगन परम सोहा
मणेउ अति रलि आमणेउ कुसल कीहें । व्यापिवै ठेंठ
कैलास ब्रह्मसदन इंद्रना लोकथी अधिक कीहें ।

पे॰ग॰ २६ सकल तीरथ जहां विठल वासो वसे इंद्र अज ईस

जहां देव सबला । भक्ति बिना भूपरो वसन नहीं को

पवै पकवै पकवै अधिक उजाला । मानउ भाइहमेना

घ मन मावे यमे पम बिलसे प्यारो प्रेमप्रीते । नर

मैपानौ स्वामी श्रीकृष्णजी बाल लीला रमै पहज

रीते ॥ राग पंचम ताल । हरिजूकी भालक

लीला भावति । मांखन दधि दह्री की चोरी सोईज
शोदा गावति । शकट विभंग पूतना शोषन तृणा
वर्त वध कीनों । कुबेर बंधन जमल उधारन भक्त
निकों सुख दीनों बच्छ चरावन मुरली बजावति ज
मुना कूल विहारी । परमानंद दास की जीवनि
वृंदावन संचारी ॥ राग पंचम ताल ।जागत जाग

पं॰ रा॰ नैरैनि बिरानी। करिगाये सांक आवन मेरे ग्रहवसे
२८ अनतरतिमानी। उरबिन नाव बुन प्रकट देखिय
न यह शोभा अनिवानी। भाल महावर अधरनि अं
जन पीक कपोल निसानी। निसि मगाजोवत बीनी
मोकों आये प्रात यह जानी। चनर्भज प्रभु गिरिध
रन सिधारो तहांजो तुमरे मन मानी ॥ ॥

राग पंचम ताल । अष्टपदी ॥ कौन प्राणी करी
नारिहे अवनती ओऽहरी दीन थई मोन मांगे । जह
नी अवि गती अमर जन वलहे तेरे कमलावर कंठ
लागे । जगिन जागे करी जोग ध्याने धरी वहुतप
आदरी देह कष्टे । तोहीते हरी स्वपने नपेखिये
प्रेम दृष्टे । सेस सिंहासन सहज सोहिये सदा भव

पं॰ ता॰ न वैकुंठतस ममभावे । नेह श्री प्रणिपिकके मेदि
२८ र माहेरु प्रीम पीतांवरो पलंग आवे । भक्त वछल
28 नन्द विरदपोने वहे पम कहे समस्थ वेद वाणी । नर
सैथो नो स्वामी सुखेनणी सागर कीथी करुणामैने
दीन जाणी ॥ राग पंचम ताल । आज अजाग
ए मेग आलस भयो माहेरे मंदिर केम आवा ॥

भुवन भूल्यावर भामिनी भोगिया साथे साहेल ऊीयें
नलाव्या । पीत पटवी सारल्यातील अंबर परला अधर
अंजन नाणीरेखिलागी । यमने शुण्य सर्वनपकरी का
मिनी नमारे साथे जरैंन जागी । अलस अलना नणा
रंगा सलनाथ यानितक अईरहे खभगाभाले । श्रम
जलकेलि करी गीलें सोरे यणा अधरनणोधक लोच

पं-रा
२५
29

न विसाले । कारज कह्यो कोई कारण मन नाथ भले
पधार्यो प्रात पेहलो । मनविना मूल होते नरसैयो प
मकहे वलीने पधारजो काल वेहलो ॥ राग पंचम ना
ल । ध्यानधरि ध्यानधरि नंदजीनो कुंवर मूजेय
की अविल आनंद पाम्ये । अष्टमहा सिद्धते द्वारउभी
रहे देह नाउ ह्लनने हरवाम्ये । मोरना पिच्छनो मुक

ट मस्तक धर्यो मकराकृत कुंडल श्रवणा झलके ।
नील वदन तिलक ते सुभग केसर नाग केट मुक्ताफ
ल हार ललके । पीतांबर तनी पल वट कटि तटे त्रि
भंगी उभला वेणु वाए । कदमना द्रुम तले वाथि
कारस भर्यां हरिजीने मंगे अलापि गाए । हेदाव
न महीं मुरलिका धुनि सुनी गोपिका के रजा हेद

पं.रा
३.
30

ग्रावै । नरसैया नैंमनै ग्रानंद ग्रति घणो पुष्प मुक्ता

फललेईव धावै ॥ राग पंचम ताल । रहत रज

नी ज्यारे पाछली घटपरी साथ पुकषे म्यारे मईनरे

हेवै । निद्रा नीपर हरी स्मिरवा श्रीहरी पकनेप

कनेपमके हेवै । जोगिया होयते नैं जोग संभाल

वो भोगिया होयते नैं भोगन जवो । वेदिया होय

नैनै सकलग्रय्य साधको दासीरे दंन धावन करउ । प
ति व्रता नारि नेकंतने छ्हु उ वचनके हेते सीमधर
वे । आपनो धर्मथी कथा कहूं प्रीछवी मन शुद्ध उ
द करी कपट मेहली ॥ भणों नरसैंयों हरिनो छ्ह
पायकी जोता आवी रुडी वातसे हली ॥ रागपं
इतिश्रीआभोगः ॥

राग पंचम ताल । श्रिय स्तनन गंध विनोदे
वद विपिने किं किं विहितं । पल्लव चय मति व
लभ मधुना ऊच शिरसि निहितं । गैरिक खेद वि
विरत वदने ऊव कृतं ललितं । कवचय मति मय
मेव करूपं वरहिनेन षेषित पिच्छ कलितं । पा
षित मति वर्म निवारण कृतये निर्मल नीरे ॥

पे॰गो॰
३२
32

उपविष्टे विटपिच्छाये स्तन ऊत्र गोप सहित मितो मा
या वद भक्तै भवता वनसहितेन । चारित मतिको
मल लता वति देशे गोकुल मध्य ऊत्र कटंकनिचय
मिथ्या खेल लय्ये वतां । दर्शयपुत्र विलसित मिति
वदकया लीलया भवता बाल कृते । हरि ऊव
मिलिते रथ्यया विन मति विपिने विकले । स्थ्यामि

नो वलभद्र युतेन सदा भवतानि भयेन । इति विज्ञा
पित मद्दह मदीयं मानय वज्र विन येन । कृपय
सदा स्वहृदा वर सनौ गद्द दासे हरी दासे । श्रीवल्ल
भवर चरण कमल सेवन विरचित पदवासे ॥
राग पंचम ताल । उपगते निशि गोकुल नाय
क । छन्महृदय छिन पंच सायक । नैवं करण मद्दो

पं-गी-
३३
37

ममचित्त मिह व्रज युवती वङ्गजन सुखदायक ॥
वदसि विनय वचनानिन तानि विसंति हृदयम
ति माने । चित्त मितर युवती युवलग्न मिति नैव मा
नये नवसन्माने । प्रकट मखिल मेगेश दशपने से
प्रति चिन्हचयं । कृत विरहित भय कथं मानये
नाथ वचने विनये । दर्शयसे शिथिल मसीघंर

प मयो विकले । चित मिदं निजदुःख हृतेभव
ता स्वंदर मकले । कुंकुम मृग मदगंधधरेण सुत व
न माला हृदये । कथमेवं करणं वदने स्मरण मदभि
मावं हृदये । नक्तं गामि मया गमितानि निखिल
निशि रहसि निकुंजे । अहमपि सखीय नाहना
शा भूवं मति भिरपुंजे । जागरणा रुन नयन युगे

पे-रा
३४
34

ऊरु निर्मल मिष्टनीवेता । विमिले कथा सुनि सुहे भव
ना वद भवनी वीवेता । श्रीवल्लभ पद कमल वेता
वल्लभ हरि दास वगापि विपाके ॥ रागपंचम ना
साय मिष्ट भोजयति बालके माता । प्रतिसम गपस
डलडगयो दने निजमावे मपदि विदयान ममस
कल मावे दाना भुवे प्रतिकमलसे नदपि ववन

वडे ३

मभियाचने दत्त वितेन खेल भोजनीयं श्रुत्वा खेलनी
ये । ततो बालकैरखिल गोकुल जनै रिति वदति
डिंभक मिति त्वा । विपिन चरिते त्वया किमिति
वदमम्बे । इत्युक्ति प्रायशो गोप कुल पालके बीज
यति दक्षिण करेण कमलालयं मार्जयति वामेन
वदन मपि मालके । स्वाश्रुविगलिते पयो बिंदवय

पं०रा०
३५

महद्भक्ते प्रोंल्कति प्रवणा नरदेन हृष्णा । भवति महवि
ना परं निज सम्बदर्शने वदन लावण्य पीयूष हृष्णा-
लोक सिक्त मथो कथयति प्रिय कथा मति सित म
य मनव दन नयना नैव सहने परं भोजन विलेवने-
भाविन स्वच्छ पर्यंक शयना । बाल चरितानि लनि
तानि खेलु गायति प्राण मदनानि रदनानि हृष्णा-

सीतकरे तीहरो मोचनि प्रनि पद हेमनिरो दिति परे

मनसिरक्षा। श्रेंक मपवेश कर मुगल मनयावय

ति मरवगते तोकूल मथ मरवे दना। उनसंगमारो

ग मरडल शायने मदा शाययति वन रविन्न मत्रम

ना। निज वदन चर्विंते पीरुषगर्भिंते भक्त शेषित

मयो यक्ष हरि दासके। वलभाधीस पद कमल से

पं॰रा॰ ३६ वन विहित भाव भर मंजात भक्ति सवे याचके ॥

राग पंचम ताल । उषसि वद गोकुला धीशा कु

न मागते । इतर भुवनी जनित चिन्ह शान वलित

वर मङ्गल देहेहलणेम पदि मानसा गते । किमपर

हे विस्मृते नाथ मनसि स्थिते मङ्गले डुःख जन

स्मरणमा गते । याहि निज भवन मति भाषणे

त्मज मया त्वगादया द्दिन ममैव त्वत्षागते ॥
मान त्वनमूल यित त्वरपेतो भव सिव दकय त्वान्ति
स्मारयसि विरह परिषागते । श्वपिक मपिकं सप
दि त्समदयति मान मेदो गणानं निखिल नाश्य ऊप
षागते । यत्र नव मानसं विषय कृनलाल संगाक्ष
नैव वयक्ष त्वाव मागते । नन्मनो रयमखिल

पे·रा·
३८
37

माधुहरय हरे विरह हरङ्गः त्वभर मद्दह विरहाग
ने । परमद्दं वेत्सि नत्र विस्मरामी शानदि विस्मर
त्वहृह गोकुला नरप हृदागते । त्वमपि हिस्मारयि
त माधागते गोकुला धीश करवे किमत कल्प सम
पागते । एतदेवास्ति विज्ञापनं नाथ मम निष्ट हृ
दये मनत मद्यात यद्यागते । याहि कुरु शायन म

७३ पृ

ति जागरा हणतरे लोचने ममय परितापमलमा
गते । इति वचन जातमति मानिनी वदन संजात
माकर्ण्य नव हृदय कमला गते । एवयत गोपिका
जन मनोरथ मखिल मङ्गलाकार मति शायित
शरणागते । देहि वल्लभ चरण राजीवे रागमपि
विषयि जन संग दुर्मति विरोधाकते । धर्म रङ्गिनेम

पं॰ ग॰ हिनमति दोष कापैके रहत हरिदास मथ वरण श

३८ रणागते ॥ राग पंचम ताल । वंदे वल्लभ वदन

34

न जे भक्ति शरण शरणी कृत साधन साधन रहि

त सकल मनजे । सुंदर रूप विलोचित भाववशी

कृत गोकुल नाथे । निरुपम भाव विभावित च

रण मे मम विठल नाथे । हरि संबंध वती सम

दाय विविध सेवय सहाये । अतुल वचन नोचित
नरुणी जन जीवन पतिमति माये । मनो वचो
गोचर कृति विज्ञापित निज गुन महि माने । निज
सेवक सेवित पदकमल अगाहित हृदयालये ।
प्रकटी कृत हत जीव सावा लयर समय मंजुल
रूपे । श्रीभागवत विहृति बोधन निजजनमति

पं-गी
३८
39

शोधन भूपं । निजपीयूष विजित विधु मंडल मंडि
त मदन सरोजे । अखिल मनो मोहन निज सुखमा
विरहित मान मनोजे । मृग मद संभ्रम सहज तिलक
शोभित सौभग निधि बाले । कैवित विकुर समा
हृत वदन विनिर्जित मधु कर माले । कृपयति म
मयि कदापि हृदा किंकर किंकर हरि दासे भ

वन्न पुरं गोपी पति चरण कमल ध्यावे पद्वासे ॥

राग पंचम ताल । भजे सखि गोकुलेशं । नं

दभवन भूषणं नव भूगित हृदयेशं ध्रुवे मंदहा

स फलना सह चिर मुखमसरोजे । वदन चंद्र किर

णि कांति रहित मान मनोजे । वदन कमल मधु

प वदति राज दलकपुंजे । वर्हे मुकुट नट विला

पं-रा ४० सि वड़ु विचित्र रंजे । युवती मुख कमल कमल
मधुप केवल नर नयने । अनुपम निज लिहि
न भाव सनन हृत मृग नयने । भूनट धनुमा
ट विहित वनैल मषि विंड । मुख जितपी यू
ष भरित विहू विल सदिंड ॥ इति श्रीभोगः ॥

रागपंचम तालतिताला ३ शैरगजल ॥ तुकहिरम
हवाको छोड मिया मन देस विदेस फिरे मारा। क
जाक घ्रजल्का लदरेहै दिन रात वजा कर नक्कारा।
क्या भैसा वधिया वैल शुतर क्या गाने पल्ला सिरभा
रा। क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आगयुआ क्या
अंगारा सव ठाट पडा रह जावेगा जब लाद चलेगा

पे·गा
५१

बनजारा २ गर है ललक्खी बनजारा और खेप भी तेरी
भारी है। अय गाफिल तजसे भी चढता एक और ब
डा ब्योपारी है। क्या शक्कर मिसरी कंद गिरी क्या साम्
र मीठा खारी है। क्या दाख मनक्का सोंठ मिरच क्या के
सर लौंग सपारी है २ नव पियाला देवे लभरे जो ए
रव पश्चिम जावेगा ॥ याहूद बढा कर लावे ५१

गाया चाटा बाधा पावेगा । वटमार अजल्का रस्तेमे
जव भाला मार गिरावेगा । धनदौलत नाती नोता
क्या एक भ्रनगा पासन जावेगा ३ हर मेजिलमें ग्र
व साथ नेरे यह जितना डेरा डाराहै । जरदाम दिर
म का भोंडाहै वेरक सिपर ओर खोंडाहै । जव
नाइक तनका निकल गयाजो मलकों हाडाहै।

पं॰ ग्रा॰ ४२

फिर टोडा है मैं भेजा है ने हलवा है ने मांजा है ४ । जब
चलते चलते रस्तेमें यह गौन तेरी छल जावेगी ॥
एक वधीया तेरी महीपर फिर चरने वासन आवे
गी ॥ यह खेपजो तने लादी है सबहि समोमें
बट जावेगी ॥ थी हन जवाई बेटा का बनजा
रा पास न आवेगी । ५ । कौं नाहक बोझ उ ४२

दा ताहै इन गौनै भारी भारी के। जब काल लूटेरा
आन पड़ा फिर हनते है बैपारी के। क्या साज़ जड़ाऊ
जर जेवर क्या गोटे थान की नारी के। क्या घोड़े जीन
सुन हरों के क्या हाथी लाल अमारी के ६ जो खेप भ
रेन जाता है यह खेप मिया मन जान अपनी। अब को
ई घड़ी पल साअत मे यह खेप बदन की है खपनी।

पं॰ग॰ ४३ क्या थाल कटोरा चांदीका क्या पीतल का ढकना

ढकनी। क्या बरतन सोने रूपेके क्या मट्टीकी हंडि

या चपनी॥ मगरूरन होतल बारें परमन भूलभ

रोसे फालोंके। सब पना तोडके भागेंगे मह देख

जलके भालोंके। क्या डबी हीरे मोतीके क्या ढेर ख

जाने मालोंके। क्या उकवे ताश मशा ज्वार क्या। ४३

नखवेने षाल इष्यालौंके ८ ऊक्क कामन ष्रावेगा तेरे
यह लाल जमर्रद सीमोजर । सब सजी बातमैं वि
खरेंगी जब ष्रान बनेगी जोऊर । क्या समसनेद नकि
ए मुल्क मकान क्या चौकी ऊरसी नाखमकुनर ॥
क्या मालखजाना मुलक मकान दौलत हशमत
फौज लशकर । ५ । यह सम यउक्का साथ लिये

पं॰गा॰ ४४ 44

क्यों फिरताहै जंगल जंगल । एक मुमगा पास
न आवेगा मौकूफ हुआ जब अन्न और जल । बर
बार अटारी चौपाये का खासा तन सुखके का मल
मल । का चिल वनन कीये रेशमके का लाल
पलंग का रंग महल ९ का उचेन मकान व
नताहै है खेम तेरे तनका पोला । ते ऊंची ४४

गाढी उठानाहै यहां गौर गाढैने मद्द कीला । क्यारेनी
खेन्द करन्द वहांका कोट ऊंगरा थम मोला ॥ क्या
बजैरै हला तोप किला काथी शादाहू गैर गोला ।
११ अब काल फिरा कर बावकको यह वैल वदन
काहां केगा ॥ कोई नाज समेटैगा नेरा कोई गौ
न सिंये और टोकेगा ॥ होफैर अकेला जंगलमें

फं॰ गा॰ ४५ नवाक कल हदकी फाकेगा ॥ उस जंगलमें जब

आहनजीर एक भनगा आनन फांकेगा ।५५। य

ह पेंट अजावहै दुनियांकी और क्या क्या जिनस

इकटीहै ॥ यहां मालकी सौका मोदाहै और बीज

किसिकी खेटीहै ॥ जब्ब पकताहै जब्ब बनताहै प

कवान मिठाई पहीहै । जब देखा खूबनो आखिब ४५

रको नेलहा आउन महींहै । उल घोर वहला आगाह
वा और कीचड पानी महींहै । हम देख बुकेईसउ
नियंको सव घोखेकीय सीहींहै । कोईनाजवखे दी
दे हैंस हंस कर कोई नखेनग उवन षानाहै । कोई
कपडे रंगे पहनेहै कोई गदडी ओढे जाताहै । कोई
भाई वाप चाचा मामा कोई मानी छन कहा नाहै ॥

पं.गा.
४९
96

जब देखा खूब तो आखिर कोमे विस्ता हैहै नाना है
इ गलशोर । कोई सेठ महाजन लाखपती जेवजा
न कोई पस मारी है । यहां बाजा किसीका हलका है
और खेप किसीकी भारी है ॥ क्या जाने कौन खरीद
है और किसने जिनस उठारी है ॥ जब देखा खू
बतो आखिरको दलाल न कोई व्योपारी है ४ ४९

कोई फलके वैठे मस नेद पर कोई रोवे अपनी दौल
तको। कोई वोले अपना मजमे लो और मेरा है
सा मजको दो। कोई लडता है कोई मरता है जगडे
हक और नाहकको। जब देख हैवनो आखिरको
कबुले ना एक न देना दो १५ रमल नजूमीआ मि
लते है और फाजिल मला स्यानाहो। कोई आमिल का

पे॰ग॰ ४७ 47 मिलदाना कोई मस्त मिठा दीवाना है । तावीज़ फ
तीला फालफसे औरजादु मंतर लाता है । जब दे
खो हुबनो आखिरको सब हीला मकर बहाना है ।
२६ । कोई लोटे कूचे गलियोंमे नेयार किसीका ये
रा है । निन कजीये झगड़े रखे हैं यह मेरा है यह ते
रा है । जब देखा हुबनो आखिरकोन मेरा है । २७ । ४७

कोई टोपी टोप बनाता है कोई बोथा फिरा अम्मामा है
कोई साफ बरहना फिरता है ने पगड़ी न पाजामा है ।
कम खाब गजी और गाढे का निन कजी या है । जब
देखा खूब तो आखिर को ने पगड़ी है ने जामा है १८
कोई बाल बढ़ाए फिरता है कोई सिर को घोट मुड़ा
ता है । जब देखा खूब तो आखिर को सब छोड़ अके

पे॰रा॰
४८
18

ला जाता है १९ कोई रोता है कोई हसता है कोई नाचे
है कोई गाता है । कोई छीने झपटे ले भागे कोई धो
स डर दिखलाता है । कोई माल इकट्ठा करता है को
ई कुंजी कुलफ लगाता है । जब देखा ढूंढने आखि
र सब झगड़ा रह जाता है २० कोई बैठे भंग सराब अफ
यून कही हय दहीकी फेरी है । कोई पला सिर पर ४८

लाता है कोई लादेवे लमकेरी है । कोई कराडे अपनी
जागह पर यह मेरी है यह तेरी है । जब देखा खूब
तो आखिर कोन तेरी है न मेरी है न तेरी है ॥१॥ कहीं ब
ली टेकी हली है कहीं खोसी कडवकी भली है ॥ क
हीं चलनी छाज पिटारी है कहिं बलडा चक्की ख
ली है नरकारी बैगन साग हरा गड गाडा गाजर मू

पं.रा. ४९

लीहै । जब देखो खूबनो आखिरको सब बिकरी दे
खन भलीहै २२ कहीं बान अटेरन टाट पगाजी कहीं
हमराव चमरावन कलाहै । कहीं एक रुपयेका खुर
दा कहीं कौडी पैसा पेलाहै । कहीं छूटना छाज पि
छारीहै कहीं बिकना खोट खटोलाहै । जब देखो
खूबनो आखिर कोने पीरी खोट बराबोहै ॥ २३ ॥ ४९

कोई शिकरा बाज उडाताहै कोई हाथमें रखके उन
लीहै। शाहबाज कोईलै बैठाहै और दौड किसीने उ
लतीहै। हैतार किसीके हाथोंमें और नाचती फिर
ते घतलीहै। जब देखा ख्वतो आखिर कोनरे शामस
तन खनतलीहै ५४ अब किसका रंग बुरा कहिये और
किसका रूप भला कहिये। एक दमकी पैठ लगीहै

पे॰ग॰ ५॰ 50

यह अम्बोहम जा वरवा कहिये ॥ येसैरन माशादेन

खेजीर अवजा कहिये ऐजा कहिये । कछु वात न

हीवन आनेकी चुप चाप भला है क्या कहिये । गुल

शोर वहला आगहवा औरकी वड पानी मही है ।

हम देख तुके इस डनियांको मवयो खेकी मही है

२५ वटमार अजल्का आपडे चाडक इस्को देख डरो वावा ५॰

अब शाकवरी ओ आवौं से औरि आई सबद भरो बाबा-
दिल हाथ उठाकर जीने सेवे बस मन मार मरो बाबा-
जब बापकी खातिर रोनेथे अब अपनी खातिर रो
बाबा। मन मूरख ऊबड़ी पीट उठई बोडे पर जीन धरो
बाबा २६ जब जीनेको तुम तव मनदो औरमरने
को महमान करो। वैरान करो २७ मान करो पाउ

पे-गा
५१
51

न करो या दान करो । या भरी लड़ बटवा ओया खो
मा हलवा मान करो । ऊक्ब तलफ नहीं अब जीवे
मैं अब चलने का सामान करो ॥ २८ ॥ ननसूपा ।
दिल काटो अपना जीनेसे अब और गलेको मत
काटो ॥ अब चाट फ़नाकी ठुक चबावो औरहू
न किसीका मत चाटो ॥ अन छोडे हिसे व ५१

रवैरेकी ग्रौर भाजी ग्रपनी तुम कीरो । नाकंद वक्केरे
कूद उके ग्रब ग्रौर उलनी मन कांटो ४८ यह ग्रसव
इन कूदा उछला ग्रब कोड़ा मारो जेर करो । ग्रबमा
ल इकठा करनेये ग्रब ननका ग्रपने फेरकरो । गाढ
टूटा लशाकर भागा उका ग्रब जानमें तुम शाम घोर
करो । तुम सांज लड़ाई हार उके ग्रब भागनेमें मन

पं॰रा॰
५२
52

देर करो ।२५। सिर कोपा चोटी बालङ्क पस्मइपी
ला पलके आन झुकी । कद देख्या कान ऊप वहरे
और आंखे भी तू यलाय गई ॥ खावेनी दगाई और
भृख यही दिल खलङ्गा आका जनही । जो हौंनी
थी सोहो गुजरी अव चलनेमे ऊख देर नही २- इस
पाव छिमट कर चलनेसे मन रखेकों हैरान करो ५२

औैर येपले मह्से ये टीको मन मल मलकर हलका
न करो । अब आपह्रप नम पानीसे मन पानीकाउ
कमान करो । कछु लाभ नहीं इस जीनेमें अवसर
नेसे पहृचां न करो ।३८। रूपताल । ज्ञान मथमा
ने सोनरकै ये जिनको वरनहैं निस दिन छमा
रा । ज्ञान मथ पीवत मैंहे छमारी सरन अंतर

पं॰ गा॰
५३

खेले लगी रहनारी । अनेदरन मेरो सदा निसवा
सर नरक स्वर्ग भाग गये इकवारी । कहन कवीर
सुनो भाई साधो गुरु कीनो प्रीत मोहे हरहूंसे प्यारी
३४ ॥ कवित । ताल । मूलफाक परे आई नव
सत अवरन अनहीं संदर नया वहोत सियानी । गो
रे वदन पर अलकां छूटीमानो वेदन लेप ठानी ॥ ५३

मृगसे नैना कोकिल बैना कटके हर गज चाल सुहा
नी । आहे वहाउर थैकुव निरखत इंद्र लोक की अ
पसर विसराती । ३ । ख्याल ताल ३ । छुटगल बं
ह प्यारे भोर भै छेडना । दीप वाकी जोत घटी चंद
डेका चांदना । मोतनके हार सीतल फूरि आयो
छेजना । २४ । ख्याल ताल ३ । साडे ताल बोलीबे

पं॰ रा॰ ५४
54

आमीवे वंजेदे आवोपंगासि आलोदी आगालि
आ ॥ हथ छेडि मोड़े कारी कमरीया वाप असाड़े
देया पालिआ ३५ । ख्याल ताल ३ । मीयां राजावे
सोणा निन माड़े आओदा । माडही गल मनदा नहि
आपना आ पज नामदा ॥ कोईममझाओ कयों पेख
पमावेह दिखलामदा ३६ ॥ ख्याल । ताल ३ ॥ ५४

पे गल मैन् ने दसींवे मीये सेणेदे श्यामनदी उगा
ही जिउआ दैंदा । मैंवंदन नेरा भजव पहरावा केनो
डुंदे गल हसिवे मीओरा ।३७। हाल नाल २ महू
नलागी वेमीये मैडी नैडे नाल नुसी जाणादे नाडी
खांन योवन प्यारा विरजगजीवे डेघाक नसाडे न
पदगी ।३८। इतिशेरगजलादि ॥

𑆮𑆼·𑆫𑆳·
𑇕𑇕

55

35

𑇕𑇕

अथ रागिनी विभावरीं महिम्नाख्ये परिक्रमाह ॥
नाल ॥१॥ महिम्नः पारं ते परम विदुषो यद्य सद
शी। स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गि
रः। अथावाच्यः सर्वः स्वमति परिणामावधि गृ
णन्। ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः
॥१॥ अतीतः पंथानं तव च महिमा वाङ्मनसयो।

गा० वे
म०

रतक्वा हत्पाये चकिन्त मभियते क्नतिरपि । सक
स्पलोतनथः कति विपशुणाः कस्प विषयः । पदे
न्वर्वाचीने पतति नमनः कस्प नवचः २ मशुक्रो
नावाचः परमसस्हतत्रिर्मितं वत । स्मवक्षलन्
किंवा गपि स्प गुरोर्विस्मय पदम् । ममवेत्तोवा
रंगी गुणा कथन प्रोपन भवतः ॥ ध्रुतामी गप्थें

स्मिन्पुर मथन बुद्धिर्व्यवसिता ३ तवैश्वर्यं यत्तज्जग

दुदय रक्षा प्रलयकृत्त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण

भिन्नासु तनुषु ॥ अभव्यानामस्मिन् वरद रमणी

यामरमणीं । विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जड

धियः ४ किमीहः किंकायः स खलु किमुपा

यस्त्रिभुवनं । किमाधारो धाता सृजति किमुपा

ग-
मं

दान इति च । अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसर दुःस्थो हत
धियः । कुतर्कोयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय ज
गतः ५ अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तो
पि जगतां । मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य
भवति । अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः
परिकरो यतो मंदास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत

इमे ६ त्रयी सांख्यं योगः पशुपति मतं वैष्णवमि
ति । प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमि
ति च । रुचीनां वैचित्र्या दृजु कुटि लनाना
पथजुषां । नृणामेको गम्य स्त्वमसि पय
सामर्णव इव ७ महोक्षः खट्वाङ्गं परशुर
जिनं भस्म फणिनः । कपालं चेतीयत्तव

ग॰ रे
म॰

यद् नैवेद्यं कृतं मया । सर्वास्वन्नानां श्रेष्ठं विदधाति भवतु
प्रीतिः शिवा । तद्विद्यात्मा नामे विष्णु रक्षा मु
मयार्पितं ८ फलं कश्चिन्मे सकलं सफलं मिदं
... जगति यद् विषये । समस्ते
... नैवेद्य ... । ... सिद्धिमि
... १० नैवेद्यार्पणमन्त्र

उपरि विरिञ्चो हरिरधः । परिछेत्तुं याता वनलम
निलस्कन्ध वपुषः । ततो भक्ति श्रद्धा भरगुरुगृण
द्भ्यां गिरिश यत् । स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृ
त्तिर्न फलति १० अयत्नादासाद्य त्रिभुवन मवैरव्य
तिकरं । दशास्यो यद्बाहू नभृत रणकण्डू परवशा
न् । शिरःपद्म श्रेणीरचित चरणांभोरुह बलेः । स्थि

रा·टे
म·

रायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहरविस्फूर्जितमिदं ११ अमुष्यत्व
त्सेवासमधिगतसारं भुजवनं । बलात्कैलासे
पि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः । अलभ्या पाताले
प्यलसचलितांगुष्ठशिरसि । प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रु
वमुपचितो मुह्यति खलः १२ यदृद्धिं सुत्राम्णो
वरद परमोच्चैरपि सतीं । अधश्चक्रे बाणः परिज ४

1

न विधेयस्त्विभवतः। ननक्षिवेतस्मिन् वरिवेशिन
रिवत्वगाये नेकस्योत्पन्नैये भवति शिरसल्प
वनतिः १२ श्रकोड त्रलोड नय वकिन देवा स्वर
रूपा। विधे यस्या मीय स्मिन यत विषेसे हतवतः
सकलाष्टः कैदे नवन कलेन स्त्रिय मह्रो। विका
रे विस्मायो भवन भय भगवाम तितः ॥ १८॥

ग्रा ए
म

ग्रहिमिश्राथ्यो नैव कश्चिदपि लेभ्या स्य नै । निवर्ति
न्ते निरो जगति जयिनो यस्य विषिखोः । सपष्य
न्वी गांगा मितर स्वस्ता यावता समल । स्मरः स्वर्ति
ज्यात्मा नद्रि वशिष्ठ पण्य: पुरिभव: ।१५ स्वरीयव्य
स्यका द्गजति सहसा संगाय पदे । पदे विलोकोपाम्य
लुज परि वकरणा ग्रहगाणो । स्वद्वौर्यौ स्वयमा मति

भक्त जनौ नाडित नदौ । जगद्दन्तायैवं न वसि न न वामे
न विभक्ता ९६ वियद्व्यापी नाग यातु गणितं केनो न
म स्लिं । प्रचारो वांग्यः स्पष्टः लट्टस्पष्टः श्रियासिते ।
जगद्धीयाकारे जलधि वलयं नेन क्षमसि । नवैनै
वोनेयं भूत महिम द्विते नवबवः ९७ रथः द्रोणीयं
ना यात स्यति स्थैर्ह्यो यनस्यो । मयाहे वेद्मकौ रथ

गं॰ रे॰ म॰

ब्रह्मणा मायाणां शयते । दिगन्तो मे कोधे जिष्वरन्नणमा

देवत्रिविधि । विवेगेः कोडेन्यो नवरेल यरांमाः प्रभुयि

यः १८ हरिस्ते मानसे कमल वलि मामाय पदयो

यदि दे कोने नक्षित्रिज नदृस्वन्नेव कमले । यनेस्मा

देकः यरिता जिमसो वक वधृषा । मयाणां रत्नोये वि

प्र हरूनाना जगनाम १९ रुनो मचे जायुनमसिक

लभेतो कतमनो। क्रकर्म्म पृथक्के फलानि पृहसाद

यलमस्ते। श्रनलो मेपेला क्रतष फल दान प्रतिभ

वे। फलौ श्रुन्ते वथा हक्रपारि का:कर्म्म सजना:स

क्रिया दलो दत: क्रात पति रथी शासन्नु स्त्ला। स्तषी

हा: कर्म्मजे सा चाद महाया: सकला:। क्रतपे

शस्लनं क्रत फल विपान श्राम निलो। धृवेकनि:

गा. रे
मे

भुक्ताविप्र समिवाणा यद्वि स्त्रवाः २१ प्रजानाथे ना
थ समस समिके सो दृष्टितरै । गाते रोहिस्तो शिव
सजिग स्थाम व्यष्ठा । यत्र पाशोर्भीते दिव सपि
म पत्ना हरत समे । च से नै स्वापि गजनिन सलाला
पद्मसः २४ खला वाणा शेषा प्रत्न यत्न ष्ठ सन्ताय
रणावन । श्रुः ल्वं ष्टहसा श्र सथन ष्ठष्ठा श्रयसपि ८

यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्द्धघटना । दवैति त्वा
मद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः २३ स्मशानेष्वाक्रीडा
स्मरहर पिशाचाः सहचरा । श्चिताभस्मालेपः स्रग
पि नृकरोटी परिकरः । अमंगल्यं शीलं तव भवतु
नामैवमखिलं । तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मंग
लमसि २४ मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्तम

ग। शि
मः

रुतः। प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः

यदालोक्याह्लादं हृदय इव मज्ज्यामृतमये। दध

त्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् २५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः। त्वमा

पस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च। परिच्छि

न्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं। न विद्मस्तत्त

कु॰ रा॰ १ ॐ अथ कुकभ रागनी आरंभः ॥ मालकौंशकी स्त्री
षड्जोंश ग्रहे न्यासा संपूर्णा कुकभा मता प्रातः
काले प्रगीयंते करुणा रस सम्भवे ॥ इसका अं
श न्यास ग्रह षड्ज स्वर है अरु संपूर्ण सात स्वर
की रागनी है अरु हनुमत मै अरु संगीत कल्पद्रु
म मै इस रागनी का अंश न्यासका धैवत स्वरक १

हा है परंतु भरत मतमै इसका षिड्ज कहा है॥ वे
लावली तथा देव गिरी जैजै वंती तथा कुकभा
नाम गायेति दिवसः प्रहरा दिमे ॥ इति भरतमतेन
वेलावली देवगिरी अरु जैजैवंती के मिलाप से।
येह राग बनती है अरु इसका समय प्रातः का
लहै अरु ब्रह्मा इसका देवता है तुमरु ऋषिहै

कु.रा. उत्मिक छेदहै क्रौंबीजहै विप्रलब्धा नायकाहै पुष्प
२ नायक है श्रृंगार करुणा रसहै इसका प्रारंद रुतु है॥

अथ कुकभ रागनी ध्यानम्॥ ऊँडपोषितोगी रति
मेडितोगी। चंद्रा नना चंपक दाम युक्ता। कटाक्षि
णी स्यात परमा विचित्रा। दानेन युक्ता कुकभा मनो
ता॥ अथ भाषा ध्यानम्॥ सवैया। मोटी मटोनि। २

बनी अंग अंग अनंग शरीर बने कौउ कैसे ॥ रोवनि
बेदसाखी बनमैं पिकनाद सुने डर पावत तैसे ॥
चंपक दाम गरे अभिराम सुपीत दुकूल धरे मन वै
से ॥ चिन्हलसे रतिके हरिवल्लभ लोनि महा कुक
भा कहि कैसे ॥ इति भाषा ध्यानम् ॥ अथ विप्रलब्धा
नायका लक्षणम् । सवैया । सूल से फूल सुवास ।

कृ.रा.
२

कवासमी भाषसिसे भये भौन सभागे ॥ केशव भाग
महा वन सों जवसी चढि जौन्ह सबै श्रेग दागे ॥
नेह लगे उर नाहर सों निसि नाऊ घरीक कहूं अनु
रागे ॥ गारी सौं गीत विरी विसमीस गरेई सिंगार
श्रेंगार से लागे ॥ अथ धृष्ट नायक लक्षणम्। दोहा
लाजन गारी मार की छाड दई सब त्रास ॥ देख्यो। २

दोव नमा नई स्रष्ट स केशवदास ॥ यथा सवैया ॥
नेह भरे लैलै भाजन भाजन कौन गनै दधि दूध मि
ठाये ॥ गारी दिये ते हसैं बरजैं घर आवत है जनु ।
बोल पठाये ॥ लाज की ओर कहा कहौ केशव जे
सुनियैं ते सवै गुन गाये ॥ सासी पियैं इन की कहैं ।
माईरी है हरि आठो ई गोठ अठाये ॥ अथ करुणा

कु॰रा॰
४

ललताम ॥ सवैया ॥ दूरतें डंड भी दीह सुनी न गुनी
जन पुंज की गुंजन गाढी ॥ तोरन तोरन तूर वजै
वरसावत भाट न गावत छाडी ॥ विप्रन मंगल मे
चपढैं अरु देषैं न वार वधू ढिग ठाढी ॥ केशव
तात के गात उतारति आरति आरति मातहि वा
ढी ॥ अथ कुकभ रागनी विनियोगः ॥ ओं अस्य॰ ४

श्री ककुभ रागनी मंत्रस्य नमहू ऋषिः उष्णिक छं

दः ब्रह्मा देवता क्लौंबीजे मनो कामना सिद्ध्यर्थे।

ककुभ रागनी जपे विनि योगः ॥ अथ कर न्यासः

ॐक्लींअंगुष्ठकाभ्योनमः॥ एवं हृदयादि न्यासं सर्वं

कुर्यात ॥ अथ ककुभ रागनी पूजा विधाय ॥ आस

ने पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं वस्त्रं यज्ञोपवीतं गंधं।

कु॰ रा॰
५
5

अक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दत्वा । पुनराचमनी
यम् ॥ कुकभ रागनी सर्वे पूजनं कुर्यात् ॥ अथ
कुकभ रागनी मंत्रः ॥ ॐ क्रौं कुकभायनमः ॐ ॥ अ
स्य जप संख्या दश लक्ष प्रमाणम् ॥ अथ कुकभ
रागनी देवता मंत्रः ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ॐ ॥ देवता
ध्यानम् ॥ ॐ ब्रह्माणं रक्त वर्णाभं । पीत वस्त्रं रत्ने

५

स्तम । चत भंजे चत ब्वंके ।। स्कवे स्कबे हस्त कम
रें इति ककुभ रागनी देवता ध्यानम ।। अब येह क
कुभ रागनी का येह ठाठ है ।। खड्ज सम रहता है
रेषभ चढा । गंधार चढा । मध्यम उतरा । पंचम स
म रहता है । धैवत चढा । निषाद चढा ।। अब क
ताल २।। २। २ २ २ २ २
कुभ रागनी का येह सरगाम है ।। सा सा रे सा सा रे

कु॰रा॰ ६

गमगरेसामगरेसा ॥ इतिअस्थायी ॥ मपधसारेसानिरे

गरेगसानीनीधधपपममगगरेसा ॥ इतिअंतरा ॥ अ

व ककुभ रागनी की गत कहिते है ॥ संपूर्ण बिलाव

लककुभ गत मसीत खानी तालथीमा तिताला उठे

गी दूसरी से अरु चढा मधम नदारद ॥ अथअस्थायी

डाडाडाडिडडा डिड डाडा डाडा डा। डिड डा डिड ६

ढाडा ढा ढा डा। ढिड ढा ढिड ढा डा ढा ढा डा। ढिड

ढा ढिड डा ढा ढा। डा। ढिड ढा ढिड ढा डा ढा ढा। डा।

ढिड ढा ढिड ढा डा॥ इतिश्रस्थायी॥ अथश्रालापः

ननरी रेना आनन उआनन अद ननरी नने नना।

उननना आनरा ननन रन नानम॥ इतिश्रस्थायी

नेनन अदननै आनन नम नानै नना नन नरी

७

२सै २नि २प २रे २सै २नि २म २ग २नि
कु॰रा॰ नना आन तान तनुम् ननु तरीन तानुरी रना नना

२म २ग २रे २ग २रे २सै
आन नान आन तान रान तनुम ॥ इतिश्रेतरा ॥

रागनी कुकभ ताल।

७

ने वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ।२६। त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रि
भुवनमथो त्रीनपि सुरा । नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभि
दधत्तीर्णविकृति । तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुंधा
नमणुभिः । समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमि
ति पदं २७ भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहम
हां । तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदं

रा॰वे म॰

मुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि । प्रियायास्मै
धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते २८ नमो नेदिष्ठा
य प्रियदव दविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर
महिष्ठाय च नमः । नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठा
य च नमो । नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः
२९ बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः । प्रब

ल नमस्ते नमस्ते हारे हराय नमो नमः । जय सर्व स्वरूपे

सनातनैक्यैकैश्वर्याय नमो नमः । प्रथम स्थितिपदे निहैतु गु

णे शिवाय नमो नमः २ कृष्ण परिणामिति येनः क्लेश

वर्ष्यं ककेदं । कव नव गुणा सीमो लं विनीश स्वहृदिः

इति चकित ममैदी हन्त मे भक्तिराथा । हृदरंवरण

योले वाक्य पुण्य वक्राराते ३। शमिन भिरि समेष्यान्न

ज्जलं सिंधुपात्रे । सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं । तदपि तव
गुणानामीश पारं न याति ३२ असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चित
स्येन्दुमौले । ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो । रुचिरमल
घुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ३३ अहरहरनवद्यं धूर्जटेः

स्तोत्रमेतत् । पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः प्रमान्यः
स भवति शिव लोके रुद्रतुल्यः सदात्मा । प्रचुर तर
धनायुः पुत्रवान् कीर्ति मांश्च ३७ दीक्षा दानं तपस्ती
र्थं होमयज्ञादिकाः क्रियाः । महिम्नस्तव पाठस्य
कलां नार्हन्ति षोडशीं ३५ समाप्तोयं समेस्तोत्रे सर्व
मीश्वर वर्णिते । अनुपमं मनोहारि शुभं गंधर्व भा

रा॰ खे
मं

षिते ३६ महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्वं गुरोः परं ३७ कुसुमद
शननामा सर्वगंधर्वराजः । शशिधरवरमौलेर्देव
स्य दासः । स गुरु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् ।
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ३८ सुरव
र मुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुम् । पठति यदि मन

ध्यः श्रोत्रांजलिर्नीयचेताः। व्रजति शिवसमीपं कि
न्नरैः स्तूयमानः। स्तवनमिदममोघं पुष्पदंतप्रणी
तं ३९ श्रीपुष्पदंतमुखपंकजनिर्गतेन स्तोत्रेण कि
ल्बिषहरेण हरप्रियेण। कंठस्थितेन पठितेन स
मारितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ४०
इति गामिनी वैभावती महिम्नः पारे स्तवः समाप्तः॥

ग·दे
म·

१२८

तन जगत रत्न सकल कृत्य साधन हित
नित हिं उदित सकल देव नमित पादजो
के ॥ इतिअस्थायी ॥ अति प्रचंड मंडल जि
ह वेद गीत मीत अबुज तिमर हरण भर-
ण चामीकर सीस मकुट भकुटि भक्त यो
ग युक्त बोके ॥ इतिअंतरा ॥ अहरण वर्ण।

२नि २सं २नि २प २नि २सं २नि २प २ध

रा॰ हे॰ वतरमजा चारु भरण चामीकर सीस मकुट

२ग २रे २सं २नि २सं २ग २म २ग २रे २सं २ग

भृकुटि तिलक कराहि केज तोके ॥ उम॰

२म २प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि २प

रश्मि पिम घोर बाल निधी दयानिधेमे वे

२ध २म २म २ग २म २ग २रे २सं

नित पाद पद्म देहि वर मनो के ॥ इत्याभो

गः ॥ इति हेमावती रागिनी सूर्य परिच्छे

दः ॥ ॰ः ॥

13
82

३९

१ खंभावती रागिनी ध्यानम्

२ दक्ष नायक

३ ब्रह्मादेवता

४ श्रृंगार रसः

५ मध्या नायका

वि. रा.
१

22

ॐ अथ विभावती रागनी प्रारंभः ।। भरतमत अरु सं
गीत कल्पद्रुम मतके अनुसार येह रागनी मालकौं
स की स्त्रीहै अरु इसका समय अर्थ रात्री है येह छै
स्वरकी रागनी खाडव संज्ञा इसकी कहीहै अरु इ
समें पंचम वर्जितहै अरु इसका अंश न्यास ग्रह ।
धैवत स्वरहै अरु परज पंचम बसंत के मिलापसें

येह बनती है अरु इसका ब्रह्मा देवता है नमह् ऋ
षि है उष्णिक छंद है षंबीज है अरु मध्या वृद्धिजो
बना नायका है अरु दत्त नायक है अरु शृंगार र
स है अरु इसका हिमंत ऋतु है ॥ अथ षंभावती
ध्यानम् । षंभावती स्यात्सुभगा रमज्ञा । ब्रह्माण
मे बुज भवे परिपूज येनी । गान प्रिया को किल

खे॰रा॰ नाद तल्पा प्रिये वदो कौशिक रागा नी यम ॥ अथ
२ षेभावती रागनी भाषा ध्यानम् ॥ कवित॰

२३

सुंदर सरस तन जोवन बनाउ बनी पूजति ब

विं चीको सजति मोद मन को ॥ कंठ सुर मृड

कुल को किलते कमनीय तान गान मै प्रवीन

जानै गुन गान को ॥ मीठें मीठें बैन चित्त चैन दे २

न कहि कहि कछु मम काय उपजावती मदन।
को॥ भाव भेद करि हरि वल्लभ यौ हियो हरि।
विभावति षिन षिन भावै सब जन को॥ अथ।
मध्या रूढा जोबना नायका लक्षणम्। कवित।
बेद को सो भाग भाल भृकुटी कमान कीसी मै
न कैसे पैने सर नैनन विलास हैं॥ नासिका सरो

वि॰रा॰ जगेथ बाहसे सगेथ बाङ्क दाह्यो से दमन केसो
३ वी ज्वरि सो हासहै ॥ भाई कीसी ग्रीव भुज पान
सो उदर श्रोर पंकज से पाइ गाति हेम कीसी
जासहै ॥ देषि है गुपाल एक गोपिका मै देवता
सी सोने से शरीर सब सोये कीसी वासहै ॥
अथ दत्त नायक लक्षणम्। सवैया। वहि अंतर ३

गृहिन गृह निरंतर काम कला कुल कौन ग
नै ॥ कहि केशव हास विलास सबै प्रति द्यौस ब
ढै रस रीति सनै ॥ जिनको जिउ मेरेहि जीय
जियै मधि काय मनो वच प्रेम पनै ॥ तिनि तू
कहैं आन वधू के अधीन है सा परतीक किधौं
सपनै ॥ अथ शृंगार रस लछणम। सवैया ॥

खे॰ रा॰ यौं विपरीत रमै वनिता कच मेघ मनो नभ चंचल
४ कीनै ॥ इंदु छिपै जु चलै छवि सो नहो हारजि।
२५
कपोत महो सुष दीनै ॥ फूल चहू दिस मे वरषै
रघुनाथ कलोलन मै चित भीनै ॥ देव तरंगनि
अंग डुलावति लाल रिझाय किये है अधीनै ॥
अथ खेभावती रागनी विनियोगः ॥ अस्य श्री खे ४

भावती रागनी मंत्रस्य त्रमहू ऋषिः उस्निक।
छंदः ब्रह्मा देवता षंबीजे धर्मार्थ काममोक्ष।
र्थे विभावती रागनी जपे विनियोगः॥ अथक
र न्यासः॥ ओं विभ्रंगुष्ठाभ्यां नमः॥ एवं हृदया।
दि न्यासे सर्वे कुर्यात्॥ अथ विभावती रागनी
पूजो विधाय॥ आसनं। पाद्यं। अर्घ्यं। आचमनी

वि. रा.
५

घे वस्त्रं । यज्ञोपवीतं गंधं । अक्षतं पुष्पं । धूपं । दीपं
नैवेद्यं । दक्षिणा । पुनराचमनीयम् ॥ इति विभाव
नी रागनी सर्वं पूजनं कुर्यात् ॥ अथ विभावनी
रागनी मंत्रः ॥ ॐ विं विभावन्यै नमः ॐ ॥ अथ जप
संख्या सम लक्ष सम सहस्रं ॥ अथ विभावनी
रागनी देवता मंत्रः ॥ ॐ ब्रं ब्रह्माण्यै नमः ॐ ॥ अथ ५

देवता ध्यानम् ॥ ॐ ब्रह्माणी रक्त वर्णाभे । पी-
न वक्षे स्थले कृतम् । चक्र भुजे चक्र धृक्के । मस्त-
स्कचि हस्त कम् ॥ इति विभावती रागनी देवता
ध्यानम् ॥ अब येह विभावती रागनी का ठाट है
षड्ज सम रहता है । ऋषभ उतरा है । गंधार
चढा है । मधम उतरा है । पंचम इसमे वर्जित है

वि. रा. धैवत उतरा है। निषाद चढा है॥ अथ विभावनी
६
सरगमः॥ तार ३॥ धनिसारेगमगमधनिधममगरेसा

इति अस्थायी॥ धधनिधनिसारेसानिधममगसा

रेगममधनिनिसासानिधममगरेसा॥ इति अंतरा॰

अब विभावनी रागनी की येह ठाठ है॥ खडज

सम रहता है। ऋषभ उतरा। गंधार चढा। मध्यम ६

उतरा। पंचम वर्जित। धैवत उतरा। निषाद चड़ा॥

अब इसकी गत कहिते है॥ डिठ डा डिठ डा ठा

डा डा ठा डा डाठा ढिड डा डिठ डाठा। डा डिठ डा

ठा डा डिठ डाठा। डाडा ठा डा॥ इतिस्थाई अंतरा

अथ्यास्थाअलापः॥ ननरी इना आनन उनन उआ

नन अदतननरी तने तना उननना आनरा ननन

खं॰ रा॰ १

९८

१नि २सं २ग २म २प २नि
रन्नु नानोम् ॥ इतिअस्थाई ॥ ननन अदनते आनन॰

२सं २नि २सं २नि २प २नि २सं २रे २सं २नि २प
नुम् नानुनै नना तन नरी नना आन नान तनुम् न

२म २ग २म २प २म २ग २म २ग २रे २सं
नु नरीन नानुरी रना नना आन नान आन नान रा

२सं
न नानुम ॥ इतिअंतरा ॥ अथ गान माह। राग खं

भावती ताल ४ ॥

१

अथ विभावती रागिनी ब्रह्मपरिछेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ४॥ अलख ज्योति रूप

परम योग गम्य निर्विशेष रहे सदा सत्यवि

तप्रकाश देवा॥ इति अस्थायी॥ गोष्टीकर

ऋषी जपी तपी नाथी कर विचार निजानि

ज मति पद उचार पार नही पेवा॥ इति अ

२५

ग॰ वि॰ नरा ॥ कउ कहैं परब्रह्म कर्म रूप धार रहो

अपर कहैं काल प्रबल सकल अंत लेवा ॥

कउ कहैं करता जग और कहैं येह स्वभा

उ स्वतः होत विश्व बालनिधि अनन्तभे

वा । इत्याभोगः ॥ विभावती रागिनी ब्रह्म

का ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ जगदीश्वर ।

जगत पूज्य सोई जगत पर रहो सकल दे
व भेटयैरै कैरै काज सगरे ॥ इतिअस्थाई
जाको भय यार बारबार तपै दिन कर नि
त पवन चलत ज्वलत वह्नि पचत अन्न ।
जगरे ॥ इतिअंतरा ॥ बादर नित बारि दे
त अग्नि नियम यमित रहे भूमि भार स

२म २ग २म २ग २रे २सा २ग २म २प २नि
ग.वि. कल धरे जीव जैव नगारे ॥ ब्रह्मादिक सुरि

२सा २नि २प २नि २सा २नि २ग २म २प २नि
३० करे रसहि सोम विविध भेरे धेसि कलारची

२सा २नि २प २म २ग २म २ग २रे २सा
२ जास विविध भांत भगारे ॥ इत्याभोगः ॥

इति विभावती रागिनी वसन्तपरिछेदः ॥ ॥:

अथ विभावती रागिनी शक्ति परिच्छेदमाह

२सा २म २ग

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ आदिशक्ति जगत

२म २प २नि २सा २नि २प २म २ग

मूल विविधदुःख नाशकरणि निजभक्त

२रे २सा २नि २रे २ग २म २ग २रे २सा

न मोद धरणि भरणि विघ्न मरारी ॥

२ग २म २प २नि २सा २नि

इति अस्थायी ॥ मधुकैटभ मारदियो मै

२प २नि २सा २नि २प २म २ग २ग २म २प २नि

नागण त्रास कियो महिषासुर फारदियो

रा.खं.

३२

२सा २नि २ध २म २ग २सा २सा २ग २म
रक्त करी जगरी ॥ इति खेतरा ॥ हत वाद कर

२म २ग २म २ध २नि २सा २नि २ध २म २म
हि पुनः शुम्भे तण भसम कीयो चंड मुंड ।

२ग २म २ग २म २नि २ध २नि २सा २ग २म २ध २नि
खंडदीयो भाग गये जगरी ॥ रक्त बीज भक्ष

२सा २नि २ध २नि २सा २नि २ध २म
कीयो शुंभ डो निशुंभ मार बालनियो शो

२म २ग २म २ग २रे २सा
नभयो विपन भूमि नगरी ॥ इत्याभोगः ॥

रागिनी हेमावती ध्रुवपद शक्ति ताल ४।

२२

२सा २म २ग २म २प २नि २सा २नि
श्री काली काल खड्ग धारिणि विकराल ।

२प २म २ग २ग २रे २सा २नि २रे २ग २म २ग २रे २सा
वदन पीत लिम रक्त रसना रस रसनी ॥

२ग म २प २नि २सा २नि
इति अस्थायी ॥ शुष्क मांस अति प्रलेब वपु ।

२प २नि २सा २नि २प २म २म २ग
प्रबल खप्पर कर नर मुंडन माल गरे व्या

२म २ग २रे २सा २सा २ग २म
घ्र कृति बसनी ॥ इति अंतरा ॥ चामुंडा चे

२ग २ग म २प २नि २सा २नि २प २म
ड मुंड मुंड काट ग्राह हास भासन में राक्षस

ग॰ रे॰

३२

२म २ग २म ग २रे २सं ग मे २प २नि

मभ इभन अटन दस नी ॥ शिवाशत निना

२सं २नि २प २नि २सं २नि २प २प २म

द जाम चाहि चाहि ग्राम पाम बालनिधी ।

२म २म २ग २म ग २रे २सं

चरण दाम शोत्रन गण ग्रमनी ॥ इत्याभो॰

गः ॥ इति रेभावती रागिनी शक्तिपरिच्छे

दः ॥:

३

अथ खंभावती रागिनी शिवपरिछेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ शंकर जय शंकर

नित अमित तेज देव देव उमापति विश्व

पति रछ करी नगरी ॥ इति अस्थायी ॥

देवा सुर एक समें छीर उदधि मथन ल

गे अति उल्बण गरल निकस दहन लगो

रा॰ वि॰ नगरी ॥ इतिषेतरा ॥ देव सकल सुरनर मनु
ष हाथ जोड भीत थाप पाहि पाहि देवदेव
जरत भूमि नगरी ॥ सुनहि विनय दयानि
धी हाला हल मत कीयो जयजय सभ दे
व कहैं रैहि ईषर भगरी ॥ इतिआभोगः ॥
रागिनी विभावती शिवजी ध्रुवपद तालध।

अथ हेमावती रागिनी गणेश परिछेदमा

२सं २म २ग

ह ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ विघ्न हरण कपि

२म २प २नि २सं २नि २प २म २ग २ग

ल बदन एक रदन देवाजिह सिमरत सि

२ग २सं २नि २रे २ग २मे २ग २रे २सं

द्धि सकल वर मनुष्य पेवा ॥ इतिअस्थाई

२ग २म २प २नि २सं २नि २प २नि २सं

गिरिश गौरि तात लात मस्तक सिंधूरा क

२नि २प २म २म २ग २म २ग २रे २सं

रि वर कों खेड देउ मोदक मावे मेवा ॥ ॥

रा॰ वि॰

३५

इतिश्वेतरा ।। चारु भुजा चक्र हाथ परशुधा

रिलेवा एक हाथदेत दूज अभय दान येवा

तीजे हाथ वरहि देत विविध भांतभेवा वा

लनिधी चरण शरण करत नित्य सेवा ।।

इत्याभोगः ।। रागिनी विभावती फबपद

त्र्यं ताल चार ध ।। उमा श्रेग जान मात ।

२नि २सं २नि २प २म २म २म २ग २रे २सं

शोकर मन शोकर शिवशिववहे के प्रेमवढो

२नि २रे २ग २म २ग २रे २सं २ग २म

लाड लडत नीको ॥ इति प्रस्थायी ॥ करको

२प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि

मल कमल विमल गोग लीन कीन शिव

२प २म २म २ग २रे २सं २रे २प २म २ग २रे २सं

र थार वही प्रपर शोभ वन्यो कुमर जीको

२सं २ग २म २ग २ग २म

इति अंतरा ॥ कमलन की हेडमाल नागय

२प २नि २सं २नि २प २म २म २ग

न सूत्रधार नागजात भाल शिवर खपति

रा-खे- रोहिनीको ॥ हर्षोचय जटा धरी सतसमाधि
मनुहि करी वालनिधी शोभदेष हरसे शोभः
नीको ॥ इत्याभोग: ॥ इति रवेभावनी रागि-
नी रागेश परिछेद: ॥ :: ॥:

अथ खेमावती रागनी विलपरिच्छेदमाह ॥

२सं २म २ग

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ पद्माधव पद्म-

२म २प २नि २सं २नि २प २म २ग

नाभ पद्म नयन अयन योगि भोगि ध्याय

२मे २रे २सं १नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

न मयन तात मेरु वरी जोके ॥ इति अस्थाई

२ग २मे २प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि

शंख चक्र गदा पद्म धारि भुजा चारु चारि

२प २म २ग २रे २सं १नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

वारिनिधी वास धाम रमा रहे वाके ॥ इति

रा॰ हे॰

ध्रनग ॥ बैजेती माल तिलक भाल सुभग
शोभि रहो कंकन कर पीत वसन कुंद द
मन तोके ॥ कोके नहि पाप जात सिमरण
कर बालनिधी दयानिधी दयाधारि कर
न मक होके ॥ इत्याभेरवः ॥ ॥ रागिनी॰
हेभावती ध्रुवपद विस्न ताल ध ॥ चक्रय

शरण भक्त भरण कलुष हरण रमानाथ रहे
पार्षद जय विजय चित प्रकासी ॥ इति प्र
स्थायी ॥ वैजंती माल गरैं धरैं पीत श्रेष्ठक
नित वस्त्र विचित्र मुकट त्रिकुट श्रनसि कु
सम भासी ॥ इति अंतरा ॥ आशी विष शाय
न करैं हरैं सकल ताप भक्त करैं शांतियैं

रा॰ वि॰

३८ 10

२म २ग २म २ग २रे २सं २ग २म २प २नि २सं
धीर ज्ञान उर विकासी ॥ वासी वैकुंठ भवन

२नि २प २नि ३सं २नि २प २म
गरुड गामि वालनिधी चरण शरण याचे

२म २ग २म २ग २रे २सं
नित हरो उर उदासी ॥ इत्याभोगः ॥ ::

इति विभावती रागिनी विस्त परिछेदः॥:

३५

अथ हेमावती रागिनी दशावतार परिछे

२सै २ग

दमाह ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ करुणानि

२म २म २ग २म २प २नि २सै २नि

ध जगत पाल धर्म धाम रछपाल काल

२प २प २म २ग २म २ग २रे २सै

देष भेष धरत करत काज सगरे ॥ इति

२ग २म २प २नि २सै २नि २प

अस्थायी ॥ मत्स्य रूप भूप नामित कमठ

२नि २सै २नि २प २प २म २म

रूप शिवाधार अमित क्रोड हेम नयन फा

गी॰ गो॰ उद्धरदन धर्यो जगरे ॥ इतिध्रुवकरा ॥ प्रहलाद

रक्षन हित नरहरि विभ कार भयो कमल ।

पाद वामन इक भूमि मिनी नभरे ॥ पर

शु धार भार हर्यो रावन कुल राम हन्यो

कृष्णाग्रज बुद्ध कलकि बाल नमित सभ

रे ॥ इत्याभोगः ॥ इति विभावती दशावतारः

अथ विभावती रागिनी सूर्य परिच्छेदमाह ॥

२सं २ग २म

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ अति प्रचंड मंडल

२म २ग २म २प २नि २सं २सं २नि २प २प

रवि कविअन को बुद्धि देत उरत मित्र हर

२म २ग २म २ग २रे २सं

करण हरण पाप सगरे ॥ इति अस्थायी ॥

२ग २म २प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि

बादर मध बारि देत जगत हेत वृष्टि करे

२प २प २ग २रे २सं १नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

धीरे धीर अन्न उभारि बैठे विविध जगरे ॥

रा॰ वि॰

इति त्रेतरा ॥ उदय समय जासु सकल लोक
न गण मुकुट त्रिकुट नमित पाद हरे भ्रमर
विविध ताप नगरे ॥ वैसे ही प्रस्त समय ब
लखरबी पादन मैं बालनिधी चरण शरण
हरे कलुष अगारे । इत्याभोगः ॥ रागिनी ।
विभावली झवपद सूर्य ताल चार ४ ॥ अघो

81

२५

जिस में एक लुत हो अर दो लघु: अर एक गुरु: सो बृहत
चातर्थ संज्ञक ताल होता है ऽ।।ऽ जिस में दो लघु होन ।
अर दो द्रुत होन सो आडा ताल चौताला है ।।०० जिस में

लुतो लघू गुरुश्चैका बृहत्चातर्थतालिका ऽ।।ऽ इति बृहच्चातर्थतालिका लघुद्वे
द्वे द्रुत द्वे द्वे सत्वाडातालसंज्ञकः ।।०० लघुद्वे द्वे द्रुतद्वे द्वे लघुश्च पंचतालिका ।।००
इति पंचमात्री । लघुर्द्रुतो लघुश्चैव द्रुतो लघुः पुनस्तथा ।०।० इति पंचतालाः ।।

दो लघु अर दो द्रुत अर एक और लघु होवे तब पंच मात्री
ताल का नाम है ।।००। अर जिस में प्रथम एक लघु हो अ
र फेर द्रुत दो फिर लघु अर द्रुत अर लघु तब पंच ताल ।

ॐ अथ सूरसागर परिछेद माह । राग धना
सिरी सूरदास कृत । राग ललित । ताल
२सै २म २प २म २ग २रे २सै २प २म
तीन । कहा लाई तै हरि सौं तोरी । हरि सौं
२मै २ग २रे २सै मै २प २नि २सै
तोर कौन सौं जोरी राज पाट सिंघासन
२नि २प २म २मै २ग २रे २सै २मै २प
बैठी । नील पट मह सौ कहै थोरी । मैमै
राग धनाश्रिरी सूरदास कृत सरगम ताल ३ ॥ सरेगमगरेस ॥ निधपनिसरेस ॥
मपनिधप॥धपमगरेस ॥ मप ॥ ❖ ॥

२नि २सै २रे २नि २ध २म १मे २ग

रा री कर जन्म गवायौं । जबलों नाहि परन

२रे २सै २मे २ध २नि २सै २रे २नि

स नम डोरी । यन जौ वन भ्रमि मान गलप ज

२ध म २मे २ग २रे २सै मे २ध २नि २सै

ल काहे कूर आपनी वोरी । हम्ली देषि व

२रे नि २ध २नि २ध म १मे २ग २रे २सै

झत मन गरवतता मूरष के मनि है थोरी ।

२मे २ध २नि २सै २रे २नि २ध २म २मे

सूरदास भगवंत भजन विनु चले षेल फा

निधप ॥ धपमगरेस ॥ मधनिधप धपमगरेस ॥ मधनिधपधपधपमगरेस॥

मधनिधपधपधपमगरेस ॥ इति राग धनासिरी सूरदासकृत सरगमः ॥ ः ॥

२ग २रे २सै

गनकी होरी । ७४ । राग धनासिरी । ललि

२सै २मा २म २ग २रे

ना । ताल ॥ तीन । विचारत ही लागे दिन

२मा २म २प २नि २सै २नि २प २म

जान । सजल देह कागदतें कोमल कि

२ग २रे २सै २सै २मा २म २ग २रे

हि विधि राखै प्रान । जोग न जज्ञ ध्यान

२सै २प २म २मा २ग २रे २सै २मा २प

नहीं सेवा संत संगनहि ज्ञान । जिह्वा सा

राग धनासिरी सूरदासकृत सरगम ताल तीन ३ ॥ निसगमगरेस ॥ गरेस
निधनिसगमपनिसंनिधपमगरेस ॥ गमधनिसंनिधपमगरेस ॥ गमप ॥

ग द इंद्रिय नि कारन प्राण हरति दिनमान।

स औरु उपाउन हीरे बीरे सुनत हे यह दे कान।

सूरदास अब हो न विगूरन भजले सारे

ग पान। राग धनासिरी। राग ललित ।

ताल। तीन ।अब मै जानी देहु बुढानी। सीस

निसनिधपमगरेस ॥ गमपनिसनिधपमगरेस॥ गमपनिसनिधपमगरेस॥

राग धनासिरी सूरदासकृत सरगम ताल ३॥ निसगमगरेस॥ मप ॥

२मं २प २नि २प २म २मं २ग २रे २सं
पांव पर कह्यौं न माननन की दसा सिरा

मं २प २नि २सं २नि २प २म मं
नी। आन कहत आनै कहि आवत नाक नै

२ग २रे २सं २ग २मं २प २नि २प म
न वहै पानी। मिटगई चमक दमक अंग

२मं २ग २रे २सं मं ग २रे २सं २ग मं
अंग की दृष्टि कमनि जहि रानी। नारी ग

२प २नि २प म मं २ग २रे २ग
री बिन नहीं बिन नहीं बोले हूत करै किल

निधपमगरेस ॥ मगमपनिंसनिधपमगरेस ॥ मगमपनिंसनिधपमगरेस ॥
मगमपनिंसनिधपमगरेस ॥

गा· काानी। चरमै ग्रादर कादरको सोषीक त
रे· रैन विहानी। नाहिरही कछुसुधिनन म
नकी भई प्रतिवात युरानी। सूरदास प्र
वहोत विगुचन भजलै सारंग पानी।८८।

रागदेवगंधार। रागललित। ताल तीन।

मगमपनिसनिधपमगरेस॥ मगमपनिसनिधपमगरेस॥ मगमपनिस
निधपमगरेस॥॥॥ रागदेवगंधार सूरदासकृत सरगम ताल तीन॥॥

२सा २मे २प २प २म २म २म २मे २ग २रे
चकई री चलि चरन सरोवर जहां न प्रेम
२सा २प २मे २म २ग २मे २प
वियोग। जहां भ्रम निसा होत नहीं कब
२मे २ग २रे २सा २मे २प २नि
हूं सो सागर सुष जोग। जहां सनक से हूं
२सा २नि २प २म २मे २ग २रे २ग २रे
समीन सिव सुन जन नषर विभ्रभा प्र
२सा २मे २प २नि २सा २नि २प म
काम। प्रफुलित कमल विगुष नहिं स

पपगरेमपपपपगरेस ॥ मपपनिसनिपपगरेस ॥ पपनिसगरेसनिपपगरे
स ॥ पपमगरेम ॥

२मा २ग २रे २ग २रे २सां २मा २प २नि

गा. सिउर गुंजन निगम सुवास । जिहिं सरस

२सां २नि २प २म २मा २ग २रे २ग २रे

ह्र: भग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत श्रमन रस

२सां २मा २प २नि २सां २नि २प २म

पीजे । सोमर छाडि ऊडहि विहंगम रहे

२मा २ग २रे २सां २मा २प २नि २सां २नि २प

कहो गृहकीजे । जहं लक्ष्मी सहित हो

२म २मा २ग २रे २ग २रे २सां २मा २प

इतिन कीउसो भजन सुरज दास । आव

पधनिधपगरेस ॥ पधनिसगरेसनिधपगरेस ॥ धपमगरेमपधपमगरेस ॥

पधनीसगरेसनिधपगरेस ॥ धप ॥

२नि २सै २नि २प २म २मा २ग की २रे २ग २रे
न सहात विषय रस कीलर वास मुदकी
२सै
ग्राम । ७७ । राग देवगंधार । राग ललित ।
२मा २प २म २मा २ग २रे २सै २मा २प
ताल झंप । चल सषी नेह सरोवर जांहि । मुक्ति
२म २ग २मा २प २म २मा २ग २रे २सै
मुक्ता अवके फल तिन्है चुन चुन षोहि ।
२मा २प २नि २सै २नि २नि २प २म २मा
जिहिं सरो वर कमल कमलारवि विना

मगरेमपधपमगरेस ॥ राग देवगंधार सूरदासकृत सरगम ताल झंप ॥ मपधपमग
रेस ॥ पधमगरेमपमगरेस ॥ अं ॥ मपनिसैरैसनिपधपमगरेस ॥

२ग २रे २सं २मा २प २नि २सं २नि २प २म २मा

गा· विगसोहि । हंस उजल मेघ निरमल अंग म

6

२ग २रे २सं २मा २प २नि २सं २नि २प

स्थं· लि मलिन्हाहिं । प्रति मगन मरो मयुर रस

२म २मा २ग २रे २सं २मा प २नि २सं

र रस रसनमध्य समोहि । पदम वास संगे प

२नि २प २म ग २रे २रे २सं २मा २प २नि २सं

सीतल लेत पापन साहिं । निवित प्रफुलित

२नि २प २म २मा २ग २रे २सं

रहै जलविन निमष नहिं कमी लोहि । सघन

पपमगरेमपमगरेस ॥ मपनिसंरेंसंनिपपगरेस ॥ पपमगरेमपमगरेस ॥

मपनिसंरेंसंनिपपगरेस ॥

गुंजत बैठि उनपर भौरहूं बिरमाहि। सब
कैया नहि उठितहूं गुव बहुरि उरवोनाहि।१८
।राग रामकली।राग ललित।ताल ।
जेगौरी भजि चरन कमल पद जेहरोन निस
के त्रास। जिहि विधि भाउ समान प्रभा न
घसौं वारिज हृष वास। जिहि किंजल्क भक्त

रा॰ नव लछन काम जान रूपएक। निगम सन
सू॰ क सुक सारद नारद मुनिजन भृंग अनेक।
सिव विरंच खंजन मनुरंजन छिन छिन क
रत प्रवेस। अखिल कोस नहां बसत सुकृत
जल प्रगटत स्याम दिनेस। सुन मधुकर भ्रम
तजि कुमुदिनि को राजीव वरकी आस। सूर

सु प्रेम सिंधमै षकलिन नकुचलि करो नि
वास ।८४। रागदेवगंधार । रागललित । नाल
। सुवाचलिना वनको रमणीजै । जावन
राम नाम अमृत रस श्रवन पात्र भरिलीजै ।
कोनरु पुत्र पिता तृकाका को घर कोनेरो ।
काग कराल स्वानको भोजन तृकरो मेरो

ग॰ मेरो। वनका नाम समुक्ति केवहै चलिनो को ज
ह॰ पिषाऊं। सूरदासा दनकी संग नैन वडे भाग
जो पाऊं।।८०। राग देव गंधार। राग ललित।
ताल । रेमन सुमिरि हरि हरि हरी। सतज
ग नाही नाम सर परतीनकरि करि करी ।
हरिनाम हिरना ऊस विसारैयो उठ्यो वरि

बरि बरी। प्रह्लाद हित जन असुर मार्यौ
नाहिं डर डर डरी। गजगोध गनका ब्याधके
अघगये गर गरि गरी। चरन अमृत वहभां
जन लेहु भरि भरि भरी। द्रोपदीकी लाज
कारन दाउ परि परि परी। करन दुरजोधन
दुसासन सकुन अरि अरि अरी। सूत हितहि

रा· अजामिल नाम लीनो गयो तरि तरि तरी।
सू: बालफलिके दनि हैं प्रभु रहे फरि फरि फरी।
हर श्री गोपाल के गुन हृदय धरि धरि धरी
।।८।। राग केदारा। राग ललित। ताल ।
भजि मन नंदनंदन न चरन। परम पंकज
अति मनोहर सकल सुषके करन। सनक

सेकर ध्यान ध्यावत निगम श्रवरन वरन ।
सेस सारद रिषी नारद संतन चिंतत चरन ।
पदमनाप नाग दुरलभ रमा लोहित करन ।
पति मगनका भई पावन तिहूं पुर पर धरन ।
चित चिंतन करत जस श्रथ हरन तारन तर
न । गए तारले नामके प्रेपतित हरिपुर चर

गी॰ न। जासु पदरज परसि गौतम नारि गति उद्धर
ति॰ न। नामु मोहि प्रगट सेवट धोइ पग सिर धरन।
कमलपद मकरंद पावन औरनहीं सर वरन।
सुरभज चरनारबिंदन मिटै जामन मरन।
८२। रागकेदारा। रागललित। ताल।
करि मन नंद नंदन ध्यान। सेव चरन सरो

न सीतल नत्त विषै रस पान। नातुजंघ वि
भंग सुंदर कलित कंचन दंड। काछनी क
टि पीत पटुउत कमल केसर खंड। मनो
मधुप मराल छौना किंकनी कलराव।
नाभि नलिन रुमावली अलिवले सहज
सुभाव। कंठमुक्ता माल मलय जउर वनी

ग वनमाल। सुरसरीअसिनीर मानो लता स्या
स म तमाल। बाहुपान सरोज पल्लव धरै सु
ख मृदु बैन। अति बिराजत बदन बिधु
पर सुरभि मंडितैन। अधर दसन कपोल
नासा परम सुंदर नैन। चलत कुंडल गंड
मंडल मनो निरतत मैन। कुटिल भ्रू पर

तिलकरेषा सीमासिषी सिषंउ। मदन य
नु मनोसर संधाने देष चनकोवेउ। सुरश्री
गोपालकी छविहरि भरिभरि लेह्व। प्रा
न पतिकी निरषसोभा पलक परनन दे
ह्व। ८३। रागकेदारा। राग ललित। ताल
। रेमन समुक सोच विचार। भक्तिवि

रा नु भगवंत डरलभ कहत निगम प्रकार ।
म कृपासा साधसंगत फेरि रसना सार ।
दाव अबकै परयौ सूरो ऊमन पिछलीहारि ।
राखि सबद्दि सून आटारद्दि चोपैर पांचौमारि ।
डारि दीन्हू तीन काने चनर चौक निहारि । का
म क्रोध लोभ मोहा परयौ नागरि नारि ।

सुर श्री विंद भजन बितुबले दोऊ करिका

रि। ९४। रागसारंग। रागललित ताल।

हो मन राम नामको गाहक। चौरासीलष

जीया ज्हेनमै भटकत फिरत ग्रनाहक। भ

क निहाटवै ग्रथिरवैके हरिनिग निरमल ले

ऊ। कामक्रोध मदमोह लोभ ज्हे सकल दला

रा॰ ली ढेरु। करहि पाउनें सौ जला दयरू हरि

सू॰ के घर लेजाहि। घाट बाट कहूं ग्रटक होइ

नहि सबकोउ देहि निबाहि। और भजनमै

नाही लाहू होन मूलमै हानि। सूरस्याम

को सौदा सांचो कह्यौं हमारो मानि।८५।

रागकान्हरा सूरदासकृत। रागललित।

नाल । रेमन रामसौं करिहैन। हरिभजन
की वार करलै रुवै नेनो षेन। मन हुवा न
न पी जरा निहि मोहिं राष्यौ चेन। काल फि
रन विलावनन परिग्रववरी नोहिलेन। स
कल विषय विकारननननें नरै सागर सेन।
हरभजि गोपालके गुन गुर वताये देन।

रा॰ रागकान्हडा सूरदासकृत। रागललित।
सू॰ ताल । मनवच क्रम मन गोविंद सुद
करि। सुच रुच सहज समाध साज सटि
दीन वेष करुणामय उरधरि। मिथ्या
वाद विवाद छांडिदै कामक्रोध मद लो
भ विपरिहरि। चरनप्रताप आनउर अंतर

र श्रौर सकल सुषया सुषनारि हरि। वेद
कहैंा सुमिरत हु भाष्यौ पावन पतित ना
म निजनर हरि। जाको सुजस सुनत स्र
रु गावत पापवृंद जैहै भजि भरि हरि।
परम उदार स्याम घनसुंदर सुषदायक
संतन हितकारि हरि। दीनदयाल गोपा

15

गा लगोषपति गावत गुण आवत छिग परिह
स रि। अनभय भीत निरष भवसागर यतज्यौं
चौर रह्यौं चटचर हरि। जवजम जालय मार
पै रे गौ हरि विनु कौन करै गौपति हरि। अजहूं
चेत मूढ़ चहूं दिसते काल अगिन झपाव त
करहरि। सूरकाल वलव्याल ग्रसत है श्रीप

(A)

ति सरन परन किनकर हरि।८७ रागकेदा
रा सूरदासप्रभु। रागललित। ताल । ति
हारो कुसल कहत कहा जात। बिछुरे मिलन
बहुर कब ह्वै है ज्यौं तरवर के पात। सीत पित्त
कफ कंठ बिरोधै रसना टूटै बात। प्रान लिये
जम जात मूढमत देषत जननी तात।

16

रा छिनइकमांहि कोटजग वीतनरनकी के

स नकवात। इहिजग प्रीतसुवासेवर ज्यौं चा

षतही उड़िजात। जमकेफंद हिनाहिनै

परिवौ चरननि चित्तलगात। सूरदास हृ

थायह देहीर तोकहा इतरात।८८। रागके

दारा सूरदासकृत। रागललित ताल ।

14

दिनदस लेहु गोविंद गाइ छिनन चेतन वर
न येतुज देवादेन जीवन जाई। हरि जबलों
जरा रोग हचलत्ति इंद्री भाई। आपनौ कल्या
न करि लै मानुषा तनपाइ। रूपजोवन स
कल मिथ्या देषि जिन गरबाइ। ऐसी ही
अभमान आलस काल ग्रसहै आई। कृषि

रा॰ नकत जाइहै नवजरत भवन तुजाइ। सूर हरि
सू॰ को भजन करिलै जनम मरननसाइ। ५५।

रागधनासिरी सूरदासकृत। राग ललित।
ताल । मन तोहिकती कही समुफाई।
नंदनंदनके चरन कमल भजितजि पाषंड च
तुराई। सुष संपति दारा सुहित हयगय छूट

सवै समुदाई। छिन भंगुर यसवै स्यामबिनु
अंतनहीं संगजाई। जनम नमरन बहुत
जुगबीते अजहूं लाजन आई। सूरदास भ
गवंत भजन बिनु जैहै जनम गवाइ।२५।
रागमलार सूरदासकृत। रागललित।
ताल ।अबमन मान दोरामडहाई।मन

रा बचक्रम हरिनाम हृदय धरिज्यौं गुरुवेद
स बताई। महाकष्ट दसमास गर्भ बस अधोमु
ख सीस रहा ३। इतनी कठिन सहीनै निक
सैं अजहूं न तो समुकार २। मिटगए रागद्वे
ष सब तिनके जिन हरि प्रीत लगाई ३। सूर
दास प्रभुनाम की मेहिमा पतित परमग

नि पाई। ५१। रागगौरी सूरदासकृत। राग ललित। ताल । गौरीमन रहत अटल क रि जाना। धन दारा सुत कुटंब कुलि निर ष निरष बौराना। जीवन जनम अल्प सव वनसो समुक देषन माही। बांदर ज्योंह्न (?) रूप धौरा हरजैसैं थिर नरहाई। जब लग

रा डोलत चितवत धनदारा हैं जेते । निकसत
म हंस प्रेम कहिं नजिहैं कोउन आवत तेते । सु
ध बुध अज्ञान मूढमति नाहीं कोउ जेतो ।
जो कोउ अति रोहित कारी सो कहि काढ समवे
रे । खरी एक सज्जन मिल बैठे रुदन विलाप
कराही । जैसे काग काग मूये कां कां करि

उरिझौंही। कृमपा वकते रोतन भषिहै सगु
क देषमन मोंही। दीन दयाल सूरहरि भ
जलै यहश्रौसर फिर नाहीं।९२। रागगौरी
सूरदासकृत। राग ललित। ताल । नैदि
न विसर गये इहांश्रायें। श्रति उन्मत मोहम
द ब्राकेया फिरतके सवगायें। जिन दिवस

रा ननै जननी जठरिमै रहत बड्डन उपायैं।
म० अतिसंकट वसभरत मटा लौमलमै मृउगा
गयैं। बुद्धि विवेक बलहीन क्षीननन सब
हो हाथ पराये। तिहिन करत चित अथम
अजर्भेलो जीवन जोकज्जायें। कहियों कौन
साथ हों तेरैं षान पान पसचायैं। सरम म

गाजै बान सहन सिर विषय व्याधके गाये।

रागकेदारा सूरदासकृत। रागललित।

ताल । रेमन निपट निलज अनीत। जि

यनकी कछुको चलावै मरन विषया प्रीत।

स्वानकें वनकें पेंगुकानो श्रवन छेका हीन

।भगन भाजन कंटकृम सिर कामिनीप्रा

21 रा षीन। निकट आयुप परै आपा करतनी ब

स नयार। प्रजानायक भगत कीडत वफन बा

रे बार। देह छिन छिन होन छीनी हष्टि देषत

लोग। सूर स्वामी सौ विमुष ये सनी कैसे भो

गा ५४। इति सूरसागर रागललित परिछे

द: ॥

राग ललित ताल । जागहु जागहु हे गोपा
ल । नाहिन श्रुति मोहय तेहैं प्रात परम सु
वि काल । फिरि फिरि जात निरखि छिनु
छिनु सब गोपति को बाल । बिनु विक से
मानों कमल कोमते तें मधुकर की माल ।
जो तुम मोहि पत्या उन सूर प्रभु सुंदर श्या

रा॰ल॰ मतमाल। तो उठिये आगुन अवलो किये त
२.
जि निद्र नैन विसाल॥ राग ललित ताल॰
प्रात समैं आवत हरि राजत। इंद्र जटित कुं
डल सवि श्रवणनि ताकी किरनि हरत॰
न लाजत। सात ईरा सिमल द्वादस मेंता भू
षन अव लेकृत। जलज नातन्य कंठ नाम॰ १

परिनाकी पंक्ति मकट सिर भ्राजत। छपी द

हितान ताके कर भाव समीप मधुर धनि बा

जत। हरदास प्रभु मनहुं मूढहा भगत नि

वस प्रेमभगतनैं भाजत॥ राग ललित ताल॰

आज अति शोभित हैं तन प्रणाम। मानहुरी

जीते नेंद नंदन मनसिज सों संग्राम। मुकु॰

रा॰ ल॰ लित कवच न समात मुकट छवि रोष अरुणा दो
२१ उ नैंन। श्रम स्रवत गति भांति आलस बोल
त बनतन बैंन। नाव छुत श्रोणि प्रस्वेद गात
तैं चेदनगी कछु छूटि। मदन सुभट के सरसु
दे समानैं लगे कवच वट फूटि। दमन अंक
मरूपीक प्रकट भए मनभाव सुभग अहा २

र। सूरदास प्रभु परमें सूरमें जानें नंद कुमार

राग ललित ताल ॥ आप आप सूरतरंग र

स माते। मानऊ छिन विश्राम निमित थिय-

श्रमित भए हैं ताते। उग मगात मगधरत-

परत पग उठन वेगित हांते। ज्योंग जमत

वरण मेंकलकरगहि आन तना ठांते। उर

रा. ल. नाव छ्तन के कन छ्त पाछे सोभित है कहिरा
२२
तें। मदन सुभट के बान लागी नउ निकसि
गएहि घातें। मोंहे करत बोल अपने हैं टर
तन मरजादा तें। सूरस्याम कहि गए आइ
हेम ग्यारे नेहि नाते॥ राग ललिता ताल.
उनींदे कान्ह आएरी मेरे नैंन भरे रस मातें। ३

डगमग पांइ धरत धरनी पर बैनु बोलत अरु
झातै। सब अंग सीतल श्रम जल भीनै बारं
बार कंपाते। काजर रेख रही अधरन पर का
हे को श्याम लजाते। बिन गुन माल बिरा
जे उर पर नख छत नाहि छपाते। सूरदास
प्रभु सांची कहो तुम कौन त्रिया रंग राते ५॥

रा॰ ल॰ राग ललित ताल । आज स्यामाजू के नैनकी
२२
23
बातें सुनिरी मानि मोपें बरनी नजाई । सुधा॰
किरन बिच जग सुभ बिजन किये पानमानों
सोवत अघाई । चुंबनराग रंगीले रसमसे॰
कहा कहूं सुंदरि सुंदर ताई । मरकत बिद्रुम
कमल कोम मैं लेजावक की रावि बनाई । आ

४

लम तिरछै चाहत बिचही बिच कछु कवि क
सितजब लेत जंबाई। मन मथजै करि हरि
जीतन कौं दयो बान फव धनुष चढाई। दे
देखि लाल लोचन विष किन भए परम व
लरता सब विसराई। सूर स्याम रस रीझव
हे तहो लम हम सह वरि कोन बडाई॥२॥

गा॰ ल॰ ललित ताल । भोरहू भए प्रकट पुणमाज्ञ तजग
२४
जनी मन आनति पिय प्रेग रुचिर लोचन मध
घूरित निसि औपि यारे मानति । आलिंगन प्रे॰
णी रटतनी रजनि पर हानि रमनोरब ठानति
परपक्रुत करनी मायो मैं आनंद सपन रुवा
नति । सूरदास सहचरि सब प्रमदित विहय ५

जनन करि मोनति । दिन फुनि प्रकट विनोद
रजनी के नखनि ज्योतन मोनति । राग ललि
त ताल । कहांतें लागहोइ न माथ । आलसभ
रेरी जंभातजे अलिनि पुन बसे तमरे संगम
गुप गेयले औरन भाषन गावन गुणनन गाथ
हों तमतें न्हपैहैं बूझ ति तम तो उलटेही त

रा॰ ल॰ रजत हम पर हम जो कहा भरिली नैं वात। ब्र
२५
ज पति रसिक रसिक हम दोउ रसिक जिन।
की ये चत्रभुज स्वामि पिय गोकुल नाथ॥ राग
ललित ताल । कहीं तें आए हौ उठि प्रात ये
ग श्रेगहीं अर सान। सब श्रेगहीं अर सान नैन
अरु नव रग मगे दोउ हमत आवत स्रोपन क ६

कु तन चिन्ह बनैं मगात । लटपटी पागामर
गजी माला पीतांबर उरपर जु विराजत मंद
मंद मसकात । यह छवि निरखिनिरखि कें
ब्रज जन हेसति परस्पर लेति बलैया फूले ।
अंगन मात ।। राग ललित । ताल । आप आप
हो तुम प्रीतम प्रातही रैन अनत बसे । रजनी

ग. ल. सखि अवधि वदी हमसों बोजति हारे नसे। छेज
२६
न अधर भाल जावक रंग प्यारी पगसीस थ
से। अटपटे भूषन मरगजी माला आये सिर
पागलसे। आलस बस डगमगात चरण ग
ति जित तित जात खसे। ब्रजपति पिय लल
ना को बचन सुनि न गयरनै कहसै। रागा। ७

ललित ताल । आप आप हो तुम स्याम कहो

तैं मोवहि भवन हमारे । कहि गए हम सों बसे

और के सोचे बोलति हारे । सगरी रैंन मोहि

मग जोवत गई बिरह बिथा भई भारे । ब्रज-

पति पिय तुम हो बहु नायक तउ मेरे नैंन के

तारे । राग ललित ताल । आप आप हो म

रा॰ल॰ न भावन कहोते भोरहिं नंद दुलारे । तुम की॰

यो रति सुख हमे दीयो प्रति उठ वे सोचे हो बोल

ति हारे । तुम कीयो मधु पांन हमे तो तिहारो

ध्यान ऐसें कैसें बने प्राण प्यारे । अब तो सि

धारो तहां रैन बसे हो जहां गोविंद प्रभ पी॰

य हमारे ॥ राग ललित ताल । रंग रसिक ८

नंद नंदन रंग रसिक भामिनी मृगनैनी कम
ल नयन नागर नागरी। गिरिधर कलहंस
हंसनी मानों गोप नहणि दोऊ सम तूल गु
णन सागर सागरी। करत केलि बन विहा
र निरखि जो टल जित मार गावत मिलि ब
दन चारु ललित रागरी। खग मृग पशु स

रा॰ ल॰ नत नाद पिवत ग्रधर सुधा स्वाद क्रमदाम॰

२८

वदत वाद सुफल भागरी ॥ राग ललित ना

ल । प्यारी तेरे नैन रगमगे निस पीय संगः

जागे । ग्ररुन बरन शोभित ग्रालस भरे ग्रलि

रति रस पागे । पलक पीक भौंहें रमिरही ग्रा

ली मानों कमल परागे । क्रमदाम गिरिध॰

रन पीयसंग हसि हसि हसि भाव लागे॥ राग

ललित ताल। नींदन परी रय निसि गरी म

दरि आमेरी जु गई। याही ते फटपटात उठि आ

ई चटपटी जीयमें बहुत भई। न्यारो कान्ह

पनघट खेलत हो बुफजुम हरि हसि मोह

लई। बिसरत नही नगीना चोखें जीयतें टर

रा॰ल॰ नन कलक नई। ब्रजभंज प्रभुगिरि यर चलो
२५
मेरे यरदे हों दय दीप बाहो जितई। मेरी बजी
व नि मोही कों देहो नव वरणनकी वेरीछै॰
हैं जग बितई॥ राग ललित ताल । कहि
थोंरी बनबेली कहूंते देखि नेद नेदन। बूफो
री मालती कहो ते पायी नन वेदन। कहि

यौंकुंद कदंब बकुल चंपक ताल तमाल क
हि यो कमल कहो कमलापति सुंदर नैन
विसाल । कहि यौंरी कुमुदिनी कदली कछु
कहि कोविद करा बीर । कहो तुलसी तुम
सब जानत हो कहो घन स्याम शरीर । कहि
यौं मृगी मया करि हम पर कहि यौं मधु पर

रा०ल० माल। सूरदास प्रभुके मेरी तुमहो सब दीन
१०
३०
दयाल॥ राग ललित ताल। नवल लाल
वृषभान दुलारी आवत कुंज भवनतें भोर।
इन तन बनी मरगजी सारी पीय उर माल
रही बिन डोर। आल सबस प्रेमनि भज य०
रियरि आवत आनि छवि पावत। मधुप माल ११

सौरभ बस गुंजत भ्रमर तिहारे गावत। बष
भान पुरातन गाई लाडिली नंद सदन गाए
स्याम। छीत स्वामि गिरिधरन रंगीले बिल
से प्यारो जोम॥ राग ललित ताल। भैरो।
तुम आए भोर भए पीय रैनि कहां गुवाई।
कौन नारि के बसए रे मोहन सांची कहो कि

ग०ल० न जानि परी चतुराई । उरहिं हार बिनु डोर
३१ बिराजत सिथिल अंग सब नाख छतदेत ।
दिखाई । छीतस्वामि गिरिधर कहौं मोसों
रसिक सिरोमनि जावक पाग रंगाई ॥ ८ ॥
राग ललित ताल । राजत दोउ रति रंग
भरे । सहज प्रीति विपरीति निसा सब ग्राल १२

स सेज परे। अतिरन बीर परस्पर दोऊ नेक
हू कोउन भरे। अंग अंग बल अपनें अस्त्रनि
सौं रति संग्राम लरे। ममन मरोरि रहे सेज
बिन परस्त उन कोउन डरे। सूरस्याम स्या
मा रतिरननैं एक पग चलन टरे॥ राग ल
लित नाल । करि सिंगार दोऊ अरसानैं।७

रा॰ ल॰ स्याम बोलतन मधुर बानि हरषे फूलि पीछे दोउ
१२
भ्रर सोवैं। रति रन जु किंजे मद्यपनी के सेज
परे उठि फुलि भ्रर जावैं। मानौं सूर खेत स
मलरि कैं गिरे उठत फिरि गिरि तल जावैं॰
राग ललित ताल । बोलेत मधुर बाख्योजे
मको गजर मार्यो पौन भायो सीतल तमित

मिता तई । प्राचीन अरुणानी भोन किरन उ
जारी भछ पेउ उगान चंद मामलीनता लई ।
मउले कमल बछ बंधन बिछोही ग्वाल चरै
चली गाइ उज पैनी कर कों दई । सूरदास गोपि
का मरम बानी बोलि कहै जागो प्राण प्यारे ।
न्ह सबारे की समै भई ॥ राग ललित ताल ।

रा॰ल॰ छोटी छोटी गोडियो अंगुरिया छोटी छवीली
२२
नख ज्योति मोती मानों कंजदल निपर। लवि
त आंगन विलै ठुमक ठुमक डोलै झनन झ
नन बाजेपजनी मृदु मखर। किंकिनी कटि
लित कटिहान करनन जडी मृदु करकमल
नि पहुंचिया रुचिर बर। पियरी पिछोरी की १४

नी ओरन उपमा भीनी बालक दामिनि मानों
आछे डारी वारि घर । उरबघ नख कंठ ठुला
झडुले बारबेनी लटकन मसि बुंदा मुनि म
न हर । अंजन रंजित नैंनाचितवनि चितचो
रै मुखसोभा परवारों अमित असम सर । चु
टकी बजावति नचावति नंदघरनि बालके

रा॰ल॰ लि गावति मलहावति प्रेम सों भर। किलकि
३८
34
किलकि हँसे उहूँ दूध दंत लीलसे सूरदास॰
मन बसै तू तेरे बचन बर॥ राग ललित ताल॰
आई तेऊ उगमगा तिपडाति जम्हाति रगमगी
रंग भरि कै। चंद उदै भए देख तिहोरी कर
दर्पण प्रति बिंब निहारियौ पीक लीक क॰ १५

नैन छबि परिकै। बिथुरे अलक सबेरे मुष
ऊपर मनो सुधा पीवत अलिमाल आनंद
हरिकै। सूरज प्रभु रसिकराइ रस बस की
न्हे बनाइ भाव दीन्हो मन अचाइन बला।
नवरी के मन छरिकै। राग ललित ताल
नबल निकुंजन बलरस दोउ राजत रंगि

रा॰ ल॰ भीनें। कुसुमनि सेज भोर उठि आवत आल
३५
स ज्रुत प्रेमनि भज दीन्हें। अरुन नैन कुच
नख रेख बिराजत श्रमजल बसन पलटि
तन लीन्हें। सूरज प्रभु पियप्यारी को सुख
निरखत सखिन सहित ललिता हग की
न्हें। राग ललित ताल । दोउ बन तें ब्रज १६

घोम गये । रति संग्राम जीति पियप्यारी भूष
न मजत नये । वे ब्रज गये आतुर अपनें गृह
चितते को उनटारत । मनसा वाचा करम
नाए दोऊ पको पलन बिसारत । जैसें मी
न नीर नहि त्यागत खंडित हट पूरन । सू
र स्याम प्रणमा दोउ देखो इत उत को उन॰

रा॰ल॰ ग्रपूरन। राग ललित ताल । रामरमिश्रमि
२५
न भई व्रजबाल। निसि खावदै जमना जल
लेगये भोर भयो तिहिं काल। मन कामना
भये परि पूरन रहीन पको साथ। शोडश
महस नारि संग मोहन कीन्हों खाव अगा
य। जमना जल विरहत नंद नंदन संग। १०

मिले सकुमारि। सूरयन्या धरनी वृंदाबन रचि

तनया सुखकारि। राग ललित ताल। राधे

छिरकन खेल छबीली। कुच कुंकुम केतु

कि बेद हूटी लटकि रही लट गीली। बेदन

सिर ताटंक गंड परर तन जटित मनि लीली॰

गलि गयंद म्रग राज सु कटि पर सोभित किं

रा॰ल॰ किनी ढीली। मचो विल जमना जल भ्रेतर
प्रेम मुदित रस कीली। नंद सुवन भजगीव
विरात भाग सोहाग भरीली। वरषत सुमन
देवगण हरषित डुंडभि सुर सब जीली। सु
र स्याम स्यामा रस क्रीडत जमुन तरंग ष
कीली। राग ललित ताल। प्यारी चिते र
१८

ही भाव पियको। अंजन अधर कपोल निबे
धन लाग्यो काहू त्रियको। नखन उठी दर
पन करलीन्हे देखो वदन सखीरी। अपनी।
भाव उठि आन देखि के नव नम अनन सि
काजर बंदन अधर कपोल निस कुचे देखि
कन्हाई। सूरश्याम नागरि भाव जो वन व

रा॰ ल॰ बन कह्यो नहि जाई। राग ललित ताल ।
३८ कैंा मोहन दर्पन नहि देखो। कहा धरनी प
ग नाव निकरो बन कैंा मोतन नहि पेखो।
कैंा ठाढे बैठत कैंा नांही कहा परी हमहू
क। पीतांबर नहि कह्यो बैठिये रहे कालु
हूँ कहक। उछरि गयो उरतें उपरेना नाव छु २५

न बिन गुन माल । सूर देखि लटपटी पाग

परजावक की छबि लाल । राग ललित त-

भो रही स्यामा स्याम खरे । जलद नवीन मि

ली मनौं दामिनि बरषि निसानि करे । सि

थल बसन तन नील पीत दुति अलस उनप

हिरे । कछुक बूंद परति स्रमकनिका बादर

रा॰ल॰ बरन करे। भूषन विविध भांति सिङवारी रति
२५
39
रस उमगि भरे। काजर अधरन मोर नैनन रंग
अंग अंग पीक परे। प्रेम प्रवाह चली मनो
सरिता टूटी माल गरे। सोभो अमित बिलो
कि सूर प्रभु कों भाव जात तरे॥ राग ललि
त ताल। ऐसेहि ऐसे रैनि विहानी। चंदम २॰

लीन चिरैया बोली सुनी काककी बानी । बे
लवधे सुनतहि काहूके मनकी आस भुलो
नी । कपटी कुटिल क्रूर कहा जानैं स्यामनो
म जिय आनी । कोकिल स्याम स्याम अलि
देखो स्याम रंगहै पानी । स्याम जलद अहि
स्याम कहावत सूरस्याम मैं बानी । राग ल

रा॰ल॰ लित ताल । मैं जानि जहो रति मोनी । तुम श्रा
ये हो मेरे ललना जब विरि श्रोबुडु तुहोनी ।
मन की बात कहा कहै टोनी बात नही परि
चानी । इते पर श्रे विश्रे रमममोनी श्रहपगी
यो लटपटोनी । भाल जावक रंग बनोनी ।
श्रधर श्रंजन प्रकटोनी । बिन गुन बनी मा २१

सब अंग अंग उलटी सिसोनी। सूरदास प्रभ
गुणनिधान अंतर गतकी जोनी। यनि बिय
तम कौं जो सुख दीनी सेग जागत रैनि बि-
हानी। राग ललित ताल। ऐसेहि सुख स
ब रैनि बिहानी। भोर भये निज धाम चले-
दोउ मन मन नारि सिहानी। प्यारी गई बृष

रा॰ल॰ भोर पुरातन स्याम जात नंद धाम । प्रमुदा
४१
महल झारही ठाढी उनि देखी वह बाम ।
प्रात चले बनते ब्रज आये मनमन करतिवि
चार । सुनउ सुर सकुचत टहुकत तन गृह
गये नंद कुमार । राग ललित ताल । बन
तन तें आये प्रति भोर । राति रेहे कहें गार
२२

न फेरत आये हैं ज्यों चोर अंग अंग उलटे आ
भूषन बनहू में तुम पावत। बडभागी तुम
तें नहि कोई कृपा करत जहां आवत। औ
चक आइ गये घर मेरे दुर्लभ दरसन दीन्हें
सूरस्याम निसि हौ कहूं जागे पावति अंगअं
ग चीन्हें। राग ललित ताल। आज प्रति

रा॰ल॰ ४२ रैनि उनीदे लाल। हम पीछे मै चरण पलो

टें जिय निजानो ख्याल। सुमन सुगंधे सेज

हडासी दावति छंगवै हाल। मेरे कहे न्हाउ

कछु भोजन करौ नमदन गोपाल। निसि

श्रम भयो पीर मोहि आवति सुनानि परस्प

र बाल। सूरस्याम सुनि बचन कपट जिय २२

भरि लीन्ही प्रेम माल ॥ राधा ललित नाल।

राधा हरि के गर्व भरी । सखियन आगम को

जब जान्यो बैठी रही खिरी । उत ब्रज नारि।

कैं वै हँसति करति परि हास । चली बजाई

देखि ये री वा राधा कोउ न हास । कैसो बदन

सिंगार कौन विधि प्रेम दसा भई कैसी । सुर

रा॰ ल॰ स्याम संग निसि रसकीये नियर कहै रे बैसी·
४३
राग ललित ताल । श्रीकृस्न कृपाल कृपा
निधि दीनबंधु दयाल । दमोदर बनवारी मो
हन गोपीनाथ गोपाल । राधारमन बिहा·
री नटवर सुंदर जसमति बाल । माखन·
चोरी गिरिधर मनहारी स्याव कारी नंदला २४

ल। गोचारन गोविंद गोपपति जिय भावन मे

ज्ञल ग्वाल। श्रीत स्वामी सोई ब्रज प्रकटे।

कलिमे वल्लभ लाल। राग ललित ताल।

हरिसो तू वैठीदे कपोल कर। मानना हिन

नैननि नीकडा रति उस मति छतियो कर

न धर धर। चरननि सीसनाइ मनाइ लईले

रा॰ ल॰ ले पह पहे निकुंज घर तोरि गढु मान गोविं
४४ ५५ द को प्रभ जाति रति पति को भाव दमन ॥
राग ललित ताल । पहरि केसरी सारी पि
या पिय भाव करावत । देखत निज रूप नैं
ननि भरि भरि प्रेम प्रेम परसत प्रफु पराव
त । बोलत तुतरा तला गात सुहावन सीवे २५

ब्रज जन प्रेमत नरावत। गोविंद प्रभु गति

गयंद चलत भावत सब निजय हेसि हराव

त। राग ललित ताल । प्रातही आयोहो।

नेद लाल। जावक माल अधर मसि प्रेज

न पीक लगायो गाल। लटपटी पाग उ

नींदे नैननि उर सिमर गजी माल। छीत।

रा॰ल॰ स्वामि गिरिधरन बनी छवि चलत मंदगति
४५
चाल। राग ललित ताल । मृदु कपोल।
लोल युगल कुंडल कृत शोभे। हीरक कृ
त विबुक भूषण विर चित विलोभे। कंठ
शोभि मक्तामणि भूषणो दीत ग्रीवे। भाव
भर तया वशीकृत युवती जन जीवे। कोटि २६

नटगत पीन वसन शोभित निज रूपे। प

द नख खाव माति मान सुरनर मुनिभूपे

विज्ञापन मेत देव मानय मम वचने। श्रीव

ल्लभ चरण कमल कृपया कृत रचने ॥

राग ललित ताल । प्रियसखि विरहे वि

पिन विचरणे विरहि मनुज शरणे। गोकु

गा॰ ल॰ ल पति पद भावनामति शायित शोकरवाणे।
४६
क्षवे। विविध विटपि युतलता छेदमेदर्शी॰
न जनिता नंदे। शिशिरित तनि विल धारी
र पवन विचलित नव कुसुम मकरंदे। म
दिर मुदित मानस जन नाद विलासि ख
श्रवणे। शद्भत पतति युग दर शान कृत
२०

हृदय दुःखे यविःखणे । फलित रसाल धा
ल धाला गतपिक कूजितक सावे । स्थल॰
कमला हितशोभोप मित युवति जन मरम
सावे । हरित रसालोकन चिंतित हरिरूप
नाम युगले । संवर्द्धित हृदया हित रागागा
न कृतिरागणित गले । गगान बिल मदति व

गी॰ ल॰ न यन खेद विलोकन कृत स्वावहाने। केपि

४७

५७

न शाखा गत मृदु पल्लव चलन विहित स

नमाने। विविध स्मल विरचित लीला विला

पन बहुतर निपुने। श्रियमे निधि स्वावनि

चय विचारण परमानम कृपाणे। ईदृशा॰

दशा युते हरिदासे दर्शय गहन विहारे।६। २८

दय निहित हरिवल्लभ वर पद नाव विधुति

मणि हारे ॥ राग ललित ताल । मानिनि

पीमा महमे किमिति वियोगं कुरु हरिणा

मे भोगं । वारयन दयर पीयूषेण विषम वे

तो भवरोगं । ध्रुवं । निजहस्ता ववितातिम्र

टल तर कुसुम रचित स्रवि प्रायनेन । प्रति

गा॰ल॰ पद मव लोकित पद विकृत चपल चकित
५८
नयनेन। भावित शायन शायित भवती से
दर्शन जनित स्वेन। कृप यिष्यति दयि॰
तेति मोषभमेतनति हेमैत स्वेन। पुरपि॰
नाल हेनकृत पवन विशाष वाशित हृद॰
येन। श्रम विंदु निकयला वदन कमल।

मनसा मदयेन। कुटिलालकततिनयन

समागति रति जागरभि तेन मार मैरवति

पक्षपतैरेविह विरह दशानितेन। मवक

मला हित गंधलोभ गुण भरवाणिनया मे

न स्तन नटललित हीर शोभा भरसनत।

स्तन गमेन। संवाहित मरमिज संदर भावि

गी॰ल॰ न पद कमल युगेन । सकरुण हृदय कम
ल मेदित भाव वदेक रुचेन । श्रीवल्लभ प
द कमल विमल मति हरिदासे सदयेन ।
मनसा मापि भावय निज भावे भाववनो ।
विनयेन । राग ललित ताल । हरि मनु
ममदित मरम रमि जन नयने । कुरुशाय

ने हरिणा सह संदरी रचित कुसुम शाय
ने । ध्रुवं । विरह भाव समुदित हदिताप
निवारत्या गीत गुणे । इत्यवदा दा गागि ।
निरुपम सावमापरि भावन निपुणे । वि
र मवलोकित पदकमला कृति नह प
ल्लव निचये । विलित चरण चमत कृति

गी॰ ल॰ विचित दृष्टि रचित विलये। भाव वशा श
५॰
य विहित विनोद विशेष निधान विचारे
भावित कचिरा वयव विलोकन विहितन
यनसंचारे। भावित भवती परिरंभण कु
तमेभ्रम जनित स्रावे। मधुरा धर पीयूष
पाणमेप्रटित सलोल स्रावे। भावित मा॰

नापनयन करयुग धृत पद कमल वरोन

व विधु किरण कौमुदी मोद विनोद विशे

ष परे । श्रमसेहित निज विरह दशा सम

दित मानस सेनापे । रचो श्रित तनुदहि वि

नाशक शीतल कमल कलापे । शिशिरो

पाय विधान विहित निज जन्म सफलवि

गा॰ ल॰ वादे। श्रीवल्लभ वर चरण कमल परिमल

लोभित हरिदासे। राग ललित ताल। मा

निनि नव पद पतिताहं। श्रेगी कुरु गोकु

ल पति मेंगं येन सपदि भविता हरिताहं॰

फवे। मानय विनय वचन मनिदाने नव

मेलन करणे हनिताहं। नैव सचित मति

३२

रोष वती भवति कृपया दासी विहिताहे॥ श्र
वलोक यति पथे नव सुंदरि मान वारणे
माधवि निहिताहे। इति जानीहि चरणपरि
चरण निरंतर करण दोष रहिताहे। भव
ती रति संपादन कृतये निरुपधि गोकुल
पति रचिताहे। यदि नायामि तृषैव भवा

गा. ल. मितदानिपुणैक मध्य लीविनाहे। त्वजमि
५२
न मानमहो कथ मपि नदी तर युवत मीर
तीवजिताहे। यदि न भवति मम विहित।
मिदं मवि किम कथयामि मध्यवनिताहे
वदनामृत कर किरण चकोरे दर्शाय म
ाविते भू लाठि ताहे। इतर सवि जन माहे ३३

कृत बहु वचन रचन प्रोच मतिदाहे। जीवन

मपि मम दुर्लभ मथुनाथ दि निज सेवा भेवा॰

गमितहे। कथ मदर्शी यिष्यामि मावे पुनर

पि हरिणा बहु यालपितहे। इति मह चरि

वचनानि हृदा करण श्रति वदति माधवि म

वि चलिताहे। श्रीवल्लभ वर चरण शरण ह

रा॰ल॰ विदाम मदीय कृपा वलिताहे। राग ललितताल
५३
ल। विर हे सुंदर वर्षा समये। वद जीवामि।
कथे मम दोषे रति श्रायिते विरह मावि विपरि
ते मदये। वर्षति जल दे विरहा नलदे गोवर्ड
न शिखिरे। पर पुष्पी पान पुष्पे कूजति वद।
ति कोकिल मावरे। लसति भूमि रति हरि
३४

नाग बन विचलिते लग्न निचये। इंद्र गोपकै

नव निज मूल विलसद नुराग मये। विवि

धशिला स गृह निज रूप युता स विराजत

नाये। निज भाव दर्शन निजना नेद विला

स गीत गुणाये। नव घन मध्य सोभिता भव

वि हषपते मित ववक माला। मेघ नाथम

रा॰ल॰ नगर्जति मरली नवनिरमे खरमाला। उदय
५४
५4
ति विघादतीव वेचला बाल यतीह जने। घ
सित मेघ गण विरचित तमसा बहु भीष य
बने। रंजित रुचिरक संभ बसन परि धान
विराजित रूपे। गायति मेघ समागम राग
निरुपयि गोकुल भूपे। इति विज्ञापितमति
३५

घाय करुणे विरहित हरि दासेन । श्री।
वल्लभ पद कमल पराग धारिणि विर वि
नवासेन। राग ललित ताल । मनते वि
चारति वृंदा विपिने। गोकुल पति रति गो
पाल बालकै राकठि पिदिने। निज वदने
निज वदने नवदति नामानि गवामति र

गा. ल. ति वचनेन। मनसि मोदने विपुल रमा गा
५५
न सरस कुंज रज नेन। निर्मल नीर धौतः
शिखरे परि रुचिर शिला मय विपुण। भे
के भवन समागत मन्त्रे निज गोपेषु नि वि
पुण। धन्य गलि दल विविध कला निपुणा
नि रुचिर हस्ते। मध्य मोदने नन्द ने हरि २६

जननी कृत शासे। पिबति विमल पानीये

यमुनाया मंजलि बंधेन। इति बिंब पशुपति

सविरे निज लोचन मंबे येन। मृडु बाद य

ति वेगे मति मधुरे चलति येन संगे। हर

ति नाप मध्य कानन देशे विर चित ह्लण भे

गे। कनक चषक गत फेन समूहे पिबति।

रा॰ ल॰ गोप भणिते । शिशिर यतीह बाल जल ह्रद
५६
ये बहु विरह व्यथिते । श्रीवल्लभ पद कमल
परागराग रंजित ह्रदये । हरिदासे भावितें
भावे रसिकजन डर्जन विलये ॥ राग ललित
ताल । चरणे येहि सरस ह्रदये । व्यथते
शिखण्ड मूले रति पद मिति चिंतैत कमये । ३७

नहि ममचित मिह यरणि विचरणे हंदरम
नि कमले। उद्भट भाव निरंतर निर्गत नय
न नीर विमले। श्री रणि कृहते मपदिमहा
ये। यद्यपि वन चलने तदपि बाधते मामक
हृदये। चरण चिन्ह कमल ने यद्यपि भू
मि रघो रम महिता त्यजति नथा पि हरे।

गी०ल० इह यदि गेहे नाग मन्स्महेमे करवैम पदि कोरे

५२
57
व्रज मेवेपि गवां मनुगे किम गोपी जन वृंदे।

दोष मयो चेतसि चिंतयमे लौकिक मति मंदे

किमिति विशेषि नापमेन्वष्टे याव यिते चरणे

फणि फण भृत पद पद्म किरद भज मेवत

न करणे। कह निज नित उःरव मन्हे यामि प ३८

दा जनिता नंदेन । भूमेरहह वियोगे विहिते ।
किम्म मयि गोविंदेन । श्री वल्लभ पद कमल
मदा गति मेगत गंध युतेन । योजय निज चर
णे करुणा मय दास सदय हृदयेन ॥ राग ल
लित ताल । मित्रमायाहिकवैषयो मेघन
मिह भोजनीयं त्वया । पवित्रे विर विर विनरु

गी॰ल॰ पात्र निहिते हरे ननु विधेया ममोपरि दया। श्री

५८
58

तले भये तिननु भाव सुंदर हरे कृष्ण वने यत्न

विहिते मया। किमिति हि विलंबसि निष्ठ मम

मन्मिये गोप सुत मंडली विहित विनया। दर्श

ना नंद गोविंद संप्रति यथा भवति दुःखालि

रण रचित विलया। इष्ट तर नील मणि मे

३५

ज म्रव लग्न मयुडगाद कण परम श्रीभैकनि

वया। निष्ठकयया मि परमदम्भता मयक।

या मयि किमपि मध्ववचन मदित मय चैक

या। मामहहकानने करुया योजय प्राणनप

ति गोकुला देश पदवया। श्रायामि किमपि

कथयामि नव कर्णियो रति प्रायन गुम्रमय

गा॰ल॰ क विरचित भया। मंजु कुंजे रचय संकेत मद

५८
५९

भते शीघ्र मह मायामि चरण गति कृतरया॰

विजयिष्यामि परमति रमण संभ्रमे दर्शनी

यो हरे भक्त कृपया। योजनी योऽस्मि नत्र मेप

दि भवता कदा कार्य करणे रसिक जनि नाथ

सहितया। दर्शयिष्यति कदा मनथप्रभ स्वामि

सं॰

नी सहस्र वदने विहित विपरीत मिक्रया। म
दभिने दन मथो दत मनसा कदा कर्णा यिष्य
ति भरतमेग्राम क्रुत जया। देहि निजदास्य
मिह वल्लभा यीग्रा पद कमल सेवन विहित
भक्तिज फला शया। मनन महिनेपि हरिदा।
मके करुणा नम विलस विपिने सरस निलय

गा॰ल॰ रतियया। राग ललित ताल । जहाहस्त्याउमा
५
याहि वने किम चित मिति गमने। चारणीय
मिह गोपै रमिता व्रज नृप येन वने॥ ध्रुवे॥
करवै विविध वसन भूषाभि रले करणे तव
देहे। रहसि विराजित विपुल विला नव समा
मक गाहे। अति सुगंध मई तन मानि ष्णायष्ण ५२

द्व गंध तैले। स्नान मयो कुरु नीरै सषौ सरी
कुरु चैले। कञ्चु पटे परियेहि तिलक मपि
विमल विपुल भाले। नत्र सम्मीषे शिरसिवि
येये ग्रथि नाल कमाले। नूपुर युग मतिचप
ले पदयो रुत भजयो रपियेयं। कंकण चय
मथ मध्य मेगदं गुच्छ मसित मपियेये। हृद

गा. ल. य मध्य मणि मुक्ता जटित पदके नाथविधेये
५२
मुक्ता कनक मालिका युगले जय जगदवि
ल भजेयं। उपविष्ट पर्यंके मृदुरमे कुरु सं
दर शयने। तनवै कर कृतमंग मर्दने शिशि
री कुरु नयने। इति मरमे वचने राधायारति
रस भाव युते। कृष्ण वल्लभ वर चरण कम ७२

ल तलगत हरिदास कृते ॥ राग ललित ताल·
हरि री हृदि वैसे बसति वने । गोचरण मपि
कुरुते गोपै रपि तो विटपि घने । ध्रुवं । नैव
रोचते किमपि समावि मम हरि विरहित·
सदने । विरह वन्हि रपि तनुते दाहं हृदये
न्रपमदने । दृष्टु महो कामयते नयने गोप

गा·ल· नन यवदने । अलि कुल महपाल कतति स·

५२ हिते मगाय इमाय वदने । नासा मतने विहित

62 इगाघा देह कमल गंधे । आदा तेन सपानतुन

नुते मैव हृदय वंधे । रसना कुरुते मनत म

नो रप मधुर रमे पाने । वागपि रमनु गाया

वनी विदधाति मनो गाने ॥ ५० ॥ ४३

अथ दुर्गा चरित्रम् नटा दी मंगला चरणम् ता

ल गीत ॥ हेरंब अंब आनंद दायिक विघ्नराज

कृपा करम । बुद्धि ह्रद्धि विलास कारक आखु

वाहन के भजे ॥ इतिस्थाई ॥ परशु अंकुश दंत

वांछित वर चतुः कर धारिणे शुंड दंड विवि

ध मोदक भक्त के सभाव यजे ॥ इति अंतरा ॥

रा॰ल॰ चरण कमल पवित्र धारक वाल निधी हित से
८२
विते। भाल चंद्र हिमाद्रि कन्या वालके ललि-
पंकजे धारणे ऊरु गान काले रस समूह वि
धायके। ताल काल प्रबोध साधिक ज्ञानदे
परमे मदे। इत्याभोगः॥ राग ललित ताल॰
यका॥ विश्वे भरि ऊष्ट दामिनी सेवन साविधा

नी जो सेवे यन मन कर वांछित फलदानी

इति प्रसाई ॥ राजा इक सुरथ नाम चक्रव

र्ति नीत वंत कोला विधंसी सेना युद्ध करत

मानी तिह वजीर दुष्ट चित राजा छलहा

र कियो एकाकी विपन गयो त्याग राज ।

थानी ॥ इति सुरता ॥ मारग में वैश्य मिला

रा० ल० मेधा ऋषि भेट भई स्तन ईश्वरि प्रारण परेो

६४ वर्ष तीन ध्यानी। दुर्गा तव भै प्रसन्न राजा॰

कों राज्य दियो सावर्णि मनुकीयो वैशुपकी

यो ज्ञानी। तैसें ही बालनिपै अनुकंपा क

रहि सदा दीजो निज प्रेम नेम निधि स्तन

कवि बाणी॥ राग ललित ताल ध॥ हेहि

आदि शक्ति तेहि विश्व सकल करण हारा।
देव विपद काटन कों सुमिरण की जारी।
इति सुप्याई॥ एक समैं श्रीपति जू योगानि
द धारी करण खाज मल जु गिरी सुस्र
भये॥ इति अंतरा॥ बला कों धाई पडे मल
ण हित राडी मधुकैटभ नाम थैं श्याम बड़।

रा॰ल॰ पसारी। ब्रह्मा अति भीत पेष श्रीशानीद धारी

जगादी स्तुति पारण परेयो तेहि तेहि कारी।

मधुकैटभ मारण कों विष्णु नेत्र हिये नाम॰

माव वाहृ तें हि निकसदर्शान कों धारी। त

व हि विष्णु जागि उठि प्रसरण में युद्धकरा

माया के मूलन तें मधु कैटभ मारी। उष

न के मारन कौं दश भाव भज धारी ॥ इति दुर्गा
प्रथम चरित्रम ॥ अथ महा लछमी चरित्रम
राग ललित ताल ध ॥ श्री महा लछमि चर
ण शरण करो भाई जिहि प्रताप जगत स
कल करत काज धाई ॥ इति अस्थाई ॥ श्रीप
ति पुर ब्रह्म लोक रुद्र लोक इंद्रलोक अस्था

सर भूप सभी तासु कर सुभाई ।। इति अंतरा ।।
राग ललित ताल ध । जै ईश्वरि महालछमि
कोटि सूर्य्य तेज पुंज धारिणि तेहिं महसम भ
जा देवन हित कारी ।। इति अस्थाई ।। एक स
मैं देवन संग महिषा सुर युद्ध करा हार गये
देव सभी हरि हर विसयारी ।। इति अन्तरा । श्री

म तेज वदन भयो विस्म बाहु ब्रल तेज पाद

भये अर्क तेज अंगुलि सभ न्यारी। वसु वन

कर अंगुलि स नासिका कुवीर कीन अजाप

त देत भये अग्नि नेत्र सारी। संध्या भ्रुव अनि

ल कान तेज पुंज नारि रूप देष देव मदि।

न भये स्तुती कीन भारी। बालनिधी शास्त्र।

रा॰ल॰ सभी देवन निज भेट कीये राक्षस तब धान दि
६० 67 ये जयजय भय हारी॥ राग ललित ताल ४।
जै श्रमे वैसावि सुर क्लेश कटन हारी॰ करत
सकल सिद्ध काम ध्यावत जो ध्यानी। इतिस्था
ई। असुर सैन्य नाश देष चिक्षुर सेनानि गयो
सैन्य युक्त मार दियो चामर सम मानी। इति

ऐतरा ॥ क्रोध युक्त महिषा सुर सेना गण आ
म कीयो अंगन में अस्त्र सभी विड विड दानी ।
भूमी खुर नम्र करी अब्धि पुच्छ फटक दियो
भूमी तल डूबि गयो देवन भय मानी । ऐसे
महिषा सुर कों देष चंडि कथन कियो गर्जे
उष छिन यावत मैं मधु कों पानी । करहिं पा

रा॰ ल॰ न मधुमद में ब्याल मार जाय पडी भूल मारडा
६८
र दियो बाल जैहो बाणी ॥ राग ललित ताल
चार ४ ॥ जगत आत्म प्राप्ति तेहि विस्तर क
र व्याप रही शाका दिक शिर निवाइ सावन।
करत भारी ॥ इतिश्रग्याई ॥ परम ऋषि पूज्य
तेहि मम कारज करन हार तव प्रभाव जान

न नहिं माधव त्रिपुरारी ॥ इति प्रेतरा ॥ फूल

में ज्ञ रच्छन कर खिडग धार धारी । बेटा सब

न पाहि देवि चाप धुनहि कारी । पूर्वदिशा

पश्चिम यम दिशा चेडि रत नहिं निजविधू

ल आमन कर उत्तर दिक सारी । सौम्यरूप

श्रुति हि सोर नैसे निज शासन कर बालनि ।

रा॰ल॰ यी रक्ष करो संतनकी प्यारी ॥ इति महाल॰
६४
क्ष्मि चरित्रम ॥ अथोत्तरचरित्रम राग ल
लित ताल ध ॥ आदि श्रेवज गात स्थूल माया
भ्रम हारी शुद्ध ब्रह्म निज स्वरूप भूल जीव
कारी ॥ इति अस्थाई ॥ देहादिक भावसभी
तेरेतैं प्रकट भये जीव जेतन विषय विश्वहो

ह यकिरिणि धारी ॥ इति श्वेततरा ॥ सर्व जीव मानस
में बुद्धि रूप नीद तेहिं तृया तृषा जाति ला
ज तोष शांति भारी । लत्मी स्मृति दया शक्ति
चेतन चित हारी । मातृ भ्रांति बिस्रमाय को
ति धृति मारी बालनिधी श्रद्धा तेहि वृत्तिदे
ह दामन कों दांति पुष्टि छाया तेहि जैजै भ

ग.ल. व तारी ॥ राग ललित ताल छ्वार ष ॥ जगदीश

7.
70

वि इष्ट दमिनी भक्त पीर हर कारिणी कलिय

ग में सेवक कों वांछित फल दानी ॥ इतिश्र.

स्ताई ॥ एक समे शुंभ औ निशुंभ देव थानी.

दिव छीन लई देवन मिल नेरि धावण बा

नी ॥ इति अंतरा ॥ देवन को क्लेश देष गंगा

30

मैं स्नान कियो कोशा त्याग कालीकी कौशि
कि माव यानी। देउ मेउ देविहूप अमरपति
न जाय कहो बालनियी सनन मार लगी म
दन कावी॥ राग ललित ताल चार। ५॥
जै अम्बे दुर्गाति डाव हूर करण हारिणि न
हि अमंन के रक्कन हित अमरन की हानी॥ इति

रा.ल. ग्रसाई ॥ संभ कहो बाजि ग्रीव हत जाउ देवी।
७२
७१
फिरा तभी गयो देवीकों उत्तर कही बाणी ॥
तीन लोक जीत संभ रतन छीन भयो राय।
मेरे संग वेग चलो तोहि करो रानी ॥ सेवर म
ढ़ी दुरगा तेंह कहे सुनो प्रणहि पूर्व करहि
बाल बुद्धि प्रन निजहि भूल मानी ॥ जो मोको

जीत लये कर हि युद्ध निज बल युत सो मेरो
होय पति प्रति ज्ञात जानी ॥ सुन हि हत क्रो
ध युक्त बालिका तहि देवि कहैं बाल लियो।
मानहीन असुर नरपति दानी ॥ सुनहि हत धी
र गये पतियन सों जाय कहो धूम्रेतणाश्रा
यो बल भस्म असुर दानी ॥ राग ललित ताल

रा॰ल॰ चार ४॥ जैजै भवतारिनि तही विष्ण दुःख हूर
७२
72
करिणी कोट काम मोहित छबि देष वदन
तेरो॥ इति अस्थाई॥ संभ मन्यो हेम नेत्र तत्त
ण हूं भसम कीयो चंड मुंड भेज दियो लावो
तिंह हेरो॥ इति अंतरा॥ अति प्रचंड चंड मुंड
दंड खंड देवि सैन्य कीनो जब गोपि भृकुटि

प्रकट कालि केरो ॥ चंद्र पटाक जाय पडीक
री रपी भक्ष कीये चंड मुंड प्रान दीये बाल
वरण केरो ॥ राग ललित ताल चार ४ ॥ चा
मुंडा खड्ग पानि खप्पर नर रक्त भरै मुंड
माल गरै धरै भैरव वपु धारिणी । इति स्थाई
जब हि चंड मुंड दैत्य नाश कन्यो सुंभ राय ।

गा॰ल॰ अन हि कोप आज्ञा दई गयो सैन्य हमिनी ॥ इति
७२
अन्तरा ॥ युद्ध भयो प्रबल तहाँ अष्ट मातृ जी
न देख रक्त बिंद बीज थाय पड़ो तातज भूमि।
भरनी। रक्त बिंद यावत भव असुर भये तावत
जग व्याप गयो देव भीति मन चेतन हरनी।
देव विरस चंडिका जु कालीकों कहत भई

विलर सुत बधदारि रक्तबीज चरनी। रसनभू
मि छाय कालि रक्तबी भक्ष कीयो बालनिधी
रक्ष करहि उहन की दरनी॥ राग ललित ता
ल चार ४॥ जग देवा विश्वेश्वरि परम शक्ति
व्यापरही शिवहती कथन करी बाणी॥ इति
अस्थाई॥ जा हेईशा असरन पै जउ असर मा

रा.ल. न यापरि करैं युद्ध मेरे संग यदि इच्छा ठानी ।।१

७४

जाय कहो असुरन शिव ऊपित असुर याइल

७५

रे देवन की शक्ति समर दनुज कीन हानी ।

ब्राह्मी माहेश्वरि पुन कौमारी विष्णविया वा

राही नारसिंहि ऐंद्रि कलशा यानी । चामुंडा

मुंड लियें खड्ग विंब जाय पड़ी छिन्न भिन्न

३.११
३.१.

दानव कुल काल रूप जानी । सेवत निज बा
लनि थी वांछित कौं सिद्ध करणि विद्धि कौं
दूर चरण कर धारण ध्यानी ॥ राग ललित
ताल ३ ॥ दुर्गा दास दूर करणि धरणी है ।
धार रही विघ्न प्राण धारण हित उदक रूप
धारेयो ॥ इति ब्रम्याई ॥ रक्तबीज नाशदेव

रा·ल· संभ कोप कीनो अत दोउ भ्रात धाई गये अमर

७५

75

पुंज फारयो। देव सह मात्र पुंज कोप युक्त यु

द्ध कीयो देवि शूल याति हीयो तब निसंभ मा

रयो। तब हि संभ कुपित होय कथन कीयो

देवी सन औरन की शक्ति में जु मन युद्ध या

रयो। देवि कहा एक मैं हूं दूजी नहि मो समा

न देष दुष्ट मालू पुंज मेरो विनासेयो। बाल।
निधी शक्ति सभी देव न्याव समाइ गई अचर
ज सभ देव भये नभी राग सभासेयो।। गाराल
लित ताल चार ५।। जैजैजै दुष्ट दैत्य दलिनि
दुःख हरिणी तैंहिं देवन हित कारिणी नि
त शरण गत भरिणी।। इति अस्थाई।। देह।

गा॰ल॰ युद्ध तहि संभ देवि दैत्य करण लगे चट पटा

76

क शस्त्र शब्द वाणि वोम यतियी॥ इत्यंतरा॥

दुर्गा लय करजंति संभ उठ प्रकाश पाइ गयो

निराधार अद्भुत रण कीयो असुर दलिनी।

झपट नपट भूमि पछ मारयो स्रावे रुधिर

वहो भये प्रसन्न जगत जीव शांत भयो ज्व

लनी ।। अथ फलस्तुति ।। परमेश्वरि परम प्रा
क्ति परम ऋषि पूज्य तेहि सर्व शान्ति करण
हारि जग देंबा रानी ।। इति अस्थाई ।। तन म
न धन कर निस दिन सेवत जो ध्यानी धर्म
अर्थ काम मोक्ष होवे मन मानी । इति अंतरा
सर्व दुःख हर करणि घाउ बाध हरणि तेहि

रा. ल. पुत्र पौत्र वनिता कुल वृद्धि करनि बाणी। बा
ल निधी तेरि शरण दृढ निश्चय धार रही
वांछित कौं पूर करो सर्व भाव निधानी ॥

राग ललित ताल चार ४। अथ प्रार्थना ॥

श्री लक्ष्मी आदि शक्ति सकल देव मूल ते
रि तेरि कृपा सकल जगत सुभग सुपराजे

इति प्रस्याई ।। तेरे बिन अति प्रवीण विद्वज्ज-
न मूक रहे मान हीन दुर्बल वपु कही नही
साजे ।। इति अंतरा ।। तेरे कर युक्त जोउ सोई
अति बुद्धि युक्त नीत वंत ज्ञानवान् सभाम
ध्य भ्राजे बालनिधी तेरि कृपा वांछित नि
म वासर छिन दीजे निज दर्शन बहु स्वरत

रा॰ ल॰ रेग बाजैं॥ राग ललित राग ताल चार ४॥ वेद
७८
ऋषि निधि स्वर्णाष्ठ विक्रम नृप बीते जब महा
राज समरवीर सिंह कृपा धारी॥ इति अस्थाई
जंबु काश्मीर देश तिब्बतादि शिविर पति।
आश्रय मम धर्म कर्म ब्रह्म हानि कारी॥ इति
अन्तरा॥ तिन हूं की आज्ञा करि बालनिधी।

अल्प मति सप्तशाती अवपद स्तुति करी सुगम
मारी। राग ताल मूर्छन युत अति विचित्र मो
द करै पढै जउ पुरुष निपुण ईप्सित फल पा
री।। इति सप्तशातिका अवपद परिच्छेदः ।।

ग·ल·

७९

79

मातकोशकीस्त्री

टो॰रा॰ १

ॐ अथ टोडी रागिनी प्रारंभः ॥ भरतमतानुसारेण ॥
टोडी रागिनी का प्रातकाल समय है ॥ अरु संपूर्ण है
अरु इसका अग्नि देवता है । अरु हनुमान ऋषि है । उ
ष्णिकछंद है ह्रीं बीज है । अरु इसका शृंगार रस है ॥
अरु प्रौढा नाइका है और दक्ष नाइक भी है । अरु इ
सका वसंत ऋतु है ॥ अथ टोडी रागिनी ध्यानम् ॥

१

ॐ तुषार कुंदो ज्वल देह यष्टी काश्मीर कर्पूर विलिप्त

देहा ॥ विनोद येनी हरिणं वनोते वीणा यया राजति

टोडि केयम् ॥ इति ध्यानं ॥ अथ भाषा ध्यानम् ॥ उज्ज

ल अंग तुषार हुंते अति कुंद को हार गरे छवि छजै ॥

केसर और क पूर की घोर किये तन मै हाव हूप समा

जै ॥ बीन बजाय र झाय लये वे हे मृग गान केलि क

टो॰रा॰ २

तु हल साजे ॥ चित्र उकूल यरे हरि वल्लभ प्रेम हिं टो

उी ये राग विराजे ॥ इति भाषा ध्यानम् ॥ अथ नाइका

लक्षणम् ॥ सो समस्त रस को विदा को विद कहत ॥

बषानि ॥ जो रस भावे प्रीत महि ताही रस की दानि ॥

देषी है गुपाल एक गोपिका अनूप रूप सोने ते सलो

नी वास में थते सवाई है ॥ सो भाई सुभाई अब तारली २

नो।घनस्याम।कियौ।यह।दामनी।यौं।कामनी।है।आइहै।

देवी।कोई।दान।वीन।भान।वीन।होइ॥ऐसी।भानवीन।

हाइ।भाइ।भारती।पढाइहै॥केसो।दास।सब।रूप।सा

घन।की।सिद्ध।येह।मेरे।जाने।मन।हीं।सौं।मैनका।की

जाइ।है॥इति।नाइका।लक्षणम॥अथ।शृंगार॥

रस।लक्षणम॥ पाग।वनी।अरु।वागो।बन्यो।बदुवा।

टी॰री॰
३

3

पटुका। कटि राजत। नीको॥ ॥ मौंयो। बन्यो। अति। चारु। च
टावत। हारु। बन्यो। उर। भावनो। जी को॥ ॥ बीरा। बन्यो। मु
ख। पान। मनोहर। मोहि। सिंगार। लागै। सब। फीको॥ ॥ मा
ल। भली। विधि जैं लो। गुपाल। दियो। उहि। बाल। बनाइ॥
शृंगार रस॥
न। टीको॥ ॥ इति नाइका। लछन। नाम॥ ॥ अथ दत्तनाइका लछ॥
नाम॥ ॥ वह श्रेतर। गूढ़। निगूढ़। निरंतर। काम। कला॥
३

कुल कौन गने ॥ कहि केसव हास विलास सबै प्रति

धौस बढै रस रीति सने ॥ जिन को जिय मेरे ही जी

य जिये सखिकाय मनो प्रेम चने ॥ तिन सों कहै प्रा

न बधू के अधीन तृसा परतीक कियो सपने ॥ इति

टोडी रागिनी दत्तनायक रस लक्षणम् ॥ अथ विनियोगः ॥

ॐ अस्यश्री टोडी रागिनी मंत्रस्य हनुमानऋषिः उ

टो. रा.
४

सिकछंदः अग्निर्देवता ह्रीं बीजं मनो कामना सिद्ध्य
र्थे टोडी रागिनी जपे विनि योगः ॥ अथ कर न्यासः
ॐ ह्रीं अंगुष्टाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि न्यासं कुर्यात्
अथ टोडी मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं टोडिकायै नमः ॥ इति नमः
पूजा वस्त्रं यज्ञोपवीतं गंधं पुष्पं अक्षतं धूपं दीपं नैवे
द्यं दक्षिणां पुनराचमनीयं ॥ सर्वं पूजनं कुर्यात् ॥

४

अथदेवतामंत्रः ॐह्रींश्रींहुतभुजेनमः । देवताध्यानम्

ॐज्वालामालिनमाकाशे मार्तंडमालाकमण्डले चिंते

त्पेच वक्रे च होम कालेन चिंतयेत् शुकपृष्ठगतंदेवं शा

किहस्तं त्रिलोचनं सर्वाजनैः संयुक्तं पुष्पवर्णंहुताशन

म् ॥ इति टोडी रागिनी देवता ध्यानम् ॥ अब येह इस

का सरगम है । भरत मतेन । ग म प ध नि सा रे । भरत ।

टो॰ग॰ ५ मतम ॥ संगीत कल्पद्रुमेन सरगमः ता॰२॥ ॥ गरेसानिधसा

गसामगरेसानिधरेसाग ॥ इतिस्थाई ॥ गमधनिसारे

गमगरेसानिधपमग ॥ इतिअंतरा ॥ गगममपपध॰

सानिसागरेसामगरेसानिधपमग ॥ गगममगगरेसा

पमगसागरेसानिधधनिनिधपपधनिधपधगनिध

पमपगरेसानिधग ॥ इतिसरगमः अथठाटक्रमः ॥ गंधार उतरा॰ स्वष ५

5

म उतरा· पंचम स्थिर षड्ज स्थिर· धैवत उतरा· निषा

द चढा· मध्यम चढा· ॥ अथ टोडी रागिनी की येह ·

२ग २रे २सा १नि १प १नि १प १म
गतहै ॥ अथ स्थाई । ढिड ढा ढिड डा डा डाढाडा ॥

२म १प १प १नि २सा
अंतुरे ॥ ढिडढा ढिड डा डा ढा ढा डा ॥ अंतुरे ॥

१नि २सा २ग २म २प २नि २प १प १नि १नि
ढिड डा ढिड ढा डा डाढाडा ॥ अंतुरे । ढिड डा ढिड

२सा २ग २रे २सा २सा
ढा डा ढा ढा डा ॥ टोडी रागिनी में इह गतहै ॥

ग रे सां नि प पं म प नि सां
टो॰रा॰ अथ टोडी रागिनी आलापः ॥ ननरी इना आनन उनन
६
ग म पं प पं म ग रे सां नि सांग म पं प पं म ग रे सां
उआ नन अद तद ननरी तने तना उननना आनरा ।
प नि सां ग रे सां रे सां म प नि सां ग रे सां सां नि
नन न रतु ता नोम ॥ इतिस्थाई ॥ ननन अदनते आन
ध पं म ग रे सां ग म पं प नि सां ग रे सांरे सां
न तुम ता तेने तना तन नरी नना आन तान ततुम
नि प पं म ग रे सां रे सां नि प पं म प नि सां रे ग रे
नतु नरीन ता नुरी रना नना आन तान आन तान ।
सां रे सां
तान ततुम ॥ इतिअंतरा ॥ इति आलापः ॥ भीमपला ६

अथ गणेश परि छेद माह टोडी रागिनी ।

ग रे सा नि ध प

ध्रुवपद ताल चार ॥ भोरि छोरि नींदवि

म म ध नि सा ग म प ध प म ग

कृत वदन रदन धावन कर स्वर उच्चार ।

म ध नि ध प म ग रे सा

आदि काल एक रदन ध्यावैं । इति अस्या

म ध नि सा नि सा ध नि सा रे ग रे

यी । पावैं नित बुद्धि वृद्ध विद्या विद्योत ।

सा नि ध प म ग ध नि ध प म

सकल विकल ताप हाय गणान सभामें

गा.टो. सुहावैं। इति अंतरा। गावैं गुण ममम रेरेरे

गगग ममम पपप धधध निनिनि सुरन

सोध सोध गुणि गण को रिझावैं॥ लावैं

लघु तान नीकि बोलनिथी तीन भांत में

सुरण ओडव षाडव सम अगम दिषावैं।

रागिनी टोडी ध्रुवपद गणेश ताल ५॥

वरदायिक गणनायिक गायिक गुणदा

यिक तेहि ध्यावैं सबपावैं सोइ वरण।

चित लाई। इति प्रस्थायी। छांई पद छत्र

बैसे नैसे पाप धाप ताप बाध वितत तत

हि सतविर धनहि निपुन ताई। इति ग्रेत

रा।। छांई तिस धरी नीके नाकिट किटता

गा.टो. किट किता धिदि गाण याजु वीण डाडिड

डिड डाड सरविर माव बजाई। इत्याभोगः

भाई तता थैथै थन बालनिधी विचन ह

रण नैति कृपा थारि सारि सकल गुण स

माई॥ ॥ इति टोडी रागिनी गणेश परिछे

दः॥॥॥:१॥:१॥

अथ टोडी रागिनी सूर्य परि छेद माह ध्रु

२सा २रे २ग २रे २सा २नि

वपद ताल चार ४ ॥ उद्योतन रतनज

२ध २प २म २ध २नि २सा २ग २म २प २ध

गत विगत पाप पूजित नित पाद पद

२प २म २ग २ध २म २ग २रे २रे २सा

म उरहि धार अंधकार हारी ॥ इति अ

२म २ध २नि २सा २ध २नि ३नि ३ग ३रे ३सा

स्थायी ॥ धारी जिह सदा गति विमल म

२नि २ध २प २म २ग २रे २सा २ध २प २म २ग

ति हति देत लेत अर्घ भरी रूप परम श्री

रा॰ टो॰ ति सारी ।। इति प्रेमरा ।। चारी कर कमल यु

गल मुकुल विकच ईषत भाव स्वभव शो

भि अरुण वरण पीत वसन धारी ।। भारी

नित शरण धारि बालनिधी तेजनिधे॰

भव भीति हरकरो हरो विपत भारी ।।:

रागिनी टोडी झपताल चार ।। ४ ।।:

२ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ध २नि २सा २ग २म
लोक वेद विपति घोन तिमर रोक हर क

२प २ध २प २म २ग २रे २प २म २ग २रे २सा २रे
रन हरन प्रीत भीत जगत हरि ग्रष जो

२सा २म २ध २नि २सा २ध
को ॥ इति अस्थायी ॥ वांको पग लगत नी

२नि २सा २ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ग
क जाके हिये प्रीति पूर्व सर्व कर्म वांछि।

२प २ध २प २म २ग २रे २सा २रे २सा
त नित अमित देत तांको ॥ इति अंतरा ॥ः

२ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ध २नि २सा २ग
कौ को इराव नाहि हटे दिन कर नित जो।

२म २प २प २प २म २ग २रे २ग २रे २सं २रे २सं

ग॰ टे॰ ऊरटे घेटे ऊष नेत्र रोग ताप स्वास होको॥

२म २प २नि २सं २प २नि २सं २ग २रे २सं २नि २प २प

घेंको छरि नाहि रहे घरे धीर बालनिधी

२म २ग २रे २प २प २म २ग २रे २सं २रे २सं

पद पंकज ध्यान युक्त करे बहु वियोको

अथ॥ इति आभोगः॥ इति हृदय परिच्छेदः॥

अथ टोडी रागिनी दशावतार परि छेदः।

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ सदा सत्य विदाने

द पुराण परमेश्वर जब भूरि भार भूमि दे

व पर रूप धारै ॥ इति अस्थायी ॥ अथ

म मतस्य रूप भूप मनू नाव उदधि वही

कमठ तनू धारि प्रबल बलन पृष्ट धारै ॥

रा० तो० इति अंतरा ॥ याते मूरदन कोड फोड खंभ

श्री न्रसिंह प्रह्लाद रछ्या करी असुर उर

म फारै ॥ वामन जग पावन पद बालनि

धी राम राम राम बुद्धि कलकि कलुष ।

कलि युगके जारै ॥ इति आभोगः ॥ इति

तोडी रागिनी दशावतार परि छेदः ॥ ८ ॥

अथ टोडी रागिनी ब्रह्म परिच्छेदः ताल चार।

२ध नि २सं ग २रे २सं नि ध प नि ध ध प म ध नि

पारे ब्रह्म पूरण परमेश्वर जगदीश्वर सत अ

२सं ग म २प ध २प म ग म ग २रे २सं

सत सत्यरूप जाम भासत सवि कारी ॥

म ध २नि २सं ३ग ३रे २सं २नि ध

इति अस्थायी ॥ मारी जिम सूर्यकिरण ।

२प म ग २रे २सं २ग म २प ध २प म ग

थारी भूवारि देष वैसेंही काच वारि वारि

२रे ग २रे २सं ध नि २सं ग २रे

काच मर्री ॥ इति अंतरा ॥ भारि भ्रांति माया

6

२स नि ध २प म ध नि २स ग म २प ध

गा. दो. कर कूट रूप लोपि सत्य गहिं सत्य विबज

२प म २ग म ग २रे स म २ध नि २स २ग २रे

गत प्रतिहि विब चारी ॥ यारी जल भाज

२स नि ध २प म ग रे २स ग म २प

न बङ्र र विहि एक एर रहो बालनिथी।

ध २प म ग २रे २स

केप फलक भिन्न भिन्न थारी। इत्याभोगः

रागिनी टोडी ध्रुवपद ताल चार ध ॥

२स ग म २प ध २प म ग रे २स नि ध

विश्वरूप विश्वनेत्र विश्वपाद बाहु विश्व।

अति विरूप मीन नयन मैन मैन नाशा

करि नग्न गगन नाद पूरि हैरैं विषमा

री ।। इति अस्थायी ।। कारी जब ऊर्ध्वजटा

अग्निवर्ण भीत भवन अट्ट हास त्रास फा

ट जात अंड भारी ।। इति अंतरा ।। जारी

जब भाल ज्वाल नयन दग्ध ऊर्ध्वगति

रा॰ टो॰ नारा गारा नाश जात भूमि वितल धारी ॥

मारी दिक पति दती स्थूल स्रोत रोत जवी

वालनिधी काल रुद्र रहे प्रलय कारी ॥

इत्याभोगः ॥ इति टोडी रागिनी शिवप

रिछेदः ॥ :॥ :॥

अथ शिव परी छेद माह रागिनी टोडी।
ध्रुवपद ताल चार ४॥ शंभु भवन नृप
भूप पूजित पद पल्लव मृड विधु बालभा
ल धरै गंग शिखर धारी। इति अस्थायी
कारी फणि मणि ज्योति द्योति करै गरै।
परी भूति रमै हरै पाप सकल जगतभा।

8

रा.टो. री। इति अंतरा। सारी सभ योगि योग ध्या
न ज्ञान पुराण नित अमित तेज पुंज रूप
अति विरूप धारी। हारी जग आस त्रास·
तीन लोक कांपत अत बालभाल नय
न वह्नि दग्ध कैं सारी॥ ॥ इति आभोगः॥
रागिनी॥ टोडी॥ ध्रुवपद॥ ताल॥ चार॥ थाः

१पि २म २ध २नि २सं २ग २पि २पि २ध २पि २म २ग २रे २सं

विविधविश्व व्यापरहो मझ अलख भारी॰

२म २ध २नि २सं २ग २रे २सं

इति अस्थायी ॥ अमर अमर परम ऋषि॰

२नि २ध २पि २म २ग २रे २सं २ग २म २ध २नि २ध २पि

नाग योगी ध्यान धरैं करैं कोटि यतन मा

२म २ग २रे २सं २ग २म

र पार नही यारी ॥ इति अंतरा ॥ शेषदेष

१पि २ध २पि २म २ग २रे २सं १नि २ध २पि

भेष अनेक धरे करे नामनये मोक्ष मह

१म २ध १नि २सं २म २ग २पि २म २ग २रे २सं २म २ध २नि

ह कर उधार पुन अपार भारी ॥ बालनि

२सा २ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा २ग २म २ध
रा॰टो॰ यी तेरि दया होइ जवी तभी ध्यान ज्ञान यु
२नि २ध २प २म २ग २रे २सा
१ क्त यार सार जग असार कारी ॥ इत्याभोगः

इति टोडी रागिनी ख्यालपरिछेदः ॥ ॥॰॥ ॥

अथ टोडी रागिनी प्राप्ति परिच्छेदमाह

२नि ध २नि २सं ग २रे २सं २नि

ध्रुवपद ताल चार ॥ श्री वैष्णवि वैष्

२सं २नि २ध २सं २नि २ध २प २म २नि २ध २सं २ग २म २ध २म

व नित अर्चित तव पाद पद्म मम हृद

२ग २रे २सं २ग २म २ध २प २म २ग २रे २सं

य धारि पापहारि त्रिविध बाके ॥ इति

२प २म २ध २नि ३सं २नि ३सं २ध २नि

अस्थायी ॥ जंबूपुर रक्ष करणि अविन

३सं ३रे ३सं २नि २ध २प म ग म २ध २नि

वरण हर वरणि नरणि मरण धारे जो

10

२सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा २नि २ध

रा॰ तो॰ उ उठदीप जगत लोके ॥ इति येतरा ॥ ऋद्धि

२नि २सा २ग २रे २सा २नि २सा २नि २ध २सा २नि २ध २प २म

राज केहिराहि मंदिर मधवास करे वरण

२ध २नि २सा २ग २म २ध २प २म २ग २रे २सा २प २म

सरित निर्जर कर हरे पाप लोके ॥ बाल

२ध २नि २सा २नि २सा २ध २नि २सा २रे २सा २नि २ध २प २म २ग

निधी दयानिधे वरण कोई वास करे वा

२म २ध २नि २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

छिन को दर करो हरो दुःख लोके ॥ः

रागिनी तोडी ध्रुवपद ताल चार ४ ॥

ग रे सा नि ध प म ध नि सा ग म प

हिम गिरि दरि हरि नयवस शोभित नित

ध प ग ग रे सा नि ध प म ध

शमित कमल शीकर कर शीत रूप शो

नि सा रे सा प म ध

ति करे मारी ।। इति प्रस्थायी ।। यारी जिह

नि सा रे सा रे सा नि ध प म म ग रे

भक्ति मुक्ति छाडि दुरित दुर्जन की इर्षा

सा ध नि ध प म ध नि सा रे सा

पद ध्यान ज्ञान कीनो जिन भारी ।। इति

ग रे सा नि ध प म ध नि सा ग म

अंतरा ।। नारी नर दर्श करैं धरैं धीर पाप

रा॰टो॰ हरेः मनमलीन नाहि मेरें धृतहि कलाधा
री ॥ धारी चित्र चरण शरण बालनिधी ।
विश्व शक्ति जगविरक्ति निजहि ध्यानदी
जो हितकारी ॥ इति आभोगः ॥ इति टो
डी रागिनी शक्ति परि च्छेदः ॥ः॥ ः॥

अथ टोडी रागिनी विश्वपरिछेद माह ॥

२ग २रे २सा २नि

ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ रमा रमण द

२धे २पे २मे २पे २नि २सा २ग २रे २सा

मन विमन सुमन कुसुम माल गरै ह

२पे २धे २पे २मे २ग २रे २सा

रै विपत यरै पीर तीर निधी शायी ॥

२मे २पे २नि २सा २पे २नि

इति अस्थायी ॥ भाई मन फलक मउ

२सा २ग २रे २सा २नि २धे २पे मे २ग

ट भृकुटि तिलक शोभित अत मकरा ।

12

गा.दे. छत करत भरण पोषण सबके विधायी ॥:॥

रति चेतरा ॥ थाई जब सुरभि रमा प्रमुद

भीर पीर परी हरी हरी रक्ष करी देवदुःख

मिटायी ॥ छाई पद पद्म छत्र बाल वि

घ पार रहो वांछित मम पूर करो नि·

यिपवन नित दायी ॥ इति आभोगः ॥:॥

रागिनी टोडी ध्रुवपद विष्णुजीके ताल

२ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ध

चार ४ ।। हरि हरि हरि हरत डरति व

२नि २सा २ग २रे २सा २प २ध २प २ध

रित भरित मज्जन जिह मज्जन जन सेग

२प २म २ग २म २ग २रे २सा

ति मन मनन करन सारी । इति अस्थाई

२म २ध २नि २सा २ध २नि २सा २ग २रे २सा

धारी जिन परम शरण छाडि छदम स

२नि २ध २प २म २ग २म २प २म

दम छोट तोट रोष मोह मान काम ल

रा॰टो॰ ल बकारी। इति श्वेतरा। नारी चित्र बरण
13. चित्र चमक चेद दशाहि नाव नज गात।
नाप कोप जात तिमर नाश भारी॥ नारी 19
सत नेह हेय चिदानंद मगन गगन स
हश बरण बालनिधी भजो जग बिहारी
इति टोडी रागिनी बिल पारिच्छेदः॥१॥

श्री·रा· ॐ अथ श्रीरागआरंभः ॥ अब येह श्रीराग दिन के
चौथे पहिर गाना चाहीये। अब येह इसका संगीत कल्प
द्रुम ग्रन्थ में सायंकाल समय कहा है और येह।
राग संपूर्ण सात स्वरका है। अब इसका ग्रहांशन्या
स ग्रह षड्ज स्वर कहा है ॥ श्लोक। षड्जोग्रा।
ंशकन्यासः श्रीरागः सप्तभिः स्वरैः। संपूर्णो दिन

यामेस्य चतुर्थ गानमीरितम् ॥ अथास्य दकीर्णवि

धि: ॥ गौरी बुठंस टंकस्य । परस्पर विमिश्रिता: ।

श्रीरागो जायते तत्र । हनुमन्मत भाषित: ॥ जब गौ

री अरु बुठंस और टंक येही आपस में मिश्रित ।

होयें तब श्रीराग होता है और इसका हेमंऋ ।

तु है । अरु इसका ब्रह्मा देवता है । ब्रह्मांही ऋषी

श्री॰रा॰ है। अरु अनुष्टुप छंद है। श्रीबीज है। अरु इसकी
२ मध्यानायिका है। और दत्तनायक है। अरु इस
का शृंगार रस है॥ अथ श्रीरागन्यासायनम॥
ॐ अस्याश्री श्रीराग मंत्रस्य ब्रह्माऋषि रनुष्टुप्
छंदः ब्रह्मादेवता श्रीबीजे मनो वांछित सिद्धा
र्थे जपेविनि योगः॥ अथ श्रीरागस्य करन्यासः २

ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि न्यासं सर्वं
कुर्यात् ॥ अथ श्रीरामस्य पूजाविधाय । आवाहने
आसने । अर्घ्ये । आचमनीये । पाद्ये । वस्त्रे । यज्ञो
पवीते । गंधे । अक्षते । पुष्पे । धूपे । दीपे । नैवे
द्ये । दक्षणा । प्रदक्षिणा । पुनराचमनीयम् ॥
पवं इति श्रीरामस्य सर्वं पूजनं कुर्यात् ॥ अथ श्री

श्री·रा·
३

रागस्य मंत्रः ॐ श्रीं श्रीरागाय नमः ॐ । इति मंत्रः ॥
अस्य जप मंख्या । दशलक्षं दश सहस्रं च ॥ अथ ध्या
नम ॥ ॐ नाभी जातः पृथिव्यां ललित मृदु तनुः
शुभ्रवस्त्रस्रुगौरी राजंते पाणिकंजा बद्धतर नर
ला राजयः षट्पदानां अस्य श्रीराग नाम्नः स्फ·
टिक मणिमयी भाति कंठे च माला हेमंते चाद्य ३

शिशरे पुनापि ग्रीष्मे वासरांते स गेया ॥ अथ भा
षा ध्यानम ॥ भूमि की नाभि ते जात भयो स तन
सित वस्त्र भूषित गौरो । पाणि में कंज लिये ब
ऊ चंचल भृंग सुगंध करैं अति भौरो । कंठ में
फाटिक मालवनी चित्त मोहन है माणि दीपति
जौरो । शिशरे हिमंत ऋतुः पुन ग्रीषम रागसि

श्री॰ग॰ री दिन अंतके यौरे ॥ अथ श्रीगणेश देवतामे
५ वः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ ॥ अथ देवता ध्यानम् ॥

ॐ ब्रह्माणं रक्तवर्णाभं । पीतवस्त्रैरलंकृतम्

चतुर्भुजे वेद्रे (नव) सक्रवेस्ववि हस्तकम् ॥ इ

ति देवता ध्यानम् ॥ अथ मध्यानायिका ल

क्षणम् ॥ मध्या वृद्धा यौवना प्रगाढयौवन ५

वेन । भाग सुहाग भरी सदा भावन है मनके

न ॥ अथ दक्ष नायक लक्षणम् । पहिलो ।

सो हिया हेतु हित सहिज बडाई कीनि । वि

न चले हू न चले दच्छन लच्छन जान ॥ अ

थ शृंगार रस लक्षणम् ॥ रति मति की

अति चातुरी तिय पति सेव विचार । ताही

श्री॰रा॰ सों सम कहित हैं कवि कोविद श्रृंगार ॥
५ अब श्रीरागकी येह ठाट है ॥ षड्ज सम॰
5 रहता है। रिषभ उतरा है अरु गंधार चडा।
और मध्यम भी चडा है। अरु पंचम सम र
हता है। धैवत किंचित् उतरा है निषाद च
डा है॥ अथ श्रीरागस्य सरगमः ताल ४। ५

निसागगगपपनिधममगरेरेगरेमासानि ॥ इति

अस्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ ममधनिसमनिनि

ममरेगरेममरेनिधमधमगगरेममसरेनिग

अब श्रीराग मे एक गत मसीत षानी तारपी

मा त्रिताला उठेगी ताल की पैहली से ॥ डि

डडाडिड डाडा डाडाडा । डिडडा डिठ डाडा

श्री·रा·
५
6

डा डा डा । डिड डाडिड डाडा डा डा डा । डिड
डाडिड डाडा डाडा डा । डिड डा डिड डाडा ।
डा डाडा ॥ इतिस्थाई । अथ अंतरा स्थाई बजा
कर चला तालकी पैहली सें ॥ डिड डा डिड
डाडा डाडाडा । डिड डा डिड डा डा डाडाडा
डिड डा डिड डाडा डाडाडा । डिड डा डिड ।

५

१प २पं २म । २रे २सं

डा डा डा डा डा ॥ फिर स्थाई में जा मिला है

२सं २रे २ग २रे २म २प

अथास्था अलापः॥ ननरी इना आनन उ

२पं २रे २पं २रे २ग २रे २पं २म २प

नन उ आनन अद ननरी ब्ने नना उनन॰

२पं २रे २पं २रे २सं

ना आनरा ननन रत्नु नात्नुम ॥ इति स्थाई

२म २प २नि २सं २रे

अथ अन्तरा ॥ ननन अदनते आनन त्नुम

२सं २नि २प २रे २ग २रे २सं २नि

नात्नै नना नन नरी नना आन नान नते

श्री॰ रा॰ ८

नन नरीन नानरी रना नना श्रान नान श्रा

न नान रान नानम ॥ अथ ध्रुवपद गानमा

ह ॥ श्रीराग ध्रुवपद नाल ४ ॥

८

अथ श्रीरागस्य ताल परिछेदमाह ध्रुव।

पद श्रीराग ताल चार ॥ कारण इहज

गत सकल कार्य जनित अति विचित्र

निज माया धारि सार दीन आत्म भारी

इतिस्याई ॥ वारि रूप धारि करि अव-

विविध भांत जगति प्रकष भक्त होत

श्री॰रा॰ शुक योनि कलल चारी ॥ इति चेतना ॥

8

केकेय तीन गात्र उपरि पेषि छेड रूप।

शिर बाहु अंग सकल विकल रहे धारी।

जब धारी तेरि कला चेतन शुक चलन

लग्यो माया मध वहिर भयो धन्य तेही

धारी ॥ इत्याभोगः ॥ श्रीराग ध्रुवपद ८

२नि २सं २रे २म २प २ध २प २म

ल ताल चार ॥ तेहि तान धारण पट द

२प २नि २ध २प २रे २प २रे २ग २रे

या सिंधु जगत करण उदर मध्य वर्ति

२सं २नि २सं २रे २रे २ग २रे २सं

जीव निज सिमरण धारी ॥ इति स्थाई ॥

२म २ध २नि २सं २सं २नि २सं २रे २ग

जन्म शतक योनि क्लेश देष पूर्व कि॰

२रे २सं २नि २ध २प २म २प २ध २प २रे

यो न ताप जगहिं त्याग जाग कहे त

२प २रे २सं २नि २सं २रे

वहि मेव भारी ॥ इति अन्तरा ॥ योनि वि

२म २प २ध २प २म २ध २नि २ध २प २रे

श्री·रा· र जबहिं परो धरो रूप अपर भोत माया

२प २रे२ग२रे २सं २नि २सं २रे २म २प २म २ध

के धोत ग्रेथ हरि भई मारी ॥ हदित भ

२नि २सं २नि २सं २रे २रे२ग२रे २सं २नि

ये भूष लगी मोह शोक नीद जगी बा·

२ध २प २म २प २ध २प २रे २प २रे२ग२रे २सं

लनिधी भजन विना मेंहति मथ चारी·

इत्याभोगः॥ इति श्रीरागस्य बल परि

छेदः॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖

अथ श्रीरागस्य शाक्ति परिच्छेद माह ध्रु
वपद शाक्ती ताल चार ॥ निज हिं रूप
भूलि विभ्र माया मय आश पाश फांसि
डार जीव भयो साव अभील भागी ॥ इ
तिस्याई ॥ देष दार रूप क्रूप मोहकू प
ह्यो विषय विषयन रमहिं जान जान।

श्री·रा·

10

गयो भयो जगत रागी ॥ इति श्वेतरा ॥ कं॰
ही पुरुष नारि कहो पशु पंछी कीट भई
देह मान मन मूढ छूट तर्ष जागी ॥ क
हो काज अपर करो भयो गज भूमि मोक
डौय अचान बीत मयो थयो स्वरत ला
गी ॥ इत्याभोगः ॥ श्रीराग ध्रुवपद शाको

ताल चार ॥ अभ्रमाया मोह करणि हरि

णि ज्ञान निजहिं सकल आत्म रूप पर

अनूप मूल जीव कारी ॥ इतिस्थाई ॥ स

वें जगत व्यापित नित पूर्ण शुद्ध बुद्ध

रूप देह बुद्ध भिन्न जान मानत सवि ।

कारी ॥ इतिअंतरा ॥ पांच कोश जनित

श्री॰रा॰ भ्रांत भ्रम भ्राण मनस मात बुद्धि वित्त क्षा

दित मति भ्रम भयो भारी ॥ परम शक्ति

भक्तिधार बालनिधी ध्यान धरै ज्ञा।

ऊ तिमर आत्म रूप रहे सारी ॥ ❖ ॥

इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति श्रीरागस्य ध्रा

कि परि छेदः ॥ ॥

अथ श्रीरागस्य गणेशपरिछेदमाह ध्रु

२नि २सा २रे

वपद गणेश ताल चार ।। गणपति प

२म २प २ध २प २म २ध २नि २ध २प २रे

ग पद्म सद्म कर निवास पाहि करो अ

२म २प २रे २ग २रे २सा २रे २प २रे २ग २रे

भि मत जग सिद्ध होत ऋद्धि घरो सग

२सा २म २ध २नि २सा २सा

री ।। इति स्थाई ।। अति कोमल रक्त वर्ण

२नि ३सा ३रे ३रे ३ग ३रे ३सा २नि २ध २प २म

वरण विघ्न विविध जास ऊर्ध्व रेख पा

श्री·रा· स बिंड येकृशादि भगरी ॥ इति श्रेतना ॥ कृ

सद बेंधु दयानाव हवि युक मक विद्य

न गण तिमर हरण श्रवित गणन दलन

करण नगरी ॥ पेसे वरदायिक सुवल ला

यिक पग बाल विध परम शरण निज-

हि मान ध्यान धैरे जगरी ॥ इत्याभोगः ॥

२नि

ध्रुवपद श्रीराग गणेश ताल चार॥ ना

२सं २रे २म २प २ध २प २म २प २नि २ध २प

ग जात भाल लात शोभतात मातउमा

२रे २प २रे २ग २रे २सं २रे २ध २रे २ग २रे २सं

वक्रतंड भ्रंग गुंज समद सुरभि कारी॥

२म २ध २नि २सं २नि

इति स्थाई॥ चतुर्भुजा प्रजा कार्य सिद्ध

२सं २रे २रे २ग २रे २सं २नि २ध २प २म २प

करण पटु क वटुक अपर भटक छोडि

२ध २प २रे २प २रे २ग २रे २सं

वरण शरण जाम धारी॥ इति अंतरा॥

श्री॰रा॰ आदि देव पूजन जिंह करत सकल पर
म ऋषि स राज ऋषि बाल ऋषिन सि
द्धि यरी भारी ॥ व्रतराय संत जनन धा॰
मन करण शील जास वासकैरै उरस
रोज बालनिधे मारी ॥ इत्याभोगः ॥ः
इति श्रीरागस्य गणेश परिछेदः ॥ः

अथ श्रीरागस्य विष्णु परिछेद माह ध्रुव

२नि २सं २रे २म २प

पद विष्णुः ताल चार ॥ परम इष्ट परम

२ध २प २म २प २नि २ध २प २रे २प

धाम नाम जास पूत करण हरण दुःख

२रे २ग २रे २सं २नि २सं २ध २रे २ग २रे २सं

जनन मरण आदि देव विष्णुः ॥ इति ।

२म २ध २नि २सं २नि २सं २रे २रे

ध्याई ॥ मतो गुणी भक्त जास ध्याम यदैव

२ग २रे २सं २नि २ध २प २म २प २ध २प २रे २प

धी हेत लेत परम मोद सहित माधव प

श्री·रा·

14

२रे २ग २रे २सा २नि २सा २रे २म २प

द यित्सुः॥ इति श्रेतता॥ देव भक्त भक्ति।

२ध २प २म २प २नि २ध २प २रे २प २रे २ग २रे

भाव याव देव द्वेष करें थें याम उपरि

२सा २नि २सा २रे २म २प २ध २प २म २ध

उपरि अधिक याम जिस्सुः॥ श्रेतराय।

२नि ३सा २नि ३सा ३रे ३रे ३ग ३रे ३सा २नि २ध २प

भाय करे थेरे पांडे विष्णु मीम डेम कृपा

२म २प २ध २प २रे २प २रे २ग २रे २सा

यिरहि भक्त भक्त जग चरित्सुः॥ इत्या

भोगः॥ श्रीराग ध्रुवपद विष्णु तालवार·

वि·

भक्त पाल भाल तिलक माल गल वि
शाल नयन मयन कोटि शोचि हरण
वदन शोभ धारी ॥ इतिस्थाई ॥ चाकचा
रि भजा भारि भार भूमि भंजन हित श्र
हित देव दनुज दलन धारि जग विहा
री ॥ इतिअंतरा ॥ भक्तन हित धाय धा॰

15

श्री·रा· य पीर हैरै थैरै धीर कैरै प्रकर कार्य बार्य
इष्ट मन विचारी ॥ करहि विजय दास
जनन श्राम एव करण पटुक चरण श
रण बालनिधी विप्र पद उचारी ॥ ❖
इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति श्रीरागस्य वि
स्र परिच्छेदः ॥ ❖ ॥

वि२

अथ श्रीरागस्य शिव परिछेदमाह ध्रु

२नि २सं

वपद शिवजी ताल चार ॥ अति उज्व

२रे २म २प २ध २प २म २प २ध २ध २प

ल शिव स्वरूप भूप योगि संत जन

२रे २प २रे २ग २रे २सं २नि २सं २प २रे २ग २रे २सं

न एकाकी सदा युक्त सक्त रूप धोरें

२म २ध २नि २सं २सं २नि

इतिस्याई ॥ देह गेह आदि जगत त्या

२सं २रे २रे २ग २रे २सं २नि २ध २प २म २प २ध २प

ग राग राम नाम सक्त सदा आत्मरूप

श्री॰रा॰ अति अनूप चारैं॥ इत्येतरा॥ भस अंग

16

देह अनेग गंग पूत उतमांग उर विहे

ग घाण पवन ऊई ऊई सारैं॥ आसन

हढ़ नीद जीत वासन को नाश धार

अड अनेद बालनिधी विविध भयति

चारैं॥ इत्याभोगः॥ श्रीराग ध्रुवपदाश्रि

वजी ताल चार ॥ जो सो जगाउ रत रहे।

वहे प्राण वायु पवन सकल प्रेत चा

रि मृत्यु जीव लियो मारी ॥ इति स्था

ई ॥ मृत्युंजय हेउ माल उरम फूल

करहि धरे प्रेउ प्रलय काल भाल भ

स धारी ॥ इत्यंतरा ॥ कर कंकण ब्र

श्री॰रा॰ न माल भाल नयन कर उचारि एक
ट ज्वाल जार देत भवन सकल मा॰
री ॥ ग्रह ग्राम ग्राम फटत उडप सुर॰
आदिदेव एक शेष नृत्य करै बाल मो
द कारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति श्रीराग॰
स्य शिवपरिछेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

शि॰

अथ श्रीराग सा सूर्य परिच्छेदमाह ध्रु

२नि २सं २रे २म

वपद सूर्य ताल चार ॥ चामीकर त-

२प २म २प २नि २ध २प

म वर्ण कर्ण भरण मुकुट भृकुटिति

२रे २प २रे २ग २रे २सं २रे २प २रे २ग २रे

लक रक्त धारि कारि द्योत जगत सा

२सं २प २म २ध २नि २सं

मी ॥ इति स्थाई ॥ जड ता तम नाशक

२नि २सं २रे २रे २ग २रे २सं २नि २ध

रण हरण पाप ताप रोग शोक मक

श्री·रा· ल हर करण दिन कर प्रभ भारी ।। इत्ये

18 नरा ।। लोक अलोक अवर उपरि च·

लित चरण एक जाने जास पास प्रभा

वेसे ध्रुव स रशिम धारी ।। अंड गोल·

चारि डोर दिवस रात्रि बार बार करै

धरै धीर पीर हरै बाल चारी । इत्याभोगः

अथ ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ कालरूप
दिनकर प्रभु भास्कर जग व्याप रहे ष
ट ऋतु यन भिन्न भिन्न करण भरण।
शाली ॥ इति स्थाई ॥ कुसम कर कुसम
विविध भांति सुगंधि छाय रहे बहे घा
म ग्रीष्म तपे संतप कुसम माली ॥ इ

१९

श्री·रा· निश्चेतरा॥ श्रावह् घन वारिथैरे हरैरे ना

प सकल जीव सरदि मदिर रमहिं सक

ल जीव स्वक्ष कमल वाली॥ दक्षिणा·

गति हर यारहिं प्रीत प्रबल मार शिशि

र वृक्ष पत्र फार करै वर्षवाली॥ इत्या

भोगः॥ इति श्रीरागस्य सर्वपरिच्छेदः॥

अथ श्रीराग मा दशावतार परिछेद।

२नि २सा २रे

माह ध्रुपद ताल चार॥ अब्धि मांक

२म २प २म २प २नि २ध २प २रे

पेठि श्रवन बेद छीन लीन भयो हन्यो

२प २रे २ग २रे २सा २रे २प २रे २ग २रे २सा

मत्स्य रूप धारि हरि अनंत मारी ॥

२म २ध २नि २सा २नि

इति स्थाई॥ कारी जब मथन सिंधुक

२सा २रे २रे २ग २रे २सा २नि २ध २प २म २प

मठ रूप सथा माथ नाथ रूप सूकर।

20

श्री॰रा॰ सितरदन भूमि धारी ॥ इत्यंतरा ॥ वि

भ फार श्री न्टसिंह प्रह्लाद रक्ष करी॰

पाद पद्म नाल जिम बामन सुरि चा॰

री ॥ पशु धरण मेरु करण हिंवियह

नन राम राम बुद्ध कल्कि बाल कल

ष भय निवारी ॥ इतिदशावतारा: ॥

१ गौरी रागिनी मध्य नायिका
२ गौरी रागिनी दक्षनायक
३ गौरी रागिनी शृंगार रस:
४ गौरी रागिनी ब्रह्मा देवता
५ रागिनी गौरी ध्यानम्

गौ॰रा॰
१

ॐ अथ गौरी रागनी प्रारंभः ॥ मालकौंश की भार्या है

अथ संगीत रत्नाकरी प्रमते न भरत मतानुसारेण कथ्यते

श्रीटंक मालवा युक्ता गौरी च गीयते बुधैः दिनांत

समये जाते सम्पूर्णा विषमा दिव ॥ श्रीटंक मालव

के मिलाप सें येह गौरी रागनी बनती है ॥ अरु इ

सका समय सायंकाल है अरु इसका अंश न्यास गृ

१

है इसका खिरज स्वर है अरु मेंपूर्ण सात स्वरकी रागा
नी है अरु ब्रह्मा इसका देवता है और ब्रह्माही ऋषि
है उश्निक छंद है गौंबीज है अरु मध्याह्नका जोबना
नायका है अरु दत्तनायक है अरु श्रृंगार रस है
इसका शारद करते है ॥ अथ गौरी रागनी ध्यानम्
ॐ निवेशयेति श्रवणेनवो क्षार माम्रमय या को।

गो॰रा॰ किल नाद रम्या मधु स्वरा कांचन भूषणाढ्या चं
२
द्रा नना सा कथिता च गौरी ॥ अथ भाषा याने
सवैया। कान रसाल की मंजरी राजत कोकिल
ने कल कंठ गही है ॥ गोरी सी सूरति मोदन मू
रति सूरति मे रस रीति गही है ॥ केलि कुतूहल
मोनित ही रति आनंद सो नितही उमही है ॥ सू
२

षन चीर बने तन मै हरि वल्लभ रागनि गौरी कही

है ॥ अथ मध्या रूढ जोबना नायका लक्षणम्

दोहा ॥ मध्या रूढ जोबना पूरण जो बन वेत।भा

ग सुहाग भरी सदा भावत है मन केत ॥ यथा ॥

वेद को सो भाग भाल भृकुटी कमान कीसी मैन

कैसे पैने सर नैनन बिलास है ॥ नासिका सरोज

गौ॰रा॰
३

44 3

गंध वाह मे सुगंध वाहु दाडिमो मे दसन केसो वी ज

री सौ हास है ॥ भाई कीसी ग्रीवा भुज पान सो उदर

और पंकज मे पाय गति हंसकीसी जास है ॥ देषी है

गुपाल एक गोपिका मे देवता सी सोने मे शरीर सब

सोधे कीसी वास है ॥ अथ गौरी रागनी दक्षनायक

लक्षणम्। सवैया॥ चित चोप चिते वेकी नेमी येहै ३

अरु तैसेही भांति उवान चवै ॥ अरु तैसेही कोमल बो
ल गुपाल मोहत है तहि भांति मनै ॥ गुन तैसेई हा
स विलास सबै इते जैसेई केशव कौन गनै ॥ सषि
है कहै आन वधू के अधीन है सापरतीक कियौ ।
सपनै ॥ अथ गौरी रागनी श्रृंगार रस लक्षणम् ॥
सवैया ॥ दीनो मै पाई निकाइ महावर आज मे औ

गौ॰रा॰
५

जन शोभि सहाई ॥ भूषन भूषित कीने मै केशव मा
ल मनो हर मै पहराई ॥ दरपन लेकर दीपति दे
षि सखी सखी सब अंग सिंगार सिथाई ॥ वेकवि
लो कनि अकले पान खवावै को नंद कुमार क
न्हाई ॥ अथ गौरी रागनी विनियोगः ॥ ॐ अस्य
श्री गौरी रागनी मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः उस्निक छं ५

दः अला देवता गौं वीजं अभीष्ट कामना सिद्धर्थे गौ
री रागनी जपे विनियोगः ॥ अथ कर न्यासः । गौं
अंगुष्टाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि न्यासं सर्वं कुर्यात् ॥
अथ गौरी रागनी पूजा विधाय ॥ आसने नमः पाद्यं
अर्घ्यं । आचमनीयं । वस्त्रं । यज्ञोपवीतं गंधं अक्षतं ।
पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दत्वा पुनराचमनीयम् ॥

गौ॰रा॰ ५ इति गौरी रागिनी सर्वे पूजने कुर्यात् ॥ अथ गौरी

रागनी मंत्रः ॥ ॐ गौं गौर्यै नमः ॐ ॥ इति मंत्रः ॥ ज

प संख्या एका दश लक्षम् ॥ अथ गौरी रागनी देव

ता मंत्रः ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ॐ ॥ ब्रह्मा ध्यानम् ॥ ॐ ब्र

ह्माणं चक्र वर्णा मे पीत वर्से रले क्रतं चत्र भुजे

चत्र वक्त्रे स स्रुवे स्रुचि हस्त कम् ॥ इति देवता ध्या ५

नम ॥ अथ गौरी रागनी का येह ठाठ है ॥ खड्ज सम

म रहता है । ऋषभ उतरा । गंधार चढा । मध्यम

और उतरा ॥

चढा । और उतरा भी । पंचम सम रहता है । धैवत

उतरा । निषाद चढा ॥ अब गौरी रागनी का सर

ता-३ ।

गम संपूरण ॥ मंपपपधंधपधनिपगाधसरेपगारेस

मरेगारे ॥ इति अस्थायी ॥ समपधंपसनिसरेगारेसा

गौ॰ रा॰ ६

मंपधससमनिसारेगरे ॥ इतिअंतरा ॥ अब इसकी गत

येह है ॥ ढिडढा ढिडढा डा ढा ढा डा। ढिड ढा ढि

ड ढा डा ढा ढा डा। ढिडढा ढिड ढाडाढाढा डा। ढिड

ढाढिड ढा डा ढा ढाडा। ढिड ढाढिड ढाडा डाढाडा।

ढिड ढा ढिड ढा डा ढा ढाड ॥ इति अस्थायी ॥ अथ

गौरी रागनी अलापा ॥ ननरी इना आनन उनन

६

२पं २म २ग २रे २सं २रे २ग २म २म २ग
उग्रानन ग्रदननरी तने नना उननना ग्रानरा न

२रे २सं २म २प
नन रेनु तानुम ॥ इतिअस्थायी ॥ ननन ग्रदनने

२नि २सं २नि २सं २रे २सं २रे २ग २रे २सं
ग्रानन नुम ताननै नना नन नरी नना ग्रान ता

२नि २प २म २ग २रे २रे २ग २म २ग
न ननुम ननु नरीन ताननुरी रेना नना ग्रान नान

२रे २सं १नि २सं
ग्रान तान रान ननुम ॥ इति गौरी रागनी अलापा

राग गौरी ताल ।

गौ॰रा॰
𑇑

𑇑

अथ गौरी रागिनी ब्रह्मपरिच्छेदमाह ध्रुवप

२सा २ग २रे २प २ध २नि

द ताल चार ४ ॥ जगत पति जगत एज्यम

२ध २प २म २ग २रे २सा २रे २प २रे २सा

कल विश्व हृश्प रूप वर विराट व्याप रह्यो ।

२ग २रे २प २रे २सा २म २ध २नि

स्थूल तनु भारी ॥ इति अस्थायी ॥ ब्राह्मण मु

२सा २रे २ग ३रे ३सा २नि २ध २प २म २ध

ख क्षत्रि भजा वैश्य ऊरु शूद्र पाद भूमि वि

२ध २म २ग २सा २रे २रे २प २रे २सा

तल सहित नाभि नभ अनंत भारी ॥ इति श्री।

ग॰ गौ॰ नरा॥ जगद्वृत नेत्र वेद मन विकार कर्ण हा
र उदर सिंधु नाडि सरित् घसन श्वास चारी
बालनिधी रसहि रसन श्रवण दिशा देव स
कल अंग अब्ज जात लिंग ईश आत्म धारी॥
इत्याभोगः॥ रागिनी गौरी ध्रुवपद अल ता
ल चारष॥ अति सूक्ष्म जीव नाम मायाकर

भिन्न मान वास्तव में नवहिं श्वेषा भूल रहो
भारी ॥ इतिश्रस्थाई ॥ यारी जब निजहि स्व
प निर्विकार मन विचार सत्य सार संगति
कर परम पद विचारी ॥ इतिश्रेन्तरा ॥ देह
गेह ग्रहणी सुत संपद सभ श्रमत मानउः
संगति नवंक मूल मूल छोडि सारी ॥ चारी

रा॰गौ॰ चित चेतन नित हृषण त्यागरहो बालनिधी

सदा सत्य बोध रूप धारी ॥ इत्याभोगः ॥ ४ ॥

इति गौरी रागिनी ब्रह्म परिछेदः ॥ ४ ॥ ॥

अथ गौरी रागिनी शक्ति परिच्छेद माह ध्रु

वपद ताल चार ४ ।। कीर्ति सुता प्रीति ।

युता मदन कदन विकल भई विरह व्

था कथा सखिन कहित निज विचारी ।।

इति अस्थायी ।। यारी नित गुणाहि गावन

अन मन मन उटल चलन मन मोहन त्

रा. गौ. प पाश फांस फसो भारी ॥ इति अंतरा ॥ का

री नहि रोष दोष जानत नित नये भूलिमेरे

बिन अपर त्रिया प्रिया कपटि यारी ॥ भारी

मन काम गति अरति रती बामजानि बा

लनियी कुल केलि बिबिध बन बिहारी ॥

इत्याभोग: ॥ रागिनी गौरी ताल चार ४ ॥

कर कोमल कमल श्यामघन सोवे सर्योगउल

कु रहो विरह दाव भीति भारि थारि विक

ल चारी ॥ इतिश्रस्थायी ॥ प्यारी वृषभानु।

सुता सुतनु कवित कहे नाहि श्रहि वेणि ।

शिखर मणि इंद्र धारी ॥ इतिश्रंतरा ॥ नाहि

भस्म विरह पोटु केठ गरल नाहि चारिक

रा॰गौ॰ स्तुरी पंक लिष्णो जपे मन सुरारी ॥ थारीनहि

मत समाधि शेम अति जिनहि मार मार बा

लनिधी नाहि रोष मारी ॥ इत्याभोगः ॥

इति गौरी रागिनी शाकि परिच्छेदः ॥०॥

अथ गौरी रागिनी विलम्ब परिछेद माह ध्रुव

पद ताल चार ध ॥ पद्मापति पद्म नयन प

द्मनाभ पाद पद्म मुनि नमन निवास सम

मेर वदन कारी ॥ इति अस्थायी ॥ चारी नि

ह वाम भाग रमा रमि नि दमक रही दामि

नि इति मंदिर मध्य अति प्रकाश मारी ॥

रा॰ गौ॰ इतिश्रेतरा ॥ धारी शिर रत्न जडत मुकट मु

5 कुटि तिलक मलयजात भात पीत वसन कु

सुम माल भारी ॥ हारी हरि कुलष सकल॰

बालनिधी परम इष्ट मन अभीष्ट पूरणनि

न अमित खाव विहारी ॥ इतिश्राभोगः ॥

रागिनी गौरी ध्रुवपद विस्तु ताल चार धः

वतर भुजा गरुड धुजा ध्रजा ध्रजा रचित जा

म धाम पास पार्षद नित विजय जय डुला

सी ॥ इतिअस्थायी ॥ वासी वैकुंठ धाम का

म त्याग गती जहां तहां गये नये चार ब्र

ल मन विकासी ॥ इतिअंतरा ॥ हासी।

कर अटक दिये दर्शन बिन भटक पीहे।

रा. गौ.

6

पापे भ्रमर रूप कीये हासे दोउ उदासी ॥
दासी श्री सहित हरि धाय, विप्र पादन मैं
बाल प्रेम युक्त मदित करोषि विलासी ॥ इति
आभोगः ॥ इति गौरी रागिनी विस परिच्छेदः

अथ रागिनी गौरी शिव परि छेद माहु ध्रुव

२रे २ध २म २प २ध २म

पद ताल चार ४ ॥ पंचानन परम पुरुष

२ग २रे २सा २प २नि २ध २रे २ध २म २नि २प २ध २म

परमेश्वर परमपूज्य शिववर वेद गंग धारै

२म २रे २ध २रे २सा २म २प २नि

हरै पाप सारे ॥ इति अस्थायी ॥ धारै गल

२सा २ग २रे २रे २सा २नि २प २ध २म २ग

गरल उरग मुंड रुंड माल भारि दशाहि भ

२रे २सा २रे २ध २ग २रे २सा

जा वृषभ पूजा भक्तन रष वारे ॥ इति अंत

रा॰ गौ॰

रा ॥ जोरैं स्मर भस्म धारे बारि योगि राज ब
रिन गगन बसन ध्यान मग्न डमरु करहिं
धारे ॥ भारे भये हरकरे बालनिये कृपा
धरै कर त्रिशूल हर करै अरिन पुंज मारे
इति आभोगः ॥ रागिनी गौरी ध्रुवपद विल
ताल बार ४ ॥ पशुपति शिव सदाशिव विश्व

२रे २स १नि १ध १नि २स २रे २प २ध २म २ग २रे

बौछित नित अमित तेज चेद भालहेड मा

२स २रे २प २रे २स २म

ल डमरु डिमक बाजैं ॥ इतिअस्थायी ॥ रा

२ध २नि २स २रे २ग २रे २स २नि २ध २प

जैं गल उरग राज भस्म धारि तीन नयन

२म २ग २रे २स २रे २प २म २ग २रे २स

हैमी पति अलष गती देवन मध साजैं ॥

२रे २प २म २ध २प २म २ग

इतिअंतरा ॥ लाजैं सम देव दैत्य गरल ।

२रे २स १नि १ध १नि २स २रे २ग २म २प २म

अनल प्राण हरै जगत सकल भस्म करै ।

गा॰ गौ॰

रत देव कांजै ॥ कांजै मन देव भीति हरें॰
प्रेम वेग पाये वाल निधी गरहि निगर नी
ल केट भांजै ॥ इति आभोगः ॥ इति गौरी रा
गिनी शिव परिछेदः ॥॰॥

अथ गौरी रागिनी गणेश परिछेद माह ध्रु

१प २नि २स २रे २ग २रे
वपद ताल चार ४ ॥ एक रदन हस्तिबद

२ध २म २प २ध २म २ग २रे २स १नि १प १ध १प
न मदन कदन जनक जास विघ्न पाश ना

१नि २स २रे २ध २ग २रे २स
श करन धीर धरन ध्याता ॥ इति अस्थायी ॥

२म २प २नि २स २रे २ग २रे २स १नि २प २ध २म
दाता निधि विविध भांत धीत हरत मान

२ग २रे २स १नि १प १ध १प १नि २स २रे
म नित अत उज्वल विषण करन अंर्द ।

रा॰ गौ॰ प्रीति माता ॥ इति प्रेतरा ॥ हाता नर पाप ताप
विपति अरिन हरन पटुक बटुक परम प्रीति
युक्त भक्ति को विधाता ॥ दाता रस तांडव स
त्व बालनिधी परम मुदित सकल ज्ञान त
त्व पार्वतिको ताता ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी
गौरी ध्रुवपद गणेश ताल चारध ॥ गौरी शि

व नेदन जग बेदन डाव भंजन अरि गंज

न गुणि रंजन रस गान को विकासी ॥

इति स्थायी ॥ अरुणोदय समय सार तेह

रा स्वरहिं साथ राथ एक रदन सम सरन

कोउ विलासी ॥ इति अंतरा ॥ सरना सरस

रचना तीन ग्राम कूटतान शुद्ध विकृतभे

२ध प २नि २प २प २रे २सं २म २प २नि २सं

रा॰ गौ॰ द सकल ज्ञान को प्रकासी ॥ बासी नित चरण

२ग २रे २रे २सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं २रे २ध

मदन बालनिधी दयानिधे ऐसाही ज्ञान ध्या

२प २म २ग २रे २प २रे २सं

न देह मन हुलासी ॥ इतिआभोगः ॥ ७ ॥

इति गौरी रागिनी गणेश परिछेदः ॥ ७ ॥

अथ गौरी रागिनी सूर्य परिछेद माह ध्रुवप

द ताल चार ४ ॥ श्री सविता जग अविता क

र्म साखि आत्मरूप तेज पुंज माल गुंज रंग

नकी सोहे ॥ इति अस्थायी ॥ मोहें मन अरु

ण वरण मंडल की प्रभा जगत तिमर स

कल नाश करे अमल भांति सोहे ॥ इति अंत

२ग २रे २सा १नि १प १धु १प १नि २सा २रे २धु २म
रा॰ गौ॰ रा॥ कौहे जल विमल पुरुष होइ मिहर द
२प २धु २म २ग २रे २सा २रे २धु २प २धु २म २धु
पूं करे मदा उदय सार कलष विविध मोति॰
२रे २सा २म २प २नि २सा २रे २सा २रे २ग २रे
योहे॥ मोहे मनदेवन को प्रति प्रवेड खेड
२सा २नि २प २धु २म २ग २रे २धु २प २धु २रे २रे २सा
करे बालनिधी प्रगिन गनन नाश करण जो
हे॥ इतिप्राभोगः॥ गौरी रागिनी ध्रुवपद सू
२रे २ग २रे २सा १नि १प
र्य ताल चार ४॥ प्रधानन सकल जगत॥

विगत पाप पूजैं नित पाद पद्म उगहि मद

न यात प्रीति भारी ॥ इति प्रस्थायी ॥ चंद्रमु

जा चारु प्रफण वर्ण परम भूषण युत हाट

क के कटक करन यवन भरन चारी ॥

इति अंतरा ॥ समप्रस्स विष्य प्रटैं कर प्रद

क्ष मेरु गेर परम प्रात मध्य मायंतनतं नि

रा॰ गौ॰

२पं २रे २सं २रे २रे २सं २रे २ग २रे २सं २नि
शीष कारी ॥ बालनिधी तेरि शरण वांछित
२प २पं २म २प २पं २म २ग २रे २पं २प २नि २प
कों दूर करण रोग शोक पाप हरण परम॰
२पं २रे २सं
दया धारी ॥ इति आभोगः ॥ इति गौरी रागि
नी स्वर्य परिच्छेदः ॥ः॥ः

अथ गौरी रागिनी दशावतार परिछेदमाह

ध्रुवपद ताल चार ॥ श्रीपाइशा सकल जग
त प्रीति हेत लेत भेष नाना विध नर नि
दान रूप जग विहारी ॥ इति अस्थायी ॥ म
त्स्य कमठ वर वराह श्रीनृसिंह वामन ऋ
षि परशुराम राम राम बुद्धि कलकि मारी ॥

रा० गौ०

13

२सं २रे २प २म २प २म २ग २रे २सं
इतिश्वेतरा ॥ जब जब जग रावस बहु पाप।

२रे २प २म २प २नि २प २प २म २ग २रे
सोक भूमि भैरें ऋषियन मन दुःख जैरें तब

२प २रे २सं २म २प २नि ३सं ३रे ३सं ३रे ३ग
हि लेउ भारी ॥ बाल निधी दयानिधे दयाद

३रे ३सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं २रे २प २रे
ष्टी बांछित नित दीजो निजपाद प्रेम नेम स

२सं
दा कारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति गौरी रागिनी।

20

दशावतार परिछेदः ॥ः ॥ः ॥

अथ रागिनी गुणकली ब्रह्मपरिच्छेदमाह ध्रुव

२ग २म२प २नि २ग २प २म २प २प

पद तालचार ४ ॥ परब्रह्म पूरण परमेश्वर जग

२प २म २ग २म २प २नि ३सं २नि २प २नि

दीश्वर प्रभु चिदानंद अगम निगम प्रकटन जग

३सं २नि२प२प २म २प २नि ३सं २नि २प

व्यापी । इति अस्थाई । दोहव्याम बीन होच महत

२नि ३सं २नि २प २प २म २प २नि ३सं २नि २प

मज विकट रूप भासत जग भांति जैसि तैसि

३रे ३सं ३सं २नि२प२प ३सं २ग २म २ग

तेरी जाणी । इत्यंतरा । देव अमर उरग मनुज

ग-ग` नारि नारि जीव जंतु पशु पक्षी मशक कीटन वहि
कला धारी ।` गोल निधी नाम रूपनैरमे नाहि
व नै माया करभास रहैं ऐसो सब लाधी ॥

रागिनी गुणकली परंब्रह्म रूपवपद ताल ४ ॥

श्री अनंत रूपी प्रभु निर्गुण निरूपाधि तेहि देव
ऋषि जपो तपो अंत नहीं पावैंहो इनपथाई ॥

२म २प २नि २सं २सं २नि २प २नि २सं २नि २प २प २म २प

वेद चार शास्त्र षट् अष्टा दश महा पुराण उपपुरा

२नि २सं २नि २प २नि २सं २नि २प २प २म

ण तेरो कछु पावत नहि भावहीं । अंत्यंतरा । तेरे

२प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि २प

बिन जउहि जगत बिन बेनन बिगन धाम महा

२प २म २प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि २प २प २म २प

मइ शब अस्मइ अपार भीति लावही । अष्टिमा

२नि २सं २नि २प २नि २सं २नि २प २प २म २प २नि २सं

स नाडि हथिर मजामल मइ देह तेरेकार पुकसो

२नि २प २नि २सं २नि २प २प २सं २म २ग २म २ग

है शुद्ध परम पावही । तेहि शुद्ध तेहि शुद्ध तेहि

२म २प २नि २प २प २म २ग २म २ग २गे २स २नि

राग॰ परिति उदक नेहि पावक जगपावक नेहि पव

२स २ग २म २ग २म २प २नि ३स २नि २प

न बियन गावेही । बाल निधी नवहि बराम उरम

२नि ३स २नि २प २प २म २प २नि ३स ३स २नि २प २नि

रोज पारी निन श्रमित भक्ति दान करो हरे सक

३स २नि २प २प

ल पापंही ॥ इति श्रीभोगः ॥ इति रागिनी ७

गकली ब्रह्मपरिक्षेदः ॥

2

रागिनी गुणकली विलंपरिच्छेदमाह ध्रुवपद
ताल ४ ॥ कमलापति कमल वदन रदन कुं
द मंद हसन प्रगसि कुसुम कांति भांति मुकुट
की विराजे । इतिअस्थाई । राजे जग कामि भ
गो तिलक भाल गरै माल हरै पाप ताप सक
ल पीत बसन साजे । इत्यंतरा । वाम अंग रमा

ग.त्र थेंव थेंग थेंग हमेंग वंमक दमक नाजि मुवेंप

लाछन नील मध्य छाजे । नील छनारि ओढि

गोपि भूषण अति शोभि रहे दैवरमा रमण

वाल कोटि काम लाजे ॥ रागिनी गुणकली

विश्वपरिछेदमाह् फवपट ताल ४ । वंकण

लि मकि दानि वैद वाणि प्रकट करी वंनराणनन

ह्रीये धरी कर्म कांड कारी । इतिश्रुस्याई । यज्ञ
फल दाता विविध कर्म धर्म दान ज्ञान ध्या
न तीरथ को वर विपाक भारी । रुन्धतरा । पीनव
सन गरुड ध्वजा वाहु भुजा वारि धारि कर्णिका
रि भूषित वेन सुवेम शोभ धारी । मुकुट विकु
ट मकर कुन कुंडल श्रव धारन विम्ब वाल नियो

रा० गु०

सुपि दान दीजो नित सारी । इतिरागिनी गुण

4 कली विसुणरिकेदः ॥

21

रागिनी गुणकली शक्तीपरिछेदमाह झवप

२म २ग २म २प २नि २प २प २म २प २प

द तालचार ४ ॥ श्रीमाया परम शक्ति सती श्रे

२प २म २ग २म २प २नि २स २नि २प

न कारिणि जग अगन जगन विविध भांत वद

२नि २स २नि २प २प २म २प २नि

नानट वानरी । रनिग्रस्थाई । मह ननर वहिश

२स २नि २प २नि २स २नि २प २प २म २प

नः नीन गुण विकासकीयो अहंकार नीन भांत

२प २म २ग २म २प २ग २म २प प

भिन्न करण मानरी । इस्पंतरा । दशा इंद्रय देवम

२ध २प म २ध २नि ३सं २नि २ध २नि ३सं २नि २ध

रा॰२ कल विषयनमें विश्व जीव नाना विध प्रकट कि

२प २म २ग म २प म ध २नि ३सं २नि

ये भिन्न कर्म रागरी । बाल निधी ब्रह्म जीव रू

२ध २नि ३सं २नि २ध २प म म २ग २म

प कियो अपर देव पार कउ नाहि पैं अनादि प्र

२प

बल भागरी ॥ रागिनी गुणकली धामोपरि

२ग २म २ध २नि २ध

ठेदमाह ध्रुवपद ताल ४ ॥ विश्व व्यापि विश्व

२प २म २प ध २प २म २ग २म २ध २नि ३सं

माय विस्तर कर आपही सेवका कर लीन कर

२नि २ध २नि २सं २नि २ध २पं २म
न विविध विश्व मगारी ॥ इति अस्थाई ॥ अंना
२ध २नि २सं २नि २ध २नि २सं २नि २ध २पं २म २ध
हषि थानहि बंधे संकर्षण आस्य अनल दंयय करे
२नि २सं २नि २ध २नि २सं २नि २ध २पं २सं २म
द्वादशान्त भेस्म पिंड जगारी । इत्यंतरा । सांवर्ति
२ग २म २ग २म २ध २नि २ध २पं २म २पं २ध
क मेघन गगण संवेरम करहि महदश धारन करे
२पं २म २ग २म २ग २रे २सं २म २ध २नि
लीन करे हरे भूमिनगारी । अनिल जलन शो
२सं २नि २ध २नि २सं २नि २ध २पं २नि २सं २सं २नि
षकरे वियन वायु मन हरे नभ गगण महतत्व जे

२पै २नि २म्रे २नि २पै २पि

रा.ग्रु. रै पन्नी ग्रजा भगारी ॥ इतिग्राभोगः ॥ ॥

इतिरागिनी ग्रणाकली शाकीपरिच्छेदः ॥

रागिनी गुणकली शिवपरिच्छेदमाह झपता

२म २प २नि २प २म २म २ध २प

ल ४ ॥ शिखरि शयन लीन नयन योग श्रयन

२ध २म २ग २म २प २नि २सं २नि २प २नि

मयन कदन वदन रदन मंद हसन विघन वसन

२सं २नि २प २ध २म २प २नि २सं २नि २प

धारी । इतिग्रस्थाई । गौरीजटा शिव समीप रमा

२नि २सं २नि २प २ध २म २प २नि २सं २नि २प २नि

रमन आप मिलन पीत वसन हेन रशन नयन म

२सं २नि २प २ध २ग २म २प २म २प

नो हारी । अंतरा । कारी फणि जटनि लीन

म प नि सं नि प पं म ग रे

रा·ग्र कौन करी वेयन रुद्र पेन अजिन दीन गौव कर

सं ग म पं म प नि सं नि प नि सं

कपीन मारी । भारी भय भीन गहर देव अहि त्र

नि प पं म प नि सं नि प नि सं नि प पं

ल भयो ग्रंथि त्रुटि नगन शंभु हँसे सरस्वती·

रागिनी गणकली सिवपरिक्केदमाह फवपट·

म ग म प नि प पं म पं

ताल ४ ॥ जटा मुकुट विकट भृकुटि भस्म ति

प पं म म प नि सं नि प नि

लक चंद शिखर गंगाधार पैं हैं विविय कल

२सं नि धे पे मे धे नि २सं नि

ध जनके। इतिश्रुष्याई। श्रर्कि कुसम वारि धार प

धे नि २सं नि धे पे मे धे नि २सं नि धे

च मात्र धारणतैं श्रति श्रमदिन विदित भाव वरदि

नि २सं नि धे पे मे गे मे धे पे धे पे

देत मनके। इत्यंतरा। दीनबंधु भक्त वच्छल करु

मे धे नि २सं नि धे नि २सं नि धे पे मे गे

णाकर नीलकंठ रुंडमाल कालरुद्र वर्णी कील व

२सं मे धे नि २सं नि धे नि २सं

नके। भाल नयन मदन ज्वलन श्रति उज्वल व

नि धे पे मे धे नि २सं नि धे नि २सं

मक रहे हरे सकल विकल ताप बाल श्रति न ग

नि पधै

रा·गु॑ गाके ॥ इतिरागिनीगुणाकली शिवपरिच्छेदः

रागिनी गुणकली गणेशपरिच्छेदमाह ध्रुवप

२ग २म २ध २नि २ध २प २म २प

द तालचार ४ ॥ हस्ति वदन रदन एक विघ्न

२ध २प २म २ग २म २ध २नि २सा २नि २ध २नि

हरण वरद अतिशय सन्मति को गंज गंज मोल उ

२सा २नि २ध २प २म २ध २नि २सा २नि २ध

रसधारी । इतिग्रस्थाई । याचाके आदिमें प्रवेश

२नि २सा २नि २ध २प २म २ग २म २ध २नि २सा २नि

मेंत संकटमय मैश्रग अति घोर शोर क्लेश हर

२ध २प २सा २ग २म २ग २म २ध

ण सारी । इत्यंतरा । विद्या आरंभ समें शुभकार

रा-ग्र ज सुत विवाह चौलहौर यज्ञ सूत्र धारण शुभ का

री । बाल निधी प्रीति शुक ध्यावे जोउ समे समे

कार्य सिद्धि तत्काल पावत अति भारी । रागि

नी गुणकली गणेश परिक्केदमार ध्रुवपद

ताल चार । ४ ॥ पार्वतेय परम सुत परम पू

ज्य परम गुरु परम सिद्धि देव सदा भक्तनहि

२सं २नि २ध २प   २म २ध २नि २सं
न कारी । इति स्थाई । सिंदुर श्रत वदन जाम

२नि २ध २नि २सं २नि २ध २प २म २ध २नि २सं २नि २ध २नि
भाल वेंद सीस मकुट उमानंद दायि सदा करी क

२सं २नि २ध २प   २प २म २म २ध २म २ध
रहि यारी । इत्यंतरा । नारी जिस रटहि सिद्धि

२प २म २ध २नि २सं २नि २ध २नि २सं २नि २ध
ग्रास पास वास करैं चामर इक मोदक लै मोद

२प २म २म २ध २नि २सं २नि २ध २नि
यैं भारी । कोल निधी दया निधे चरण कंज

२सं २नि २ध २प २म २ध २नि २सं २नि २ध २नि २सं २नि २ध २प
संग भयो राग रंग रस समूह सुर करो सारी ॥

गा॰गु॰ इति रागिणी गुणकली गणेशपरिच्छेदः ॥

6

रागिणी गुणकली सूर्यपरिच्छेदमाह ध्रुवपद

२ग २म २ध २नि २ध २प २म २प २ध

ताल ४ ॥ श्रुति प्रवेद ज्योति लोक मेरु ऊँकन

२प २म २ग २म २ध २नि २सं २नि २ध २नि

अधिक भान भान देत प्रज्वल नित विकच सक्र

२सं २नि २ध २प २ग २म २ध २नि २सं

लकनी । इतिअस्थाई । दिन नायक वरदा

२नि २ध २नि २सं २नि २ध २प २म

यिक मेर लायिक तिमर हरण उदिदेत भक्त

२ध २नि २ध २ध २सं २नि २ध २प २ग २म २ध

जनन धीन भीति हर्ता । इत्यन्तरा । भजा देउ

रा॰ गु

२पि २ध २पि म २ध २नि २सं २नि २ध २पि
बाक बार हार धारि कुसमन नित मकुटि तिलक

२म २ग २रे २सं २म २पि २पि २ध २नि
शोभित श्रति अमित धीर धर्मो । ताके पद पंकज

२सं २नि २ध २नि २सं २नि २ध २पि २म २म
रस लुब्ध मधुप बाल निधी वो छिन मम हरकरो

२ध २नि २सं २नि २ध पि
हेरो जरत मनो ॥ रागिनी गुणकली सूर्यपति

२ग २म २ध २नि २ध
छेद मार ध्रवपद ताल ४ ॥ इनहि मिनन जग

२पि २म २पि २ध २पि २म २ग २म २ध २नि २सं
न काल माल गनियार रहो प्रेम प्रेर उनि वेद

मेटित कर पावै । इति अस्थाई । छिण पल घरीदि

वस राति पछ मास वर्ष आदि काल चक्र चलत स

दागति अलख पावै । इत्यन्तरा । जिसमें सभ जीव

जंत विविध भांति आवि भाव कुनहि अंत वेत स

कल नहि अंतन सावै । बाल निधी कृपा निधे न

वहि वरण धारण यारि उरजनि मर हरो सकल

नि॒ प नि॒ सु नि॒ प प

ग॰ग्र॰ विकल नाप हारैं ॥ इतिरागिनी गुणाकली सू

र्ये परिच्छेदः॥ ॥ ॥

8

रागिनी गुणकली दशावतारपरिच्छेदमाह ध्रु

वपद ताल ४ ॥ वेद उधारन नारायण हिन मत्स्य रू

प धार हरि वर वरण कथन कियो श्याम नेत्र

भारी । इति प्रस्थाई । कूर्म स्वरूप धारन हिन भू

मि उभरि प्रकट हो प्रह्लाद रक्षण हिन नर हरि

नख धारी । अंतरा । तीन कदम भूमिनी वा

२ध २नि ३सा २नि २ध २प २म २ग २रे ३सा २म

रा.ग मन वश वाङ्जान मोर ह्लसे परशुराम राम पत्र

२प २म २ध २नि ३सा २नि २ध २नि ३सा

ष मारी । दशकंधर वान दीधो क्लसागज धर

२नि २ध २प २म २ध २नि ३सा २नि २ध २प २ध २नि

हि पलटि उढ उढि मोर कीयो बाल कल कि

३सा २नि २ध २प

वारी ॥ ॥ इति रागिनी गुणकली दशावतार प

विच्छेदः ॥ ॥ ॥ कल्याने

गु. रा.
१

ॐ अथ गुणकली रागिनी प्रारंभः॥ येह रागिनी
गुणकली भरत मतसें मालकौंश राग की स्त्री है॥
अरु इसका समय प्रातःकाल है और ऋतु इस
का शिशिर है॥ श्लोक॥ पंच मांश ग्रह न्यासा
गुणकरी कथ्यते बुधैः। संपूर्णा मात्र विज्ञेया
प्रातःकाले प्रगीयते॥ इस गुणकली का पंच

म स्वर अंश न्यास ग्रह है और संपूर्ण है अरु कहीं।
षड्जांश भी कहा है॥ अथ प्रकीर्ण विधिः॥ मा
लवो देशाकारश्च मालीगौडा तथैवच। एषो स
मान संयोगे वै जायते गुणकली ध्रुवम्॥ अरु मा
लवा और देसकार मालीगौडा इन तीनो के मि
लाप में गुणकली होती है। अरु इसका करुणा

गु॰ रा॰
२

रस है। मध्याप्रोषितपतिकानायिका है ग्रुरु दत्तना
यक है। इसका विसुदेवता है ग्रुरु नारद ऋषि है।
पंक्तिछंद है ग्रुरु गंबीज है॥ ॐ प्रथमगुणकलीराग
नी मायनमः॥ ॐ अस्याश्री गुणकली रागिनी मे
त्रस्य नारद ऋषि पंक्तिछंदः गंबीजं विसुदेवता
स्वाभीष्ट सिद्धयर्थे प्रातःसमे जपे विनियोगः। २

अथ करन्यासः ॥ ॐ गुं ग्रं गुष्टकाभ्यां नमः ॥ एवे ।
हृदयादिन्यासे सर्वे कुर्यात् ॥ अथ पूजा विधा
य ॥ आवाहने । आसने । पाद्ये । अर्घ्ये । आचम ।
नीये । वस्त्रे । यज्ञोपवीते । गंधे । अक्षते । पुष्पे
धूपे । दीपे । नैवेद्ये । दक्षिणा । प्रदक्षिणे । पुन
राचमनीयम् ॥ इति गणकली रागिनी पूजने

गु॰ रा॰
३

ऊर्यात ॥ अथ गुणकली रागिनी मंत्रः ॥ ॐ गुं गुण

कल्यै नमः ॐ ॥ इति मंत्रः ॥ अथ ध्यानम । ॐ शो ।

का भिभूत नयना रुण दिव्य दृष्टि म्लाना नना

चरणि धूसर गात्र यष्टी । सर्पे वचारु कवरी ।

प्रिय दूर दर्शि संकीर्तिता गुणकरी करुणे कृ

शांगी ॥ इति ध्यानम ॥ अथ भाषाध्यानम बिर

३

ह विया नें दीन देह भई अति छीन मति हीन।
निपट मलीन अति यरिहै। विधुरे छबीले के
स लगत सदेस भेस राते राते नयन रस करु
ण में ठरी है। नीचे सष दूषे रुषे चित्त में न का
हू सख हरि वल्लभ सकल साधि बुद्धि हरी है।
जगत में जानि इह भांति है बषानि येह कोशि

गु. रा.
४

क कि रानि गुणकरि गुणकरी है ॥ इति भाषाख्या

नम् ॥ अथ जप संख्या । दश लक्षम दश सहस्र

म् ॥ अथ दैवता मंत्रः । ॐ नमो नारायणाय नमः ॐ

अथ देवताध्यानम् ॥ ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं

पद्मनाभं सुरेशम् विश्वाधारं गगन सदृशं मे

घवर्णं शुभांगं लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं यो ४

गिभिर्ध्यान गम्यं वंदे विस्रे भव भय हरं सर्व।
लोकैकनाथम् ॥ इति देवता ध्यानम् ॥ अथ म
ध्या प्रोषित पतिका नायका लक्षणम् ॥ दोहा
जोको पिया विदेश है विरह विकल तिया हो
ई ॥ प्रोषित पतिका नायिका तांही कहित स
भ कोई ॥ अथ दक्ष नायक लक्षणम् ॥ सवै

गु॰ रा॰
५

या ॥ सोक सबै ललना मिलि आई घरी जहाँ नं
दलाला अलबेला ॥ खिलन को निसि चौदनि ।
मोहि बनैन मतौ मनमाझ सुहेला ॥ आपनी ।
आपनी पौर बताइ के बैन कह्यो सगरीन न बे
ला ॥ त्यौं हसि कै ब्रजराज कह्यो अब आज ।
हमारे हिं पौर में खेलो ॥ अथ श्रृंगार रस लक्ष
करुणा

५

ाम ॥ सवैया ॥ प्रान पिया प्रिया आनंद सों बि
प्रीत रची रति सो कसवै है ॥ काम कलोल
न मै अभिराम रही धुनि त्यों कल किं किनि।
की है ॥ आन की उजि यारी परी सम बिंद स
मेत ज्यों जल में है ॥ वेद की चांदनी के परसे
मन चेद पषान पहार चले है ॥ इति शृंगार र

गु॰ रा ६

म:॥ अब गुणकरी रागिनी का येह ठाठ है॥ षड्
सम रहता है। ऋषभ उतरा। गंधार चडा। मध्य
म उतरा। पंचम सम रहता। धैवत उतरा। निषा
द चडा है॥ अथ गुणकरी सरगम:॥ गमपधं
पमपगमगमगपमपमगमरेसानिसारेसानि
साधंसानिरेनिसा॥ इति स्थाई॥ अथ अंतरा॥ ६

गमगपमपधनिसागमगमगरेसानिसाधपध।

निसानिसानिरेसारेसानिसाधनिसानिसानिरेसा

रेसानिधपमगमधनिधपमगरेसा ॥ अब गुण

करी की येह गत है । मेहणी गत फिरोज खानी

डढंगी ताल की बोली में ताल धीमा तिताला

अथ स्थाई । डाड डाठ डा डा डा डा । डाडडाड ।

गु॰ रा॰ १

२पे २म २पे २गं २म २गं २म २गं २पे २म २पे २म २गं
डा डाढ डा डा डिड डा डा डा डिड डा डा डा डाढ।

२म २रे २सं २नि २सं २रे २सं २नि २सं २ध
डा डाढ डा डा डाढा डाढडा डा डा डा डाढडा।

२सं २नि २रे २नि २सं २म २गं २म २गं २पे २म २पे २म
डा डा डा डा डाडा डिड डा डा डा डिड डा डा डा।

२गं २म २रे २सं २नि
डाड डा डाढ डा डा ॥ अथ अंतरा स्थाई बजाय

२गं २म २गं २प २पं
कर ताल की खाली में चला ॥ डा डा डा डाडा

२सं २नि २सं २नि २सं २नि २रे २सं २नि २सं २ध
डा डा डा डा डिड डिड डिड डाड डाढ डा डाडडा

डाढा डा ढा डा डा। डिढ डिढ डिढ डाड डाढ डा

डा। डिढ डिढ डा डाढ डा डा। डिढ डिढ डिड डाढा

डाढा डा ॥ अथास्या आलापः ॥ ननरी रना आन

न उनन उआनन अद ननरी नने नना उननना

आनरा ननन रनु नानुम ॥ इतिस्थाई । अथान्त

रा ॥ ननन अदनने आनन नुम नानुनै नना तन

गु० रा०
८

२रे २सं २नि २प २म २ग २म २प २नि २सं
नरी नना त्रान तान तनुम् नतु तरीन तानरी र

२रे २सं २नि २प २धि २म २ग २रे २सं
ना नना त्रान तान त्रान तान रान तानुम् ॥ ५॥

अथ ध्रुवपद गानमाह ॥ रागिनी गुणकली ता
ल ४ ॥

८

सिं॰रा
१

ॐ अथ सिंधुरा रागिनी आरंभः ।। येह रागिनी
सिंधुरा भरत मत के अनुसार श्रीराग की
स्त्री है । और इसका समय दिन के तृतीय॰
प्रहर में गायजाती है । और इसका वसंत
ऋतु है यह संपूर्ण सात स्वर की है यह ।
इसका अंश न्यास गृह मध्यम स्वर कहा है

१

अरु कहीं आर्य मत में पंचम भी प्रबल है। श्लो
क ॥ मध्यमांश गृहन्यासा संपूर्णा सिंधुरामता
वसंतर्तौ च गातव्या प्रहरेह्ना स्तृतीयके ॥ अ
थास्या रागिनी सिंधुरा प्रकीर्ण विधिः ॥ दोहा
बरबा अहीरी मिलत ही सिंधूरा तव गाय ॥
होली समें प्रसिद्ध है आनंद उपजे आय ॥ अरु

सिं॰रा॰ बरवा और अहीरी इनके मिलाप में सिंधुरा
२ रागिनी बनती है। अरु इस रागिनी का विश्व
देवता है। अरु विश्वही इसका ऋषि है। और
बृहती छंदहै। सिंबीजहै। और समस्त रस
कोविदा इसका नायिका है। अरु दत्तनाय
क है। और शृंगार रस इसका है॥ अथसिंधु
२

रा रागिनी सायनम ॥ ॐ अस्यश्री सिंधुरा रा
गिनी मंत्रस्य विस्मऋषि बृहतीछंदः विस्मः
देवता सिंबीजे मनोकामना सिद्धर्थे जपे ।
विनियोगः ॥ अथ सिंधुरा रागिनी करन्या
सः ॐ सिं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि
न्यासे सर्वे कुर्यात ॥ अथ सिंधुरा रागिनी

सिं॰रा॰
३

षोडशोपचारैः संपूज्य॥ आवाहने। आसने।
पाद्ये। अर्घ्ये। आचमनीये। वस्त्रे। यज्ञोपवी
ते। गंधे। अक्षते। पुष्पे। धूपे। दीपे। नैवेद्य
दक्षिणा। प्रदक्षिणे। एलालवंगे। कर्पूरे
पुनराचमनीयम्। इति सिंधुरा रागिनी॰
सर्वे पूजनं कुर्यात्॥ अथ सिंधुरा मंत्रः॥

३

ॐ सिं सिंधुरायै नमः ॐ। इति मंत्रः॥ अथ जपसं

ख्या दशलक्षं। एकादश सहस्रं च॥ अथ।

सिंधुरा रागिनी ध्यानम्॥ ॐ समुद्र नील द्यु

ति रंबुजाक्षी। प्रवाद यंती च कला स यंत्रे

रत्नै र्विचित्रा भरणा सकेशी। सा सिंधुरा कां

त समीप मेव्या॥ अथ सिंधुरा भाषा ध्याने

सिं॰रा॰ नील समन्हर कांति धरे अत सुंदर ये३ बजा
४ वति गौरी ॥ मोतिन नीलमणीन जरे सभ भू

षन धार रही अति भोरी ॥ कुंतल नील धरे सु

खि पै मानु राहुने इंदु ग्रसो अति जोरी ॥ राग

हिंदोल कि सिंधुरा रागिनी कांत समीप र

हे अति छोरी ॥ अथ समस्त रस को बिदाग्रो ४

छा नायिक लछणम् ॥ समस्त रसको विदा
कोविद कहित बषानि ॥ जो रस भावे प्रीत
मही नांही रसकी दानि ॥ अथ दक्ष नायक
लछणम् । कवित्त । हरि सैं हित मैं प्रेम भू
लि हूं न की जैसन होनो करि हिये हूं नै हो
त हित हानीयै ॥ लोक मै अलोक आनि ।

सि॰ना॰ नीके हू को लागति है सीता जू को हृतगीत

५ कैसो उर आनियै ॥ आंषिन जो देषियत सो

ई साची केशोदास कानन की सुनी मोची

कब हू न मानियै ॥ गोकल की ऊंटा प यों

ही उलटावति है आज लोतो वै मेई है का

ल्हि की न जानियै ॥ इति श्रृंगार रमलन ५

गम। सवैया। यौं विपरीत रमै वनिता कच

मेच मनो नभ वेवल की ॥ ईंड छिपै ज

वलै छवि सो तहां छवि कपोत महा स

षदीनै ॥ फूल चहूं दिसमै वरषै यमुना।

या कलोलन मै चित भीनै ॥ देवतरंगनि

संग डुलावति लाल रिझाय कियेहै ॥

सिं॰ रा॰ ६ अथीने ॥ अब सिंधुरा रागिनी की येह ठा
ठ है ॥ षड्ज सम रहता है । रिषभ चाडा
है । और गंधार उतरा है । अरु मध्यम भी
उतरा है । पंचम सम रहता है । और धैवत
भी चडा है । अरु निषाद उतरा है ॥ अब
सिंधुरा रागिनी की येह सरगम है ॥ ॥

६

नीधपमगरेनिसागरेसा ॥ इतिअस्थाई ॥ अ
थ अंतरा ॥ निसानिसारेगरेसासामगमगम
पमगरेमगरेनिसानि ॥ अब सिंधुरा रागि
नि सा गरे म
नी की येह गत कही है ॥ डा डिडडा डा डाडा
म पा म पा ध नि सा नि ध पा मे
डा डा डाडा डा डिड डाडा डा डा डाडा डिड
ग रे ग नि ध नि पा ध म पा ग म
डाडा डा डिड डा डा डा डिड डाडा डा डिड

सिं॰ए॰ ७

डाडाडा डाडा डाडिड डाडा डाडा डाडा डि

ड डाडा डा डाडा डा ॥ अथास्या सिंधुरा रागि

णी प्रलापः॥ ननरी इना आनन उनन उआ

नन अदतनरी नउ तना उनननाआ नए

ननन एन नानुम्॥ इति स्थाई। अथ जेतरा

ननन अदनने आनन नुम नानने नना। ७

३रे ३ग ३रे ३सा २नि २प २ध २नि

तन नरी नना आन तान तनुम् नतु तरीन

२प २ध २म २ग २रे २ध २म २ग २रे

तानरी रना नना आन तान आन तान रान

२सा

तनुम ॥ अथ सिंधुरा रागिनी ध्रुवपद गान

माहु ॥ रागिनी सिंधुरा ध्रुवपद ताल चार

अथ ब्रलस्ते ॥

अथ आसावरी रागिनी सूर्य परि छेदमा

२रे २म

ह ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ परम काल

२प २नि २ध २प २म २ग २रे २सा २नि २ध २सा

चक्र प्रबल ज्योति नृप विपति चले अ

२रे २म २प २नि २ध २प २म २ग २रे

ति सूक्ष्म वेग अघल लषत नाहि जग

२सा २म २ध २नि ३सा ३ग

दे । इति स्थाई । निज निज जग काज सि

३रे २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २म २प

द्ध करण हेत लेत देत भर कुटंब मस्त

रा॰ग्रा॰

रहै काल लेत फगरे। इत्येतरा। कमल॰
मध्य भ्रमर एक रजिनि माव बैठ रुको
तब विचार चित धारि भार लेवु फजरे।
थिंडे विचार मनहिं धरी करी मन नलि
नि उपर मावै यहो बाल जीवति माहिं
हरे मगरे॥ इत्याभोगः॥ आसावरी रागि

दे॰।

नी ध्रुवपद सूर्य ताल चार ।। अति उज्व
ल तेज पुंज कैंजन गलमाल धैरे कैरे
तिमर हरण भरण भक्त वरन जीको॰
इतिस्थाई ।। विभा करण ग्रहण बर॰
न पीत बसन चरु भंजन अंगद अति
शोभि कैरै वज्र खचित नीको ।। इत्य।

रा॰ श्या॰ नरा ॥ हाटक को मुकुट भ्रुकुटि केसर
को तिलक दीन कर अंगुलि अंगुलीय
भूषण हव रीको । कर केकन रत्न जडत
अंग अंग उति अनेत सेंत चरण सेवें जि
ह आवि भाल टीको ॥ इत्याभोगः ॥ ॥
इति श्यामावरी रागिनी सर्व परिछेदः ॥

अथ आसावरी रागिनी दशावतार परि

२सा २रे २म २प

छेद माह ध्रुवपद ताल चार ॥ शफरि रू

२प २नि २प २प २म २ग २रे २म २प २नि

प धरण हरण सकल कलाव भक्त जन

२प २प २म २ग २रे २सा २म २ग २रे २सा

न कच्छप सर रच्छ करण सूकर स्व था

२म २प २नि २सा २ग

री ॥ इति स्थाई ॥ श्री नरसिंह रवि भ फार

२रे २सा २नि २प २प २म २ग २रे २सा २रे

धार भक्त धुनि उबारि हेम किशिपव

ता॰ ग्रा॰ त फार मार दीयो मारी। इतिछेतरा। श्री
वामन तीन क्रमण सकल छेड मान।
कीयो परशुराम मार हलो राम लेक
मारी। नीलांबर हलहि यसो बुद्धमोर
ग्रसर कलो कल्कि कलष नाशन हि
त करम खड्ग चारी। इति आसावरी दशा

अथ आसावरी रागिनी शिव परिछेदमाह

२म २ग २रे २स २नि

ध्रुवपद शिव ताल चार ।। गिरि शायि गि

२ध २प २ध २नि २स २रे २म २प २नि २ध

रितनया नाथ हाथ वर त्रिशूल शूल स

२प २म २ग २म २प २म २ग २रे २स

कल लोचन गण योगि भेष धारी ।। इ

२म २ध २नि २स २ग २रे २स

तिश्याई । जटा जूट शेखर चंद गंग धा

२नि २ध २प २म २ग २रे २म २प २नि २ध २प

र विशद मार भाल तिलक भस्मधार मार

२म २ग २रे २स २म २ग २रे २स २नि २प

रा॰आ॰ मार उगालो। इत्येतरा। अर्कि कुसम हेड मा

२धि २प २नि २स २रे २म २धि २नि २प

ल व्याल विविध कंठ धारि धारि गरल।

२धि २म २ग २रे २ग २रे २स २म २प २नि २स

नीलकंठ उरसतल वालो। आत्मरूप प

२ग २रे २स २नि २प २धि २म २ग २रे

र ब्रह्म सकल भक्त मुड बुड बालनियो।

२म २धि २नि २प २धि २म २ग २रे २स

विगत भेद हंस पद उवालो। इत्याभोगः

रागिनी आसावरी ध्रुवपद शिव ताला॥४॥

२म २प २ध २नि २ध २प २म २ग २म २प
गिरिजा पति प्रमथन पति जगत भक्त

२नि २ध २प २म २ग २रे २स २नि २ध
पालक शिव महादेव देवनपति वर

२म २ग २रे २स २म २प
रहस्य धारी। इति स्थाई। एक समे।

२ध २नि २स २रे २ग २रे २स २नि २प २प
गिरिजा सह खेरत परम मोद रच्यो।

२म २ग २रे २स २नि २ध २स २ग २रे २स
सहस्र बरष बीत गये नहि बिरामधा

२म २प २ध २नि २ध
री। इत्यन्तरा। धारी पुन देवन जब।

रा·मा·

भीत भये अतहि प्रबल क्षोभ तनय ख

गि हैं करो विघ्न भारी ।३। सकल देव

सम्मति यर वह्नि विहग रूप धार क्षोभ

कणि देश कहो आये देव सारी ।४। स्मर

त त्याग क्षोभ भवन बहिर गये कहें ।

देव महादेव स्मरत तजो लेउ जग उमा

२सं २म २प २नि ३सं २रे २ग २रे २सं २नि

री।प।हनत शोभ बीज तज्यो भज्यो दे

२प २ध २म २ग २रे २म २ध २प

व पुंज सकल षण्मुख इक बालनि।

२ध २म २ग २रे २सं

षी भयो भय निवारी ॥ ८ ॥ इत्याभोगः

इति श्रासावरी रागिनी शिव परि छे

दः ॥ ❈ ॥ ❈

रा·ग्रा·

6

अथ आसावरी रागिनी गणेश परिछे

२नि २प २ध

दमाह ध्रुवपद ताल चार ॥ सकलक्रि

२म २ग २रे २सा २ग २रे २सा २नि २प

या करण समै जोकों पग आदि नमित

२सा २रे २म २ध २प २ध २म २ग २रे २सा

सैं स्मरण करत करम श्रीगणेश देवा·

२म २प २नि २सा २प २नि

इतिस्थाई ॥ आवाहन आसन पुनपा

२सा २ग २रे २सा २नि २प २ध २म २ग २म २ध २नि २प

द्य अर्घ्य अचवन स्नान वस्त्र रक्त गंध अक्ष

२धै २म २ग २रे २सै २नि २प
रा·आ· मम धूप दीप सेवा। इत्येतरा। एक हृति

१

२धै २म २ग २रे २सै २ग २रे २सै २नि २प २सै
ध्यान धार गणनायिक पाद पद्म सेवत

२रे २म २धै २प २धै २म २ग २रे २सै २म
जङ्ग प्रीति युक्त भक्ति भाग लेवा। रजि

२प २नि २सै २प २नि २सै २ग २रे २सै २नि
नि वदन होत समै एक रदन कथास

२प २धै २म २ग २रे २ग २रे
ने थुने डःख घने घने परम सुख समे

२सै
वा। इत्याभोगः॥ रागिनी आसावरी यु

२म २प २ध २नि
वपद गणेश ताल चार ।। सिंधुर मुख सं

२सं २नि २ध २प २म २ग २रे २म २प
दर सब सुभाव नाम जाम जगत प

२ध २प २म २ग २रे २ग २रे २सं
करेत ऋद्धि केत कपिल लेड दंत: ।।

२म २ध २नि २सं २ध २नि २सं
इत्यस्थाई । गज कर्णक लंबोदर विक

२रे २सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं
ट विघ्न नाश करन हर नाशक धम्म ।

२रे २म २प २म २ग २रे २सं २म
केत गण ध्यान सुनत: । इत्यंतरा । माल

रा० आ० वेद गज आनन द्वादश विध नाम उचर

तिह विद्या सफल होत करत परम रव:

संकट नित हटत जात विघ्न सोइ क

रत घात बाल हिये अति सहात परम

इष्ट पत: ॥ इति आभोग: ॥ इति आसा

वरी रागिनी गणेश परिच्छेद: ॥ ❖ ॥

अथ आसावरी रागिनी विलम्बपरिच्छेदमा

२सं २रे २म

ह ध्रुवपद विलं: ताल चार ॥ नूतन यौवन

२प २नि २ध २प २म २ग २रे २ग २रे २सं

मदन कोटि शांति रूप परम सुहावदेशे

२नि २ध २सं २रे २म २ग २रे २सं

ष शायन मैन तात पद्मापति विलं: ॥

२म २ध २नि २सं २ग २रे २सं

इति स्थाई ॥ मंद मंद हसन दसन कुंद

२नि २ध २प २म २ग २रे २म २प २नि २ध २प

विशद मंदर इति हरत मान मन सजा

रा॰ श्रा॰

9

त कोटिक रोविरुः। इत्येतरा। हाटक।

को मकुट खचित वज्र विविध तिमिरह

रै करै प्रति प्रकाश पाश भक्तनयन जि

स्लः। कौमोदकि डुष्टदलनि हस्तगदा।

चक्र चमक भक्त प्रविन दलन चक्रमय

रै मङ्गालयिरुः। इत्याभोगः॥ रागिनी।

२रे
आसावरी ध्रुवपद विलंबः ताल चार । पीतां
२म २ध २नि २सं २नि । २ध २प २म २ग २रे
बर चरण हरण सकल विकल करण ।
२सं । २नि २ध २सं २रे २म २प । २म २ग
डःख सब उचारि नाम जाम हरि विहर
२रे २सं । २म २प २ध २नि
त जगमें । इति स्थाई । जऊ जऊ ध्यानध
२सं २ग २रे । २सं २नि २ध २प २म । २ग
रत सर्वत नित प्रातकाल पुहप माल ।
२रे २म २प । २म २ग २रे २सं
सराभि धार पाप हरत सगमें । इत्यंतरा ।

रा॰ आ॰ अनल अनिल विमल कमल मंडल रवि

मंडल मध गौ ब्राह्मण स्मृति मोक्ष थैवे।

ध्यान नगमें। प्रणाविम प्र रहो जगत

सकल रमा नाथ विषयि साथ छोडि भ

जो बाल जगत मधमें ।। इत्याभोगः ।। इ

ति आसावरी रागिनी बिल परिच्छेदः ।।

अथ आसावरी रागिनी शक्तिपरिछेद

२रे

माह ध्रुवपद शक्ति ताल चार ॥ की ॥

२म २प २ध २प २म २ग २रे २सा २रे

तिमता अति प्रवीण वेद तनय गोद

२सा २ध २नि २सा २रे २म २प २ध २प २म २ग

लीन विपन गई वेदमिले बालश्रेक

२रे २सा २म २ध २नि २सा २नि

याहा ॥ इतिस्थाई ॥ श्रीराया ईश्मि

२सा २ग २रे २सा २नि २ध २प २म

त यन मयन विपन छाड रहे कहे।

२ग २रे २स २रे २म २प २ध २प २ग २रे २स

गा॰ ग्रा॰ नैद डै शिशुक पेषि तम प्रवाहो ॥

२रे २म २प २ध २प २म २ग

इत्येतरा । लिये जाऊ नैहि मदन ग्रा

२रे २स २रे २स २ध २नि २स २रे

हाथर गोदलियो बाल भाल छोडिदि

२म २प २ध २प २म २ग २रे २स २म २ध २नि

यो नव युवतन कालो । मुदित वद॰

२स २नि २स २ग २रे २स २नि २ध २नि २ध

न युगल वलो कुंज कुंज केलि क

२प २म २ग २रे २स २रे २म २प २ध २प

रत हरत सकल कलुष बाल भक्तजन

उबा सो ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी आसा-
वरी ताल चार ध्रुवपद ॥ श्रीराधापूर्ण
वेद आनन जिह पेषि कमल मन चको
र षोरकैरै मदन मोह धारी ॥ इत्यास्था
ई । वक्र वक्र स्निग्ध कमल वर्ण अलि
क पाश फंसो श्याम विहग नयनवि

२ध २प २म २ग २रे २स २ध

रा. श्रा. शिव श्रयर लगे भारी । इत्यंतरा । बिंब

२प २म २ग २रे २म २प २नि २ध २प २म २ग

वर्णे श्रयर मयुर पान लल चपलचरहो

२रे २स २ध २स २रे २म २ग २रे

तिल प्रसन नासाग्रेड मोह विवस का

२स २म २ध २नि २स २ग २रे २स २नि

री । मोतन की लरी परी थरी हषि रही

२ध २म २प २म २ग २रे २म २प २म २ग २रे

नहो पयधर युग पेषि हरी मोहन मति

२स

मारी । इत्याभोगः । इति शाकिणपरिछेदः

अथ आसावरी रागिनी ब्रह्मपरिच्छेद:

२सा २रे
माह ध्रुवपद ब्रह्म ताल चार ॥ सकल

२म २धै २नि २प २धै २म २ग २रे २सा
जगत व्यापित सोइ जिस प्रकाश व्या

२ग २रे २सा २नि २प २सां २रे २म २ग
प रहो स्वरूप निर्विकार निराकार

२रे २सा २म २प २नि २सा २ग २रे
सारी ॥ इतिस्थाई ॥ जैसे घन सघनसु

२सा २नि २प २धै २म २ग २रे २म २म २धै २नि
क नभ स्वरूप अपार भात तद्वत नि

13

२ध २पं २म २ग २रे २स

ग॰ग्रा॰ ज ईस्मित विश्व भिन्न रूप धारी। इत्येत

२सं २रे २म २पं २नि २ध २पं २म

ग। केही देव असुर केही नाग पुरुष

२ग २रे २सं २ग २रे २स १नि १ध

नारि चारि धारि भूमि शेष होई सोई॰

२स २ग २रे २स २म २पं २ध २नि २स २ग

उदक भारी। पादप कहिं जीव जंतसा

२रे २स २नि २ध २पं २म २ग २रे २म

धुसेत नाम रूप भिन्न भिन्न वास्तव मे

२ग २रे २स

तेहि एक चारी। इत्याभोगः। रागिनी

आसावरी ध्रुवपद ब्रल ताल चार। ४।

२नि २ध २प २म २ग २रे २सां

तेंहिं परम पुरुष तेंहिं जलथल नभ

२रे २म २प २नि २ध २प २म २ग २रे

व्याप रह्यो तेंहि वह्नि पवन सपच प्राण

२ग २रे २सां २म २प २नि

रूप धारयो। इतिस्थाई। देव पुंज इंद्र

२सां २ग २रे २सां २नि २ध २प

न गण विषय रमन धाइ धाइ तव।

२म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सां

नियुक्त फिरें निमेगाय अनुग चारयो।

गा०श्रा०

14

२नि २ध २प २म २ग २रे २स

इत्येतरा। विहृति मननि युक्त वत्स तू

२रे २म २प २नि २ध २प २म २ग

प यार रहे कहे वाका रमत रमत तव।

२म २ग २रे २स २म २प २ध २नि २स २ग

नियुक्त साको। प्रात सुने ज्ञाण सुर।

२रे २स २नि २ध २प २म २ग २रे २म

भि गेय यौरै गुद उपस्थ निज निज सभ

२म २ध २म २ग २रे २स

कर्म कैरै मैत्र जग प्रचाको। इत्याभोग:

इति श्यामावरी रागिनी ख्यालपरिच्छेद:।

पू॰रा॰ ॐ अथ पूर्वी रागिनी प्रारंभः॥ येह रागिनी
१
भरतमतानुसार श्रीरागकी स्त्री कही है।
अरु हनुमान्मतके अनुसार दीपककी॰
स्त्री भी कथन करी है। अरु इसका समय
दिनके तीसरेपहर पीछे उपरंत गाई जाती
है और येह संपूर्ण है अरु संकीर्ण भी है
।

अरु इसका अंशन्या मध्यम स्वर है अरु ये
हू मध्यम हनुमान मतके अनुसार कहा है

श्लोक। मध्यमांशग्रहन्यासे पूर्णा हनु-
मन्मते मृगाक्षी पूरबी लोके श्री रागस्य-
वरांगणा॥ अथ पूरबी रागिनी की
रीति विधि:॥ मालवश्री है नाश्री शव परि

पृ० रा०
२

यामिछितायदि। पृथ्वी मेंजायतेगोनेत्वती
य प्रहरात्परम॥ जब मालवश्री अरु धना
सरी ओर पुरिया इकठे होन तब पृथ्वी हो
तीहै। अरु इसका विसदेवता है। ओर इ
सका विसही रूषिहै अरु इहतीछेदहै
ओर हेवीजहै॥ अथ पृथ्वी रागिनी साथ

२

नमः ॥ ॐ अस्यश्री पृथ्वीरागिनी मंत्रस्य विस्व

ऋषिः बृहतीछंदः विस्वदेवता धमार्थका

ममोक्तार्थे पृथ्वी रागिनी जपे विनियोगः

अथ पृथ्वी रागिनी करन्यासः ॥ ॐ हूं हूं ह्रौं

नमः ॐ ॥ ॐ हूं हूं अंगुष्ठाभ्यांनमः ॥ एवं हृद

यादि न्यासं सर्वे कुर्यात ॥ अथ षोडशोपचा

पृ.ग.
२

रे सेपूज्य ॥ आवाहनं । आसनं । पाद्यं । अर्घ्यं । आ
चमनीयं । वस्त्रं । यज्ञोपवीतं । गंधं । अक्षतं । पु
ष्पं । धूपं दीपं । कर्पूरं नैवेद्यं । तांबूलं । दक्षिणा
प्रदक्षिणां । पुनराचमनीयम् । साष्टांगप्रणामं
अथ पृथ्वी रागिनी मंत्रः ॥ ॐ पृं पृथ्व्यै नमः ॐ ॥
अथ जप संख्या अष्टदश लक्षं । एकादशाम
र

हसेव ॥ अथ पूर्वी रागिनी ध्यानम् ॥ ॐ निद्रा

लसा कांत समीप संस्था । सुवर्ण रूपा सुभ

गा मृगाक्षी । अनंग केली मदने प्रविष्टा ।

पूर्वी स्मृता स्मरित भोगतंद्रा ॥ अथ भाषाध्या

नम् ॥ सवैया ॥ नींदके आलस रंग रती प

ति के ढिंग हेमलता उलझी है ॥ देषपति

पू॰ गा॰ तिह आनंद में जब प्रेमभरी मानु कामरती
५ है ॥ भूषण भूषित अंग सभी चमके बिज
ली जिम मेघ गती है ॥ राग सिरीकि येह
वाम कही एरभिरागिनी रंग भरी है ॥ अ
थ देवता मंत्रः ॥ ॐ नमो नारायणाय ॐ ॥
अथ देवता ध्यानम । ॐ सैनैः श्रीवे गदाब्ज ५

वक्त्र सहितैः मध्ये भुजै रंकितै । वामैः पुस्त

कदर्प नागनलिनी कुंभान्न पाणौ दधत् ।

राजंते गरुडाधिरूढ॰मधिकं भक्त्या नुकंपा

स्पदे । लक्ष्म्यार्द्धां कितमद्य नौमि वरदे श्री ।

वासुदेवं विभुम् ॥ अथ समस्त रसको विद

नायिका लक्षणाम । दोहा ॥ समस्त रसको

ए॰रा॰ विदा कोविद कहिन वषानि ॥ जो रस भावे
५ प्रीतमही ताही रसकी दानि ॥ कवित्त। देषी

है गोपाल एक गोपिका अनूप रूप सोनेते

सलोनी वास सोंथेतें सुहाई है ॥ शोभा को

सुभाव अवतार लीनो ज्ञान स्याम कियों ये

ह दामिनी यो कामिनी ह्वै आईहै ॥ देवीको ५

उ दानवीन मानवीन होई ऐसी मानवीनसा
उे भाउे भावती पढाई है ॥ केशोदास सब सु
घ साधनकी सिद्धि येह मेरे जानै मै नही सो
मैं नकाकी जाई है ॥ अथ अनुकूलनायकल
क्षणम । दोहा । प्रीतिकरे निजनारि सों पर
नारिन प्रतिकूल ॥ केशो मन वच कर्मक

सु.ग. ति मो कहिये अनुकूल ॥ सवैया ॥ केहूं न री
६ बिसरै निसि वासर मेंद हसी मुष चंद उज्या
री ॥ त्यौंही दिपै अति नेह सौं देह की दीप
कली मम दीपति न्यारी ॥ तेरीये जोति जगै
हिये भीतर आवत औरन रीति अंध्यारी ॥
नैनन हूं अरु बैनन हूं तन हू मन हूं को । ६

तहीं अतिप्यारी ॥ अथ पूरवी रागिनी श्रृंगा
र रस लच्छणम । सवैया ॥ आन तिहारी न
आन कहो तन में कछु आनन आनहीं कै
सो ॥ केसव कान्ह सजान सरूप न जा-
य कह्यो मन जानत जैसो ॥ लोचन सोभा
हीं पीवत जात समात सिहात अघात न

सू॰ग॰ नैसो ॥ जेंान रहात विहात तमै बलि जा
७

न सबां कहो नेक बैसो ॥ अब पृथ्वी गावि

नी की येह ठाठहै ॥ षड्ज सम रहता है।

और रिषभ उतताहै। अरु गंधार चडा है।

अरु मध्यम चडा और मध्यम उतरा भी

इसमें लगता है। अरु पंचम सम रहताहै
७

अरु धैवत उतरा है। और निषाद चढा है॥

अब पूरवी रागिनी की येह सरगम है॥ ता॰ ३॥ पम

गरेसामगरेसानीरेगममममधमगममगरे

सा॥ इति स्थाई। अथ अंतरा॥ मधसानीसा

रेसागमगरेसानीधपमगरेसा॥ अब पूर

बी रागिनी मे पूरण गत मसीतषानी ताल

सू॰ रा॰ ८

8

धीमा तिताला उठैगी पैहली में। प्रथमस्थाई

२सै २रे २नि २है २रे २ग २ग २म २गं

डिड डा डिड डा डा डाडाडा। डिड ड डिड

२म २ग २रे २गं २म २पि २म २पि २ध २म

डाडा डाडाडा। डिड डा डिड डाडा डा डाडा

२प २गं २म २ग २रे

डिड डाडिड डाडा डाडा डा॥ इतिस्थाई। अ

थ अंतरा स्थाई बजाकर चला तालकी पै॰

२सै २नि २रे २प २नि २सै

हली में। डिड डा डिड डाडा डाडाडा।

८

डिड डा डिड डाडा डा डा डा। डिड डा डिड

डा डा डा डा डा। डिड डा डिड डा डा डा डा

डा॥ इति श्रेतरा फिर स्थाई मे जा मिला॥

अथास्या भूरवी रागिनी की अलापः॥नन

री दना आनन उनन उआनन अद ननरी

नने तना उननना आनरा ननन अदनने

पू॰ रा॰
५

२सं २सं २म
रनु नानुम ॥ इति अस्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ ननन

२प २नि २सं २रे २सं २नि २रे २ग २रे
अदनते आनन नुम नानुनै नना नन नरी न

२सं २नि २ध २पं २म २ग २रे २पं
ना आन नान ननुम नन नरीन नानुरी रनु

२म २ग २रे २म २ग २रे २सं
नना आन नान आन नान रान ननुम । ८ ॥

अथ पूरवी रागिनी ध्रुवपद गानमाह ॥ रा
गिनी पूरवी ब्रह्मलग्नेः ध्रुवपद ताल । ४ । ५

अथ पूरवी रागिनी ब्रलपरिछेदमाह।

२नि २सां २रे २ग

ध्रुवपद ब्रल ताल चार॥ अगम निगम

२म २प २म २प २नि २प २प २म २ग

नाम भेव कथन मकैं अलाव देव परे

२म २ग २रे २सां २नि २रे २ग २म २ग २रे २सां

ब्रल बीज जगत हब्ब जग उमाहो॥

२म २ग २म २प २नि २सां २नि २प

इतिस्थाई॥ माया का ग्राल बाल तीन

२नि २सां २नि २प २नि २प २म २ग २म २प २नि २सां

गुनण उदक सार हुनाङ्कर अहेकार।

२नि २प २नि २म २ग २म २ग २रे २सं २नि २सं २रे २ग
ग॰ष॰ तीन ग्राम बखाने ॥ धैवत ॥ सात्विक इ
२म २पं २म २प २नि २सं २नि २प २पं २म
क ह्वब भजा देवन गण जास ग्रामवा
२ग २म २ग २रे २सं २नि २रे २म २पं
जस पुन डत्ती तास इंद्र नगण माहो॰
२पं २म २ग २म २प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि
स्केथ तीज तमोगुणी विषयन रस पा
२प २पं २म २ग २म २प २नि २सं २नि २प
त पीहल बालनिधी पुन्य पाप फल।
२नि २म २ग २म २ग २रे २सं
हि सफल याहो ॥ इतिग्रामभोगः ॥

रागिनी छरबी ध्रुवपद ब्रह्म ताल चार ॥

२नि २रे २ग २म २पे २म २प २नि २सं २नि २प

आदि हत्त ऊर्ध मल प्रावो जिह ग्रंथो

२पे २ग २म २ग २रे २सं २नि २रे २ग

भाग ग्र्याय पद ऋषिन कहो वेदव्य

२म २ग २रे २सं २पे २म २ग २म

दम धारी ॥ इति श्रेतरा ॥ इह पाद पस्म

२प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि २प २नि २पे २पे

र धारि जगत मोहज जोऊ दिहे मोइ

२ग २म २प २नि २सं २नि २प २ग २म २ग २रे २सं

परम ज्ञान वान वेद ग्रंथ मारी ॥ इति

रा॰ पृ॰

घेतरा ॥ याहि वृक्ष नीड मोहन थुगम ।

पति वाम करै एक रूप परम मावा

दोनो हित कारी ॥ एक वृक्ष रमहिं ।

यार लंपट मद मत्त वसे इती उमें त्या

ग प्रभा देत बाल भारी ॥ इत्याभोगः ॥

इति षष्ठी रागिनी ब्रह्म परिच्छेदः ॥ः

अथ पूर्वी रागिनी शक्ति परिछेद माह॥

ध्रुवपद शक्ति ताल चार॥ श्री शक्ती पा

द पद्म सेत भ्रमर वाम सम्म अपर ब्रम्म

ब्रोउ सदा सेवे साव दाई॥इतिस्थाई।

जाके पग सेवन ते मेधा ऋषि मोषिम

इ दिप ज्ञान हषि रहि वेषप मन समा

रा० पू० ई ।। इति ग्रंतरा ।। राजा इक सुरथ जाम ।
राज्य हरयो शत्रु मिल्यित हो हारि विप
न गयो विपति पाई ।। मेधा ऋषि सेवा ।
मतें वर्ष तीन ध्यान कीयो दीयो राज्य
सावर्णी मनु कियो डाव मिटाई ।। इत्या
भोगः ।। पूर्वी रागिनी ध्रुवपद शाक्ति ता

ल चार ॥ डारे मेंजिनि अरिन गगन हू

र करण पील जाम श्री चंडी चंड कोप

धारिणि सुर भारी ॥ इति स्थाई ॥ महिष

असुर अतिहिं अबल अमर नवल मित्र

छित्र करहिं भयो स्वर्ग राय भई भीति ।

भारी ॥ इति अंतरा ॥ हारि देव सकल शो

रा॰ पू॰ म विस्व धारण जाय परे क्रोध तेज पुंजनि
कस भई नारी ॥ इति प्रचंड शास्त्र धार ।
मारदियो महिष सराण जै जै जै देव बा
णि भई जग उजारी ॥ इत्याभोगः ॥४॥
इति पूर्वी रागिनी शाक्ति परिछेदः ॥

अथ पूर्वी रागिनी गणेश परिछेदमाह॰

१नि २सं २रे

ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ कपिलवद

२ग २प २म २म २ध २नि २नि २ध २प

न एक रदन विघ्न अदन करण शील।

२ग २म २म २ग २रे २सं १नि २रे २ग २म

अपर भील अरिन गणन दलन दक्ष॰

२ग २रे २सं २म २ग २म २ध २नि २सं

भारी ॥ इतिस्थाई ॥ धारी कर परशु ति

२नि २ध २नि २सं २नि २ध २प २म २ग

रम धार भार असुर हरण करन विजय

रा॰ पृ॰ भक्त जनन मनन शील मारी॥ इत्येतना।

5 चारी कर वाम एक अंकुश शुभ शस्त्र रा

ज काज करत आकर्षण वशी करण।

हारी॥ कारी नित परम मोदक करण

त्र भये हरे पाप बाल निधे पाणि रदन

धारी॥ इतिआभोगः॥ एवी रागिनी ५

२नि २सं २रे २ग

ध्रुपद गणेश ताल चार ॥ चरण श्रवण।

२म २प २म २प २नि २सं २नि २प २प २म २ग

करी वदन यंगे नित प्रमित देत ऋद्धि

२म २ग २रे २सं २नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

सिद्धि भरण चतुर चारिभुजा धारी ॥

२म २ग २म २प २नि २सं २नि

इति स्थाई ॥ अति उदार वरहिं आपदे

२प २नि २सं २नि २प २प २म २म २ग २म २प

न लेत डाव निवार कलियुग में परम।

२नि २म २प २ग २म २ग २रे २सं

देव करुणा निधि भारी ॥ इति अन्तरा॥

रा॰पृ॰

6

१नि २रे २ग २म २ध १म २प १नि १नि २प

निज भक्तन अभय दान देत विरथ लाज

१ध २म १ग २म २ग २रे २सं १नि २रे २ग २म

धार भार हरन भूमि पलो ऽष्ट जनन भा

२ध २म १ग २म २प १नि २सं २नि २प १नि २सं १नि

री ॥ ऐसे उपकारि उमा नंदन के पादके

२प १ध २म २ग २म २प १नि २प २म २ग २म २ग २रे २सं

ज मेरे उर निवास करैं सदा पीर हारी॥

इत्याभोगः॥ ❖ ॥ इति एवी रागिनी गणे

श परिच्छेदः॥ ❖ ॥:

अथ पूर्वी रागिनी विस्न परिछेद माह यु

वपद विस्नःताल चार ॥ परम पुरुष दू

प धारण पाप भंक जनन मधुकैटभ ह

नन विस्न नीरनिध निवासी ॥ इतिस्था

ई ॥ जगत रचन हेत लेत षोडश कला

धार व्याक महत आदि नत्व नौमें आदि

रा·पू·

२ग २म २ग २रे २सं २नि २रे २ग २म
चित्तकामी ॥ इतिअंतरा ॥ जोके पद प

२ध २म २प २नि २नि २प २ध २म
म सम वसत रमा कर से कसत हसित

२ग २म २ग २रे २सं २नि २रे २ग २म २ध २म
वदन जास करत पूर्ण चंद हासी ॥ ना

२ध २म २प २नि २सं २नि २प २नि २सं २नि २प २ध
भि सञ्ज जात रच्यो विविध विश्व बालनि

२म २ग २म २ग २रे २सं २नि २रे २ग २म २ग २रे
धी चरन शरण धरत मदा हरैं उरउदा

२सं
सी ॥ इत्याभोगः ॥ पूर्वी रागिनी ध्रुवप

८ बिलः ताल चार ॥ नील मंदिर बर्णीक
नक कुंडल युत मुकट धरें गरें माल ।
उर विशाल पीत बसन जोके ॥ इति स्था
ई ॥ सात्विक मुनि ध्यान धरत जाम वि
दा वेद सक्त भक्त भजन गाय गाय उर
समाय तोके ॥ इति अंतरा ॥ गीय व्याय

रा.पू.

8

गणिका गज शवरि षिवट् अजामिल आ
दि जगत जीव तरे नाम लेउ बाके ।। दीन
बंधु भक्तवछल भृगुपद हिये धरण स
दा बालनाम तिनके जपत पाप रहत को
के ।। इत्याभोगः ।। इति पूर्वी रागिनी विस
परिछेदः ।। ❖ ।।

अथ पूर्बी रागिनी शिव परिछेदमाह अ

२नि २सै २रे २ग २म

वघट शिवजी ताल चार ॥ धूर्जटि विभ

२पै २म २प २नि २प २पै २म २ग

परम प्रबल कर त्रिशूल डमरू धरै ह

२म २ग २रे २सै २नि २रे २ग २म २ग २रे २सै

रै पाप भक्त जनन शिवर गंग धारी ॥

२म २ग २म २प २नि २सै २नि २प

इति स्थाई ॥ कारी फणि शेक देत सेत

२नि २सै २नि २प २पै २म २ग २म २ग २रे २सै २नि

भस्म देह लिप्त जप्त राम नाम सदा यो

२रे २ग २म २ग २रे २सा २नि २रे २ग २म

रा.पु. ग अखि भारी ।। इतिश्रेतरा ।। रमानाथ प

२प २म २प २नि २नि २प २प २म २ग

क समै दर्शन हित शंकर छिग गरुडा।

२म २ग २रे २सा २नि २रे २ग २म २प २प २म

मन जात भयेकीये दर्श भारी ।। पेष गरु

२ग २म २प २नि २सा २नि २प २सा २नि २प २प २प २म

ड कारी फणि लेलिहान फूक देत नारे

२ग २म २प २नि २म २ग २ग २म २ग २रे २सा

कहो स्यान प्रबल नव बल नहि कारी।

२नि २सा २रे २ग २म २प २म २प २नि २सा २नि २प

शंकर को कंठ छोड जबहि चले एक।

फ़ेक मूक शोक सभहि मिटे घटे मान का

री ॥ उमानाथ ब्रत विरूप भीति थार क

कुन कहौं सहौं सकल बालनिधी शोभ॰

मान धारी ॥ इत्याभोगः ॥ पूर्वी रागिनी

ध्रुवपद शिवजी ताल चार ॥ गंगाधर वे

द किरण शिखर जटा जूट धरै भ्राज ग

रा॰पृ॰

10

व कटेड यारि शंभु महा देवा॥ इतिस्थाई।
भस्म अंग अंग जरन धरन मुंड माल गा
ये मैं सर्प सगरि देह फटिक शुद्ध भेवा।
इतिअंतरा॥ नारदादि तुंबरु ब्यास मन
कादिक सेव रहैं कहें ज्ञान मोक्ष पटल
नाशक सब धेवा॥ बालनिधी चरण।

२नि २सं २नि २ध २नि २रे २नि २प २पं २म २ग २म

कमल सरणपरो हरो पाप दयानिधी भ

२ग २रे २सं २नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

क निज परम मोद देवा॥ इति श्रीभोगा:॥

इति पूर्वी रागिनी शिव परि छेद:॥ ❖॥

ग॰ए

नं०३६

मालकौस राग

हेशान्यासथैवता । संपूर्णा हनुमान्प्रोक्ता

संध्याकाले प्रगीयते ॥ अथासा त्रिवेणी

रागिनी प्रकीर्ण विधिर्भरत मतेन ॥ श्री

गौरी मारवा युक्ता । हेशान्यासग्रहार्षभा

त्रिवेणीति समाख्याता । संध्याकाले हि

गीयते ॥ जब श्रीराग ग्ररु गौरी ग्रौर मा

त्रि·रा· रवा येह तीनो मिलायके त्रिवेणी होतीहै
२ अरु जिसकों कलावन्त लोग त्रिवन क
हितेहै इसका अंश न्यासग्रहस्वर रिषभ।
कहाहै हनुमान्मतसें। अरु इसकीनायि
का प्रोषितपतिका है। और अनुकूलना
यकाहै अरु इसका करुणा रसहै। और २

इसका अग्निदेवताहै अरु ब्रह्मा ऋषिहै ऊँ
र गायत्रीछंदहै। त्रिंबीजहै॥ अथत्रिवेणीरा
गिनी मायनमः॥ ऊँ अस्यश्री त्रिवेणीरागि
नी मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछंदः अग्नि
र्देवता त्रिंबीजं मनोकामना सिद्ध्यर्थे त्रिवे
णी रागिनी जपेविनियोगः॥ अथ त्रिवेणी

त्रि॰ रा॰
३

रागिनी षोडशोपचारैर्संपूज्य ॥ आवाहने । आसने । पाद्ये । अर्घ्ये । आचमनीये । वस्त्रे । यज्ञोपवीते । गंधे । अक्षते । पुष्पे । धूपे । दीपे । कर्पूरे तांबूले । नैवेद्ये । दक्षिणा । प्रदक्षिणे । पुनराचमनीये । साष्टांगप्रणामम अथ त्रिवेणीरागिनीमंत्रः । ॐ त्रिं त्रिवेणीपेन

३

मः ॐ ॥ इति त्रिवेणी मंत्रः ॥ अथ त्रिवेणी रा

गिनी ध्यानम ॥ ॐ रंभा यास्तनयोर्मूले नि

षण्णा पीतवर्णिका । मंदार्णव त्रिवेण्याख्या

श्री रागस्य वरांगना ॥ अथ त्रिवेणी भाषा ।

ध्यानम ॥ दोहा । गौरी तन सूक्षम बनी वे

णी रंभा छाइ ॥ पीत बरण त्रिबन जिहैं

त्रि·रा·
५

सिरीरागा हे नाह ॥ अथ जपसंख्या । त्रयोद
शलक्ष एकादश सहस्रेच ॥ अथ प्रोषितप
तिकानायिकालक्षणम् ॥ दोहा । जोकोपि
या विदेशहैं विरह विकल तिया होई ॥ प्रो
षित पतिका नायका तांही कहित सभ ।
कोई ॥ अथ अनुकूलनायकलक्षणम् दो ५

हा ॥ प्रीतिकरे निजनारि सों परनारिन प्र

तिकूल ॥ केशो मन वच कर्मकरि मोकहि

ये अनुकूल ॥ सवैया ॥ केहूं नहीं बिसरै ।

निसि वासर मंदहसी मुष वेद उज्यारी ॥

त्योंही दिपै अति नेह सों देहकी दीपकली

सम दीपति न्यारी ॥ तेरीये ज्योतिजगै गे हि

त्रि॰रा॰ ये भीतर आवत औरन राति अंध्यारी ॥ नै
५ नन हूं अरु वैनन हूं तन हूं मन हूं को न
ही अतिप्यारी ॥ अथ त्रिवेणी रागिनी क॰
लक्षणम् ॥ सवैया ॥ दूरते डेड
भी दीह मनी न गुनी जन पुंज की गुंजन
गाढी ॥ तोरन तोरन हूं बजै बरसावन ५

भोट न गावत ढाडी ॥ विप्रन मंगल मंत्र
पढैं अरु देषै न वारवधू ढिगठाढी ॥ के
सव नान के गात उतारति आरति आरति
मांझहि वाढी ॥ अब विवेणी रागिनी।
की येह ठाठहै ॥ षड्ज सम रहता है।
रिषभ उतरा औेर गंधार चडा है अरु।

त्रि॰रा॰ ६ मध्यम चढा और मध्यम उतरा भी है। अरु
धैवत उतरा है। और निषाद चढा है॥ अ
थ त्रिवेणी रागिनी सरगमः॥ पमपमग।
मधसा सानिधमगरेगमगरेसानिपनि।
निसागमगरेसा॥ इति स्थाई। अंतरा॥
मधगमधनिसानिसानिरेधनिसासानि ६

रेगगरेनिसायनिसानियम ॥ अब रागि

नी त्रिवेणी गतमसीतषानी तालयीमा॥

त्रिताला उठेगी पैहली से ॥ अथस्याई ॥

डिड डा डिड डाडाडाडा । डिड डा डिड

डाडा डा डाडा । डिड डा डिड डाडा डा ।

डाडा । डिड डा डिड डाडा डाडाडा ॥ फिर

त्रि॰रा॰ स्याईबजाकर अंतरा बलेगा तालकी पैहली

७

२म २प २ग २म २प २नि | २सां २नि २सां १नि २रे

डिड डा डिड डाडा डाडाडा । डिड डा डिड ।

२प २नि | २सां २सां २नि २रे २ग २ग | २रे १नि

डाडा डाडाडा । डिड डा डिड डाडा डा डाडा

२सां २प २नि २सां – २नि २धे २म

डिड डा डिड डाडा डाडाडा ॥ फिरस्याई

मैं जायमिला ॥ अथ्यासपा त्रिमन रागिनी ।

२म २पं २ग २म २प

अलापः ॥ ननरी रना आननन उननउआ

७

२सां २नि २प २म २ग २रे २ग २म २ग
नन अद ननरी नने ननाउननना आनरा।
२रे २ग २रे २सां
ननन अदनने रनु नानुम॥ इति अस्थाई
२म २प २सां २रे २सां
अथ अंतरा॥ ननन अदनने आनन नुम।
२नि २प २नि २सां २नि २ग २रे २सां २ग
नानुने नना नन नरी नना आन नान ननु
२रे २नि २सां २प २नि २सां २नि
म ननु नरीन नानुरी रनु नना आन नान।
२प २सां २रे २सां
आन नान रान ननुम॥ अथ त्रिवेणीरागि

त्रि॰ रा॰
८

नी ध्रुवपद गानमाह ॥ रागिनी त्रिमन ब्रल
त्रातेः ध्रुवपद ताल ४ ॥

८

अथ त्रिवेणी रागिनी दशावतारपरिछेद

१नि २सं २रे

माह ध्रुवपद ताल चार ॥ प्रलय अब्धि

२ग २रे २सं १नि १प १म १प १नि २सं २प २म २प

तारण हित मत्स्य भयो वहो राय वैवस्व

२म २ग २रे १नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

त नावबिरायकहो शास्त्र भारी ॥ इति ख्या

२म २प २नि २सं २नि २सं

ई ॥ कमठ समथ सिंधु मथा ध्याय अम

२रे २ग २रे २सं २नि २प २म २ग २रे १नि २रे

र देव किये दिये रतन भूमि ९९ ३४।

२ग २म २ग २रे २सा १नि १प १म १प १नि

त्रि॰ग॰ अस्सुर मारी ॥ इति त्रेतता ॥ वत्सथल फा

२सा १नि २सा २रे २ग २रे २सा २प

र मार हेम किशिपु नर हरि प्रभु वामन

२म २प २म २ग २रे १नि २रे २ग २म २ग २रे २सा २म

पग पावन भरि भूमि भर उतारी ॥ राम

२प २नि २सा २नि २सा २रे २ग २रे २सा २नि

राम राम रूप धार भूमि भर निवार बुद्ध

२प २म २ग २रे १नि २रे २ग २म २ग २रे २सा

अस्सर बुद्धि हरी कल्कि बाल नारी ॥ इति 21

त्रिवेणी रागिनी दशावतार परिछेदः ॥ शुभम् ॥

ध्रुवपद सूर्य ताल चार ॥ परम जोत ऊंक
चले निराधार मधआकाश आशपाश अ
मत जगत चतुर भारी ॥ इति स्थाई ॥ ज
नम मरण डःखभीत भक्त सक्त देव बा
णि उचर भाणि तेज भजे तजे विकल मा
री ॥ इति अंतरा ॥ ऊंक्क हानि परम धैरें ।

त्रि॰रा॰ कृति नगण त्यागि वैनै परम नष महि।

10 मात्र ग्रन्न ग्रदन धारी ॥ कृईबाङ्ड टेढ़ि।

रहे अभिमान रवि तेज सहे कहे बालति

नहिं सगति सर्व डःख निवारी ॥ ❖ ॥

इतिश्यामोराः ॥ इति त्रिवेणी रागिनी।

सर्य परिछेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

अथ त्रिवेणी रागिनी स्वर्य परिछेदमाह

१नि २ध २रे

ध्रुवपद स्वर्य ताल चार ॥ ब्रहमा कमल

२ग २रे २ध १नि १प १म १प १नि २ध

बिमल बदन मदन मान हरण चरण।

२ध २म २प २म २ग २रे २नि २रे २ग २म २ग २रे

वमन पीत मीत कंज मंज मव उचा

२ध २म २प २नि ३ध

री ॥ इति स्थाई ॥ धारी शिर रत्न मुकुट

२नि ३ध ३रे ३ग २रे ३ध २नि २प

भृकुटि तिलक रक दियो कियो जगत

ति·गा·

२म २ग २रे १नि २रे २ग २म २ग २रे २सं
तिमर नाश परम जोत धारी ॥ इति श्वेतगा ॥

१नि १ध १म १ध १नि २सं १नि २सं २रे २ग २रे
प्रति अद्भुत विपति सरण करण सदा निरम

२सं २ध २म २ध २म २ग २रे १नि २रे २ग २म
किरण सरणागत रछपाल हरत रोग·

२ग २रे २सं २म २ध २नि ३सं १नि ३सं ३रे
भारी ॥ ताके पद सुपद गाय ध्याय ध्याय

२ग २रे ३सं २नि २ध २म २ग २रे १नि २रे
ध्यान धरत बालनिधी सुधी दान दीजे·

२ग २म २ग २रे २सं
उजयारी ॥ इत्याभोगः ॥ त्रिवेणी रागिनी

नी ध्रुवपद शिव ताल चार ॥ प्रति उदा

व गंगाधर शिवहरि पायन विबरि ज

टा जटा धुंधवाणि वर्षे धार मनहि धा

वै ॥ इति ध्याई ॥ भक्त भक्ति मन मन

रूप करण शील जाम श्याम वाम पर

ण नित अमित ध्याव पावै ॥ इत्यंतरा

१नि १ध १म २ध २नि २सं १नि २सं २रे २रे २ग २रे २सं

त्रि·ता· पद्मासन शोभत रूप इंदु भाल लीन नैन

२पं २म २ध २म २ग २रे १नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

मैन हरण पंचवक्र योगि राउ भोरे ॥

12

२म २ध २नि २सं २नि २सं २रे २ग

शूल वज्र खड्ग परशु अभय नाग पा

२रे २सं २नि २ध २म २ग २रे १नि २रे २ग

शा डमरु घंटाकर अंकुश धर बाल म

२म २ग २रे २सं

क तारे ॥ इत्याभोगः ॥ ❁ ॥ इति त्रि

वेणी रागिनी शिव परि छेदः ॥ ❁ ॥

अथ त्रिवेणी रागिनी शिव परिछेद मात्र

ध्रुवपद शिव ताल चार ॥ धवल फटि

क आनन अर्ध वाम भाग गौर वरण गिर

शा गौरि रूप एकधर विवेक ध्यावो ॥

इति स्थाई ॥ जटा जूट बेद शिखर वेणि

सीस रतन झलक भस्म तिलक अलक

त्रि·रा·

२ग २रे १नि २रे २ग २म २ग २रे २सं १नि

बिंड उमा गोरि लावो ॥ इति श्रेतना ॥ कर

१प १म १प १नि २सं १नि २सं २रे २ग २रे २सं

त्रिशूल डमरु दक्ष वाम स्वच्छ कमल लि

२धं २म २प २म २ग २रे १नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

यो उरग भार गौरै माल मोतन मन भावो

२म २प २नि ३सं २नि ३सं ३रे ३ग

रुंडमाल उर विशाल तेग सङ्कच क्रोवि

३रे ३सं २नि २प २म २ग २रे १नि २रे

कि युत उत मृगारि चर्म छाटि कटि हा·

२ग २म २ग २रे २सं

वेय गावो ॥ इत्याभोगः ॥ त्रिवेणी रागि

अथ त्रिवेणी रागिनी विलं परिछेदमाह

२नि २सं २रे

ध्रुवपद विलं: ताल चार ।। इंदीवर वर्ण

२ग २रे २सं १नि १प १म १प नि २सं ३सं २प

कर्ण कुंडल युग मंडित सब विसम शो

२म २प २म २ग २रे २रे २ग २म २ग २रे २सं

भयारी हरि भक्त पीर हारी ।। इति स्थाई

२म २प २नि ३सं २नि ३सं ३रे ३रे २नि

भारी गल माल धरी हरी धीर भृंगन म

२प २म २ग २रे २रे २ग २म २ग रे सं

न कुसुम चित्र मित्र रची षची जाम यारी ।।

त्रि·रा·

14

२नि २ध २सा २रे २नि २सा
इति येतरा ॥ चामीकर चामीकर कर कप

२नि २सा २रे २ग २रे २सा २ध २म २प २म २ग २रे
टकके नके नरव पीत वीत संदर जरि

२रे २ग २म २ग २रे २सा २म २प २नि
येबर कटि कारी ॥ सारी कटि किंकिनि

३सा २नि ३सा ३रे ३रे २नि २प २म २ग
पग पिंजनि युत रमा येक लीन केजप

२रे २रे २नि २रे २ग २म २ग २रे २सा
दमा जिम बसै जसै नारी ॥ इत्याभोगः ॥

त्रिवेणी रागिनी ध्रुवपद विस्नुः तालचार

हाटक को मुकुट खचित बज्र विविध मो

न खोत हीरे कौरै परम द्योत केशव शिर।

धारयो ॥ इति स्थाई ॥ वक्र वक्र कुंतल वि

व करण भरण चमक देत कमल उरगि

मणि गण जिमु परम शोभि धारयो ॥ इति

अंतरा ॥ विकच नील अंबुज माल ममक

२रे २ग २रे २सा २प २म २प २म २ग २रे १नि

त्रि॰ रा॰ त कछ मेंद मेंद रमन चमक दर्श देष र

२रे २ग २म २ग २रे २सा २म २प २नि २सा २नि

15 मा यीर हासो ॥ वैसो मावि दर्श हेत बा

२सा २रे २ग २रे २सा २नि २प २म २ग २रे

लनिधी दयानिधे मानो निम श्रृंग ग्रेज ।

१नि २रे २ग २म २ग २रे २सा

गान पद उचासो ॥ ॐ इत्याभोगः ॐ ॥

इति त्रिवेणी रागिनी विस्तः परिच्छेदः ॥

त्रिवेणी रागिनी ध्रुवपद रागेश ताल ध

२नि २सं २रे २ग २रे २सं २नि २प २म २प

परम्र धरण वरण सकल दम्रा स्वावसे

२नि २सं २ध २म २प २म २ग २रे २ग

धत नित निज भक्तन ग्रमित देत ग्रभ

२ग २म २ग २रे २म २प

यो कृष्ण धारी ॥ इति स्थाई ॥ अग्नि पूर्व

२नि ३सं २नि ३सं ३रे ३ग ३रे २नि

ग्रवि निधिहिं वरत करत हरत डः ख

२प २म २ग २रे २नि २रे २ग २म

मोहन मोहन सगभि ग्रहप माल केठ

त्रि॰रा॰

16

२ग २रे २सा । २नि २ध २म २ध २नि २सा

वारी ॥ इतिश्वेतरा ॥ मित प्रकृत रक्षगेय

२नि २सा २रे २ग २रे २सा । २सा २म २ध २म २ग २रे

मियुग्युत गोपि यैरे हरै डरित डर्जन वि

२रे । २ग २म २ग २रे २सा । २म २ध २नि

न निर्मित विय मारी ॥ ऐसे उपकारि ।

२सा । २नि २सा २रे २रे २नि । २ध २म २ग

देव भारि पीर हर करण हरे ताप बाल

२रे । २नि २रे २ग २म २ग २रे २सा

निर्ये शरि जन मति मारी ॥ इतिश्रभोगः

इति त्रिवेणी रागिनी गणेशपरि छेदः ॥

आ॰रा॰ १

ॐ अथ आसावरी रागिनी प्रारंभः ॥ येह रागिनी।
आसावरी भरत मत में मे[श्री]घराग की स्त्री है अरु
संपूर्ण सात स्वर की है अरु हनुमान्मत में श्रीरा
ग की स्त्री लिखी है इस मत में ओडव कहिते हैं
इस में गंधार और निषाद वर्जित हैं अरु इसका
अंश न्यास ग्रह धैवत स्वर हैं। श्लोक। धैवतांश

१

गरह न्यासा गनिहीना तथोडुवा । करुणायां प्रयो
क्तव्या आसावरि च रागिनी ॥ भरतमतेन । निषा
दांश गरह न्यासा क्वचिन्नैथार ई रितः दिवसो ।
द्वितीय यामे आसावरि हि गीयते ॥ अथ प्रकीर्णः
देशी गेयार टोडीभि र्गासावरी च संयुता अस्याः
श्रवणमात्रेण रत्या नेदः प्रजायते ॥ अथ इसका

आ॰रा॰ समय दिनका दूसरा पहर है अरु रूद्र इसका वरण
२
है और ब्रह्मा देवता है अरु ब्रह्म ऋषि है जगती छं
द है आंबीज है अरु इसका करुणा रस है और ये
ह नायका है अरु दलनायक है॥ अथ आसाव
री साधनम्॥ ओंअस्य श्री आसावरी रागिनी मंत्र
स्य ब्रह्म ऋषि जगती छंदः ब्रह्मा देवता आंबीजं २

यथेष्ट फल सिद्ध्यर्थे आसावरी जपे विनियोगः अथ
कर न्यासः ॐ आं अंगुष्ठकाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि
न्यासे सर्वं कुर्यात् ॥ अथ पूजा विधाय ॥ आवाहने
आसने । पाद्ये । अर्घ्ये । आचमनीये । वस्त्रे । यज्ञोप
वीते । गंधे । अक्षते । पुष्पे । धूपे । दीपे । नैवेद्ये ।
दक्षिणा प्रदक्षिणां । पुनराचमनीयम् ॥ इति पूजने

आ॰रा॰ सर्वे जयति ॥ अथ आसावरी रागिनी ध्यानम । ॐ श्री
३ खंड शैल शिखरे शिखि पुछ वस्त्रा मातंग मौक्तिक ।

क कृते ज्वल हार वल्ली आकृष्य चंदन तरो उरगं
वहंती । आसावरी वलय मुज्वल नीलवर्णा ॥ अथ

भाषा ध्यानम । मलया गिरि के वन में वनिता हरि
वल्लभ आनंद भार भरी हार मुडार गरे गजमोति
३

न मोर पाँवोवन मारिकरी चंदन के द्रुमतें गहि
ना गिनी केलन में गरवा निवरी निज देह की
दीपति ही सों असावरी दीपति प्रणाम त्र्यटा कीग
री ॥ इति भाषा ध्यानम ॥ अथ आसावरी रागिनी।
मंत्रः। ॐ आं आसावर्यै नमः ॐ ॥ जप संख्या। एका
दश लक्ष दश सहस्रं च ॥ अथ करुणा रस लक्ष।

ग्रा॰ग॰ ५ णाम। सीतावाक्यं॥ आर्य्य तनय हृदि तव किमिदं।

स्थित महह कदापि न जाने। क्वचिदिह जगति न

खलु भवद प्रिय मह मकरव मिति जाने। एकश

इह मम तपन कुलोज्वल निकिटी भव गुण सिं

धो। दर्श्शय निज भव मोषयि पति हवि मार्त्ति म

मा कुल बंधो। वीत्प तवास्य विधु ललिते प्रियः ५

एषा चिर मति कष्टा। दाशरथेर्दयिता रुदती ख

ल नम्र भावा शुभ दिष्टा। इत्ये विलपति देवर ल

क्ष्मण भाषित मति शय घोरे। कृत्वा चिर दिन नि

ज वन निवसति रूप मथेर्थ्या प्रकारम्। अथ भाषा

सवैया। ऋषि आश्रम राम बधु जब लछ्छन त्याग

दई तब शोवति है। किस कारण त्याग करयो मो

श्री.रा. रि शामि जू देवर सौं डाव मोचती है। अपराधकी
५ यो उनकौं कछु नाहिन मानस मोहि संकोचति
है। अकुलावति है सिय कानन मैं विधिहे विधि
वैनन रोचती है॥ इति करुणा रसः॥ अथ प्रौढ
नायक लक्षणम। दोहा। जो समस्त रसको विदा
को विद कहित वषानि। जो रस भावै प्रीतमहि ५

नाही रसकी दान ॥ कवित्त । देवी है गोपाल एक गो

पिका अनूप रूप सोने तें सलोनीवास सोधें ते सवा

ई है । सोभाई सुभाई अवतारु लीनो यान प्रणाम ।

कियो यह दामिनी यिडे कामिनी ह्वै आई है । दे

वि कोई दामिनी नमानवी न होई ऐसी मानवी ।

नुहाय भाई भारती पठाई है । केशोदास सभ ।

श्रा॰रा॰
६

साव साधन की सिद्धि यह मेरे जाने मैं नही मोमे

नकाकीजाई है ॥ अथ धृष्ट नायक लक्षणम् ॥ दो

हा ॥ लाजन गारीऊं मारकी छाडदेई मम त्रास

देखो दोषन मानही धृष्ट सो केशव दास ॥ इति

धृष्ट नायक लक्षणम् ॥ अथ आसावरी सरगम ॥

म प नि ध प म ग म रे म प ध सा रे ग रे सा नि ध रे सा नि

६

पप॥ इति अस्थायी॥ पमपपसारेमगारेसानिसाप
पपसासानिपरेसानिपप॥ इति अंतरा। ताल धीमा
तिताला॥ अब आसावरी रागिनी का येह ठाठ है।
षड्ज सम रहता है। ऋषभ उतरा। गंधार उतरा।
मध्यम उतरा। पंचम सम रहता है। धैवत उतरा।
निषाद उतरा॥ अब इसका येह गत कहिते हैं।

स्रा॰ग॰ डिठ डा डिठ डाठाडाडाठा। डिठ डा डिठ डाठा डा

७ डाठा। डिठ डा डिठ डाठा डाडा ठा। डिठ डा डिठ

डाठा डाडा ठा॥ इति प्रथमाई॥ डिठ डा डिठ डाठा

डाडाठा। डिठ डा डिठ डाठा डाडा ठा। डिठ डा डिठ

डाठा डाडा ठा। डिठ डा डिठ डाठा डा॥ इति प्रेतरा

ग्रथ्या स्याप्रलापः॥ ननरी इना आनन उनन उ ७

२रे २म २पु२प २पु २म २ग २रे२सं २नि २सं २ग

आनन अदतनरी तने तना उननना आनरा ननन

२म२ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे

रन तानुम ॥ इति अस्थाई ॥ ननन अदनते आन

२सं २नि २प २नि २सं २रे २सं २म २ग २रे २सं

न नुम तानुनै नना तन नरी नना आन तान तनु

२नि २प २सं २रे २ग २रे २सं २नि २प २पु

म ननु तरीन तानुरी रना नना आन नान आन

२ग २ग २रे २सं

तान रान तानुम ॥ इति अंतरा ॥ अथ ध्रुवपद

गाने माह ॥ आसावरी रागिनी ध्रुवपद ताल ४

8

21

अथ तैलंगी रागिनी दशावतार परि छेद मा
ह ध्रुवपद ताल चार।४। वैवस्वत अंजलि ग
त शफरि परी कुंडि यरी वरी वरी होत देष
अद्भुत रूप तारयो ।। इति मत्स्यायी ।। अब्धि
मथन गिरि निमग्न देष यरयो कमठ रूप।
क्रोड फोड हेम नेत्र आक्र विधि उधारयो ।।

गा॰ तै॰

इतिप्रेतरा ॥ विभ फारि हेम किशिपु मारेया

जन रक्ष करी वामन पद गेरा बली राम भ

र उतारेया ॥ रामचेद रावनसहनी क्रस्न ग्रस

जात बालनिथी बुद्ध कल्कि अम्बर भय नि

वारेया ॥ इत्याभोगः ॥ इति तैलंगी रागिनी 22

दशावतार परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ः

२नि २स २नि २प २म २ग २स २स
ठौक गेक छाइ रही थाइ चलात लोक अलो

२ग २म २प २म २ग २स
क शिखरि उपरि मोहे ॥ इतिअस्थायी ॥

२ग २म २प २नि २स २म २प २नि २स २नि
मम अम्ब संदत ऋषि कश्यप को नंदन ज

२प २म २ग २ग २म २प २प २म २ग २स
ग वंथन डाव भंजन हाव कंदन तममोहे

२स २ग २म २प २नि २स
इतिअंतरा ॥ चारु चारि भजा धारि जपाकु

२स २नि २प २म २ग २स १नि २स २ग
मम कांति धेरै मकुट सीस अभा ईस कमल

ग॰तै॰

मोद जोहे ॥ चरण शरण वालानिधी परम प्री
ति धार रहो बुद्धि धोत कटन हेत नमन कर
त तोहे ॥ इत्याभोगः ॥ इति तैलंगी रागिनी
सूर्य परि छेद माह ॥ ॥ ॥

अथ तैलेंगी रागिनी सूर्य परिछेद माह। ध्रु
वपद ताल चार। ४। प्रथम जग फलहि दे
त धर्म कर्म जीव करत जाऊ जाऊ योनि जे
त योग्य रस पावैं ॥ इतिअस्थायी ॥ श्रद्धा
कर श्राद्ध पुत्र करैं धरैं भक्तभोज्य नानाविध
चोष्य लेह्य विप्र वर जिमावैं ॥ इतिअन्तरा ॥

गा॰तै॰ उदक प्रहति दान दव्य तज्यो लियो फल हिं

वरुण उस किरण धारि वारि जीव रक्षिणा

3 वैं ॥ विश्व पितर रक्षि पाय सेव सेपति देत

पाय बाल निधी आत्म तेज रविहि उराधि आ

वैं ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी तैलेगी ध्रुवपद ।

सूर्य ताल चार । ४ । दिनकर कीजोत जगत

२सा २नि २ध २म २म २ग २ध २ग

पास प्रथम बैसे भैरव राग विविध भांत भ्रता

२म २ध २म २ग २सा २ग २म २ध २नि

दिक सेगे ॥ इति प्रस्थायी ॥ त्रिविध तापपाप

२सा २ग २म २ग २सा २नि २ध २म २ग

हरै थरै जड पुरुष ध्यान जडता हर करै ता

२ग २म २ध २म २ग २सा २सा २ग

न शिखर धारि गेरे ॥ इति अंतरा ॥ रागपा

२ग २म २ध २नि २ध २म २ग

ति गण नंदि भृंगी रिटि अपर विविध व्रण

२सा २नि २सा २सा २ग २म २ध २म २ग २ग २म

एक पाद पादहीन विकृत वदन रेगे ॥ सार

२प २नि २स २म २प २नि २स २नि २प

रा॰ तै॰ मेय ह्रकर मवि नक्र ह्रलि ख्युड थेरैं योगि ।

२म २ग २स २ग २म २प २म २ग २स

निगण मेगणवैं पीपी नित भेगे ॥ इत्याभोगः

इति तैलेगी रागिनी शिव परि छेदः ॥८॥

अथ तैलंगी रागिनी शिव परिछेद माह ध्रु

वपद ताल चार।४।। उमा पति हिं शंकर

विश्व विगत पाप भक्तन नित योगि योग

भूषण जग दुःख हरण सगरे ।। इति अस्था

यी।। पद्मा सन धार हस्त गोद में सधार न

यन नास हाष्टि चार रोक डेढन गण रंगरे।

ग॰ तै॰

5

इतिधेनरा ॥ वामन कोगेक ठेक आजा बुज
पत्र युग्म सुषमणा मद्य प्राणा धार निज मने
द पगारे ॥ आत्माराम पूर्णकाम देह तछ वि
कृत किया भस्मलाइ केडपाइ वैठ कृति ग
जेरे ॥ इतिआभोगः ॥ रागिनी तैलेगी ध्रुवप
द ताल चार । ४ । नीलकंठ कृतिवास आस

मकुट शिखर धारि वारि विविध कार्य ज
नके ॥ इति अस्थायी ॥ ज्नागउ मेत गये
मन विचार करत भये आगे प्रति बीरमा-
गी हेडिलेउ धनके ॥ इति अंतरा ॥ जब-
एको एक कहैं नरसी प्रत धनी यहो न
हो गये देखो एक रंक वान जनके ॥

रा.नै.
6

दीये दाम किये काम धाम गाये साबलशाह
माल थके नाहिमिल्या अति चिंता मनके।
एक कहे दाम कहे वैचक के हाथ भये कहैं
अपर पीछे चले कछु हिं गिनके ॥ बालनि
थी डाबित दैव आइ गायो साबलशाह दाम
दीये प्राण कर मंदिर कीये मणके ॥ भोग:

अथ तैलंगी रागिनी विलम्ब परिच्छेद माह ध्रुवप-

द ताल चार। धा। बाहड्ध्वज अजहिं जास ना-

भिकमल प्रकट भयो भजरा ध्यायन अज्ञ नय

न भयन तात सारी ॥ इति अस्थायी ॥ मेघश्या-

म भाम राम शांत रूप पर अनूप पीत वसन-

मंद हसन भक्तन हित कारी ॥ इति अंतरा ॥

रा॰तै॰

सुगणशील सुर सुशील सुजय विजय द्वारपा
ल श्रमथा र पास रहैं भक्त भारी ॥ बालनिधी
चरण शरण धारै हरि कलष हरन भरण क
रे धरो धीर रहो उरस चारी ॥ इत्याभोगः ॥ ०॥
रागिनी तैलंगी धुवपद विसु ताल चार ॥ ४ ॥
नीरनिधी सुता पति सुतासि कुसम कोतिधारै

४१

२नि २प २म २ग २स २ग २म २प २म २ग २स

विपत साल रता देत सक्त भक्त हित वियाता ॥

२ग २म २प २नि २स २ग

इति अस्थायी ॥ सकल कार्य भारि आदि नम

२म २ग २स २नि २प २म २ग २ग

न करै थरै सिद्ध मणि मुक्ता माल विविध वस्त्र

२म २प २म २ग २स २स २ग २म

अन समाता ॥ इति अंतरा ॥ चतुर्भुजा धारि ।

२ग २म २प २नि २स २नि २प २म

कारि अभय दास आस सदा स्मरण नित पर

२ग २स २ग २म २प २म २ग २ग २म २प २नि

म्रु थरे अविन गण विधाता ॥ मोदक गुनपा

ग॰ तै॰ च एक हाथ लिये मोदकौ धैरै धीर वालनिधे

8 वांछित फल दाता ॥ इत्याभोगः ॥ इतितैले

गी रागिनी गणेश परिच्छेदः ॥ ॰:॰ ॥ ॰:॰ ॥

अथ तैलंगी रागिनी गणेश परिछेदमाह ध्रु
वपद ताल चार।१। सदा सिद्ध बुद्धि करण।
विघ्न गण हर चरण सेवक वर एरन नित
अमित धन विधाता ।। इति अस्थायी ।। पद्म।
मन पद्मनैन मैन हरण गौरि तात उदवर्तन
देह जात परम मोद दाता ।। इति अंतरा ।।

रा॰ तै॰

२सं २ग २म २पं २नि २पं २म २ग २सं
सुमरव एक दंत कापिल हस्ति श्रवण लंब उदर

१नि १नि २सं २सं २ग २म २पं २म २ग
५ विकट विघ्न नाशि सुरन नायिक अरि घाता ॥

२ग २म २पं २नि २सं २म २पं २नि २सं २सं २नि
धूम्र केतु गणाध्यक्ष भालचंद्र करी वदन द्वा

२पं २म २ग २ग २ग २म २पं २म २ग २सं
दश विध नाम जपो सर्व सुख दिवाता ॥ इत्या

भोगः ॥ रागिनी तैलेंगी ध्रुवपद गणेश नाथ

२सं २ग २म २ग २म २पं २नि २सं
विघ्न हरन दत पत रत करण हरण हर ।

धरी शिखर शिखरि ध्यायन त्रिविध ताप हरि

णी ॥ इति अस्थायी ॥ सगर राय याग अश्व इ

न्द्र हरयो धरयो बितल कपिल देव ताप स बसु

जहो याग बरणी ॥ इतिअंतरा ॥ षष्टि सहस

सगर पुत्र अश्वयुक्त कपिल देव हनो हनो ।

बैर देखि भया मौन धरणी ॥ कपिल कोप ।

गा॰ तै॰

२नि २सं २म २प २नि २सं २नि २प २म २ग

भस्म भये सुनहि सगर वंश जात भागीरथ ।

२सं २नि २सं २ग २म २प २म २ग २सं

10 तार दीये भागीरथि तारिणी ॥ इत्याभोगः ॥॰॥

इति तैलेंगी रागिनी शक्तिपरिच्छेदः ॥॰॥

अथ तैलंगी रागिनी शक्ति परिच्छेद माह ध्रुव-

पद ताल चार । ४ ।। विमलपदी दिव्यनदी नाद

नदत मधुर मधुर शिव जल मल हरन सक-

ल निर्मल वपु कारी ।। इति अस्थायी ।। यात्रिक

जब पाद चलत एक एक यत्न करत राज ह-

य अश्वमेध अन कर फल पारी ।। इति अन्तरा ।।

रा॰ तै॰ गंगा नाम सुनत नसत पाप ताप परम धार के
हो जाइ छिपों जहा रख कहो भारी ॥ बालनि
थी वार वार मांगत वर येही मार झाप झाप।
तारिलाए पीडे उदक मारी ॥ इत्याभोगः ॥
रागिनी तैलंगी ध्रुवपद शाकि ताल चार। ५॥
जगतारिणि पाप पुंज हारिणि तेहि देव सरी

२पा २नि २सा २नि २पा २म २ग २म २ग २म
नैन श्रैन योग विघकरण भरण हरण तर त्रि

२पा २म २ग २सा २ग २म २पा २नि २सा
तय यारी ॥ इतिअस्थायी ॥ हेम गर्भ रूपधार ।

२नि २सा २ग २म २ग २सा २नि २नि २म २ग २सा
कारि स्रष्टि विविधभांत रूषी अमर असुर ना

२ग २म २पा २म २ग २सा २सा
ग मनुज जीव सारी ॥ इतिअंतरा ॥ सात्विक

२ग २म २पा २नि २सा २म २ग २सा २नि
वपु धार कारि पालन हरि वारवार नाना वि

२सा २सा २ग २म २पा २म २ग २ग २म २पा २नि
ध मछ कछ राम क्रस्न भारी ॥ सोई जगत श्रे

२सां २म २प २नि २सां २नि २प २म २ग २सां

ग॰तै॰ न करे थिर रूप काल रुद्र लीन करे सकल वि

12 २म २प २म २ग २सां

ष नटवत कल चारी ॥ इति आभोगः ॥॰॥

इति तैलंगी रागिनी ब्रह्म परिच्छेदः ॥ ॥:

अथ तैलेगी रागिनी ब्रह्म परिछेद माह ध्रुव

पद ताल चार। ४॥ अलख अगोचर अगम-

निगम कथन करत जिह विचार वार वार उ

र अपार पार नही पातही ॥ इति अस्थायी॥

नाहि जात रूपरेग मात तात भ्रात नही व्या-

प रहो सकल जगत भेव नैह दिखातही ॥

रा॰ तै

13

बाणी नहि कथन सकैं श्रवण श्रवण करत थ
कैं नयन श्रयन पान सकैं बुद्धि भ्रमन लागतही
बालनिधी अवरज बत बर्णित कछु मन ल
जात सहस बदन शेषनाग अंत अलवे गात
ही ॥ इत्याभोगः॥ रागिनी तैलंगी ध्रुवपद ब
ल ताल चार।४। विस्वेश्वर विस्व बदन विस्व

तै॰ रा॰ ॐ अथ तैलंगी रागिनी प्रारम्भः॥ अरु येह
१ तैलंगी रागिनी भरत मतके अनुसार हिं
डोल की स्त्री है। अरु इसी को तिलंग और
तिलक भी कहिते हैं। अरु इसका सम
य दिनके तीसरे पहर में गाई जाती है।
और इसका वसंत ऋतु है। अरु इसका॥
१

ग्रंश न्यास ग्रह स्वर गंधार है। अरु येह राग
ओडव है। अर्थात पांचस्वर कीहै। इसमें
ऋषभ और धैवत वर्जित कहा है॥ श्लो
क॥ गंधारांश ग्रह न्यासा तैलंगी ओड
वा मता। रिधहीना वसंतर्तौ गाने यामे
तृतीयके॥ अथास्य तैलंगी रागिनी अ

तै॰ रा॰
२

कीर्णा विधिः ॥ विहाग बुछहेसमश्च मिश्रि
तौ च परस्परम् । तैलंगी जायते गाने या
मेह्रोऽयत्नतो यके ॥ जब विहाग ग्रुरु बु
छहेस येह दोनों आपसमें मिले तब तै
लंगी होतीहै । ग्रह इसकी स्वरभी देवता
है । ग्रौर सोमऋषि है । इसका त्रिष्टुप छंद

२

है । अरु तैंबीजहै । औरु समस्त रसकोविदा
मध्यानायिका है । अरु दक्षनायक है ।
और इसका वीर रसहै ॥ अथ तैलंगी रा
गिनी साधनम ॥ ओं अस्याश्री तैलंगी रा
गिनी मंत्रस्य सोमऋषिः त्रिष्टुपछंद :
सप्तमी देवता तैंबीजे यथोक्त फलवाप्त

तै॰ रा॰
३

ये जपे विनियोगः ॥ अथ तैलंगी रागिनी।
करन्यासः ॥ ॐ तैं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं ह्र
दयादि न्यासं सर्वं कुर्यात ॥ अथ तैलंगी
रागिनी षोडशोपचारे संपूज्य ॥ आवाह॰
ने। आसने। पाद्ये। अर्घ्ये। आचमनीये।
वस्त्रे। यज्ञोपवीते। गंधे। अक्षते। पुष्पे। धू ३

पे। दीपं। नैवेद्यं। दक्षिणा। प्रदक्षिणं। नो
चूले। पुनराचमनीयम्॥ इति तैलेंगी रा
गिनी षोडश पूजनं सर्वं कुर्यात्॥ अथ तै
लेंगी रागिनी मंत्रः॥ ॐ तैलेंग्यै नमः ॐ॥
इति तैलेंगी मंत्रः॥ जपसंख्या॥ द्वादल
म एकादश सहस्रं च॥ अथ तैलेंगी रागि

नै॰ रा॰
५

नी ध्यानम् ॥ ॐ योषिद्भिः सहसोम सुभ्रवस

ना । पुणामा विशाले दाणा । विबोष्टी जित

कोकिला म्हडरवा । ता टेक कर्णारमा ।

मुक्ता हार विराज मान ह्रिदया । पुष्पाव

ली मालिका । नैलेंगी वरभूषणा च वि

जया । मवैभि मारा जते ॥ अथ नैलेंगी भा

५

षा ख्यानम॥ सवैया। राजितहै सभके उप
रि म्हड कोकिल बोलसुहा वतनीके।
सवि संग लियें सित वसतर हैं मानुचां
द निवासवने बदरी के बिंब सें ऊठ सु
हावत सुंदर कानन कुंडल नीलमणी
के मोतिन हार तिलेस विराजत दामि

नै॰ ना॰ ५ नी पोहपन की सजनी के ॥ अथ नैलेगी दे

वता मेव्रः ॥ ॐ हेमहम्भेनमः ॐ ॥ अथसह

श्री ध्यानम । ॐ विसो व्रतासिया लक्ष्मीः स्वा

हा चैव विभावसो । वेदार्क प्राक लक्ष्मीया

येन हृपा स्तु मा श्रिये ॥ अथ समस्त रसको

विदा मध्या नायिका लक्षणम ॥ सो समस्तर ५

सको विदा कोविद कहित वषानि ॥ जो र
स भावे प्रीतमही ताही रसकी दानि ॥ प्र
थ दत्तनायक लक्षणम् ॥ कवित्त । हरि
सै हित सौ भ्रम भूलि ह्रैन की जैमन होतो
करि हिये हूनै होत हित हानियै ॥ लो
क मे अलोक आनि नीके ह्रै को लागति

नै॰रा॰
६

है सीता जू को हत गीत कै सो उर आनियै
आषिन जो देषियत सोई साची केसोदास॰
कानन की सुनी सांची कब हूं न मानियै॥
गोकल की ऊलटा पैयौं ही उलटा वति है
आजलौं तौ वैसेई है कालि की न जानि
यै॥ अथ तैलंगी वीर रस लछणम कवित्त ६

ग्रह ज्यौं उदारिहौ कि बक ज्यौं विदारिहौ
जू केसके कि केशीराय केशी ज्यौं पछा-
रिहौ ॥ हरिहौ कि प्राण नाथ पूतना के
प्राननि ज्यौं वन तें कि बनमाली काली-
ज्यौं निकारिहौ ॥ कारिहौ कि विमद घन
वाहन ज्यौं घन स्याम काहू सों नहारे ह

तै॰रा॰ रियाहीसो कैसो हारिहो ॥ वेही काम का
१ म वर ब्रजकी कुमारि कानि मारत है ने
दके कुमार कब मारिहो ॥ अब तैलंगी रा
गिनीकी येह ठाठ है ॥ षड्ज सम रहता
है। रिषभ इसमें वर्जित है। गंधार चडा है
मध्यम उतरा है। पंचम सम रहता है। धैव १

न भी इसमें वर्जित है। निषाद इसमें चडा।
और उतरा भी है ॥ अथ तैलंगी रागिनी स

ताल २॥

रगमः ॥ गमपनिसानिपनिसानिपमपम
गनिसागमपपमग ॥ इति अस्थाई ॥ अथ
अंतरा ॥ निसागमपगमपनिपनिसानिसा
गसामगसानिमपनिसनिपमग ॥ अब तै

भै· रा·
८

लेगी रागिनी मेहणी गत मसीतषानी तालथी
मा त्रिताला उठेगी पेहिली में ॥ अथस्थाई ॥

२ गं   २ म   २ पं   २ नि   २ सं   २ नि   २ पं   २ नि
डिड डाडिड डाडा डा डाडा । डिड डा डिड

२ सं   २ नि   २ पं   २ म   २ पं   २ म   २ गं   २ नि   २ सं
डाडा डा डा डा । डिड डाडिड डाडा डा डिड

२ गं   २ म   २ ध   २ पं   २ म   २ ग
डाडा । डाडिड डाडा डा डा डा ॥ अथअंत·
रा स्थाई बजाके चला तालकी पेहिली में

८

डिड डा डिड डाडा डा डाडा । डिड डा डि
ड डा डिड डाडा डा डाडा । डिड डा डिड
डाडा डाडा डा । डिड डा डिड डाडा डाडा
डा ॥ इति अंतरा फिर स्थाईमें जा मिला ॥

अथास्था तैलंगी रागिनी अलापः ॥ नन
री इना आनन उनन उआनन अदननरी

नै॰रा॰
५

२प̂ २म २प̂ २म २ग २म २ग २स̂
तदे तना उननना आनरा ननन रदु नादु
२म २प̂
म् ॥ इति अस्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ ननन अद
२नि २स̂ २नि २स̂ २ग २म २प̂ २म
नदे आनन नुम् नादुनै तना तन नरी न
२ग २स̂ २नि २प̂ २म २प̂ २नि २स̂
ना आन तान तनुम नदु तरीन नादुरी र
२नि २प̂ २म २ग २म २ग २स̂
ना नना आन नान आन तान रान तनुम
अथ ध्रुवपद गानमाह ॥ रागिनी नैलंगी ॥

५

अथ वसंती रागिनी ख्याल परिछेद माह ध्रु

वपद ताल चार ।४। चिदानंद परब्रह्म अ

ति सूक्ष्म सर्व व्यापि एक के अनेक रूप

धार रहो साथी ॥ इतिअस्थायी ॥ रूप वर्ण

नाम रहित विहित सकल रूप महत इच्छा

विश्वरूपि प्रकट करी राखी ॥ इतिअंतरा ॥

रा॰ व॰

विविध भांत जीव जंत देव दनुज मनुज देद।

भृक कीट पति पशू चित्र मित्र लाषी ॥ जिंह

मयूर चित्र कियो हरित वर्ण शुकैं दीयो वा

लनिधी तेरि कला जानन को काषी ॥ इत्या

भोगः ॥ रागिनी बसंती ध्रुवपद ब्रह्म ताल।

चार।१।परमेश्वर तुहि मता अपर हरण न

२सा २म २ग २म २ध २नि २ध २म २ग
घर जग बिगत पाप करण होत नाम रूप ।

२रे २सा २म २ध २नि २सा
धारैं ॥ इतिप्रस्थायी ॥ तहिं बल बिसु तहिं

२नि २ध २ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ग २म
रुद्र होय सकल हरैं वैरैं प्राण पवन रूप धा

२ग २रे २सा २ग २म २ध २नि
रि धरा भारैं ॥ इतिअंतरा ॥ अग्नि तुही पव-

२सा २ध २प २म २रे २सा २रे २सा २म २ध
न करैं सविता जग तिमर हरैं इंदु रस वि-

२नि २ध २प २म २ग २रे २सा २म २ध
कार कारि वारि लष्ट निवारैं ॥ बालनिधी॰

ग॰वे॰ सारि सार देहि देहि भासकरै पात पात हरै ॰ दुःख मारै ॥ इत्याभोगः ॥ इति वंती रागिनी बल परिछेदः ॥ ॰ ॥

अथ बसंती रागिनी शक्ति परिछेद माह ध्रु
वपद ताल चार।४। विविध कार्य कारिनि
जग जगदंबा विस्वमाय परम शक्ति जास
बिना देव रहे हारें॥ इति अस्थायी॥ शुंभ।
औ निशुंभ प्रबल दैत्यन पत थाइ परे हारें॥
सकल देवन कुल समर मनहि धारें॥ इति

रा॰ व॰
3

येतरा ॥ अमरन संग समर में हो भयो कदन
विविध तहां शास्त्र अस्त्र चटपटाक विदशा
विभव मारे ॥ नाकलियो छीन तीण या
इ गाये शक्ति शरण चरणन मे बालनिथी
अरिन गण विडारे ॥ इत्याभोग: ॥ रागिनी
वसंती ध्रुवपद शक्ति ताल चार । ४ । सव

संपति विविध भांत दान करन चरण जास
ग्राम पास छेदन पटु भटहिं अरिन दलने
इति अस्थायी ॥ संत भ्रमर कमल युगल र
स लंपट रसहिं देत लेत प्रेम नेम धार वा
रु मोक्ष करने ॥ इति अंतरा ॥ परम प्रबल
हठ ललाय भ्रमर प्रखर मार हिं हने तिन

गा॰ व॰ ह्निनमें ध्यानन हित परे एह स्वरणे ॥ अस्वर

गायो दिव्य धाम धारण कर बालनिधी भा

गय कठ कहिन सके धरे मनाहि धारणे ॥

इति श्राभोगः ॥ इति वसंती रागिनी शक्ति

परिच्छेदः ॥ ॥ ॥

अथ बसंती रागिनी गणेश परिछेद माह।

२ग २म २ध २नि
ध्रुवपद ताल चार। ध। कपिल शुंड दंड।

२ध २प २म २ग २रे २सं २ध २नि
बिच मित्र कोटि छवि धरैं हरैं बुडि जाड्य

२सं २म २ग २रे २सं
तिमर उर सरोज उघरैं ॥ इति अस्थायी ॥

२म २ध २नि २सं २म २ग २रे २सं २नि २ध २प २म
जो कि अक्षि युग्म पद्म सम मति निवास।

२ग २म २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २सं
करैं हरैं ताप विविध भोंत धोत हरैं मगरे

गा·व·

परशु पानि अभय दानि करहिं वरन चार।

रहो मोदक भर पात्र चारिभुजा राजेरे ॥

ऐसे गणनायक के कमल कांति अंबुज यु

ग बालनिथी होये थरें टरें विघ्न जगरे ॥

इति आभोगः ॥ रागिनी वसंती ध्रुवपद गा

णेषा ताल चार। ध। आवु गमन सयश।

श्रवण धारि कारि निवे मनन हनन होत।

ग्रहिन पुंज भक्त जनन मारे ॥ इति अस्थायी

स्रोत केंज धार भारि उदर खंड देंड चारु शु

क्र भक्त माल भाल इंड कला धारे ॥ इति अ

तरा ॥ नाग जनित वर्ण जास कवियन नि

त बुद्धि देत चतुर्भुजा चतुर प्रति मनिन हृ

गा·व· ड़ करे ॥ गायक जो गायन के आदि काल ध्या

6 न धरे बालनिधी विघ्न सकल हर होत सारे

इत्याभोगः ॥ इति वसंती रागिनी गणेश प

रिछेदः ॥ ·:· ॥:

अथ बसंती रागिनी विस्त परिछेद माह। ध्रु

२ग २म २प २नि २सं

वपद ताल चार। धा। सात्विक तनु पालन।

२नि २प २धु २म २नि २प २धु २म २ग २रे २सं

हित अहित हनन देवन नित भक्तन को।

२सं २म २प २धु २म २ग २रे २सं

काज करण शरणागत तारी ॥ इतिस्थाई

२म २प २नि २सं २ग २म २ग २रे २रे २सं २नि २प

श्री रामादविद हरन नरसी के काज करण

२धु २म २ग २रे २सं २म २प २धु २म २ग २रे

गोपन हित शिवविरि धरन भरन जगत सा

रा.व.

री ॥ इति अंतरा ॥ नारी जिह रमा चरण मई-
न कर मोदकरैं उरहि धार बार लेत प्रेम ।
भारी ॥ ऐसे जगदीश्वर के पद सरोज बाल
निधी उरज तिमर नाशन हित दर्शन है-
उ धारी ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी वसंती ध्रु
वपद विम्ब ताल चार ।धा। धारे नित रमा ।

२ग २रे २ग २म २प २नि २सां २नि २प २ध २म २ग
रमन पाद पद्म छदम छोडि जगत तापह
२म २प २ध २म २ग २रे २सां
टे सकल श्रीति धरे भारी ॥ इति अस्थायी ।
२म २प २नि २सां २रे २ग २म २ग २रे २सां
राजा उत्तान पाद पुत्र लिये ग्रेक एक उ
२नि २प २ध २म २ग २रे २सां
तम जिन्ह थाल्ट सहवि परम प्रीति कारी
२प २ध २म २ग २रे २ग २म
इति अंतरा ॥ नाति अेष्ट सुत सुनीति सु
२प २नि २सां २नि २प २ध २म २ग २म २प २नि २प
वहि देष नात चरित बैठन हित उदतम

गा॰ व॰ यो स्रुति बिन्टप निवारी ॥ बाणि बाण बिद्व

रोइ गयो ताप नाशन हित स्रुनहि मातङ

रिवत बाल बिपति हरि निवारी ॥ इत्याभोगः

इति वसंती रागिनी बिस परिछेदः ।१९।

अथ वसंती रागिनी शिव परि छेद माह।

२ग २म २ध

ध्रुवपद ताल चार। ४। जगा घोकर जटा

२नि २सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं

धारि सारि नाम मात्र उचारि रामनाम प

२म २ग २रे २सं

रम धाम परे बल रुपी ॥ इति अस्थायी॥

२म २ध २नि २सं २नि २ध २ग २रे

हैम सता अचरज सन कथन कीयो परे

२सं २नि २ध २प २म २ग २रे २सं २ग २रे २सं

बल तेही पुना अपर जपे सोई जगत भूपी

रा॰ व॰

२ग २म २प २नि २सं २नि २प २प̇

इतिश्वेतरा ॥ तव ईश्वर कथन कीयो परंब्रह्म

२म २ग २रे २सं २म २प २प̇ २म २ग २रे

विदृवन विभ तवहि भूल भारि भई जानन्द

२सं २सं २म २प २नि २सं २नि २प २ग २रे २सं

प स्व रूपी ॥ उमा विहस विपन गइ सीयार

२नि २प २प̇ २म २ग २रे २सं २म

हित रामपेषि सीया रूप धारि राम विदित

२ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि २प २ग

मन विहपी ॥ जित हि जाइ सीया युक्त राम

२रे २सं २नि २प २प̇ २म २ग २रे २सं

लक्षन दीष पैरें निज हि रूप धारि याइ।

२म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २नि

लषहिं कल अनूपी ॥ शिव हि जानि जननि

२प २ग २रे २सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं २म

तनु धरयो हरयो निजहि सत्व त्याग दई बा

२ग २म २ग २रे २सं

लनिथी राम भक्ति स्वरूपी ॥ इत्याभोगः ॥

रागिनी वसंती ध्रुवपद शिव ताल चार षा

२नि २प २प २म २ग २रे २सं २म

योगिनाथ नायन कों नायित वर एर क

२ग २म २प २प २म २ग २रे २सं

रैं हरैं पीर मान सिजन बिजन ताप हारी

रा.व.

२म २प २नि २सं २रे २ग

इतिअस्थायी ॥ मुंडमाल भस्म चारु श्रवण

२म २ग २रे २सं २नि २प २प २म २ग

मुद्र धारैं नित अनित जान सकल रूप धा

२रे २सं २नि २प २प

त्म भेष भारी ॥ इतिअंतरा ॥ धारी जिंह उल

२म २ग २रे २सं २म २ग २म २प २प २म २ग २रे

ट सुगति उर सरोज षट्हिं चक्र दर्श देष

२म २प २प २म २ग २म २ग २रे २सं २म २प २नि

सुषमन में निजहि धाम धारी ॥ स्रवत सुधा

२सं २रे २ग २म २ग २रे २सं २नि २प

पिवत मोद धार रहो बाल निधी मृत्युंजय

रवि हि जोत परम द्योत प्रत प्रचंड थैरैं का
ल रूप जगत हैरैं नितहिं दिन प्रकाषी
इति अस्थायी ॥ निषा गई दिवस भयो है
म ग्रीष्म सरद ऋत पुन प्रभाव निजहिं त
करैं हैरैं आयु कासी ॥ इति अंतरा ॥ आषा
की पाषा तैज भूलि रहे सकल लोग योग

२म २प २धै २म २ग २म २ग २रे २सै २म

गा॰ व॰ छोडि आतम रविहि देह बुद्धि फांसी ॥ परम

२प २नि २सै २रे २सै २नि २प २धै २म २ग

यन समूह कहे सर्व काम पूरण निज बा॰

२म २प २धै २म ग २रे २सै

ल निधी हरे काल सहित काम सोसी ॥

इत्याभोगः॥ इति वसंती रागिनी स्वयंपरि

छेदः ॥ ःः ॥ः

अथ बसंती रागिनी दशावतार परिछे

२ग २म

द माह ध्रुवपद ताल चार। धा। प्रजनि

२ध २नि २ध २प २म २ग २रे २सा १ध १नि

बल पूरण नित अनित जगत क्लेश।

२सा २म २ग २म २ध २नि २ध २म २ग २रे

नाश करण हित परम स्वावद नानात

२सा २म २ध २नि

नु यारी ॥ इति अस्थायी ॥ अंडज पुन।

२सा २म २ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ग २म

कमठ भयो क्रोड तोड दनुज हीयो हे

12

धा॰व॰

२ध २नि २ध २प २म २ग २रे २सं
म नेत्र रमाधारि नरहरि वपु धारे ॥ इति

२ग २म २ध २नि २ध २प २म २ग
क्षेतरा ॥ प्रह्लाद रक्ष करण हरण पाप

२रे २सं २ध २नि २सं २म २ग २म २ध २म २ग
जगति भये वामन पद नीर जनित धाम

२रे २सं २म २ध २नि २सं २म २ग २रे २सं
धार दरे ॥ प्रबिधि बोध रावण रिपु मा

२नि २ध २प २म २ग २म २ध २नि २ध २प २म
रि रामचंद्र विभु हलायुध बुद्ध कल्कि

२ग २रे २सं
कलुष हरे धारे ॥ इति दशावतारः ॥

अथ वसंती रागिनी सूर्य परि छेद माह धु

२म २म २ग २रे २स

वपद ताल चार ।४। विसु नयन योग सु

२स २म २प २नि २स २नि २प २प २म २ग

यन सम अष विष रैटैं फटैं तमकपाट सु

२रे २म २ग २रे २स

कट जवहिं कर विकासी ॥ इति अस्थायी ॥

२म २प २नि २स २ग २रे २रे २स २नि २प २प २म २ग

जगत मुदित षेष कार्य थवहिं होहि साथ

२रे २स २म २प २नि २प २प २म २ग २रे २स

राय राय भाय मन अर्पिन करैं हर उदासी ॥

रा॰व॰ 13

इतिश्रेतरा ।। वनभेजा धारि चारि नित्य जग

त जगमगात प्रकृण वर्ण पीत वमन के ।

जन कवि लासी ।। तिरम श्रेष्ठ सर्व चरण ।

शरण धारि बाल निधी सुधीदान दीजो ।

मम जाड्य तिमर नासी ।। इत्याभोगः ।। रा

गिनी वसेती ध्रुवपद सर्व ताल चार । ४ ।।

२ध २म २ग २म २ग २रे २सा

पदहिं भारि हरे धोत सारी ॥ इत्याभोगः

इति वसंती रागिनी शिव परि छेदः ॥

ग·व·

14

ब॰रा॰ १

ॐ अथ बसंती रागिनी प्रारंभः ॥ येह रागिनीभ
रत मतानुसार हिंडोलकी स्त्री है। इसका सम
य दिनके प्रथम याम में गाई जाती है। और ये
ह रागिनी बसंती संपूर्ण सातस्वर की है। अरु
इसका अंश न्यास गृह षड्ज स्वर है। और इ
सका वर्णन करते हैं। अरु इस रागिनी को बसं

१

त करत में पूर्व कथित समय यों विना भी गा

ते हैं ॥ श्लोक॥ षड्जोंश ग्रह न्यासा। संपू।

र्णा च वसंतिका। पूर्वाह्ने चैव गातव्या। भर

तस्य मते स्मृतम् ॥ अथ वसंती रागिनी उ

कीर्ण विधिः॥ नटमल्लार सारंगो शुद्ध

देवगिरी तथा। एतेषां समवायेन जाय

कल्पद्रुममतेन प्रकीर्णविधिः॥ पर्यंक मालकौंशश्च हिंदोलस्तृतीयकः एषां समानयोगेन वसंतीगीयते बुधैः॥ क॰ पे॰ १ अर्थ: जहां वर्ज और मालकौंश और हिंदोल मिलें तब वसंत रागिनी होती है॰ एकमत येह है दूसरा मत ॥ २

व॰ रा॰ २

ते हि वसंतिका॥ जाहां नटमल्हार अरु मारे
ग मल्लू और देवगिरि इनका मेथं होने ते व
संत रागिनी होती है। अरु इसकी समस्त रस
कोविदा नायिका है और दक्षनायका है औ
र शृंगार रस है। अरु इसका ब्रह्मा देवता है।
और ब्रह्मा ही ऋषि है अरु अनुष्टुप छंद है

वोबीजे है ॥ अथ वसेती रागिनी मायनम ॥ ॐ
अस्यश्री वसेती रागिनी मेत्रस्य ब्रह्मा ऋषि र
नुष्टुप छंदः वोबीजे ब्रह्मादेवता अभीष्ट सिद्ध
यें जपे विनियोगः ॥ अथ वसेन रागिनी कर
न्यासः ॐ वो अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदया
दि न्यासे सर्वे कुर्यात ॥ अथ वसेती रागिंनी ।

ब॰रा॰ षोडशोपचारै विधाय ॥ आवाहने । आसने । पा॰
४ ३ द्ये । अर्घ्ये । आचमनीये । वस्त्रे । यज्ञोपवीते । गंधे
अक्षते । पुष्पे । धूपे । दीपे । नैवेद्ये । दक्षिणा । द्र
दक्षिणे तांबूले । पुनराचमनीयम् ॥ इति वामे
नी रागिनी षोडशा पूजने सर्वं कुर्यात् ॥ अथ
वामेनी रागिनी मंत्रः ॥ ॐ वां वामेन्यै नमः ॐ । ३

अथ जप संख्या । दशलक्षं दश सहस्रं वा ।

अथ वसंती रागिनी ध्यानम् ॥ ॐ आम्रा मे

कुसुमा करोति सावदे भृंगादि से सेविते ।

नित्यं क्रीडति गानमान महिता शक्रादि:

देवैः स्तुता । तोहूलाख्या च गौरी सित कम

म वये बिभ्रती भृंग वाद्यं वासंती गीस साव

व.रा.
५

दा स सब श्रवणयो रसाल गुछे दयाना ॥ अ
थ वसंती रागिनी भाषा ध्यानम् ॥ जल रहे
नव पल्लव है द्रुमजोबन की छवि राज बना
ई ॥ राजे नहो सिखि पिछधरे सिर श्रौन॰
रसाल की मंजिरी भाई ॥ नील सरोज ह्रतें
अभिराम लसै तन स्याम की शोभा सुहा ८

ई ।। गावैं नवैं जवनी हरिवल्लभ रागा वसंती

वसंत बनाई ।। अथ वसंती रागिनी देवता

मंत्रः ।। ॐ ब्रह्माणी नमः ॐ ।। अथास्या ध्यान

म् ।। ॐ ब्रह्माणी रक्त वर्णाभे । पीत वस्त्रे रले

कृतम् । चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रे स स्रुवे स्रुचि ।

हस्तकम ।। इति देवता ध्यानम ।। अथ मंत्र

व. ग. ५ 5

स्त रसकोविदा प्रौढा नायिकॅलक्षणम् ॥ सो॰ सम

स्त रस को विदा कोविद कहित वषानि ॥

जो रस भावे प्रीतमही ताहीं रस की दानि ॥

अथ दक्ष नायक लक्षणम् ॥ सकल त्रियन

सों एक रस काहू से घट नाहि ॥ दछ्छन ।

लछ्छन तासके सभे वसे मन माहि ॥ अथ

५

उदाहरणम् ॥ एतो महस्वक वेदमखी अप
नी अपनी छबि की रस साईं ॥ छैहरा में।
रहे देउं कहो (कहो) मन एक करौं किहिया २ लिया
ई ॥ प्यारी लगे म्हारा नयनी सभैं रघुनाथ
नही लघु दीरघ ताई ॥ यिडेही विचारके
दछन लछन प्रेम प्रतीति छको सभ।

व. रा.
६

दोई ॥ अथ शृंगार रस लक्षणम् ॥ रति मति
की अति चातुरी तिय पति मेत्र विचार ॥ ता
ही सों सब कहित हैं कवि को विद शृंगार
सवैया ॥ केशव एक समै हरि राधिका आ
सन एक लसै रसभीने ॥ आनंद सों जीय
आनन की दुति देषति दरपन त्यौं दृगदीने

६

में बाल विलोकित ही भरि लाल॥

भाल के लालनि लोचन लीने॥ सासनपाय सुवासनसीय इतायान में मनो आसन कीने॥ अब बसंती रागिनी की येह ठाठ है॥ षड्ज सम रहता है। रिषभ उतरा है। गंधार चड़ा है। मध्यम उतरा और चड़ा भी लगता है। पंचम सम रहता है। धैवत उतरा

व.रा.
८

है ग्रह निषाद विडा है ॥ अथ वसंत रागिनी
की येह सरगम है ॥ तालरा॥ सासागगग मम नियमम
मगमम्यनिनिसासानिनियपगमगरेसा ॥
इति अस्थाई ॥ अथान्यमतेन सरगमः ॥ तालरा॥ सारे
गमपयसानियपमगरेसा ॥ इतिस्थाई । अ
थअंतरा ॥ सासागरेसानिनियपमगरेसा

८

रैमानिधनिमा ।। अब वसंती रागिनी की येह
गत कही है ।। अथस्थाई ।। डांडिड डाडा डा
डिड डाडा डाडा डा डिड डा डिड डाडा डा
डा डा डिड डा डिड डाडा डा डाडा डिड डा
डिड डाडा ।। अथास्था वसंती रागिनी अलापः
ननरी रना आनन उनन उआनन अद ननरी

व॰रा॰ ८

२ग २म २सां १नि २सां २म २ग २सां २सां
तने तना उननना आनरा ननन रत्न तानुम
इति प्रस्ताई ॥ अथ अन्तरा ॥ ननन अदन
२नि २ध २सां
ने आनन नूम तानुरी तना नना आन तान
२ध २म २ग २रे २सां
आन तान रान तानुम ॥ अथ ध्रुवपद गान
माह ॥ रागिनी सिंधुरा ताल ४ चार ॥

८

स्त्री. ७.

रा० प्र० १

ॐ अथ प्रथम कल्यान राग प्रारम्भः ।।
संगीत रत्नाकरके मतमें येह राग प्र
थम कल्यान श्रीरागका पुत्र हयै ग्रह
णकी रीत लिखी है अब इसका गानेका
समय सायंकाल है और इसकी विधा
म तीव्र है अब इसका ग्रह स्वर लिषते हैं

अब अग्नि इसका देवता है अब ब्रह्माऋ-
षि है गायत्री छंद है और ऐं बीज है अब
मध्यानायिका है और दक्षिनायक हये
अब शृंगार रस है ॥ अथ प्रमनकल्या
न राग प्रकीर्ण विधिः। कल्याणंनम
या पूर्वा मिश्रिते गेलस नायिकैः प्रम

रा॰ प॰ २

ने तिच चित्र्याने सायेगाने प्रद्युम्नाने ॥
निवमेधाय हस्न्याने मध्यमल्लीबउद्य
ने ॥ अथ पमनकल्यानरागसाधनम्
ॐ अस्य श्री पमनकल्यानरागस्य ब्र
ह्मा ऋषि रग्निर्देवता गायत्रीछंदः ऐं
बीजं मनोकामना सिद्ध्यर्थे पमन क

२

स्थान गग जपे विनियोगः ॥ अथन्यासः
ॐ ऐं ह्रीं गुह्यांभ्यो नमः ॥ एवं हृदयादिना
से सर्वं कुर्यात् ॥ अथ प्रमन कल्यान रा
ग ध्यानम् ॥ मकारान्त स्वर्णा व स्त्रवि
ते सिंहासने संस्थितः छाया शोभितम
स्तकः परिजनैः सेवीज्यते चामरैः नोहू

ग॰
पं॰
२

ले वदने सुगंधित वपुः कंठे ग्रवस्ताव
ली प्रमन नाम विशारद स्रुपलहक
ल्याणदो भू भुजाम॥इति प्रमन कल्प
न गागध्यानम्। ग्रथ पूजनम्। ग्रावाह
ने गायम ग्रर्घ्यं स्नानम् शुद्धस्नानम्॰
वस्त्रं यज्ञोपवीतं गंधं ग्रक्षतं पुष्पम

२

धूपं दीपं नैवेद्यम् पुनराचमनीयम् ब

लिंदद्यात् दक्षिणाम् प्रदक्षिणाम् सर्वं

पूजने कुर्यात् अथ इमन कल्यान राग

मंत्रः ॐ ऐं इमनकल्याणाय नमः इति

मंत्रः अथ जप संख्या द्वादशलक्षं दश

सहस्रेण अथ देवता मंत्रः ॐ ब्रं ब्रह्मणे

ना॰
ए॰

सरस॥ इतिदेवनामेत्र॥ प्रथमध्यानायि
कालच्छणम्। दोहा। मध्या बृद्धा यौवना
पूरन यौवन वंत। भाग सुहाग भरीसदा
भावतहै मनकंत॥ इतिमध्यालच्छणम्॰
प्रथ्यद्व नायिकलच्छणम। दोहा। सक
ल त्रियनमों एकरस काहूसो रटनाहि ४

दक्षन लक्षन नासके सभीबसी मनमोहि

इति दक्ष नायिक लक्षणम् ॥ अथ शृंगा

र रस लक्षणम्। दोहा। रतिमतिकी अति

चातरी तियापति मेत्र विचार नाहीकों

सब कहितहैं कविकों विद शृंगार ॥ इ

ति शृंगार रस लक्षणम् ॥ अथ उमनक

गा॰ पु॰ ५

ल्यान राग शृंगार रसः॥ अथ पमनकल्या

न राग नाटकमः॥ खड्ज मेम रहताहये

ऋषभ वक्रालगताहै गंधारभी वक्राहै

मध्यभीवक्रा पंचम मेम रहताहये धैव

त वक्रा निषादभीवक्राई लगता हये।

इति नाटकमः॥ अथ पमन कल्यानराग ५

सरिगम ३ ।। सारे गगारे गम पध पमगारे

सा २ निध निध पमगारे धनिरेसा सारेगा

म पमगारेसा ।। इतिस्थाई अथ अंतरा ।।

सासा निधनि धपमगारे रेरे गगा मम ।

पप धध निनि सारे गारेसा निधपमगारे

धनिरेसा ।। सारेगमप मगारेसा ।। इति

गा॰ पं॰ ६

6

स्थाई अथ सैनरा ॥ सासानि धनि धपमग

रे रेरे गग मम पप धध निनि सारेगारेसा

निधप मगरे धनिरेसा । सारेगमपमगरे

सा ॥ इति सरिगमः ॥ अथ प्रमनकल्या

२सां २रे २सां २रे

न रागकी गत ये ह्ये ॥ डिड डा डिड डा

२ग २म २रे २ग २प २म २ग २रे २प २म

डाडा । डिड डाडिड डाडिड डाडा डाडाडा

६

२ग २म २प २म २प

इतिस्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ डिडि डा डिडि डाडा

२प २म २ग २रे २म २प २ग २रे २म २ग २रे

डाडिडि डाडा डाडिडि डाडा डाडाडा ॥ः

२प

अथ यमन कल्यान रागस्य आलापः नन

२म २ग २रे २ग २म २प

री इना आनन उनन उआनन अदतन

२पे २प २म २ग २रे २नि २ग २रे

री तने तना उननना आनरानननन रन

२नि

म नानम ॥ इतिस्थाई ॥ अथ अंतरा ॥

गा॰
ए॰
८

तनन ॥ ध्रदनने ॥ ध्रानन तुम्॥ तानुनै ॥ तना ॥
तन ॥ नरी ॥ नना ॥ ध्रान ॥ तान ॥ तानुम्॥ नतु ॥ त
रीन ॥ तानुरी ॥ रना ॥ नना ॥ ध्रान ॥ नान ॥ ध्रान ॥ ता
न ॥ रान ॥ तनम् ॥ ॥ ❖ ॥ इति एमन कल्या
नरागस्य ध्रलापः ॥ ॥ ❖ ॥ ॥ ❖ ॥ ॥

त्रि.रा.

१

ॐ अथ त्रिवेणी रागिनी प्रारंभः। येह रागि
नी त्रिवेणी श्रीरागकी स्त्री है। भरत मतानु
सार इसका समय संध्याकाल है। अरु येह
रागिनी संपूर्ण है। और इसका ग्रहांशन्यास
ग्रहस्वर धैवत है। अरु इसका रूप शिगार
है॥ श्लोक। त्रिवेणी माव विज्ञेया। ए

१

अथ पूर्वी रागिनी लक्ष्य परिछेद माह ध्रुव

२नि २सा २रे २ग २म २प
पद लक्ष्य ताल चार ॥ परम अभा पुंज प्रब

२म २प २नि २प २प २प २म २ग २म २ग २रे
ल भास्कर जग व्यापरहो दिवस रात्रि भेद

२सा २नि २रे २ग २म २ग २रे २सा
करण हरण पाप मगरे ॥ इति स्थायी ॥

२म २ग २म २प २नि २सा २नि २प २नि २रे २नि २प २प
करहि केज मेज चतुर रक्तवर्ण स्वर्ण क

२प २म २ग २म २ग २रे २सा २नि २रे २ग २म
टक शोभित नित अमित तेज सकल देव

ग॰ए॰

मथरे॥ इति ग्रेतरा॥ उदय जाम याद सकल
मार कार करत काह चित्र कार चित्र मित्र
प्रति सूक्ष्म सथरे॥ तेजो मय भान सम
ग बालनिधी ध्यानधरैं हरै पाप ताप सक
ल विकल करन जगारे॥ इत्याभोगः॥ ए
वी रागिनी ध्रुवपद सूर्य ताल चार॥ जो

रे॰

२सा २रे २ग २म २प २म २प २नि २सा २नि २प २प २म

के पग सेवनते बुद्धि विशद होत सदा उ

२ग २म २ग २रे २सा २नि २रे २ग २म २ग २रे २सा

दय समै भानु तेज सेवो नित ध्यानी ॥

२ग २म २म २प २नि २सा २नि २प

इति स्थाई ॥ सत्कर्मन करिहि होत रीत

२नि २रे २नि २प २प २म २ग २म २ग २रे २सा

पाप पुंज सकल विकल दुःख हर कर

२नि २रे २ग २म २ग २रे २सा २नि

ण धरण धीर जानी ॥ इति अंतरा ॥ प्रक

२रे २ग २म २प २म २प २नि २प २प

ण वरण भास्कर रवि निगम ग्रंथ नमहेम

13

२म २ग २म २ग २रे २स २नि २रे २ग २म २प

गा॰ पू॰ किरण जास तिमर हरैं करैं भक्त ग्यानी ॥

२म २ग २म २प २नि २स २नि २प २नि २रे २नि २प २प

ध्येम जगदीश्वर परमेश्वर के चरण कंज

२म २ग २म २ग २रे २स २नि २रे २ग २म २ग २रे २स

सेज बाल उर विशाल धारण ते मानी ॥

इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति पूर्वी रागिनी ॥

सूर्य परिछेदः ॥ ❖ ॥ कल्याणम् ❖ ॥

अथ पूर्वी रागिनी दशावतार परिच्छेदमाह

२नि २सा २रे २ग

ध्रुवपद दशावतार ताल चार ॥ कंकणाक

२म २ध २म २प २नि २सा २नि २प २ध २म २ग

र परम पुरुष परमेश्वर एरन नित भक्त

२म २ग २रे २सा २नि २रे २ग २म २ग २रे २सा

पीर महिन सकत तिन हित तव धारी॰

२म २ग २म २प २नि २सा २नि २प

इति स्थाई ॥ सत्यब्रत तारण हित मत्स्य॰

२नि २रे २नि २प २ध २म २म २ग २रे २सा

भयो कमठ रूप देवन हित शिवविरं ध॰

रा० पू०

रो हरे दैत्य मारे ।। इति श्वेतरा ।। हरिधर
ण हित धरा सूकर रद धार लयो प्रह्लाद
रक्ष करी नर हरि वपु कारे ।। अमर दी
न देख कीन बामन वपु ऋषिन मान प
रशु राम परशु धार सकल भार टारे ।। ऋ
षि जनके रक्षन हित रामचंद रत रूने ।

२म २ग २म २ग २रे २सा २नि २रे २ग २म

छने मित्र रक्षन हित द्विविध भय निवा

२प २म २ग २म २प २नि २सा २नि २प २नि

रे ॥ जीव जगत जीवन हित बुद्ध भये

२रे २नि २प २प २म २ग २म २ग २रे २सा २नि २रे

कल्कि कली रूप मार भार हरैं कर धृत

२ग २म २ग २रे २सा

कर वारे ॥ इति ग्राभोगः ॥ इति पृथ्वी रा

गिनी दशावतार परिच्छेदः ॥ समाप्तः

ཀ་པ་

15

24

अथ त्रिवेणी रागिनी गणेश परिच्छेदमा-

१नि २सं २रे

ह ध्रुवपद गणेश ताल चार ॥ सिंदूर युत

२रे २ग २रे २सं १नि १ध १नि २सं २रे २सं २प २म

भाल बाल इंदुकला युग चमक दमक-

२प २म २ग २रे २रे २ग २म २ग २रे २सं

न जिम बारि रवि किरण युग चपला

२म २प २नि २सं

इतिश्याई ॥ चमकत विच तीन नेत्र उ

नि २सं २रे २सं २नि २प २म २ग

डगण कहिं दर्श देत अतहिं सेत रदन

त्रि·रा·

२रे २सं २नि २रे २ग २म २ग २रे २सं

एक नम मरि जिम यवला ॥ इतिअंतरा ॥

२नि मे म पे २नि २सं २नि २सं २रे २ग २रे २ग

ग्राम धाम ऋद्धि सिद्धि विधि वस्व धारि र

२सं २पं २म २प २म २ग २रे २रे २ग २म २ग

ही मानो जिम इंद्र धनुष सभग भरण ग्र

२रे २सं २म २प २नि ३सं २नि ३सं ३रे

वला ॥ श्वेतोधम्म परम रूप गणपति ।

३ग ३रे २नि २प २म २ग २रे

कौट कैसि कहे बालवाणि ध्यकित कहे

२रे २ग २म २ग २रे २सं

नमो हपद निवला ॥ इतिआभोगः ॥

२नि २सा २प २म २ध २ग २रे २रे

शक्ति महो श्री वैसवि पीत वसनि हसित

२ग २म २ग २रे २सा २म २ध २नि

बदनि बाला ॥ इति स्थाई ॥ शोव चक्रग

२सा २नि २सा २रे २रे २नि २ध २म

दा कमल विमल करन धार रही वैजंती

२ग २रे २सा २नि २रे २ग २म २ग २रे २सा

मालधरी बिंद तिलक भाला ॥ इति अं

२नि २प २नि २सा २रे २सा २नि २सा २रे

तरा ॥ गरुड शेस आसन कर हरत सरत

२ग २रे २सा २प २म २प २ध २प २ग २रे

समति मध्य अहर नगाण निर्गुण परम

त्रि॰ ग॰ निजहिँ भक्त पाला ॥ पाद पद्म जाम मद

म वासकैर बालभ्रमर, सबै चित्र गण को

झटति करे वाला ॥ ❖ ॥ इति आमो

गः ॥ ❖ ॥ इति त्रिवेणी रागिनी शक्ति

परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

ग्रथ त्रिवेणी रागिनी शक्तिपरिछेदमाह

२नि २सा २रे २ग

ध्रुवपद शक्ति ताल चार ॥ श्री वैलवि ।

२रे २ग २सा २नि २प २म २प २नि २सा २रे २सा २पं

बिल्व शक्तिः माहेश्वरि शिव सुजान ब

२म २प २म २ग २रे २रे २ग २म २ग २रे २सा

ह्माणि ब्रह्मशक्ति भूमिभर उमासो ॥

२म २प २नि २सा २नि २सा

इतिस्थाई ॥ कौमारी शक्तियरे हरे श्रा

२रे २ग २रे २नि २प २म २ग २रे २रे २सा २नि

ण ग्रमर पतिन वाराही रदन दले पर।

त्रि· रा·

19

२रे २ग २रे २म २ग २रे २सा १नि १प १नि
म रण प्रबालो ॥ इति श्वेतरा ॥ अति प्रबे
२सा २रे २सा १नि २सा २रे २रे २ग २रे २सा २ध
ड चेट भेड चामुंडा खिड करणि विविध
२म २प २म २ग २रे २रे २ग २म २ग २रे २सा २म
भांत प्रसर डरस नारसिंही कालो ॥ इ
२प २नि ३सा ३सा २नि २सा २रे २रे २नि २प
द्राणी इंद्रशक्ति करस्र पकर वज्रकिये
२म २ग २रे २सा १नि २रे २ग २म २ग २रे २सा
छिन्न भिन्न देवरिपु प्रसर भय निवारो ॥
१नि २सा २रे २रे २ग २रे २सा १नि १प १म १प
नील मंदिर श्यामधाम धरिनि हरि म

वपट बल ताल चार ॥ एकही जो घोघर
हे शुद्ध रूप निर्विकल्प त्याग कल्प सबै
भजो भक्त जगमें ॥ इति स्थाई ॥ जब हि ।
कार्य सकल जगत् लीन होत कारण
निज निगुहि वृक्ष सार रहित बीज रूप
जगमें ॥ इति अंतरा ॥ अनाहदहि ध्यान हि

त्रि· गा·

२स २नि २स २रे २ग२रे २स २प २म२प२म २ग २रे
वर्ष दशपहोत शेउमस पुन बारद बारिली

२रे २ग २म २ग २रे २स २म २प २नि २स
न होत वह्नि मगमे ॥ वह्निवायु लीन वि

२स २नि २स २रे २रे२ग२रे २स २नि २प २म
यति मह तत्व विश प्रधान माया मोइ ई

२ग २रे २स २नि २रे २ग २म २ग२रे २स
श विशे सकल जगत पगमे ॥ ❖ ॥

इति आभोगः ॥ ❖ ॥ इति त्रिवेणी रा
गिनी चक्र परिच्छेदः ॥ ❖ ॥ ❖

अथ त्रिवेणी रागिनी ब्रह्म परिछेद माह।

ध्रुवपद ब्रह्म ताल चार॥ निराकार निरा

धार धाररहो सकल विश्व विश्वंभर वि

श्वकरण हरण विश्व सगरी॥ इति स्थाई

चतुरानन चतुर परम रूप धार कारि।

जगत अगत विविध अग्निभूमि विपन

त्रि.ता. ह्वक्क नगरी ॥ इति श्वेतरा ॥ सात्विक हरि॰

हरत विपति नाना तनु धारि धारि पाल॰

न हित भक्त जनन ध्यान जाम खगरी ॥

संकल लीन करन हेत तामस गुणि का

लकद्ध होय बाल भाल वह्नि भस्म करत॰

जगरी ॥ इत्याभोग: ॥ त्रिवेणी रागिनी यु